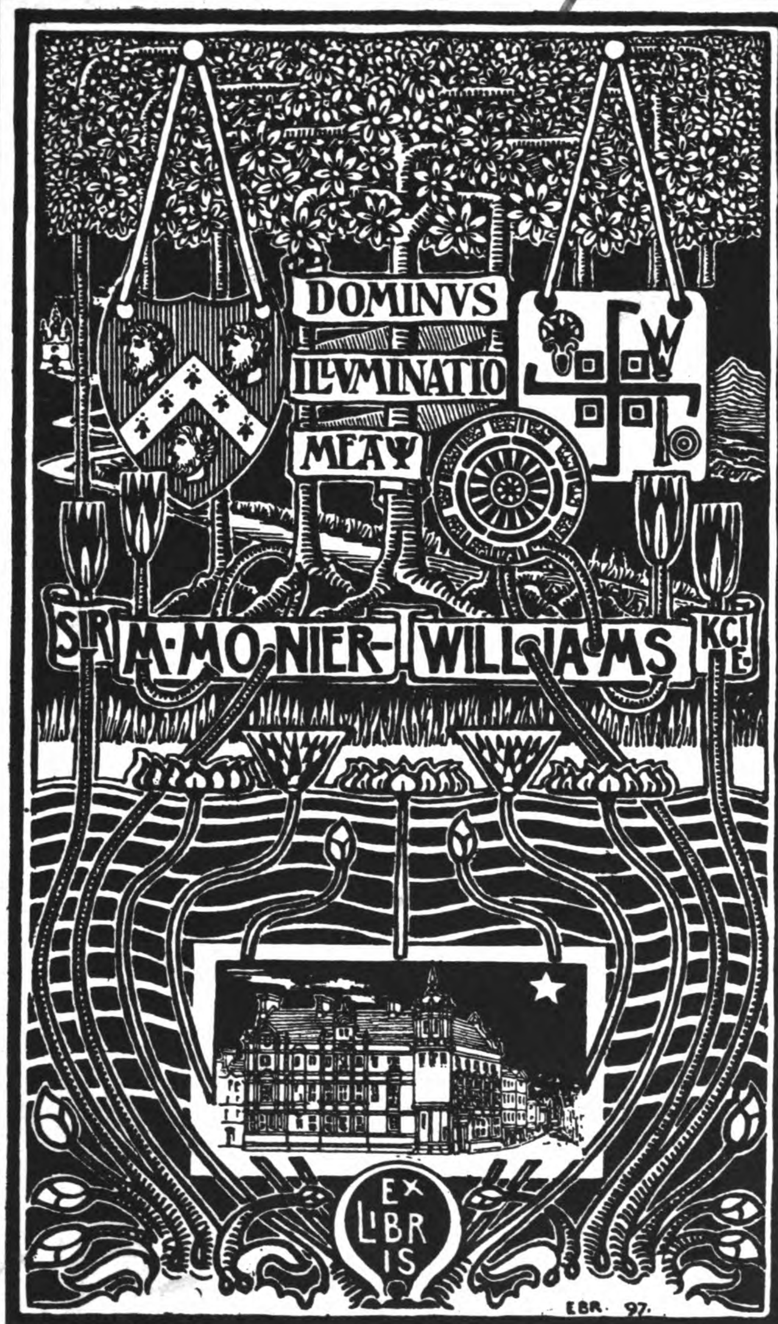



DOMINVS
ILLVMINATIO
MEA
SIR M. MONIER-WILLIAMS K.C.I.E.
EX LIBRIS
EBR. 97.

The description of the 84 Vaishnav-
-ed disciples of the Vallabhācārya
sect in Hindi

Caurāsī Vārtā

श्रीबालकृ
ष्णजीसहाय
तापसतोरस्तु

श्रीमदाचा
र्य्याणांपरमानुक
म्पास्पदभगवदीयचतुर
शीतिसंख्याकवै॥
ष्णवानांवार्ता

विश्वामित्रपुरीयनवलदुर्गे
ठाकुरगिरिप्रसादवर्म्मणोव्याघ्रपा
दप्रकाशकाश्मयन्त्रालयेपण्डिताङ्ग
दशास्त्रिणोधिकारान्मुद्रितेयम्
शालिवाहनीयसमाः१७९०

श्री कृष्णाय नमः

श्री गोपीजन वल्लभाय नमः

अथ श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवकन की चौरासी वार्ता लिख्यते अथ श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक दामोदर दास हरसांनी तिन की वार्ता सो एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू प्रथ्वी परि क्रमा कों पाव धारे हुते तब तहां दामोदर दास श्री आचार्य जी महाप्रभून के साथ हे सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप दामोदर दास सों अपने श्रीमुखसों दमला कहते और कहते जो यह मार्ग तेरे लीयें प्रगट कीनों है सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप ऐसें कहते सो प्रथ्वी परिक्रमा करत श्री गोकुल पधारे सो श्री गोकुल में एक चौंतरा श्री गोविंद घाट ऊपर हुतो तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू आप बिश्राम करते ता ठौर ऊपर श्री आचार्य जी महाप्रभून की बैठक है और श्री द्वारिकानाथजी को मंदिर है तहां श्री आचार्य जी महाप्रभु बैठे हुते तासमें श्री आचार्यजी महाप्रभून को महा चिंता उपजी जो श्री ठाकुरजी ने तो

आज्ञा दीनी है जो तुम जीवन को ब्रह्म संबंध
कराओ तब श्री आचार्य जी महा प्रभू अपनेम
नमें बिचारें जो जीव तो दोषवंत हैं और श्री पुरु
षोत्तम जी तो गुन निधान हैं ताते ऐसें कैसें संबंध
होय ताते चिंता उपजी सो अत्यंत आतुर भए ता
समय श्री ठाकुर जी आप तत्काल प्रगट होयकें
श्री आचार्य जी महा प्रभून सों पूछी जो तुम चिंता
आतुर क्यों हो तब श्री आचार्य जी महा प्रभू आ
प कहें जो जीव को स्वरूप तो तुम जानत ही हो दो
ष वंत हैं सो तुम सों संबंध कैसें होय तब श्री ठाकु
र जी आप हैं जो तुम जीवन कों ब्रह्म संबंध क
राओगे तिनकों हों अंगीकार करूंगो तुम जीवन
कों नाम देउगे तिनके सकल दोष निवर्त होंयगे
ए वातें श्रावण सुदि ११ के दिन अर्द्ध रात्र कों भई
प्रातः काल पवित्रा द्वादसी हुती ताते पवित्रा सूत
को करि राख्यो हुतो सो पवित्रा श्री पूरन पुरुषो
त्तम जी कों पहरायो मिश्री भोग धरी ता समय के
ये अक्षर हुते ताको श्री आचार्य जी महा प्रभू आ
प सिद्धांत रहस्य ग्रंथ कीए हैं सो श्लोक १००

श्रावणस्यामले पक्षे एकादस्यां महानिशि ॥ सा
क्षात भगवता प्रोक्तं तदक्षर सउच्यते १ तासमें
श्री आचार्य महाप्रभून नें पूछो जो दमला तें क
छू सुन्यो तब दामोदर दास नें बीनती कीनी जो म
हाराज श्री ठाकुरजी के बचन सुने तो सही परिक
छू समुझ्यो नाही तब श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें कही जो मोकों श्री ठाकुरजी नें आज्ञा कीनी
है जो तुम जीवन कों ब्रह्मसंबंध कराओगे तिन
कों हों अंगीकार करूंगो तिनके सकल दोष नि
वृत होंयगे तातें ब्रह्मसंबंध अवस्य करनों ॥

बार्ता प्रसंग

बहुरि श्री आचार्यजी महाप्रभून नें श्री ठाकुरजी
के पास यह मांग्यो जो मेरे आगें दामोदरदास की
देह न छूटे और श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोद
रदास सों कछू गोप्य न राखते और श्री आचार्य
जी महाप्रभू श्रीभागवत अहर्निस देखते कथा
कहते और मार्ग को सिद्धांत भगवद्लीलारह
स्य श्री आचार्यजी महाप्रभू आप दामोदरदास
के हृदे में स्थापन कीयो ॥

वार्ता प्रसंग २

अौर एक समें दामोदर दास अौर श्री गुसांई जी एकांत में बैठे हुते तब श्री गुसांई जी नें दामोदरदास सों पूछो जो तुम श्री आचार्य जी महाप्रभून कों कहा करि जानत हौ तब दामोदर दास नें कही जो हम तो श्री आचार्य जी महाप्रभून कों जगदीस जो श्री ठाकुरजी तिन हूंतें अधिक करि जानत हैं तब श्री गुसांई जी दामोदर दास सों कहें जो तुम ऐसें क्यों कहत हौ जो श्री ठाकुरजी तें श्री आचार्य जी बडे हैं तब दामोदर दासने कही जो महाराज दान बडो कै दाता बडो काहू के पास धन बहुत होय तो राज कहा करें जो देइ ताको जानियें अौर श्री आचार्य जी महाप्रभून को सर्वस्वधन श्री ठाकुरजी हैं सो हम जीव कों दान कीए तातें हम श्री आचार्य जी महाप्रभून कों सब तें बडे करि जानत हैं ॥

वार्ता प्रसंग ३

अौर एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू तथा श्री गुसांई जी अपनी बैठक में बैठे हुते पास हू चारि वैष्णव हंसिबे षेलिबे के बैठे हुते आप उन सों हसते

षेलते मसषरी करते बहुत प्रसन्नतामें उनसों षेल
बे की वार्ता करत हुते ता समें दामोदर दास आए
ता समें श्री गुसांईजी ने बहुत आदर सन्मान की
यो पाछें दामोदर दास बैठे तब श्री गुसांईजी सों दा
मोदर दास नें कही जो महाराज आपनो मार्ग निश्चिं
तता को नाहीं यह मार्ग अत्यंत कष्ट आतुरता को
है तब श्री गुसांईजी ने कही जो तुम आछी बात क
हत हो परि हम कों जब श्री आचार्य जी महाप्रभून
की कृपा होयगी तब कष्ट आतुरता होयगी यह मा
र्ग तो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा तें न होय
तब दामोदर दास साष्टांग दंडवत करिकें बीनती
कीये जो हमकों तो एक बार राज सों बीनती करनी है
पाछें आप प्रभू हो भली जानोंगे सो करोगे परि यह
मार्ग तो या भांति को है तब श्री गुसांईजी बहुत प्र
सन्न भए और कहें जो हम कों यह वार्ता श्री आचार्य
जी द्वारा है और कहें जो तुम न कहो तो कोन कहै ह
म तुम कों देषत हैं तब अति प्रसन्न होत हैं आप
श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जानि कें दामो
दर दास की सिक्षा मानत भए तातें बडे सो बडे ई

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥

और प्रथम श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री ठाकुरजी के पास यह मांग्यो जो मेरें आगें दामोदर दास की देह न छूटे ताको हेत यह जो श्री आचार्यजी महाप्रभूसं न्यास ग्रहन करिबे को बिचार मनमें करें तासमें श्री गोपीनाथ जी श्री गुसांईजी ये दोऊ भाई बालक हुते तातें मार्ग को सिद्धांत वार्ता श्री आचार्यजी महाप्रभूसंन्यास ग्रहन कीए तब कितनेक दिन पाछें श्री गुसांईजीनें अक्काजीसों पूछो जो श्री आचार्यजी महाप्रभु ननें मार्ग प्रगट कीयो है सो उच्छव को कहा प्रकार है हम तो कछू जानत नाहीं तब श्री अक्काजीनें कह्यो जो मार्ग तथा उच्छव को प्रकार सब दामोदर दास सों कहे हैं सो तुम उन सों पूछो तुम सों दामोदर दास कहेगो तब श्री गुसांईजी दामोदर दास नें बहुत सन्मान करि भक्त भाव सों घर में पधराए पाछें उच्छव को प्रकार श्री गुसांईजी नें पूछो सो दामोदर दास नें सब कह्यो

वार्ता प्रसंग ५॥

और एक समें दामोदर दास के पिता को श्राद्ध दिन हुतो तादिन श्री गुसांईजी दामोदर दास के घर प

धारे और दामोदर दास कों आड़ करवायो पाछें उत्था
पन के समें दामोदर दास दर्शन कों आए तब श्रीगु
सांईं जी नें कही जो मो कों आड़ करवाये की दक्षणा
देउ तब दामोदर दास कहें जो दक्षणा में एक बात क
हूंगो सो सिद्धांत रहस्य के डेढ श्लोक को व्याख्यान
कहें यह एसी बात हें तब श्री गुसांईं जीनें कही जो
आगें कहो तब दामोदर दासनें कही जो मेंनें तो इतनो
ही संकल्प कीयो हे तब श्री गुसांईं जी चुप करि रहे
पाछें दामोदर दास नें मार्ग की प्रनालिका श्री गुसां
ईं जी के आगें कही श्री भागवत की सुबोधनी श्री
आचार्य जी महा प्रभून के ग्रंथ की टीका और रह
स्य वार्ता श्री आचार्य जी महा प्रभू कहे हें सो सब
कही ता पाछें श्री गुसांईं जी दामोदर दास कों नम
स्कार करन न देते यातें जो श्री गुसांईं जी अपने
मन में बिचारे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून को
स्वरूप दामोदर दास के हृदय बिषें सदा सर्वदा बि-
राजमान हे तो इन पास दंडोत नमस्कार न कर
वनी यातें नमस्कार न करन देते पाछें श्री आचा
र्य जी महा प्रभून दामोदर दास कों दर्शन दीयो

और आज्ञादीए जो अबते तू श्रीगुसांईजी-
को चरणोदक नित्य लीयो करि तब प्रातःकाल
दामोदरदास श्रीगुसांईजीके पास आए और
चरणोदक माग्यो तब श्रीगुसांईजीनेचरणो-
दिककी नाहींकीनी तवदामोदर दासनें श्रीगुसां
ईजी सों कही जोमोकों श्री आचार्यजीमहाप्र
भून की आज्ञा भई है और दर्शन भयेहैं औरक
ह्योजो तू श्री गुसांईजीकोचरणो दकनित्य ली-
जियो तव श्रीगुसांईजी नेचरणो दक दीयो और
दामोदरदासकों श्री आचार्यजीमहाप्रभू तीसरे
दिन दर्शन देते मार्ग कीरहस्य वार्ता कहते ऐसीकृ
पाकरते और कदाचित् तीसरे दिन दर्शन नहोतो
तादिन दामोदरदास के पेटमें पीड़ाहोती अत्यंत
कष्ट पावते पाछें जब दर्शन होतो तब तत्कालक
ष्ट निवर्त होजातो ऐसें करत कितनेक वर्ष पर्यंत
दामोदरदासकों श्री गुसांईजी ने दर्शन दीनों-
तथा श्री आचार्यजी महाप्रभून ने दर्शन दीनों
ऐसीकृपाकरते जोवात होती सोदामोदरदासश्री
गुसांईजीके आगें कहते और मार्गके प्रकार-

की वार्ता अहर्निस कहते जो दामोदर दास के हृ-
दय में श्री आचार्यजी महाप्रभू आप विराजत हैं
तातें दामोदर दास कों दंडोत न करन देते और कह
ते जो दामोदर दास की वार्ता को पार नाहीं ऐसे मार्ग
के टेक के कृपापात्र हैं ॥ ॥ वार्ता प्रसंग ६ ॥
तब श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोदर दास कों पूछे
जो दामोदर दास तू श्री गुसांईजी को कहा करि जान
तहो तब दामोदर दासनें कही जो महाराज हम
तो तुम्हारे पुत्र करि जानत हैं तब श्री आचार्यजी
महाप्रभूननें दामोदर दास कों आज्ञा दीनी जो जै
सें तुम मो कों जानत हो तैसें इन को स्वरूप जानि
यों और श्री आचार्यजी महाप्रभूननें श्रृंगारर
स मंडन ग्रंथ कीयो है तामें लिषें हैं तातें ये दामो-
दर दास ऐसे कृपापात्र भगवदी हैं वार्ता प्रसंग ७
और प्रथम श्री आचार्यजी महाप्रभू दामोदर दा
स सों कह्यो जो यह मार्ग तेरे लीयें प्रगट कीयो है
ता को हेत यह जो जहां लगि श्री आचार्यजी म
हाप्रभून के मार्ग की स्थिति है वहां तांई दामोदर
दास की स्थिति गोप्य है पाछें दामोदर दासनें क

हो जो मैं श्री ठाकुरजी के बचन तो सुने परि कछू स
मुझ्यो नाहीं ता समें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें
कह्यो जो आज हूं दस जन्म को अंतराय है ताको
हेत यह जो जब लग्न श्री आचार्यजी महाप्रभून
के मार्ग की स्थिति है तहां तांई दामोदरदास
के आगल फेरि फेरि हैं मार्ग के स्थंभ प्रथम या
ते कहें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें दामोदर
दास के हृदय में भगवद्लीला स्थापी संपूर्ण-
सृष्टि कों संशोधन करिबे कों ताको हेत यह जो-
जब लगि श्री आचार्यजी महाप्रभून के मार्ग की
स्थिति है तब लगि दामोदर दास की हू स्थिति है
सो वे दामोदर दास ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदी
य हैं तातें इनकी वार्त्ता को पार नांही तातें इनकी
वार्त्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्त्ता प्रसंग ८ ॥

वैस्नव २ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक
कृस्नदास मेघन क्षत्री तिन
की वार्त्ता

सो एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभूनने प्रथ्वीप

रिक्रमा करी तब कृस्न दास मेघन साथ हे सो बद्री नारायन के परली ओर किरनी नाम पर्वत है सो तहां ते एक बडी सिला गिरी सो कृस्नदास नें हाथ सों थांभी तब श्री आचार्य जी महाप्रभू प्रसन्न भए तब कृस्न दास सों कह्यो जो मांग कह्या मांगत है तब तीन वस्तु मांगी एक तो सुरव रता को दीस जाय दूसरें मार्ग को सिद्धांत समुझौं तीसरें मेरे गुरू के घर पधारो तामें दोय वस्तु दीनी गुरु के घर पधारिबे की नाहीं कीनी बद्रिकाश्रम ते आगें पधारे जहां जीव की गम्य नाहीं है तथां वेद व्यास जी को स्थान है तहां पधारे तब कृस्न दास सों कह्यो जो तू ठाडो रहियो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आगें पधारे तब वेद व्यासजी सा म्हें आए सो श्री आचार्यजी महाप्रभून कों अपने धाम में ले आए पाछें वेद व्यास जी नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो तुम नें श्री भागवत की टीका कीनी है सो मो कों सुनावो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून जुगल गीत के अध्याय को एक श्लोक कह्यो सो श्लोक वाम बाहुकृत वाम कपोलो व

लितभूरधरार्पितवेणुं कोमलांगुलिभिराश्रित
मार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुंदः १ या श्लोक
को व्याख्यान कह्यो सो तीनि दिनमें संपूर्णभ
यो तब बेद व्यास जीनें बीनती करी जो मेंयाभा
गवत के व्याख्यान की अवधारना करि सकत
नाहीं तातें अब क्षमा करो पाछें श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें बेद व्यास जी सों कह्यो जो तुम बेदांत
के ऐसे सूत्र कहा कीये जो माया बाद पर अर्थ ला
ग्यो तब व्यासजीनें कह्यो जो में कहा करूं मोकों
आज्ञाही ऐसी हुती जो ऐसे अर्थ करियो तब श्रीआ
चार्यजी महाप्रभूननें कही जो में ब्रह्म बादपरअ
र्थ कीयो है सो व्यासजी कुं सुनायो सो व्यासजी-
सुनिकें बहुत प्रसन्न भए ता पाछें बेद व्यासजीसोंबि
दा होय कें तीसरे दिन पधारे तब कृष्ण दाससों क
ह्योजो तू गयो नाहीं सो काहे तें तब कृष्ण दासनें
कही जो महाराज हों कहां जाऊं मो को तुम्हारे च
रणार्विंद बिना और आश्रय नाहीं है तब यह
सुनिकें श्री आचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भ
ए तब कह्यो जो मांगि तब वेही तीन बस्त मांगी-

एक तो मुखरता को दोष जाय दूसरें मार्ग को सिद्धां
त समुझ्यों तीसरें मेरे गुरू के घर पाव धारो सो ता
में दोय वस्तु दीनी गुरू के घर पधारिबे की नांहीं की
नी   वार्ता प्रसंग १   बहुर एक समें श्री आचा
र्यजी महा प्रभू गंगा सागर पधारे तहां श्री आचार्य
जी महा प्रभू पौढे हुते तहां कृष्न दास मेघन पाव दाब
त हुते तब श्री आचार्य जी महा प्रभू मन में विचारें
जो धांन के मुरमुरा होंय तो लीजिये तब श्री आचा
र्यजी महा प्रभून के अंतःकरन की कृष्न दास मेघ
ननें जानी इतने में श्री आचार्य जी महा प्रभून कों
निद्रा आई तब कृष्न दास उठि कें गंगा सागर ऊप
र आए तब देखें तो पार एक दीया बरत है ताकी अट
करतें पैरि कें गंगा जी के पार आए तहां गाम हो सो
खेत में ते गीले धांन कटवाए तहां गाम में जाय कें
भर भूजा कों टका की जगें चारि टका देकें मुरमुरा
सिद्धि करवाए तब लेके आए तब श्री आचार्य
जी महा प्रभून के चरणारविंद दाबि कें जगाए
और मुरमुरा आगें राखे तब कह्यो राज आरोगो
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछो जो तू कहां

तें ल्यायो तब समाचार कहे जो महाराज मैं पारतें ला
यों तब श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए तब क
ह्यो जो माँगि तब वेही तीन वस्तु मांगी सुरवर ताको दे
ष जाय मार्ग को सिद्धांत मेरे हृदय में आवें तीसरे मे
रे गुरू के घर पाव धारो तब श्री आचार्यजी महाप्र
भूननें कह्यो जो जीव कहा माँगि जानें या समें जो
माँगतो सोई देतो जो कहतो तो श्री ठाकुरजी को स्व
रूप दिषावतो तहां तें श्री आचार्यजी महाप्रभू सोरों
पधारे तब कृष्न दासनें बीनती करिकें कह्यो जो महा
राज मेरे गुरू हैं सो बुलाय लाऊं तब श्री आचार्यजी
महाप्रभूननें कह्यो जो तू षेद पावेगो पाछे कृष्नदास
अकेलो गुरू के पास आयो तब कृष्न दास कों गुरू
नें देख्यो तब कृष्न दास सों गुरूनें कह्यो जो अरे तें
नें और गुरू कीयो तब कृष्न दासनें कह्यो जो मैं
नें तो और गुरू नाहीं कियो मेरे गुरू तो तुमही हो
परि तुम्हारी कृपातें मैंनें पूरन पुरुषोत्तम पाए हैं
तब गुरूनें कही जो पुरुषोत्तम क्यों जानिये त
ब गुरू के आगें अगिन की अंगीठी धकधका
की हुती तामें तें कृष्न दासनें दोऊ हाथ की अंजु

ली भरि कें अंगार हाथ में लीए और कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभू जी पूरन पुरुषोत्तम होंय तो मेरे हाथ मति जरियो और जो और भांति होय तो मेरे हाथ भस्म होय जईयो सो एक मुहूर्त लों अग्नि हाथ में राषी तब गुरू नें भय षाई और कह्यो जो अग्नि डारि देउ पाछें उन गुरू नें कृष्ण दास के हाथ में सों अपने हाथ सों पकरि कें अगिन डरवाय दीनी तब कृष्ण दास वहां ते षेद पाय कें उठि आयो यह प्रसंग सब श्री वल्लभाष्टक की टीका में श्री गोकुल नाथ जी विस्तार करि कें लिख्यो है ॥ प्रसंग २ बहुर मार्ग हृदयारूढ भयो पाछें कदाचित गोप्य वार्ता होय सो सबन के आगें कहें पाछें काहू वैष्णव नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो कृष्णदास सबन के आगें गोप्य वार्ता कहत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून ने कृष्ण दास सों कह्यो जो क्यों रे तू सबन के आगें गोप्य वार्ता कहत है तब कृष्ण दास नें कह्यो जो महाराज आप उन ही सों पूछिये जो मैंने कहा कह्यो है तब उन वैष्णवनसों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछो जो तुम सों कृष्ण दास नें कहा बात

कहीहै तब वैष्णवननें कही जो महाराज हमकौं तो सुधिरही नाही तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मुसिकायकें चुप करि रहे प्रसंग ३ और एक समय श्रीठाकुरजी की इच्छा तें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कृष्णदासनें प्रश्न पूछो जो महाराज श्रीठाकुरजीकों प्रिय बस्तु कहा है सो मो सों कहो सो ताको प्रति उत्तर श्री आचार्यजी महाप्रभू कहें जो श्रीठाकुरजी उत्तम बस्तु के भोक्ता हें परंतु गोरस व्रजवानी कहियतु हैं गोरस अति प्रिय है ताके भाव अनिर्बचनीय हैं और सबन तें भक्तिकों स्नेह प्रभाव अतिप्रिय है तातें भक्तवत्सल कहावत हें तब कृष्णदास ने फेरि प्रश्न पूछो जो महाराज श्रीठाकुरजीकों अप्रिय बस्तु कहा है तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो श्रीठाकुरजी कों धूआँ समान अप्रिय बस्तु कछू नाहीं और तातें अप्रिय भक्तन के द्वेसी हें फेरि कृष्णदासनें प्रश्न पूछो जो महाराज श्रीरघुनाथजी संपूर्ण सृष्टि कों लेकें स्वधाम में पधारे हें और राजा दशरथ कों स्वर्ग दीयो सो काहे तें ताको प्रति उत्तर श्री आचार्य महाप्रभून नें कह्यो जो श्रीरघुनाथजी परम दयाल हें तातें स्वर्ग

दीयोनातर दशरथकोंस्वर्गकीयोग्यतानहुती· यातें अपनों वचनसत्यकरिबेकोंबनबासपठाय दीये ऐसो कर्मकीयो प्रसंग ४ औरएकसमेंश्री आचार्यजी महाप्रभूनसों कृष्णदासने प्रश्न- पूछ्योजोमहाराजभक्त होयकें श्रीठाकुरजीकीली लाकोभेदनाहीजानतसोकाहेतें तबश्रीआचार्य- जीमहाप्रभूननेंकह्योजोएविधिपूर्वकसमर्पण जो कह्योहै सोनाहीकरत अनुभव क्योंजानें औरभ गवदभक्तकोसंगकरें तो श्रीठाकुरजीकीलीला· कोभेदजानेंसोतो आपुकोंयोग्यतामानिकाहूको संगनाहीकरत औरकछू करतहैं सो अंतःकरनपूर्व कनाहीकरतहैं यातें श्रीठाकुरजीकेस्वरूपकोंतथा- लीलाकोभेदनाहीजानत यतिमभक्तनकोसंगकरें श्रीभागवत श्रीसुबोधनीग्रंथनको अहर्निसश्रव गाहन करेंतबभगवदभाव उत्पन्नहोय श्रीठाकुर जीभक्तन के हृदेविषेंसदैव रहत हैं तथासेवाकरिके वंधेहैं तहांएक अन्य मार्गी वैस्नव जाके हृदेमें श्री- ठाकुरजी विराजतहैं ताकोसंगकरनों तहां गजनधा वन वैस्नव कों दृष्टांत दीयाहै जिनजिनभावपूर्वक

सेवाकरीतिनकेसकलदोषनिवर्तभए तातेंलीला
स्थब्रजभक्तनकेभावकोबिचारकरनोंजेवैस्नवश्रीठा
कुरजीकोस्वरूपजानतहैंजिनकोस्वरूपअलौकिकह
हिसोजान्योंजायजोआग्याहोयसोजानेंजेवैस्नवश्री
ठाकुरजीकोंजानतहैंसोजोकछूकारजकरतहैंऔर
श्रीठाकुरजीसोंबिरहभावतापकरतहैंअपनोंस्वदो
षभावबिचारकरतहैंअपनोंस्वरूपजानेंजोहोंको
नहींपहलेंकहाहुतोभगवदसंबंधकीएतेंकहाभयो
अबमोकोंकहाकरतव्यरात्रदिवसएसोबिचारकर
तरहेंहैतबअपनोंस्वरूपजानेंएआकदन्नब्रजभक्तम-
केअर्थतथाएतन्मार्गीयकेअर्थतातेंउतिमसंगहो
यतोएतन्मार्गकेठाकुरजानेंऔरसास्त्रपुराणअने
कसिद्धांतइतिहासहैंतातेंब्रजराजकेघरप्रगटेसोश्री
ठाकुरजीनजानेजायएश्रीठाकुरजीकोंतबहीजानेंता
तेंभगवदभक्तकोसंगकरनोंसेवाकोप्रकारएतन्मार्गी
यवैस्नवजानतहैंतिनसोंमिलितिनकोभावपूछि
केंसेवाकरनीतबभगवदभावउत्पन्नहोयश्रीठाकुर
जीकीस्नेहयुक्तसेवाकरैजोश्रीठाकुरजीवाकोंसब
जनावें प्रसंग५ औरएकसमेंश्रीआचार्यजीम

हाप्रभू श्री बद्रीनाथजीके मंदिरमेंपधारे तब वेदव्या
सजीसाथहे तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननेंवेदव्या
सजी सोंपूछो जोभमरगीत को अध्याय तामें उधव
जी कों ब्रजभक्तन के पास पठाएहें ताप्रसंगमें ॥
श्लोक आधोघटत हे तब वेद व्यासजीनें श्लोक
आधो कह्यो सो श्लोक आतम त्वात् भक्त वसत्वात्
सत व त्वात् स्वभावत: याकी टीका श्री आचार्यजी
महाप्रभूननें पहलें हीं कीनीहे सो सुनिकें वेदव्या-
सजी बहुत प्रसन्न भए तापाछें श्री आचार्यजीम
हाप्रभू बद्रीनाथ जी के मंदिर में पधारे तादिन बा
मन द्वादशी कोदिन हुतो सो तादिन श्री आचार्य
जीमहाप्रभून को बिचार मनमें व्रत करिबे को हु
तो तब श्री बद्रीनाथ जीनें श्री आचार्य जी महाप्र
भून सों कह्यो जो मेंनें फलाहार को सर्व त्र योजकी
नों परि पाई यत नाही तातें तुम रसोई करि श्रीठा
कुरजी को भोगधरि भोजन करो श्री ठाकुरजीकी
इच्छा ऐसी दीसत हे इतनेमें कृष्ण दासनें आयकें
कह्यो जो महाराज इहां तो कछू पावत नाहीपाछे
तादिन तें बामन द्वादशीके दिन व्रत नकरते उत्स

बातेंच पारएं एसो बचन है पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभू बद्रीनाथ जीतें बिदा भए तब कृस्नदास साथही हें वार्त्ता प्रसंग ६ प्रथम श्री आचार्य जीमहाप्रभू बेद व्यासजीके मंदिर में पधारे तब कृस्नदास सोंकह्यो जो तू ठाढो रहियो तब कृस्नदास ठाढे रहे पाछें आप तीसरे दिन पधारे तब कह्यो जो तू गयो नाही सो काहेतें तब कृस्नदास नें कह्यो जो महाराज तुम्हारी आज्ञा न मानें तो सेवक काहे को सेवक कों तो आग्या प्रमान चलनो सो कृस्नदास एसे कृपापात्र हें प्रभून की आज्ञा प्रमान मानते तातें श्री आचार्य जी महाप्रभू कृस्नदास के ऊपर सदां प्रसन्न रहते पाछें सुषरता को दोष मनमें न लावते ऐसे आप उदार राच जीवन की ओर न देषते दया राषते और अपनी ओरतें दयाराषि जीवन कों अंगीकार करते जीवन की ओर को बिचार न करते कृस्नदास मार्ग तथा घरमें सदैव रहते सो वे कृस्नदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के एसे कृपा पात्र भगवदीय हें तातें इन की वार्ता को पार नाही सो अब कहां तांईं लिषिये वार्त्ता प्रसंग ७

संबद २४ वैस्नव २

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके सेवक दामोदरदाससंबलवारक्षत्रीकनौंजकेबासीतिन की वार्ता

सो दामोदर दास कौं एक पत्र ताम्रे को पायो और स्वप्नमें वासों कह्यो जो या पत्र कौं बांचे ताकी तू सरन जैयो सो वह पत्र काहूसों बांच्यो न जाय सो कितने क दिन पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू कनौंज पधारे तहां गांमके बाहिर आप उतरे और कृस्नदास मेघनकों गांम में पठायो और कह्यो जो सीधो सामग्री ले आउ परि काहूसों कहियो मति जो श्री आचार्यजीमहाप्रभू इहां पधारे हैं तब कृस्नदास गांम में जाय सीधो सामग्री सब लीनों सो लेकें जब चलन लागे तब दामोदर दास ताहीसमय राजद्वार तें आवत हुते सो मार्गे जात कृस्नदासकौं देषो तब दामोदर दास घोरातें उतरिकें कृस्नदासके पास आए और दंडवत कीए पाछें पूछो जो तुम कहां तें आए और श्री आचार्यजीमहाप्रभू पधारे हैं तब कृस्नदासनें कह्यो जो आज्ञा नाहीं तब दामोदर दासनें कह्यो जो ए श्री आचार्यजीमहाप्रभून बिना काहे कों आवें सो जब कृस्नदासचलेत

व पाछें पाछें दामोदर दास आए और घोरा हो सो पछा
यदी यो सो कृष्न दास कों दूरि तें आवत श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें देषो पाछें दामोदर दास को देषो तब दा
मोदर दास नें दंडोत कीनी तब कृष्न दास सों श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें पूछो जो तैंने यासों क्यों कह्यो तब कृ
ष्न दास नें कही जो महाराज मैंने तो इन सों नाहीं कही
तब दामोदर दास नें बीनती कीनी जो महाराज इन मो
सों नाहीं कह्यो हूं तो इन के पाछें पाछें चल्यो आयो हों
और श्री आचार्य जी महाप्रभू नांहीं की एसो यातें ता
दिन कनौज पधारेंगे तब पावन करने हैं तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभू मन में बिचारें जो आज्ञा भई है सो आपु
ही होयगी ता के लीए नांही कही हुती पाछें श्री आचा
र्य जी महाप्रभून नें दामोदर दास सों पूछो जो पत्र ला
यो है तब दामोदर दास नें बीनती कीनी जो महाराज प
त्र को कहा कांम है मोकों सरण लीजिये तब श्री आ
चार्य जी महाप्रभून नें कही जो तो कों आज्ञा भई है
जो यह पत्र बांचे ता की तू सरण जईयो तातें पत्र लावत
व पत्र मगायो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पत्र
बांच्यो पाछें वा पत्र को अभिप्राय दामोदर दास सों

कह्यो दामोदर दास कों पाछें नाम सुनायो पाछें श्री-
आचार्य जी महाप्रभून कों दामोदर दास नें अपने
घर पधराए पाछें दामोदर दास तथा दामोदर दास
की स्त्री दोऊ जने स्नान करि कें श्री आचार्य जी महा
प्रभून की सरण आए तब दामोदर दास कों समर्पण
करवायो और दामोदर दास की स्त्री कों प्रथम नाम सु
नायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें समर्पण क
रवायो तब दामोदर दास नें बीनती कीनी जो महारा
ज अब हम कों कहा आज्ञा है अब हम कहा करें तब
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आज्ञा करी जो अब तुम
सेवा करो तब दामोदर दास नें कही जो महाराज सेवा
कौन भांति करें तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कही
जो कहूं श्री ठाकुर जी को स्वरूप देखो सो एक दरजी के
घर श्री ठाकुर जी को स्वरूप हुतो सो ताकों दामोदर दा
स द्रव्य देकें ले आए पाछें सब घर पो स्योपाच सब वस्त्र ला
ए पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें वा स्वरूप कों पंचा
मृत सों स्नान करवायो श्री द्वारिका नाथ जी नाम ध
र्यो पाछें सिंघासन वैठाए तब दामोदर दास के मांथें
सेवा पधराय कें पाछें भोग समर्प्यो समयानुसार

भोग सराय बीडा समर्पन लागे तब देषें तो पान हो हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो दमो दर दास हरे पान कबहू न समर्पिये उत्तिम सामग्री होय सो श्री ठाकुरजी कों समर्पिये श्री ठाकुरजी तो उत्तम बस्तु के भोक्ता हैं पाछें स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे तब श्री द्वारिकानाथ जी की से वा भली भांति सों होंन लागी और श्री आचार्य जी महाप्रभूननें आज्ञा दीनी जो उतर्यो परकालो होय सो श्री ठाकुरजी कों कबहून समर्पिये वहका मन आवे सो रे परकाले में तें प्रथम श्री ठाकुरजी कों लीजिये और उत्तम कोमल वस्तु होंय सो श्री ठाकु रजी के काम आवें पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें और आज्ञा दीनी जो उत्तिम सामग्री होय सो श्री ठाकुरजी के लीए अपने घर ले आईये श्री ठाकुर जी की सामग्री में तें और ठौर षरच न करिये तब दा मोदर दास स्त्री पुरुष दोऊ जने भली भांति सों सेवा करन लागे और सामग्री उज्जल होती जो रूपान के कटोरान में अपरस राषते सो ऐसी उज्जल को ई जान तो नाहीं जो यामें सामग्री है या भांति सों सेवा

करनलागे॥वार्ताप्रसंग २ श्रौर दामोदरदास श्रीठाकुरजीको जल श्रापभरते सो एकदिन दामोदरदासको सुसर दामोदर दासके घर श्रायकें दामोदरदाससों कहनलाग्यो जो तुम जलभरिलावत हो सो हमकों जातिमें लज्या श्रावत है तातें तुम जल मति भरो लोंडीके पास जल भरवावो तब दामोदरदास नें एक घडा तो श्रापलीयो श्रौर एक घडा स्त्री केहाथमें दीयो तब दीऊ जने घडा लेकें वाकी हाट केश्रागेहोयकनिकसे तब जलभरि कें घर श्राए पाछें दामोदरदास को सुसर श्रायो सो श्रायकें दामोदरदासके पावन परयो श्रौर कह्यो जो में चूकयो श्रबतें तुम ही जल भरो परि स्त्रीपास जलमति भरावो श्राज पाछें हम कछू न कहेंगे तब श्रापुही जल भरन लागे जो चाहिये सो श्रीद्वारिकानाथजी दामोदरदासके पास मांगि लेते बातें करते सेवा करिकें श्रीठाकुरजीकों ऐसे प्रसन्न कीए तब श्रीश्राचार्यजी महाप्रभू श्रापने श्रीमुखतें कहे जो जिनने राजा श्रंबरीख न देख्यो होइ सो दामोदरदास कों देखे राजा श्रंबरीष तो मर्यादामार्गीय हुते श्रौर ये पुष्टमार्गीय हें इनमें इतनी श्रधिक नाहें॥

वार्ता प्रसंग २ और एक दिन उष्ण काल के दिन हु
ते तव श्रीद्वारिकानाथ जी कों पोढाए आप दामोद
र दास जाय कें चोषारे में सोए सोऊ दिन गरमी बहुत भई
तव श्री द्वारिकानाथ जी नें लोंडी कों आज्ञा दीनी जो
किवाड षोलि मोकों गरमी बहुत लगत है तव लोंडी
नें किवाड खोले तव श्री द्वारिकानाथ जी नें लोंडी सें
कह्यो जो पंखा करि तव लोंडी में पंखा कीयो सो घडी
एक लों पंखा की यो पाछें लोंडी सों कह्यो जो अब तू जा
य कें सोय रहि तव लोंडी किवाड खुले छोडि कें सोय र
ही तव सवारो भयो तव दामोदर दास देखें तो किवाड
खुले परे हैं तव पूछो जो किवाड किन खोले तव लोंडी
नें कही जो मोकों श्री ठाकुर जी नें किवाड खोलन की
आज्ञा करी है तव किवाड खोले हैं तव दामोदर लोंडी
सों बहुत षीजे और कह्यो जो तेंनें किवाड क्यों षोले -
जो मोकों श्री ठाकुर जी नें किवाड षोलन की आज्ञा
कों न करी आप कों न खोले और लोंडी सों क्यों क-
ही परि प्रभू बडे दयाल हैं ता विषें स्नेह होय ताही सों
संभासन करें श्री आचार्य जी महाप्रभून के अंगीका
र में सब समान है तो किकमें कोऊ ऊंच नीच कहिले

उ श्री ठाकुरजी तो स्त्रे हुके वसहें पाछें श्री ठाकुरजी
नें कह्यो जो मेंनें किवाड खुलाएहें तव इन खोले हैं तू
तो चोवारे में जाय सोयो औार मोकों भीतर सुवायो
मोकों गरमी बहुत लगी तातें खुलाएहें तू लोंडीसों को
षीजत है यों कहिकें बहुत षीजे तब दामोदरदासनें क
ह्यो जो प्रसाद तब लेउं जब मंदिर समराऊं तब स्त्रीनें
कह्यो जो एसें क्यों बनें यह तो पांच सात दिन को काम
नाही प्रसाद लीए विना क्यों चलें तब कह्यो जो प्रसाद
तो नाही लेउं फलाहार करूंगो तब एसें करत करत मंदि
र सिद्ध भयो तब श्री द्वारिकानाथजी कों मंदिर में पाठ
बैठाए तब उत्सव कीयो वैस्नव कों महाप्रसाद लिवा
यो ता पाछें प्रसाद लीयो प्रसंग ३ औार एक दिन दामो
दरदास श्री ठाकुरजी को राजभोग समर्पिकें सईया
मंदिर में समारन गए तब देषें तो दुलीचा ऊपर विल्ली
ने बिगार कीयो है तब दामोदरदासनें कही जो श्री ठा
कुरजी अपनी सईया हू राषि सकत नाही ऐसें कह्यो
तब श्री ठाकुरजी नें थार चोकी ऊपर सों लात मारिकें
डारि दीनों औार दामोदरदास सों श्री ठाकुरजीनें कह्यो
जो तू कैंसो सेवक है सेवक होयकें या भांति कहत है

गसें बहुत षीजे पाछें दामोदरदास नें बीनती कीनी मनुहार बहुत करी सामग्री सिद्ध करवाय कें श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो तब श्रीठाकुरजी आरोगे परि तो हू मास दोय लों बोले नाहीं तब दामोदरदास नें बहुत बीनती कीनी तब फेरि बोलन लागे वार्ताप्रसंग ४ वहुरि एक समें दामोदरदास हरसांनी इनके घर पाहुने आए सो दामोदरदास संवलवार के घर पाच सात दिन रहे तब इन भलीभांति सों समाधान कीयो पाछें दामोदरदास हरसांनी इन सों बिदा होयकें अडेल आए तब श्रीआचार्यजी महाप्रभून नें दामोदरदास सों कह्यो जो दमला तू कहां उतर्यो हो और कहां प्रसाद लीयो हो तब दामोदरदास हरसांनी नें श्रीआचार्यजी महाप्रभून सों बीनती कीनी जो महाराज कनोंज में दामोदरदास संवलवार के घर उतर्यो हो परि अनसखडी महाप्रसाद लेतो सखडी न लेतो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू दामोदरदास संबलवार के ऊपर अप्रसन्न भए और कह्यो जो यह मेरो अंतरंग सेवक याकी सखडी महाप्रसाद क्यों न लिवायो सो यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभून के अंतःकरन की दामोदरदास संवलवा

रनें घर बैठें जानी जो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप
अप्रसन्न भए मेरे ऊपर तब स्त्री सों कह्यो जो तू श्री ठा
कुरजी की सेवा नीकी भांति सों करियो और में तो श्री
आचार्य जी महाप्रभू नके चरन देषिवे कों अडेल
जात हों सो तब तहां तें चले सो अडेल जायप हुं
चे तब श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करिकें
साष्टांग दंडवत कीए तब श्री आचार्य जी महाप्रभू
पीठि दे बैठे तब दामोदर दास संवलवार नें श्री आचा
र्यजी महाप्रभू न सों बीनती कीनी जो महाराज मेरो अ
पराध कहा है और जीव तो अपराध करत ही आयो है
परि अपराध जानियें तो भलो है तब श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें कह्यो जो तेंनें दामोदर दास हरसांनी कों
अपने घर महाप्रसाद अनसखडी कों लिवायो सख
डी क्यों न लिवायो तब दामोदर दास संवलवार नें बीन
ती कीनी जो महाराज दामोदर दास सों आप पूछिये
जो सखडी क्यों न लीनी तब श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें दामोदर हरसांनी सों कह्यो जो तेंनें सखडी म
हाप्रसाद क्यों न लीनों तब दामोदर दास नें कह्यो जो
महाराज श्री ठाकुर जी प्रातःकाल बालभोग आरो

गतें पाछें पकवांन मिठाई दूध पाक बहुत ले तो सोस
खंडी की रूचिर हती नाही तातें न ले तो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो तू तो तेरी इच्छातें
न ले तो परि मोको तो याके ऊपर बडी षुनस भई हु
ती सो भक्तन के अंतः करन की वृत्ति देषिवे कों प्रभू
न को आगरन है काहे तें जो दामोदर दास संवलवा
रनें अपने घर बैठें कनौंज में श्री आचार्यजी मह
प्रभून के अंतः करन की जानी तो श्री आचार्यजी
महाप्रभू तो भक्तन के हृदय में सदा स्थिति हैं तो भ
क्तन के हृदय की बात क्यों न जानें परि भक्तन की प
रिक्षार्थ यह प्रभून को आगरन है पाछें दामोदरदास
संवलवार को बहुत सन्मांन करिकें श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें वाकों अपने घर कों पठायो तब दामो
दरदास अपने घर कनौंज में आए तब दोऊ स्त्री
पुरुष भली भांति सो सेवा करन लागे वार्ताप्रसंग ४
और सिंहनंद के वैष्नव श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के पास जाते सो सब कनौंज में दामोदरदास कों
मिलि कें जाते जो वैष्नव आवते तिन सबन कों क
नौंज में अपने घर आदर सन्मांन करिकें उतार

ते सबन कों महा प्रसाद लिवावते पाछें जब आपडे
रा बिदा होते तब तिन वे सब प्रति एक एक मही
र एक एक श्रीफल आचार्यजी महाप्रभून कों भे
ट पठावते कहते जो मेरी दंडोत षाली हाथन कै
सें करेंगे ऐसें श्री आचार्यजी महाप्रभू इन पर स
दा प्रसन्न रहते वार्ता प्रसंग ६ बहुर दामोदर
दास को सुसर बहुत प्रसन्न हुतो तिन एक सो लोंडी
बेटी के दायजेमें दीनी जो मेरी बेटी बैठी रहेगी का
म काज सब लोंडी करेंगी परि ऐसें न करती सेवा-
संबंधी कार्य सब आपु करती सो वह एसी भगव
दीय ही वार्ता प्रसंग ७ बहुर एक समें श्री आचा
र्यजी महाप्रभू आय दामोदर दास के घर पोढे हुते
और दामोदर दास पाव दावत हुतो तब श्री आचा
र्यजी महाप्रभून नें दामोदर दास सों पूछो जो दा
मोदर दास तेरे मनमें काहू बात को मनोरथ है तब
दामोदर दास नें कह्यो जो महाराज मोकों तो आ
पके अनुग्रह तें काहू बात को मनोरथ रह्यो नाहीं
तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो तू अप
नी स्त्री सों पूछि आउ जो तोकों काहू बात को मनो

रथहै तब दामोदर दास जाय कें अपनी ऽस्त्रीसोंपू
छी जो तेरें काहू बातको मनोरथहै तव ऽस्त्रीनेंक
ह्योजो कोई बात को मनोरथ रह्यो नाही एकपुत्र
को मनोरथहै एकपुत्र होयतो भलो तब यह बा
त दामोदर दास नेंजायकें श्री आचार्यजीमहा
प्रभूनसों कही जो महाराज ऽस्त्रीको मनोरथहैजो
एकपुत्रहोयतोभलोहै तबश्री आचार्यजीमहाप्र
भूआप कहें जोहां होयगो पाछें श्री आचार्यजी
महा प्रभू आपतो श्री नाथ जी द्वार पधारे पाछें
जब वाकें समयभयो तव ऽस्त्री गर्भस्थिति भई पा
छें वा बाषरमें कितने क दिनमें एक डाकोतियाआ
यो तव वाकोंसबसाथ कीऽस्त्रीपूछन लागी तब
तामें ते काहू ने दामोदर दास कीऽस्त्री सों कही जो
अमुकी तूहूपूछि देखि जो कहा होयगो बेटा होय
गो कै बेटी होयगी पाछें वाकी लोंडीनेंजायकेंवा
डाकोतिया सों पूछी जो दामोदर दास की ऽस्त्रीकेंक
हा होय गो बेटा होयगो कै बेटी होयगी तब वाडा
कोतिया नें कही जोबेटा होयगो पाछें श्री आचा
र्यजी महाप्रभू कितनेक दिनमें कनौजमेंपधारे

तब दामोदरदास चरण छूवन लागे तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून नें कह्यो जो मो को छूवे मति तो कों अ
न्याश्रय भयो है तब दामोदरदास नें कह्यो जो मह
राज में तो कछू जानत नाही हों तब श्री आचार्यजी
महाप्रभूननें कह्यो जो तू अपनी स्त्री सों पूछि आ
उ तब दामोदरदास नें स्त्री सों पूछें जो तेंनें कछू अ
न्याश्रय कीनों है तब स्त्रीनें जो प्रकार भयो हुतो
सो सब कह्यो सो बात श्री आचार्य जी महाप्रभून
सों कही तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कही
जो याके पेट में मलेक्ष होयगो पाछें श्री आचार्य-
जी महाप्रभू आपतो अडेल पधारे पाछें यह बात-
दामोदरदास की स्त्रीनें सुनी तब तें श्री ठाकुरजी
के पात्र तथा स्पर्स न करती और कहती जो मे-
रे पेट में मलेक्ष है तातें में श्री ठाकुरजी के पात्र
तथा सामिग्री कैसें छूऊं या भांति सों कहती पा
छें जब प्रसूत के दिन आए तब दामोदरदास-
की स्त्रीनें अपनी महतारी सों कहवाय पठाई जो
मेरें पुत्र होयगो सो होत मात्र तू अपने घर ले जैयो
हम वाको मुख न देखेंगे जो हम वाको मुख देखेंगे

तो हमारो धर्म नष्ट होयगो तातें हम वाको मुख न दे-
खेंगे सो उपाय तू करियो पाछें वा की मह तारीनें ए
सेंही कीयो प्रसूत होत मात्र अपने घर ले गई पाछें
धायकों देकें बडो कीयो वार्ता प्रसंग ८ बहुरि कित
नेक दिन पाछें दामोदर दास की देह छूटी तब वाकी
स्त्री नें छिपाय राषो पाछें वा स्त्रीनें एक वैष्नव सों
कही जो तुम अडेल कों एक नाव भाडें करि ला वो
सो वह वैष्नव भाडें करि लायो ता नाव में श्री द्वारि
का नाथजी और घर में की सामिग्री तिनूं कापर्यंत
कछू घरमें राष्यो नाही घर में जो हुतो सो सब नावमें
भर्यो तब वा वैष्नव सो कह्यो जो यह नाव अडेल
कों लेजाउ श्री आचार्यजी महाप्रभू न के मंदिरमें प
हुचाय आवो सो वह वैष्नव नाव लेकें चल्यो सो कोस
तीस पर नाव गइ ता पाछें स्त्री नें प्रगट करी जो दामो
दर दास की देह छूटी हे तव वैष्नव जुरि आए दामो
दर दास को संस्कार कीयो पाछें दामोदर दास को वेरा
तुरक भयो हुतो सो आयो आय कें घर में देषे तो कछू
नाही जल को भर्यो कर वा घरमें धर्यो हे सो देषिकें
मूड पीटि रह्यो पाछें दामोदर दास को सुसर आयो

तिन नें अपनी बेटी सों कह्यो जो बेटी तुमनें घरमें क
छू राष्यो नाही सो तू अब कहा षाइगी तब वानें कही
जो तुम देउगे सो में षाउंगी क्षत्री लोगन के पास में स
गे सो दरे कछू देत हैं ऐसी ग्यात की कछू रीति है तब दा
मोदर दास की स्त्री नें अन्न जल को त्याग कीयो सो
थोरेसे दिन में वाकीहू देह छूटी तब कृत्य दोऊन कोसाथ
ही भयो वह ऐसी भगवदीयही सो यह बात कितनेक
दिन पाछें काहू वैष्नव ने श्री आचार्य जी महा प्रभून
के आगें आय कही तब श्री आचार्य जी महा प्रभून
नें कही इनकों यौंही चाहिये वे दोऊ जने ऐसे भगवदी
यहे उनकी सराहना श्री आचार्य जी महा प्रभू श्रीमुष
तें करतें तातें इनकी वार्ता अनिर्बचनीय है इनकीवा
र्ता कहां तांईं लिषिये वार्ता प्रसंग २५ संवंद २४

अब श्री आचार्यजीमहाप्रभून के सेवक
पद्मनाभ दास सनोडिया ब्राह्मण क
नौंज में रहते तिनकीबार्ता

सो एक समें श्री आचार्य जी महा प्रभू कनौंज पधा
रे तब पद्मनाभदास श्री आचार्यजी महा प्रभून के द
र्सन कों आए तब पद्मनाभदास नें श्री आचार्यजीमहा

प्रभून के श्रीमुखतें भगवत बार्ता को प्रसंग सुन्यों·
तब जानी जो एतो साक्षात ईश्वर हैं एसे श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के दर्सन भए प्रथम पद्मनाभदास·
व्यास आसन बैठते सो कनौज में अपने घर कथा क
हते ऊंचे आसन बैठते श्रोता बहुत कथा सुनिबे कों·
आवते काहू के घर आनौंन पड़तो वृत्त घर बैठे चली·
आवती याभांति सों रहते सो पद्मनाभदास श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के श्रीमुखतें भगवत प्रसंग सुन्यों तब
यह जान्यों जो एसाक्षात पूरन पुरुषोत्तम हैं सो पूरन पु
रुषोत्तम जानिकें पद्मनाभदास श्री आचार्यजी महा·
प्रभून की सरण आए नाम पायो पाछें समर्पण करवा
यो तब उत्थापन के समय श्री आचार्यजी महाप्रभूननें
पोथी षोली तहां दामोदर संवल्लवार के घर बैठे हुते
तासमय पद्मनाभदास अपने घरतें आए श्री आचा
र्यजी महाप्रभून कों दंडौत करि कें बैठे तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें पोथी खोली और श्लोक
निबंधन को कह्यो श्लोक पठनीयं प्रयत्नेन स
र्व हेतु बिवर्जितं वृत्यर्थं नैव पुंजीत प्राणैः कंठग
तै रपि तदभावे तथै वस्या तथानि र्वाह सांचरेत·

१ यह श्लोक पढे सो पद्मनाभदासनें सुन्यों पाछें दसमस्कंधकी कथा कही सो सुनी तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कथा कहि रहे तब पद्मनाभदासनें जलकी अंजुली भरिकें संकल्प कीयो जो अबतें कथा कहिवेको व्रत न करूंगो एसें श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके आगें संकल्प कीयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें श्रीमुखतें कह्यो जो श्रीभागवत वृत्य रथन कहनों और तों तुम्हारी वृत्य हैतु म ब्राह्मण हो और पुरांण महाभारथी तो इत्यादिक कहनों तब पद्मनाभदासनें कह्यो जो महाराज हमनें अब तो संकल्प कीयो सो तो कीयो या तें कछू न कहनों तब श्रीआचार्यजी महाप्रभू कहें जो तुम ग्रहस्थ हो सो कोंन भांति निर्वाह करोगे तब पद्मनाभदासने कह्यो जो महाराज भिक्षा मांगिकें निर्वाह करूंगो पाछें एक जिजमांनके घर वृत्य थें गए तिन तब बहुत आदर सन्मांन कीयो तब पद्मनाभदासके मनमें गिलान आई जो कबहू पहलें तो भिक्षा वृत्य करी नाही और अब वृद्ध भए ताकों तो यह भिक्षा हू उचित नाही तब

फेरि संकल्प कीयो जो अब तो भिक्षा कतिहून क
रूंगो तब फेरि श्री आचार्यजी महाप्रभून नें क
ह्यो जो अब निर्वाह कौन भांति करोगे तब पद्मना
भदासनें कही जो अब वैष्णव कि कृत करि निर्वा-
ह करूंगो पाछें कोडी बेचते लकडी ले आवते परि
और बात न बिचारी या भांति देहादि पर्यंत निर्वाह
कीनों एसे टेक के कृपापात्र भगवदीय हैं वार्ताप्र
संग १ अब श्री आचार्यजी महाप्रभू प्रियागमें प
धारे हैं तब पद्मनाभदास साथ हैं रात्र पहर एक ग
ई ही तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें पद्मनाभदा
ससों कही जो श्री अक्काजी कों पारतें पधराय ल्यावो
सो सुनत ही पद्मनाभदास उठि चले तव पांच सात
वैष्णव तहां बैठे हुते सो कहन लागे जो यह ब्राह्मण बा
वरो भयो है या बेर कहां जायगो नाव सब बंधी हैं घ
टवार सब घर गए हैं तातें यह बिरियां जायबे की न
ही परि याकों तो श्री आचार्यजी महाप्रभून की आ
ज्ञा है ताको विस्वास जो यह काम अवस्य होयगो सो घा
ट ऊपर आए तव इत उत देषन लागे इतने में देषें तो
अकसमात एक लरिका वरस दस को एक डोंगी ले

कें आयो सो वानें पद्मनाभदासकों पूछो जो तू पार
जायगो तब पद्मनाभदासनें कह्यो जो हां हां जाऊंगो
तब उनपार उतार दीनों पाछें फेरि पूछो जो तू फेरि
आवेगो तब पद्मनाभदासनें कह्यो जो घडी दोय
पाछें आऊंगो तब लरिकानें कह्यो जो डोंगी राष
तहीं तू वेगो आईयों पाछें अडेलमें जाय कें श्री आ
काजी को पधराय ल्याए तब वाही डोंगीमें वैठाय पार
उतारे तब फेरि देषें तो वहां डोंगीहू नाही और लरि
काहू नाही पाछें श्री अकाजी कों पधराय कें घर आ
यो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें पद्मनाभदास
कों आज्ञा दीनी जो जाउ सोय रहो जब जहां वैस्नव सो
एहुते तहां आए तब वैस्नव सब पूछन लागे जो तु
म कहा करि आए तब पद्मनाभदासनें सब समाचा
र कहे तब वैस्नवननें कह्यो जो तेनें श्री ठाकुरजी-
कों श्रम बहुत करवायो पाछें वैस्नवननें श्री आचा
र्यजी महाप्रभूनसों पूछो जो महाराज पद्मनाभदास
नें श्री ठाकुरजीकों श्रम बहुत करवायो तव श्री आ
चार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो यह जो भयो है कछू
सो मेरी इच्छातें भयो है तातें तुम पद्मनाभदाससें

कछू मतिकहो वार्त्ताप्रसंग २ वहुरिएकसमेंश्री
आचार्यजीमहाप्रभू श्रीगोकुलतें अडेलकोंजा
तहुते तव एक व्योपारी कछूवस्तुलेकेंसाथमेंच
ल्यो औरश्री आचार्यजीमहाप्रभूकनोंजकेवी
च पधारे तव व्योपारीपीछेंरह्योताकेऊपरचोरआ
य पडे सो वस्तुसवलूटिलीनी औरश्री आचार्यजी
महाप्रभू आपतो दामोदर दास संवलवार केघरप
धारे सो उहांउतरे रसोई करि श्री ठाकुरजीकोभो
गसमर्प्यो इतनेमें वह व्योपारी रोवत पीटतआयो
तवपूछी जो श्री आचार्यजी महाप्रभु कहाकरत
हैं तव पद्मनाभदास नें कह्यो जो भोजनकरतहों
यगे तब वा व्योपारी ने कह्यो जो हमारोमालसब
लुटिगयोहै औरश्री आचार्यजी महाप्रभूभोज
न करतहें तवपद्मनाभदासनें अपने मन मेंविचार्यो
जो श्री आचार्यजी महाप्रभूसुनेंगेतो भोजन न करेंगे
घडी दोयकी अबार होयगी तातें पद्मनाभदास वा
व्योपारी की वाहपकरिकें एकसाहूकी दुकानपेलेग
ए तासाहूनें पद्मनाभदासको वहुत आदर सन्मान
कीयो तव वानें कह्यो जो आज्ञा करोकेंसेंपधारे

हो तवपद्मनाभ दासनें व्हा साहूसों कह्यो जो या व्योपारी कों इतनों द्रिव्य दीयो चाहिये या द्रिव्य को षतपत्र व्याज हम लिखदेंयगे तव साहूनें कह्यो जो पद्मनाभदासजी तुमकों जितनों द्रिव्य चाहिये तितनों लेउ खतपत्र की कहा बात है तब पद्मनाभ दासनें कह्यो जो पहलें तो खत पत्र लिखें गो पीछें द्रिव्य लेंउगो विना खत लिखें तो में लेंउगो नाही तब साहूनें कही जो तुम्हारी इच्छा पाछें पद्मनाभ दासनें खत लिष दीनों तब साहूनें व्हा व्योपारी कों द्रिव्य दीयो तब वह व्योपारी तो अपनों द्रिव्य लेकें अपने घर गयो तवपद्मनाभ दास अपने घर आए तब पद्मनाभ दाससों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें पूछो जो पद्मनाभ दास तू कहां गयो हो तब पद्मनाभ दासनें कह्यो जो महाराज एक काम गयो हो सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आप तो साक्षात् ईश्वर सो तत्काल जानि गए तवपद्मनाभ दाससों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो हम व्हा व्योपारी कों संग तो न लीनो हुतो जो व्हा कों माल देनों वह पीछें रह्यो तो हम कहा करें परितैनें वहुत वुरी करी जो रिण काढि कें पैसा दीनों तव

पद्मनाभदासनें कही जो महाराज सो तो सांच परि-
ग्रह ब्योपारी पुकारतो तो राजभोजन कों दोयघडी-
की अवार होती तो मेरो जन्म सबवृथा जातो और-
रिण तो कालि देउगो यह कितनी कबातहै तब श्री
आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो तेंनें धर्म गहनें लिषि
दीनों सो काहे तें तब पद्मनाभदासनें कह्यो जो महा
राज एसो गाढो लिषि दीयो जो विनादीयो न जाय पाछें
श्री आचार्यजी महाप्रभू तो अडेल पधारे पाछें पद्म
नाभदास एक राजा हुतो ताके पास गए तब पद्मनाभ
दास को वा राजा ने बहुत आदर सन्मान कीयो पाछें
राजा नें कह्यो जो मोकों कृपा करिकें कछू सुनावो-
तब पद्मनाभदासनें कह्यो जो राजा श्री भागवत तो·
नाही सुनाउं कहो तो महाभारथ सुनाउं तब राजा
नें कह्यो जो महाभारथही सुनावो तब महाभारथ·
ही कहन लागे सो जब युद्ध को प्रसंग आयो तब सब
न के हथियार छुडाय धरे तब आगें कहन लागे·
सो कथा कहत में कोई बीर रस एसो उपज्यो सो आ
पुस में सब लात मुक्कीन सों लरन लागे पाछें किते
क दिन में महाभारथ संपूरण भयो तब राजा बहु

त दक्षणा देन लाग्यो तव पद्मनाभदासनें कह्यो जो इतनों तौ में नांही लेउगो मेरे माथें रिण है तितनों लेउं गो पाछें वा साहु को मूल व्याज देनों हुतो तितनों लीनों बाकी को फेरि दीनों पाछें साहु कों द्रिव्य देकें षत फारि डारो वार्त्ता प्रसंग ३ और पद्मनाभदासकें एक बेटी कुमारी हुती ताके निमित्त एक वर श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक चाहियत हुतो सो वैष्नवन सों पूछन लागे तव वैष्नवननें कह्यो जो एक वर श्री आचार्यजी महाप्रभून को सेवक है परि सनोडिया ब्राह्मण है सो पद्मनाभदास कों लोक कल्याद्धि में बिबहार की सुधि रही नाहीं वैष्नवन कह्यो जो भलो वैष्नव है सो या कों वेटी दीजिये तव पद्मनाभदास नें कह्यो जो भलो सो पद्मनाभदासनें वा वैष्नव को तिलक कीयो विवाह सही करिकें अपने घर आए तव तुलसा वडी वेटी हुती तासों कह्यो जो अपनी बेटी को विवाह अमुके वैष्नव सों सही करि आयो हों तव तुलसानें कह्यो जो वह तो सनोंडिया ब्राह्मण है और आपन कनोंजिया ब्राह्मण हैं सो एसें कैसें होय तव पद्मनाभदासनें कही जो अव तो भई सो भई तव तुल

सानें कह्यो जो सगाई फेरो तब पद्मनाभदासनेंक
ही जो सगाई कैसें फेरी जाय छुरी लावो मेरो अंगूठ
काटें तब तुलसानें कह्यो जो अंगूठा कैसें काटो जा
य तब पद्मनाभदासनें कह्यो जो सगाई कैसें फेरी
जाय जो अंगूठा काटे तो सगाई फेरी जाय पाछें पद्म
नाभदासनें विवाह करि दीयो ग्यातिके सब्ब मा
रि रहे वैष्नवके कहेको विस्वास तातें सगाई न फेरी
वार्ता प्रसंग ४ और एक क्षत्राणी पद्मनाभदासके
घर नित्य आवती तब एक दिन तुलसानें कह्यो जो
क्षत्राणी तू नित्य क्यों आवत है तब वा क्षत्राणीनें क
ही जे पद्मनाभदास बडे भगवदीय हैं और बडे महा
पुरुष हैं और मेरें संतति नाहीं होत है तातें आवत हों ता
तें तुम पद्मनाभदाससों मेरी बीनती करो तब एक दि
न तुलसानें पद्मनाभदाससों कह्यो जो पद्मनाभदा
स एक क्षत्राणीके संतति नाहीं होत है ताके लीए तुम
सों वीनती करत हों तब पद्मनाभदासनें कह्यो जो तुल
सा जल लाउ तब तुलसानें जल लायकें आगें धर्यो
तब जल लेकें अपनें अंगूठाको चरणोदक करिकें
पद्मनाभदासनें वा क्षत्राणीकों चरणोदक दीयो

और कह्यो जो जा तेरें पुत्र होयगो ताको तू मथुरादास नामधरियो पाछें वाके पुत्रभयो वार्ताप्रसंग ५ और एकसमें बडेरामदासजी अपने सेव्य ठाकुरजीकों पद्मनाभदासकेघर पधरायके आप श्रीनाथजी कीसेवाकरनलागे श्रीनाथजीकेभीतरियाभए तब पद्मनाभदास श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागेसो कितेक दिन पाछें मुगल की फौज आई तानें गाम लूट्यो सो श्रीठाकुरजीकों मुगल लेगयो तब पद्मनाभदास वा मुगल के पाछें सातदिन लों रहे जलपान न कर्यो तब वा मुगलसों वाकी मुगलानीनें कह्यो जो यह ब्राह्मण जलपान हू नाहीं करत याकों सातदिनभए हैं अन्नजल छोडें सो जो यह ब्राह्मण मरेंगो तो तेरे माथे हत्या चढेगी तो तेरों संग छोडि देंउगी नातर देव याके तेरेपास हैं सो तुम देव याके देउ तब वा मुगलनें पद्मनाभदास कों श्रीठाकुरजी दीये सो लके पद्मनाभदास अति आनंद पायकें अपने घर आए पाछें आप स्नान करि श्रीठाकुरजी कों पंचामृत सों स्नान करिवायो अंग वस्त्र करि शृंगार कीयो रसोंई करि भोग समर्प्यो पाछें-

समयानुसार भोगसराय अनोसर करि पाछें महा प्रसाद आपु लीयो और जादिन तें वा कनोंजमें श्री ठाकुर जीवा मुगल के हाथ परे सो तादिन रामदा सनें हूं यह बात जानी सो तादिन तें बड़े राम दासनें हूं सात दिन तांई महा प्रसाद नांही लीनों परि श्रीना थजी की सेवा सावधानी सों करत रहे यह वात प द्मनाभ दासनें घर बैठें जानी जो रांम दासहूयावात के ऊपर बहुत दुख पायो सातदिन लों जलपान हू नाही लीयो यह जानि पद्मनाभदास श्री नाथ जी के दर्शन तथा रांम दासजी सों मिलिवे कों श्री नाथ जी द्वार आए तब श्री नाथ जी दर्शन कीए पाछें रांम दासजी सोंमिले तब रामदास जीनें पद्मनाभदास सोंकह्यो जो तुमनें बहुत दुख पायो तब पद्मनाभदा सनें कह्यो जो हूं तो दुखपायो सो तो न्याव है परितुम मेरे मांथे सेवा पधराय आए और तुमनें सात दिन लों महा प्रसाद नाहीं लीयो सो काहेतें तब रामदासनें क ह्यो जो तुम कहत हो सो तो सांच है परि मेंहूं नें बहुत दि न लों सेवा कीनी है तातें इतनों तो संबंध चहियेपाछें कितनेक दिन लों उहां रहिकें पद्मनाभ दास श्रीना

थ जीसों तथा राम दासजी सों विदा होय कें अपने घर आ
ए पाछें सेवा करन लागे वार्त्ताप्रसंग ६ और एक समें
पद्मनाभदास अपने सेव्य श्री ठाकुरजी श्रीमथुरानाथ
थजी तथा अपनों कुटंब लेकें अडेल आयरहे परिद्र
व्य कौ संकोच बहुत हुतो तातें श्रीठाकुरजी कों भोग
समर्पते सो छोला तलि कें समर्पते सो छोला आछी
रीति सों बीनि कें पहले दिन भिजोय राषते दूसरे दिन
नी की भांति सों तलि कें परोसते एक मुट्ठी धरिकें कहें
जो यह दारि एक मुट्ठी भरि के धरें और कहें जो यह
रोटी है या भांति जितने सालन होंय तितने न को
नाम लेकें एक एक मुट्ठी समर्पते या भांति सों नित्य
करते सो श्री ठाकुरजी सोही आरोगते पाछें एक वै
ष्नव नें श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें कह्यो जो
महाराज पद्मनाभदास श्री ठाकुरजी कों या भांति-
समर्पत हैं सो एक दिन श्री आचार्य महाप्रभू भोग
समर्पवे की बिरियां आप पद्मनाभदास के घर प
धारे सो जैसें नित्य भोग समर्पते तैसेंई पद्मनाभ-
दास नें भोग समर्प्यो हो सो जब भोग सरायो तब
पद्मनाभदास नें कह्यो जो महाराज यह षीर है-

यह भातहै यह दारिहैं यह साकहै यह सिषिरनहै यह रोटीहैं यह वराहैं ऐसें कहिकें सब सामग्रीनको नाम लेकें छोरानकी देरी बनाई तव श्रीआचार्य जीमहाप्रभूनकोहृदेभरिआयो और कह्योजोद्रव्य कोसंकोचहै ताकेलीरों ऐसें करतहै पाछें श्रीआचा र्यजी महाप्रभू आपतो घरकोंपधारे तव श्रीअक्का जीसों कह्यो जो पद्मनाभ दास के घर नित्य रसोई की सामग्री पठावतिरहियो तब दूसरेदिन श्रीआचार्य जीमहाप्रभूननें पद्मनाभदासके घर सीधो सामग्री पठायो तव पद्मनाभदासनें तुलसा सों कह्यो जो इहांते अब प्रभू काढनहारभएहैं तब पद्मनाभदासनें दिनद्वेचा रिको सामान करि पाछें अपने सैव्य ठाकुरजी श्रीमथु रानाथजीसों कहीजो महाराज कोमन होयतो श्री आ- चार्यजी महाप्रभून के पास पधराय आऊं तहां सकल- सामग्री सिद्धिहैं तब श्रीमथुरानाथजीनें कह्यो जो मो- कों तेरोहीकीयोभावतहै तातें तेरे इहां बहुत प्रसन्यहों तू कछू संकोच मतिकरे ऐसें श्रीमथुरानाथजी आप क हें तव पद्मनाभदासनें नाव भाडेंकीनी तामें श्रीठाकुरजी पधराए और सब कुटंब नावमें बैठायकें आप श्री आ

चार्यजी महाप्रभून सों विदा होन गए और सीधोस
मग्री दिन द्वैचारि को आयो हुतो सो भंडारी कों फे
रि देकें आपश्री आचार्य महाप्रभून के पास विदा
होयकें दर्शन करिकें दंडोत करिकें कह्यो जो म
हाराज हमतो चलत हैं तब श्री आचार्यजीमहा
प्रभून नें पूछो जो श्री मथुरानाथजी कहां हैं तब
पद्मनाभ दासनें कह्यो जो महाराज श्री ठाकुरजी
तो नाव में बिराजत हैं श्री ठाकुरजी कों नावमेंप
धराय कें हों महाराज के पास दर्शन करिबेकोंत
था विदा होयवे कों आयो हूं तब श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें पद्मनाभदास कों विदा कीयो पाछें
भंडारी नें आचार्यजी महाप्रभून सों आय कें क
ह्यो जो महाराज पद्मनाभदासके घर सीधोसाम
ग्री दिन द्वै चारिकी पठाई हुती सो पद्मनाभ दास
फेरि दे गए हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें
कह्यो जो सीधो सामग्री पठाई तातें पद्मनाभ दास
गयो नातर नजातो यह वात आप श्रीमुखते कही
सो पद्मनाभ दासकी वार्ता श्री गोकुलनाथजीश्री
सर्वोत्तम की टीका में लिषे हैं जो पद्मनाभदाससो

बिरला कोटि स्वपी दुर्ल्लभ हैं सो ये पद्म नाभ दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय है तातें इन की वार्ता को पार नाहीं पद्मनाभ दास की ऐसी ऐसी कितनी क वार्ता हैं बार्ता प्रसंग ॥७॥ बैस्नव ॥४॥ संबंध ॥३१॥४॥

अब श्री आचार्यजी महा प्रभून के
सेवक पद्म नाभदास की बेटी
तुलसा तिन की बार्ता लिख्यते

सो एक समें एक बैस्नव श्री आचार्यजी महाप्रभून को सेवक तुलसा के घर आयो सो श्री ठाकुरजी को दर्शन कीयो तब राजभोग समर्प्यो हो तब तुलसा नें वा बैस्नव सों कह्यो जो उठो स्नान करो महा प्रसाद ले. उ तब वा बैस्नव नें कह्यो जो हूं तो घर जाय के महाप्रसाद लेउगो तब स्नान करूंगो तब तुलसा चुप व्है रहीं पाछें वह बैस्नव उठिकें अपने घर गयो तब तुलसा के मनमें बहुत षेद भयो जो देषो मेरे घर तें बैस्नव भूषो गयो बहुरि मन में आई जो ग्याति व्यवहार के लीए सखडी न लीनी होइगी परि भलो सकारे पूरी करि महा प्रसाद लिवाऊंगी पाछें मेदा छांनि सिद्धि कर

वाई तब सोई पाछें रात्रि कों मथुरानाथजी पद्मना
भदास के सेव्य ठाकुर तिननें स्वप्नमें तुलसासों जता
यो जो सकारे वा वैष्णव कों सखडी महाप्रसाद लि
वाईयो वह वैष्णव अपने घर प्रसाद नाहीं लेय
गो पाछें वा वैष्णवसों स्वप्नमें कही जो सकारे तू
सखडो महाप्रसाद तुलसाके घर लीजियो पाछें
प्रातःकाल स्नान करि तुलसा नें पूरी करी श्रीठाकु
रजी कों जगाय सेवा करन लागी इतने में वह वैष्ण
व आयो श्रीठाकुरजी के दर्शन करि बैठिरह्यो तब
तुलसा भोग समर्पिकें बाहिर आई तब वा वैष्णवसों
कह्यो जो उठो स्नान करो महाप्रसाद लेउ तब वैष्ण
व नें कह्यो जो भलो तब वा वैष्णव नें स्नान करि ति
लक मुद्रा करिके स्मरन कीयो इतने में राजभोग
सरयो तब वा वैष्णवनें दर्शन कीए पाछें तुलसानें
श्रीठाकुरजीको अनोंसर करि तुलसा बाहिर आ
ई तब पूरी बूरा सधा मो वा वैष्णव के आगें राख्यो
और कह्यो जो महाप्रसाद लेउ तब वा वैष्णव नें
कह्यो जो यह तो नाहीं लेंउ गो हूं तो सखडी महाप्रसा
द लेंउ गो तब तुलसा नें कह्यो जो कछू संकोच मति

करी यह तो ग्याति बिन्न हारहैं तब वा बैष्नव नें कह्यो-
जो सो तो सांच पहले तो एसेंही मनमें आई हुती परि
अब तो आग्याभई है पाछें वा बैष्नव नें सखडी मह
प्रसाद लीयो तब दोऊ जने परस्पर प्रसंन्य भए बा
र्ता प्रसंग १ बहुरि एक दिन तुलसा के घर श्रीगुसां
ईंजी पधारे तब तुलसा नें भली भांति सों सेवा की
नी तातें श्री गुसांईं जी बहुत प्रसन्न भए और एक
दिन श्री गुसांईं जी भोजन करि कें पोढे हुते तब तु
लसा नें भगवद् वार्ता करी अति प्रसंन्य तामें श्री
गुसांईं जी कही जो पद्मनाभदास की संतति एसीही
चहिये पाछें श्री गुसांईं जी नें तुलसा सों पूछो जो श्री
ठाकुर जी सानुभावता जतावत हैं तब तुलसा नें-
कह्यो जो महाराज अब तो पेट भरि षाई यत है औ
र नींद भरि सोई यत है और श्री आचार्य जी महाप्र
भून के ग्रंथन को पाठ करियत है तब श्री गुसांईं जी
बहुत प्रसन्न भए वह तुलसा ऐसी भगवदी हुती ता
तें श्री ठाकुरजी आर्ति सहि न सके तातें वा तुलसा के
ऊपर श्रीगुसांईंजी बहुत प्रसन्न रहते तातें इनकी वार्ता
कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग २ ॥ बैष्नव ४

संबंध ॥२३॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभूनके
सेवक पद्म नाभ दासकोबेटाता
कीबहू पार्बती ताकीवार्ता

सो पार्बती श्री ठाकुरजी की सेवा नीकीभांतिसोंक
रती और पुरुषोत्तम दास मेहरा हून कों नीकीभांति
सों जान तो जब कनोंज जातो तब पार्वती के घर उत्त
रतो तब कितनेक दिन पाछें पार्वती के हाथ पांव
स्वेत है गए तबते श्री ठाकुरजी की रसोई करत त
था स्परस करत बहुत बहुत गिलान आवती तब
पुरुषोत्तम दास मेहरा कों पार्वतीनें पत्र लिख्यो ता
में लिख्यो जो मेरी वीनती श्री गुसांई जी सों कहियो
मेरी देहको यह प्रकार भयो है तातें मो कों सेवाकर
त पाक करत बहुत गिलान आवत है सो मैं कहा
करूं सो पुरुषोत्तम दास मेहरा नें पार्बती को लिख्यो
पत्र श्री गुसांई जी कों बांचि सुनायो और वीनती की
नी भेट की मोहर ही सो आगें राखी पाछें श्री गुसांई
जीनें पुरुषोत्तम दास मेहरा कों आग्या दीनीजोदि
न है चारि में कहूंगो पाछें दिन है चारि वीते तब श्री

गुसांईजीनें पुरुषोत्तमदास मेहरा कों आग्या दीनी जोपार्वती कोंपत्र लिषि तामेंलिषियोजोतूश्रीठाकुरजीकीसेवानीकीभांतिसों करियो काहूबातकी गिलान मति लाइयो श्री ठाकुरजी तेरोभोग सब आपुही ते दूरि करेंगे तब पुरुषोत्तमदास मेहरा नें पार्वती कों पत्र लिख्यो तामें श्रीगुसांईजीनें श्रीमुख ते बचन कहे सो लिषि पठाए सो वह पत्र पार्वती पै पहुंचो सोपत्र वांचिकें श्री गुसांईजी की आग्या ते सेवा प्रसन्न तासों करन लागी कछू गिलान मन मेंन हीं लावती पाछें महीना तीनि चारि में हाथ पावनी के भए तब पार्वती बहुत प्रसन्न भई सो प्रसन्न तासों सेवा करन लागी- बहुरि श्री गुसांईजी कों पत्र लिख्यो भेट पठाई और कह्यो जो महाराज के प्रताप तें नीकी भई हों सोपत्र वांचिकें श्री गुसांईजीबहुत प्रसन्न भए सोवहपार्वती बडी कृपापात्र भगवदीहुती प्रभूनके प्रमानचलती तातें श्री गुसांईजी इनके ऊपर सदा प्रसन्न रहते यह वार्ता सब पद्मनाभदास के कुटुंब की भई तातें पद्मनाभदास बडे भगवदीहें तातें इनकी वार्ता कहांतांई लिषिये प्रसंग १ वैष्नव ६ ॥ संबंध ३४॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभून के ॥
सेवक पद्मनाभदास को नाती
पार्वती को बेटा रघुनाथ
दासताकी वार्ता

सो रघुनाथदास बनारस में बहुत सास्त्र पढिके श्री गोकुल आयों तब श्री गुसांईंजी कों दंडोत की नी सो श्री गुसांईंजी बडेन की कांनिते इनके ऊपर कृपा करते कथा कहते सो रघुनाथदास सुनते सो एक दिन परमानंद सोनी नें इन सों पूछो जो रघुनाथदास तुम तो बहुत सास्त्र पढे हो पंडित हो आज श्री गुसांईं जी नें कहा कथा कही हुती सो कहो तब रघुनाथदास नें परमानंद सोनी सों कह्यो जो तुम तो सांच पूछत हो परि हूं तो कछू समझत नाहीं तब यह वात परमानंद सोनी नें श्री गुसांईंजी के आगें कही जो महाराज रघुनाथदास तो कछू समझत नाहीं पाछें श्री गुसांईंजी नें रघुनाथदास कों ग्रंथ दोय चारि पढाए और मार्ग की प्रनालिका कही पाछें रघुनाथदास समझन लाग्यो बडो पंडित भयो सो कितेक दिन पाछें अपने घर कनोज में

आयो तब मातासों कही जो हूं तो न्यारो होंउगो श्री ठाकुरजी की सेवा करूंगो तब माताने कही जो भलें ई तू सेवा करि पाछें न्यारो भयो वाकी माता जल भरि लावती पार्वती पात्र मांजती श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांतिसों करती परचारगी सब करती जब राज-भोग सरतो तब अपने घर अपके ली ली दी करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्पि भोग सराय आय प्रसाद लेती या भांतिसों करती ऐसें करत दिन पांच सात बीते तब अपने सेव्य श्री ठाकुरजीनें कह्यो जो अरी पार्वती मेरो गरो षरषरात है अपके ली ली री नते तातें तू दारि तो कस्यो करि तब पार्वतीनें कह्यो जो महाराज तुम तो दारि भात सालन सो आरोगत हो तब श्री ठाकुरजीनें कह्यो जो में तो तेरो कीयो आरोगत हों पाछें दारि भात सब सालन करन लागी तातें पार्वती वडी कृपापात्र भगवदी हुती येवातो सब पद्मनाभ दास के परवार की भई तातें वे पद्मनाभदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हें सो इन की वार्ता ऐसी है सो कितनी कहें तातें अब कहां तांई लिषियो

प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ७ ॥ संवंध ३५ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक रजो क्षत्राणी ॥
अडेल में रहती
ताकी वार्ता

सो व रजो क्षत्राणी नित्य पकवांन सामग्री करि श्री आचार्य जी महाप्रभून के लीए ले आवती सो श्री आचार्य जी महाप्रभू आरोगते वाकों नित्य को नेम हुतो सो एक दिन लक्षमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन आयो सो श्री आचार्य जी महाप्रभूनने ब्राह्मण भोजनन कों बुलाए हुते नहां घृत थोरो सो चहियत हुतो तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें एक वैष्णव सों कही जो रजो के सों घृत ले आउ तब वा वैष्णव नें रजो सों कही जो रजो श्री आचार्य जी महाप्रभूनने घृत मगायो है तब रजो नें वा वैष्णव सों कह्यो जो घृत काहे कों चहियत है तब वा वैष्णव नें कह्यो जो आजु श्री लक्षमन भट्ट जी को श्राद्ध दिन है सो ब्राह्मण भोजन को बुलाए हैं सो थोरो सो घृत रसोइ में घस्यो है तातें मंगायो है तब रजो नें

कह्यो जो मेरें तो घृत नाहीं है तब वह बैष्नव फिरि आयो आयकें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज रजो कें घृत नाहीं है तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो तू फेरि जा और षीजिकें कहियो जो श्री आचार्यजी महाप्रभूननें घृत मंगायो है तब वह बैष्नव फिरि गयो और रजो सों कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू षीजत हैं तबहू रजोनें घृत नाहीं दीनों तब वह बैष्नव फिरि आयो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही जो महाराज रजो घृत नाहीं देत तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो अब कें फेरि जा और कहियो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू षीजत हैं तातें घृत देउ तब हू नाहीं दीनों तब श्री आचार्यजी महाप्रभू न सों कह्यो जो महाराज रजो घृत नाहीं देत तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें और ठौर तें काम चलायो तब रात्रि कों रजो पकवान लेकें आई तब रजो कों देषिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू पीठि देंवैठे तब रजोनें कही जो महाराज मेरो अपराध कहा है तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो तेरें घृत न हुतो तो सामग्री कहा तें करि लाई तब र

जो नें कह्यो जो हूं लक्षमन भट्ट की लोंडी सो नांही मे
रें घृत न हुतो तातें न दीनों तातें तुम्हारें घृत हुतो सो
क्यों न काढ्यो तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो
जो में श्री ठाकुरजी को घृत क्यों करि कें देउ तब रजो
नें कही जो में श्री ठाकुरजी को घृत क्यों करि कें देंउ त
ब आप बोले नांही तब रजो नें सामग्री आगें राषी
औरकही जो राज आरोगो तब श्री आचार्यजी मह
प्रभूननें कह्यो जो आज श्राद्ध दिन है तातें दूसरीवार
लेनों नांही तब रजो नें कही जो महाराज जो तुम्हारे
घर को होय सो मति लेउ यह तो लीयो चहिये तब र
जो के आग्रहतें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें आरो
गी रजो श्री आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपापा
त्र भगवदीय ही तातें इन रजो की वार्ता कहां तांई लि
षिये ॥ वार्ता प्रसंग १॥ वैष्नव ८॥ संबंध ३६॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक सेठ पुरुषोत्तमदा
स क्षत्री बनारस में रह
ते तिन की वार्ता

सो सेठ पुरुत्तमदास कों श्री आचार्यजी महाप्रभून की

आज्ञा हुती जो तुम पास कोई नांम लेन आवे
ताकों तुम नांम दीजियों तातें सेठ पुरुषोत्तमदास
नांमदेते और अपने घर श्री मदन मोहन जीकी
सेवा करते परि कबहू बिश्वेस्वर नाथ महा देवजी
के दर्शन कों न जाते ऐसें करत बहुत दिनवीते
तब एक दिन विश्वेस्वर नाथ महा देवजीनें सेठ
पुरुषोत्तम दाससों कह्यो जो सेठ जीतुम हमसोंगा
म को नातो तो राषो कबहू हम कों प्रसाद तो दी·
यो करो ऐसें स्वप्नमें कही तब सवारे सेठ पुरुषो
त्तम दास उठि सेवा सों पहुंचिकें बाहिर आए त
ब वस्त्र पहरि कें बीडा दोय प्रसादी लेकें डवराप्र
साद को लेकें विश्वेस्वर नाथ महा देवजी के दर्श
न कों चले तब गाम के लोग आश्चर्य भए जो से
ठ पुरुषोत्तम दास कबहू दर्शन कों न आवते
सो आजु क्यों आए हैं सो सब लोग साथ आए·
सो सेठ पुरुषोत्तम दास आप दिवाले में जायकें
विश्वेस्वर नाथ महा देवजी के आगें वीडा दोय
धरि प्रसाद को डवरा धरि श्री कृष्णस्मरन कहि
कें उठि चले तब बडे बडे पंडित ब्राह्मण हुते ति

ननें सेठ पुरुषोत्तम दास सौं कह्यो जो सेठ पुरुषो-
त्तम दास दंडोत नमस्कार कछू न कीनों श्रीकृष्नस्म
रन कहिकें उठि चले सो यह तो तुम कों उचित ना-
हीं तब सेठ पुरुषोत्तम दासनें उन ब्राह्मणनसों क
ह्यो जो तुम महादेवजी कों पूछि लीजियों तुमसों
महादेवजी कहेंगे पाछें उन ब्राह्मणन में एक म
हादेवजी को बडो कृपा पात्र भगवदीय हुतो तासों
महादेवजीने स्वप्न में कह्यो जो हमनें इन सों मह
प्रसाद मांग्यो हो सो दैन आए हैं हमारो इन को व्योहा
र जैसो कृष्न को है तातें तुम इनसों कछू मति कहो या
छें सेठ पुरुषोत्तम दास बडे उत्सव को प्रसाद कबहू
लेजाते तब एक दिन महादेवजीनें कालभैरव सों
कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास वैष्नवन के घरतें अ
वेरो सवेरो आवत हैं तातें तू इनके घर को चोकीप
हरा नित्य देत रहियो सो कालभैरव नित्य इनके घ
र को चोकी पहरा देतो सो एक दिन सेठ पुरुषोत्तमदा
स वैष्नवन के घरतें अवारे आवत हे सो सेठ पुरुषो
त्तम दास घर के द्वार आए तब फिरिकें देखें तो काल
भैरव एक ठौर ठाडो हैं तब सेठ पुरुषोत्तम दासने

वासों पूछी जो तू कोन है तब वह बोल्यो जो हूं काल
भैरव हों मो कों महादेव जी नें आग्या दीनी है तातें
तुम्हारे घर की चोकी पहरा देत हों तब सेठ पुरुषो
त्तम दास षिरकी देकें भीतर गए   वार्त्ता प्रसंग २॥
बहुरि एक दक्षण देस को ब्राह्मण सेवी हुतो सो बडो
पंडित महादेव जी को कृपापात्र हुतो सो वा ब्राह्मणकों
महादेवजी को साक्षात् दर्शन होतो सो वह ब्राह्मणनि
त्य प्रति महादेव जी के दर्शन करतो तब जलपानक
रतो ऐसो महादेवजी को भक्त हुतो सो एक समें जन्मा
ष्टमी को उत्सव आयो सो विश्वेस्वरनाथ महादेव जी
सेठ पुरुषोत्तमदास के घर गए जन्माष्टमी को उत्सवदे
षन कों सो वा ब्राह्मण नें जन्माष्टमी के उत्सव के दि
ना दर्शन न पायो और नवमी के दुपहर लों जब सेठ
पुरुषोत्तम दास के घर ते महादेव जी विदा होय कें आ
ए तब वा ब्राह्मण नें महादेवजी को दर्शन पायो त
ब वा ब्राह्मणनें महादेव जी सों पूछी जो कालि और
आजु हम दर्शन दुपहर लों नाहीं पायो सो काहे
तें तब वा ब्राह्मण सों महादेवजीनें कह्यो जो हम
कालि सेठ पुरुषोत्तम दास के घर उत्सव देषन ग

एहे सो अब ही सेठ पुरुषोत्तम दास के घर तें विदा होयकें आवत हों तब वा ब्राह्मणनें कही जो सेठ पुरुषोत्तम दास कोंनहे तिनके घर तुम उत्सव देषन कों जात हो तब महादेव जीनें कह्यो जो वे बडे भगवद्भक्त हें तब वा ब्राह्मणनें कही जो मोहू कों भगवद्भक्त करो तब महादेवजीनें कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास के पास तू जायकें नांम ले आउ तब वा ब्राह्मणनें कही जो तुम ही मो कों नांम देउ तब महादेव जीनें कही जो में तो कों नांम देंउगो तो सही परि मेरो दीयो नांम तो कों फलेगो नाही तातें तू सेठ पुरुषोत्तम दास के पास नांम ले आउ वे तो कों नांम देंयगे तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तम दास के पास नांम लेबे गयो सो आय कें भीतर षबर करवाई जो एक ब्राह्मण आयो है तब सेठ पुरुषोत्तम दासनें कही जो बेठारो मां थो षाली करन आयो होयगो तब सेठ पुरुषोत्तम दास सेवा सों पहुचि कें बाहिर आए तब वा ब्राह्मणनें दंडोत कीनी तब सेठ पुरुषोत्तम दासनें कही जो ऐसें अनुचित क्यों करत हो हम क्षत्री तुम ब्राह्मण ऐसें यों न घ

टेहे तब वा ब्राह्मण नें सेठ पुरुषोत्तम दाससों क
ह्यो जो हम कों नांम देउ तब सेठ पुरुषोत्तम दासनें क
ह्यो जो हूं तो नांम नाहीं देउंगो बहुरि ब्राह्मणनें
बहुत आग्रह कीनों परि पुरुषोत्तम दासनें नांम न-
दीयो तब वह ब्राह्मण महादेवजी के पास आयो-
तब कह्यो जो सेठ पुरुषोत्तम दास नांम नाहीं देत
तब महादेवजीनें कह्यो जो तू फेरि जा हमारो नां
म लीजियो जो मोकों श्री महादेवजीनें पठायोहे तु
म सों महादेवजी नें कह्योहे तब वह ब्राह्मण फेरि
सेठ पुरुषोत्तम दासके पास आयो और कह्यो
जो मोकों महादेवजी नें पठायोहे तातें मोकों
नांम देउ तब सेठ पुरुषोत्तम दासनें वा ब्राह्मण
कों नांम दीयो नांम सुनायके हाथ जोरिकें श्री
कृष्ण स्मरन कह्यो तब वा ब्राह्मणनें कह्यो जो
अब मोकों प्रनाम क्यों करत हो तब सेठ पुरुषोत्त
म दासनें कह्यो जो अब तुम भगवद् भक्त भए-
मेरे तुम वंदनीय हो तुम्हारे और हमारे वंदनी
य श्री आचार्यजी महाप्रभू हें मेंतो श्री आचा
र्यजी महाप्रभून की कृपातें नांम देत हों पाछें वा

ह ब्राह्मण श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास आ
डेल आयो तब श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास नाम
समर्पण करवायो पाछें कितेक दिन रहिकें श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के ग्रंथ पढे ॥ वार्ता प्रसंग २ ॥ बहुरि
एक समें सेठ पुरुषोत्तमदास बैठे बैठे मंदिर वस्त्र कर
तहुते इतने हीमें गोपालदास बेटा श्री ठाकुरजी
को सेंन भोग सराय बेकों मंदिरमें न्हाय कें आयो त
ब देषें तो सेठ पुरुषोत्तमदास बैठे बैठे मंदिर वस्त्र कर
तहें तब गोपालदास के मन में आई जो अब तो से
ठजी वृद्ध भएहें तातें में सेवा में तत्पर होंउ तो आछो
तब यह बात गोपालदास के मन की सेठ पुरुषोत्तम
दासनें जानी तब कह्यो जो बेटा आगें आउ तब गोपा
लदास जायकें देषें तो वर्ष बीस तथा पचीस के बैठे-
हैं तब पुरुषोत्तमदासनें कह्यो जो बेटा यह भगवदी
यन की मन में न लावनी भगवदी सदा तरुन हैं परि
अवस्था होय ताकों मांन दीयो चाहिये वार्ता प्रसंग ३
बहुरि एक समें सेठ पुरुषोत्तमदास झाडखंड में मंदार
मधुसूदन ठाकुर हैं सो पर्वत ऊपर मंदिर है पर्वतको
नाम मंदार पर्वत है ताऊपर ते मनुष्य गिरे तो चोर

नलगे और अपने सब पाप कहि कामना करि
गिरे तो देह छूटे पाप दूर होंय और जो कामना करी
होय सो दूसरे जनम में सिद्धि होय वह ऐसो स्थल है तहां
एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभू पधारे हुते तहां
सेठ पुरुषोत्तमदास और एक ब्राह्मण श्री आचा
र्यजी महाप्रभून को सेवक सो दोऊ जने मंदार मधु
सूदनजी के दर्शन कों पर्वत ऊपर चढे सो उहां जायकें
मधुसूदनजी को दर्शन कीनो पाछें रात्र पर गई तातें
उहांई सोय रहे पाछें रात्रि कों उहां एक सिद्ध ब्राह्मण
आयो तिननें सेठ पुरुषोत्तमदास के साथ के ब्राह्मण
सों पूछो जो तुम कोंन हो तब वह बोल्यो जो हम वैष्ण
व हैं श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक हैं तब वा
सिद्ध ब्राह्मण नें कह्यो जो मेरे पास एक मणि है सो
तुम लेजाउ तो लेउ तब वा वैष्णव नें कह्यो जो यह
मणि कोंन काम आवत है तब सिद्ध ब्राह्मण नें क
ही जो यह मणि ऐसी है जो मांगे सो देत है तब वा
ब्राह्मण नें कही जो मैं तो विरक्त हों मैं मणि लेकें क
हा करूं परि मेरे साथ एक क्षत्री है सो वह ग्रहस्थ
है सो वह सेवत है जो वा कों देउ तो जगाऊं तब

वा सिद्ध ब्राह्मण नें कही जो जगावो तब वा वैष्ण
व नें सेठ पुरुषोत्तम दास कों जगायो और कही
जो यह ब्राह्मण मणि देत है सो तुम लेउ तब सेठ पु
रुषोत्तम दासनें कही जो यह मणि कौंन कांम आ
वत है तब वा मणि को प्रभाव कह्यो तब सेठ पुरुषो
त्तम दास नें कह्यो जो यह मणि हमारे कांमकीनाहीं
तातें हूं तो न लेंउगो तब सिद्ध ब्राह्मण फिरि गयो तब
सेठ पुरुषोत्तम दासके संग ब्राह्मण हुतो तानें सेठ पुरुषो
त्तम दास सों कह्यो जो तुम तो ग्रहस्थ हो बहुत कुटंबी
हो तुम्हारें माथे सेवा है तुमनें मणि क्यों न लीनी तु
मकों तो मणि लेंनीं उचित हो तब सेठ पुरुषोत्तम
दासनें कह्यो जो अरे ब्राह्मण बावरे में श्रीठाकुरजी
को तथा श्रीआचार्यजी महाप्रभून को आश्रय छोडि
कें कहा मणि को आश्रय करूं तेंनें मणि क्यों न लीनी
तब वानें कह्यो जो में तो विरक्त हों में मणि लेकें कहा
करूं मोकों जगदीस सेर चून देयगो तब सेठ पुरु
षोत्तम दास नें वा वैष्णव सों कह्यो जो तोकों जगदीस
सेर चून देयगो तो मोकों कहा जगदीस दस सेर चून
न देयगो जगदीस कें काहू बात की न्यूनता है ऐसें

कहि कें दोऊ जनेननें ब्रह्मणिन लीनी वेसेठपु
रुषोत्तम दास श्री आचार्यजी महाप्रभूनके ऐसेकृपा
पात्रभगवदीयहैं वार्ताप्रसंग४ वहुरि एक समेंश्री
आचार्य जी महाप्रभू सेठ पुरुषोत्तम दास केघरपधारे
तब दामोदर दास हरसानी श्री आचार्यजी महाप्रभून
के साथ हे सो श्री आचार्यजी महाप्रभू ननें सेठ पुरुषो
त्तमदासके सेव्य ठाकुरजी श्री मदन मोहन जी कों पं
चामृत स्नान करवायो और आपु पाक करि श्रीठा
कुरजी कों भोग समर्प्यो भोग सराय अनोंसर क
रि श्री आचार्यजी महा प्रभू आप भोजन कीयो त
ब दांमोदर दास हर सांनी नें श्री आचार्यजीमहाप्र
भून सों पूछो जो राज यह कहा तब श्री आचार्यजी
महा प्रभू ननें कह्यो जो यह मेरी आग्या तें नामदे
तहै तथापि मोकों याकी इतनी मर्यादा राषीचा
हिये सो वे सेठ पुरुषोत्तमदास श्री आचार्यजीमहा
प्रभू नके ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातेंइ
नकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लिषि
ये ॥ वार्ता प्रसंग ॥५॥ वैष्नव ॥८॥ संबंध ४१॥
अबश्री आचार्यजी महाप्रभू नके

सेवक सेठ पुरुषोत्तम दास
की बेटी रुक्मिनी ता
की वार्त्ता है

सो एक समें श्री गुसांई जी कासी में पधारे हुते त
ब तहां सूर्य ग्रहन आयो तब श्री गुसांई जी मन क
र्णिका स्नान कों पधारे तब रुक्मिनी हू श्री मदनमो
हन जी कों स्नान कराय कें आप मन कर्णिका स्ना
न कों गई श्री गुसांई जी पधारे जानि कें तब श्री गु
सांई जी सों वैस्नवनने कह्यो जो महाराज सेठ पुरुषो
त्तम दास की बेटी रुक्मिनी आई है तब श्री गुसांई
जीनें कह्यो जो रुक्मिनी आगें आउ तब अपने पास
बुलाय लीनी तब श्री गुसांई जी नें पूछ्यो जो तू कि
तेक दिन पाछें गंगा स्नान कूं आई है तब रुक्मिनी
नें कह्यो जो महाराज चोबीस वर्ष पर्यंत पाछें आई
हों तब यह सुनि कें श्री गुसांई जी को हृदो भरि आयो
और कह्यो जो एसी भगवदीय जिन को एक क्षण हू
अवकास नाहीं है जो गंगा स्नान कों आवे श्री गुसां
ई जी बहुत प्रसन्न भए और रुक्मिनी कों देषि कें
श्री गुसांई जी कहते जो श्री ठाकुर जी या के आगें

कबहीं पगे ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ बहुरि क्षत्री लोग
सब कार्तिक मासमें गंगा स्नान करते तब रुक्मिनी
नें सेठ पुरुषोत्तम दास सों कह्यो जो तुम आग्या क
रो तो मेंहूं कार्तिक स्नान करूं तब सेठ पुरुषोत्तम
दास नें कह्यो जो भलें ई स्नान करि जो चहिये सो
लीजिये तब रुक्मिनी नें कह्यो जो षांड घृत दिवाय
देउ मै दातो घरमें हे तब सेठ पुरुषोत्तम दासनें षांड
घृत दिवाय दीयो तब रुक्मिनी पहर रात्र पिछली रहे
जब उठे सो नौतन सामग्री करिकें समय समय राजभो
गलों श्री मदन मोहनजीकों समर्पें फिरि उ स्थापन
सों सामग्री करे सो सेंनभोग लों समर्पें ऐसे कातिक
मास में करे और वैसाष में सीतल सामग्री करे श्रीठा
कुरजी कों आरोगा बे सो प्रसाद वैस्नवन कोंलिवा
वे या भांतिसों करे सो एक दिन सेठ पुरुषोत्तम दा
सनें रुक्मिनीसों कहीजो रुक्मिनी तू स्नान कबकर
तहे तो कोंजात कबहू देषियत नाहीं तू कार्तिक कों
न वेर न्हातिहे तव रुक्मिनी नें कह्यो जो मोकों स्ना
नसों कहा कांम हे में तोया भांतिसों करत हों तब य
ह सुनिकें सेठ पुरुषोत्तम दास बहुत प्रसन्न भए-

श्री गुसांईं जी आप श्रीमुषतें सराहना करते रुक्मि-
नी ऐसी कृपा पात्र भगवदीयही ॥ वार्ता प्रसंग २॥ ब
हुरि कितेक दिनमें रुक्मिनीकी देह आसक्ति भई तब
रुक्मिनीनें कह्यो जो अब यह देह छूटे तो भलो है-
श्री ठाकुरजीकी सेवा नहोय आवे तो यह देह कौन
कामकी है तब कितेक दिन पाछें रुक्मिनी की देह
छूटी सो एक वैष्णव नें श्री गुसांईं सों कही जो मह
राज रुक्मिनीनें गंगा पाई तब श्री गुसांईंजी श्री मु
षतें कहें जो एसें मति कहो जो रुक्मिनी नें गंगा पाई
ऐसें कहो रुक्मिनी गंगा नें पाई वह रुक्मिनी श्री
आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगव-
दीयही तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है सोक
हां तांई लिषिये॥ वार्ता प्रसंग ३॥ वैष्णव ८९॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक सेठ पुरुषोत्तम दास
को वेटा गोपालदास
ताकी वार्ता

सो गोपालदास सों श्री मदनमोहनजी सानुभाव हुते
जो चहिये सो मांगि लेते एसें सदैव कृपा करते बहुरि

गोपाल दास कीर्तन बहुत करते और गोपालदा
सकी देह आसक्ति भई तब भगवद नाम को उच्चार
करते तब श्री मदन मोहनजी आप हुंकारी देते ऐसी
कृपा करते श्री आचार्यजी महाप्रभून के ग्रंथ सुबो
धनीजी श्री भागवत निबंध और रहस्य ग्रंथ सों स
ब पाठ करते भगवद लीला में मग्न रहते सदैव ली
ला को विचार करतें ऐसें करिकें सर्व काल विलीन
कीयो पाछें देह छूटी तब श्री गुसांईजी नें सुनी
जो गोपाल दास की देह छूटी है तब आप श्रीमुख
ते कही जो गोपाल दास की सराहना करी सो वे गो
पाल दास ऐसे भगवदीय हे ये सब वार्ता सेठ पुरु
षोत्तम दास के परिवारि की भई ताते इनकी वार्ताको
पार नाहीं सो अब कहां तांई लिषिये॥ वार्ता प्र
संग १॥ वैष्णव ११॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक राम दास सारस्वत ब्रा
ह्मण ताकी वार्ता

सो वे राम दास श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति
सों करते अपरस में जल भरते बीड़ा हू अपरसमें

राषते या प्रकार सों करते सो रामदास के पास द्रव्य बहुत हुतो सो कितेक दिन पाछें वह द्रव्य षरच भयो थोरो सो द्रव्य आय रह्यो तब मन में बिचारी जो कछू आवत होय तो भलो है तब तादिन ते वह द्रव्य ताती नकों व्याज दीनों तब व्याज बहुत आवन लाग्यो लो भके लीए तातीन को व्योपार कीयो पूर्व देसमें फटे वस्त्र बुनत हैं तिनसों ताती कहत हैं तब रामदास जी के सेव्य श्रीठाकुरजी श्री नवनीतप्रियाजी नें कह्यो रामदास तू तो हमकों तातीन पर राषत है तब रामदासजी यह वात सुनिकें चोंकि उठे और कह्यो जो महाराज मोसों चूकि परी तब रामदासजी तातीन पर गए और कह्यो जो मेरो द्रव्य देउ तब उन तातीन नें रामदासजीसों पूछी जो यह कारन कहा है सो द्रव्य मांगत हो तब रामदास जीने कह्यो जो में कहा करूं मोकों तो लरिका संग कांम पर्‍यो है तातें लरिका को मन राख्यो चहिये तब तातीन नें कह्यो जो हम द्रव्य इकठोरो करत हैं तब कितक दिन पाछें उन तातीन नें द्रव्य दीयो सो द्रव्य लेकें घर आए फेरि वैसें ही सेवा करन लागे सो सब द्रव्यनि

बढ्यो तव बनियां न कीदुकांनतें उचापति करन लागे तब रिण मांथें वहुत भयो तब उचापति बनियां की दुकांन ते दुरि कीनी और बनियां की दुकांन तें उचा पति करन लागे परि वा वनियां की हाट के आगें होयकें निकसते नाहीं और गैल्ल होयकें जाते तव एक दिन वा बनियां नें रामदास सों कही जो भलो तुम मेरी दुकांन के आगें होय कें नांही निकसतहो और उचापति नाही करत तो मेरो लेषोकारिकें मेरो पैसा चुकाय देउ तगादो वहुत करडो कीयो तब श्री ठाकुरजी रामदासजी को स्वरूप धरिकें वा बनियां की हाठ ऊपर गए और श्री मुख तें कही जो लेषो लाउ पैसा चुकाय देउ तब वा बनियां नें बही देषि लेषो करिकें पैसा चुकाय दीयो रुपैया एक सों अधिको दीए श्री ठाकुरजी आप श्री हस्तसों लिषि आए परि यह वात रामदासजी नें न जानी तब एक दिन रामदास जी कों बुलाय वे वैष्णव आए तब उन वैष्णवन के पाछें पाछें रामदास जी गए सो रामदासजी वा बनियां की हाट के आगें होय कें निकसे तब आनी कांनी देकें निकसे इतने में वा बनियां नें क

ही जो राम दासजी तुम मेरी हाटतें उचापत नांहींक
रत सो तो मेरो अभाग्य है परि तुम्हारो मोपें अधिक
द्रव्य है सो तो उठाय लेउ तब रामदासजीनें कह्यो
जो उहांते फिरि आवत हों तब रामदासनें मनमेंवि
चार्यो जो मेंतो याकों कछू दीयो नाहीं और यह क
हत है जो तुम्हारो अधिको द्रव्य है सो तो उठाय ले
उ यह कारन कहा है परि जानीयत है जो यह श्रीठा
कुरजी की औरतें कामभयो है पाछें रामदासजी
वैष्नवन के घरतें आए तब वा बनियां की हाटपे
जायकें लेषो मांग्यो कह्यो जो लेषो लाउ तब वाब
नियां नें कह्यो जो कहा लेषो देषोगे तब वा बनियां
नें बही दिषाई तब वही में रामदास जीनें श्रीठाकु
रजी के हस्ताक्षर देषे तब चुपकरि रहे तब घर आ
य रामदासजीनें स्त्रीसों कही जो हूं तो घरमें नाहीं
रहूंगो चाकरी करूंगो तब सिपाईगीरीको बि
चार कीयो तब घोडा मोल लीयो सब हथियार बां
धन लागे तब जल और बीडा अपरसमें लेत हे सो
अपरस छूटी बिना अपरस में लेन लागे सो कितेक
दिन पाछें रामदासजी अडेल आए सो हथियार बां

धें हीं जाय कें श्री आचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन की
ने दंडवत कीनी तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें
श्री मुखते धन्य धन्य कह्यो जो रामदास तू धन्य है
तब और वैस्नव पास बैठे हे सो कहन लागे जो महा
राज अब याकों धन्य क्यों कहत ही अब तो यह अप
रस तासों नाहीं रहत है सिपाईनमें चाकरी करत-
है तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कही जो य
ह धन्य याते है जो श्री ठाकुरजी कों श्रम नाहीं क
रवावत याकी बराबर कोऊ धीरजवंत नाही औ
र श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तास में गंगास्ना
न कों पधारे तब मार्ग में एक षाड देष्यो तब श्री-
आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो यह षाड अज
हूं भर्यो नाही सो इतनों कहत ही वैस्नव सब षा
ड भरन लागे वागो पहरें हीं तब रामदास जी हू
राकटो करालेकें षाड भरन लागे तव श्री आचार्य
जी महाप्रभू स्नान करिकें पधारे तव तांई षाड भ
रि दीनों तव रामदास जी कूं देषि कें श्री महाप्रभूजी
बहुत प्रसन्न भए ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ और रामदासजी
कें कछू संतति न हुती तव स्त्रीनें रामदासजी सों क

ह्यो जो तुम और विवाह करो तो तुम्हारें वालकहो
य तब रामदासजीनें कह्यो जो हम कों तो वालककी
इच्छा नांही तब स्त्रीनें कह्यो जो मोकों तो वालक
की इच्छा है तब रामदासजीनें कह्यो जो तोकों बा-
लक की इच्छा है तो हमारे श्रीनवनीतप्रियाजी
की वाल भाव सों सेवा करि जेसे बालक कूं षवाई
ये प्याइये षिलाईये हित करिये तैसें तुम श्रीनव-
नीतप्रिया जी कों लडवो तब तेरें वालक होयगो तब
रामदासजी की स्त्रीनें श्रीनवनीतप्रिया जी की बा
लभाव सों सेवा करी सो या प्रकार सों सेवा करी जो
वालक भयो है सो वे रामदासजी श्री आचार्य जी-
महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ता तें इन
की वार्ता को पार नांही सो इन की वार्ता अब कहां
तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ७ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक
गदाधरदास सारस्वत ब्राह्मण
कडा में रहते तिन की वार्ता

सो गदाधरदास के माथें श्रीमदनमोहनजी की सेवा
हुती सो श्री ठाकुरजी बडे गौर हुते सो नित्य प्रति जे

सो उनके जिजमान कें सों आवतो तेसो श्रीठाकुरजी
कों समर्पिते सो एक दिन जिजमान कें सों कछू आयो
नाहीं तब जल ही छांनि के समर्प्यो परि मनमें बहुत
षेद भयो छाती में अगिनसी उठी ऐसें करत रात्र परग
ई तब एक जिजमान द्वारे पै आय पुकार्‍यो औरक
ही जो किवाड षोलो तब गदाधरदासनें किवाड
षोले तब वा जिजमान नें एक वागो और चारिरु
पैया और कछू सामग्री गदाधरदास कों दीए औरक
ही जो आज मेरे पिता को श्राद्ध दिन हुतो ताकी यह
दक्षणा लेउ तब गदाधरदास नें लीनी सो वा गो सा
मग्री घरमें धरिकें आप बजार में गए सो एक हलवा
ई मिठाई आछी करत हुतो ताकी हाट पै गए तब जा
यकें वा हलवाई सों पूछी जो तेरें मिठाई आछी है त
ब वा हलवाई नें कह्यो जो मिठाई जलेवी अबही
कीनी है यामें ते बेची नाहीं तब जलेवी तुलाय
मोल देकें घर आए तब गदाधरदास आयकें स्नान
करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो समयानुसार
भोग सराय आनोसर करि कें पाछें वैष्णवनकों बु
लाय महाप्रसाद सबनकों लिवायो सो अति आनं

किकस्वादभयो ऐसो जो कछू कह्यो नजाय सोसब
महाप्रसाद बैस्नवन कों लिवायो और आपुभूषे
ही सोय रहे पाछें सवारें उठि सीधो सामग्रीलाए त
वस्नानकरि रसोई करी श्रीठाकुरजीकीसेवाश्रृंगा
र करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो भोगसराय
बैस्नव फेरि बुलाए जब बैस्नव प्रसाद लेवे कों बैठे-
तबपूछनलागे जो रात्रकोमहाप्रसाद हमनें लीयो
सो बहुत स्वादभयो सो क्यों करि समर्प्यो तबगदाध
रदासनें सब प्रकार कह्यो तब सब बैस्नव बहुतप्रस
न्नभए और कह्यो जो गदाधरदासनें सत्य कह्यो॥
वार्ताप्रसंग॥२॥ बहुरि एकदिन गदाधरदासनें सब
बैस्नव महाप्रसाद कों बुलाए हुते परि साकसाजन
कछूनहुतो तबगदाधरदासनें कही जो ऐसो कोऊ
बैस्नव है सो साकले आवे तब तिनमें एक बैस्नवबे
णीदास को भाई माधोदास सो बडोविषई हुतो ता
नें बेस्या घरमें राषी हुती तिननें कह्यो जो में लेआऊं
गो तब गदाधरदासनें कह्यो जोभलें ले आवो त
ब माधोदास गयो सो बथुवा की भाजी ले आयो सो
माधोदासनें नीकी भांतिसों दीनी रसोई में पाछें र

रसोई सिद्धि भई तब श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सराय अनोसर करिकें वैष्नवन कों महाप्रसाद लेंन वैठाए परिव्रह्म भाजी अति स्वाद भई तब गदाधर दासनें माधोदास को आसीर्वाद दीयो जो तू हरि भक्त दृढ होयगो पाछें गदाधर दास के आसीर्वाद तें माधोदास भलो वैष्नव भयो सो वे गदाधर दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हुते तातें इन की वार्ता को पार नांही तातें इनकी वार्ता अब कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्नव ॥८॥ संबंध ॥४९॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक बेणीदास माधोदास दोऊ
भाई तिन की वार्ता है

सो बडे भाई वेणीदास छोटे भाई माधोदास सो माधोदास वही जो गदाधर के घर बथुवा की भाजी ले आयो हो सो माधोदास बडो बिषई हुतो तानें घर में वेस्या राषी हुती तातें सब वैष्नव माधोदास की निंद्या करते सो बात श्री आचार्यजी महाप्रभूननें सुनी जो माधोदास बडो विषई भयो है घर में वेस्या राषी है सो

एकदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननें माधो दास सों पूछो जो क्यों रे माधो दास तेंनें घर में बेस्या राषी है तब माधो दास नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो महाराज मेरो मन आसक्ति भयो है तासों राषी है तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप चुप करि रहे सो तीनि वेर आपनें माधो दास सों पूछो तब तीन्यों वेर माधो दासनें यों ही कही जो महाराज मेरो मन वासों आसक्ति भयो है तासों राषी है तब वैष्णवननें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कही जो महाराज अबलों तो आप की कांनि ही परि अब तो तुम्हारे आगें कह्यो तासों तुमनें तो कछू न कही तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें उन वैष्णवनसों कही जो वाको मन वासों आसक्ति भयो है सो श्री ठाकुरजी कों फेरितें कितनी कवार लागेगी और गदाधर दास नें वाकों आसीर्वाद दीयो है जो तो कों हरि भक्त दृढ होयगी सो यह माधो दास है तब कितेक दिन पाछें माधो दास की बुद्धि श्री ठाकुरजीनें फेरी तब तो वानें बेस्या दूरि कीनी पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपातें माधोदास भलो वैष्णव भयो वार्ताप्रसं

ग॥१॥ वहुरि कितेक दिन पाछें एक माला मोती
न की बहुत सुंदर बहुत मोलकी विकबेकोंआ
ई सो देषिकें माधो दासनें वडेभाई वेणीदास सोंक
ह्यो जो यह माला श्री ठाकुरजी के कंठ लायकहेत
व बड़ेभाई वेणीदास नें कहीजो यह माला कीक
हा है हमारे पास जो है सोसब श्री नवनीतप्रियाजी
कोहै ऐसें कहिकें बात टारिदीनी तब माधोदास
नें कही जो अपने घरमें है सो सब श्री ठाकुरजीको
है तो माला क्यों न लेउ तब बडेभाई वेणीदास
नें कही जो हम गृहस्थहैं हमकों बिबाह काजस
ब करनों है ऐसें क्यों वनें तब छोटे भाई माधोदा
सनें कही जो हूंतो न्यारो होऊगो सो न्यारोभयो
द्रव्यसब बांटि लीनों सोद्रव्य की बस्तुलेकें दक्षण
गयो तव बस्तुसबबेची तव व्यवहार करिकें द्रव्य
बहुत उपज्यो तव एक मालामोतीन की पहलेमो
लले उत्तमोत्तमलीनी सोमाला लेकें घरकोंचले
सो आवत बाटमें एक बडीनदी आई तब नाव-
में बैठे तब श्री नवनीतप्रियाजी लालछडी हाथ
में लेकें आए और कह्यो जो नाव डुबाऊं तबमाधो

दासनें कही जो निजे ह्यात: करिष्यति: तव श्री
ठाकुरजी नें कही जो तू क्यों गयो हो तब माधोदा
सनें कही जो महाराज में माला लेंन गयो हो तब
श्री नवनीत प्रियाजी नें कही जो हमारे का माला
न हुती हमारें माला बहुतेरी हैं तब माधो दासनें
कह्यो जो तुम्हारें माला वहुतेरी हैं परि सेवक
कों तो उपाय करनों तब नाव डूबते सों रही जि
तने मनुष्य नाव मे बैठे हुते ते सब हलकलक
रन लागे औार माधोदास को मन प्रसन्न हुतो त
ब सबन के मनमें आई जो ए बडे महा पुरुष हैं
पाछें माधोदास उहांतें घर आए तब श्री आचार्य
जी महाप्रभून कों दंडोत कीनी औार हाथमें
माला दीनी तव श्री आचार्य जी महाप्रभूननें
कही जो नाव डूबतते कैसें रही तब माधोदास
नें सब समाचार कहे तब औार वैष्णव पास वैठे
हुते तिननें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कही
जो वही माधो दास है जो श्री महाप्रभून की कृपातें
श्री ठाकुरजी नें माधो दास को मन फेर्यो औार भगव
द्भाव उत्पन्न भयो औार ग्रन्थ ऊपर आसक्ति ता हु-

नी सो श्री ठाकुरजी के ऊपर भई सो माधो दासऐ-
से भगवदीय हे तातें इन वेणी दास माधो दासकी
वार्त्ता को पार नाहीं सो इन की वार्त्ता कहांतांई
लिषिये ॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्नव ॥ ८९ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक हरिबंस पाठकसार
स्वत ब्राह्मण वनारसमें
रहते तिनकी वार्त्ता

सो वे हरि बंस पाठक पटना में गए हे सो उहांके हा
किम सों वहुत मिलापहुतो सो वह हाकिम अपनेम
नमें कहे जो ए मेरे पास कछू मांगें तो मे इनकों देंउ
परि वे कछू मांगें नाहीं यों करत डोलउत्सवके
दिन द्वे रहे तब अपने सेव्य ठाकुरजी हुते तिननें
स्वप्नमें जताई जो तू मोकों डोल न झुलावेगो तब
हरि बंस पाठक नें अपने मन में विचास्यो जो अब
कहाकरूं तब हरि बंस पाठक हाकिम पास गए सो
जाय कें कही जो आपके पास कछू मागन आ-
यो हूं सो मोकों दीयो चाहिये तब राजानें कही-
जो कहा चहिये तब हरि बंस पाठक नें कह्यो-

जो मो कों दिन छे में बनारस पहुचनों है तब हाकिम
नें कह्यो जो भलो तब हाकिम नें घोड़ा और मनुष्य
साथ दीए थे छे में डांक चौकी नांई ऐसें करत अपने
घर आए पाछें आप मंदिर में आयकें डोल सिद्धि
कीयो डोल की सामग्री सब सिद्धि करि कें पाछें श्री
ठाकुरजी कों डोल बैठाए बहुत सुष भयो सो थोरे
से दिन पाछें फिरि पटना गए तब हाकिम नें कही जो
तुम कों ऐसी कहा जलदी हुती तब हरि वंस पाठक
नें कही जो कछू कांम हुतो परि मन की बात कछू
न कही सो वे हरि वंस पाठक श्री आचार्य जी महा
प्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इन की
वार्ता अनिर्वचनीय है सो कहां तांई लिषिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्नव ॥१०॥ संबंद ॥५२॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के से
वक गोविंद दास भल्ला ति
न की वार्ता

सो गोविंद दास भल्ला की गांठि में द्रव्य बहुत हु
तो सो श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक भए त
ब गोविंद दास नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों पू

ह्यो जो महाराज मेरी गांठिमें द्रव्य है सों में कहा करूं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो श्री ठाकुरजी की सेवा करि तब गोविंद दास नें कह्यो जो महाराज सेवा कैसें करूं स्त्री अनकूल नांही तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो तू स्त्री को त्याग करि तब गोविंद दासनें स्त्री को त्याग कीयो पाछें कही जो महाराज द्रव्य को कहा करूं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो अब द्रव्य को च्यारि विभाग करि तब गोविंद दासनें द्रव्य के च्यारि वट कीये तब फेरि कह्यो जो महाराज अब कहा आग्या है तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो एक विभाग तो श्री नाथजी कों समर्पि और एक विभाग अपनी स्त्री कों दे और एक विभाग सेवा के लीऐ तू राषि तब गोविंद दासनें कही जो महाराज कछू आप अंगीकार करिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो भलो एक विभाग हमें दे तव सव विभाग जहां के तहां देकें अपने वट को द्रव्य लेकें आपु महावन आय रहे सो महाप्रसाद वैष्नवन

कों लिवाइते बैस्नवन मिलेतो गायन कोषवाव
ते तामें ते आप रंचक हू न लेते आपुन्यारी ली
टी करि भोग समर्पि कें लेते ऐसी भांति सों सेवा
करते सो सब द्रव्य निवट्यो तब श्री गोवर्द्धन ना-
थ जी की सेवा में आप रहे तब श्री गोवर्द्धन ना
थ जी की परचारगी करते रसोई की टहल सब क
रते दोऊ वार के पात्र मांजते और रात्रि डेढ तथा
सवा पहर पाछली रहती तब उठते सो गागरि त
हां ते लेकें चलिते सो मथुरा में बिश्रांति स्नान क
रिकें श्री यमुना जल की गागरि भरिकें चलते सो
राज भोग पहलें आप पहुंचते वहुरि पात्र मांजि
रसोई पोत आपनी सब सेवा सों पहुंचि कें नीचें
आवते पाछें तिलक पोंछि माला उतारि गांठि बां
धिकें आस पास के गांमन ते कोरी भिक्षा मांगि ला
वते सो सेर चारि पांच की अहार करते सो अहार
मांफक जुरतो तब आवते तब आपु पीसि रोटी-
करि श्री नाथजी की ध्वजा के सन्मुख दिषयतामें
चरणोदक मिलाय प्रसाद लेते ऐसें निर्वाह करते
तब ऐसी भांति करत बहुत दिन बीते परि यह बात

श्री नाथजी कों न भावे तब श्री नाथजी नें श्रीआ
चार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो तुम्हारो एक सेवक
मोकों बहुत दुख देत है तब श्री आचार्यजी महा
प्रभू आप अडेल ते चले सो आगरें आए तब त
हां के बैष्नव सों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें पू
छो जो श्रीठाकुरजी किनि रुठाए हैं तब उन बैष्न
वननें कही जो महाराज हम तो कछू जानत नाहीं
तब उहांते श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री मथुराप
धारे तब मथुरा के बैष्नवन सों श्री आचार्यजी म
हाप्रभून नें पूछो जो श्रीठाकुरजी किनि रुठाए हैं
तब उहां के बैष्नवननें कह्यो जो महाराज हम तो
कछू समझत नाहीं तब श्री आचार्यजी महाप्रभू
उहांते श्रीजीद्वार पधारे तब श्रीनाथजी के दोऊ
कपोल हाथन सों छूइ कें कह्यो जो बाबा अपन म
ने कैसें हो तब कही जो तुम्हारो सेवक मोकों बहु
त खिजावत है तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें स
ब सेवकन सों पूछो जो तुम कहा कहा सेवा करत
हों और कहा प्रसाद लेत हो तब सब नें अपनी अ
पनी सेवा कही और प्रसाद लेवे को प्रकार कह्यो

पाछें गोविंद दास सों पूछी जो तू कहा सेवा करत है तब जो सेवा करत हुतो सो सब कही और प्रसाद लेबे को प्रकार कह्यो सो सब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सुनों तब अपने मन में जानी जो इन रुठाए हैं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें गोविंद दास भल्ला सों कही जो तुम श्री ठाकुर जी की रसोई में प्रसाद लेउ तब गोविंद दास नें कह्यो देव अंस कैसें लेउं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू हमारी रसोई में प्रसाद ले तब गोविंद दास नें कह्यो जो गुरू अंस कैसें लेउं तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो तू सेवा मति करे तब गोविंद दास क्षत्री अहंकार सों सेवा छोड़ि कें मथुरा गए सो केसो राय जी की सेवा को हजारो पठान के पासते लीयो तब सेवा करन लागो सो एक वार श्री केसो राय जी की सिज्या निवार सों बुनाई सो सिज्या बहुत अद्भुत भई तब श्री केसो राय जी वा सिज्या के उपर पोढन लागे तब तैसी ही निवार वा गांम के हाकम नें बुनवाई परि वह निवार वैसी न भई तब वा कारीगर नें कही जो वह नि

वार तो श्री ठाकुरजी की है तब हाकमनें कही जो वह निवार में देखूंगो पाछें हाकम श्रीठाकुरजी के दिवाले में जायकें सिज्या ऊपर चढि बैठो सो गोविंददास नें सुनी तब गोविंददासनें आयकें गुसी लेकें हाकिम कों गारी दीनी जो तू कौन है सो हमारे श्रीठाकुरजी की सिज्या ऊपर बैठ्यो है ऐसें वा हाकमकों ठोर मार्यो तब हाकमके मनुष्यननें गोविंददासकों ठौर मार्यो सो यह वात श्री आचार्यजी महाप्रभूनके आगें काहू वैष्नवनें जाय कही और कह्यो जो ऐसी गति वैष्नव कों क्यों वूझिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कही जो याके परलोकमें तो कछु हांनि नाहीं परि इन मेरी आग्या न मानी तासों याकी देह या भांतिसों छूटी है यह गोविंददास पहले जन्ममें श्रीनंदरायजी को भेंसा हुतो यानें मांटी पानी बहुत ढोयो हो सो वे गोविंददास भल्ला श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इन की वार्ता को पार नाहीं सो कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्नव ॥ १२ ॥ संबंध ॥ ४३

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू के सेवक

७ अंम्या क्षत्राणी कडसेमें रहती तिन की वार्त्ता

सो अंम्या के दोय बेटा हुते सो दोऊ परम वैष्नव हुते आप वैष्नव हुती और वाके लरिका वासों अंम्या कहते और श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करती सो वाके सेव्य ठाकुरजी श्रीबाल कृष्नजी वासों अंम्या कहते सो कितेक दिन पाछें एक बेटा वाको मरिगयो तब श्रीठाकुरजी की रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि समयानुसार भोगसराय पाछें रोवन लागी तब अंम्या कों रोवत देषि कें श्रीठाकुरजी षेद पावन लागे श्री ठाकुरजी कहें अंम्या तू रोवे मति परि वह रोवत ते रहे नाही ऐसें करत वाको दूसरो हू बेटा मरिगयो तब तो बहुत रोवन लागी तब श्रीठाकुरजी वाकों रोवते सों राषे और कहें अंम्या तू मति रोवे तब अंम्या रोवत ते रहे नाही तब श्रीठाकुरजी नें श्रीगुसांईजी सों कह्यो जो अंम्या रोवत है सो में बहुत षेद पावत हों तब श्रीगुसांईजी अंम्या के घर पधारे और कह्यो जो अंम्या तू मति

रोवे श्रीठाकुरजी षेद पावतहैं तब रोवत तेरही ओर
अंम्या सेवा को सबसाज करिकें पाछें स्नान करि
कें पाछें मंदिर में जायकें दोऊ हाथ सों सोंधो लगा
य कें श्री ठाकुरजी कें लगावे या भांति सों सेवा आ
छी तरें करती॥ वार्ताप्रसंग॥ २॥ बहुरि एक दिन
दूधको कटोरा श्री ठाकुरजी के आगें भरि राषो
हुतो तासमय श्री गुसांईजी अंम्या के घर पधा
रे मंदिर को टेरा सरकायकें दर्शन करन लागे
तब श्री गुसांईजी देषें तो श्री ठाकुरजी दूधपीव
तहैं तब श्रीगुसांईजी देषिकें पाछें फिरि आए
तब अंम्यानें कही जो बाबा पाछें क्यों फिरि आ
ए तब श्री गुसांईजी नें कह्यो जो श्रीठाकुरजी
दूधपीवतहैं तब अंम्यानें कही जो श्रीठाकु
रजी तो लरिका हैं तुम कहा जानत नांही तब
श्री गुसांईजी दर्शन करिकें पाछें फिरे और अं
म्यासों श्री गुसांईजी नें कह्यो जो यह दूध हमा
रे घर पठाय दीजियो तब अंम्या नें कह्यो जो रा
ज आपु ही तो आरोगन वारे भावें तो इहां आ
रोगो भावें उहां आरोगो पाछें श्री गुसांईजी

आपतो घर पधारे तब अंम्यानें वह दूध श्रीगुसां
ईंजी के घर पठाय दीयो सो अंम्या सों श्रीठाकुरजी
ऐसे सानुभाव हुते प्रत्यक्ष वार्ता करते जो वस्तु
चहिये सो मांगि लेते सो अंम्या श्रीआचार्यजी
महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय हीतातें
इन की वार्ता को पार नाहीं सो अब कहांतांई लि
षिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ १२ ॥ संबंध ॥ ५४ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभून के से
वक गज्जन धावन क्षत्री आग
रे के वासी तिन की वार्ता

सो गज्जन धावन श्रीनवनीतप्रियाजी की सेवा नी
की भांति सों करते श्रीठाकुरजी सानुभाव हुते गज्ज
न के साथ श्री नवनीतप्रियाजी षेलते गज्जन कों
कबहू गाय करते कबहू बछरा करते तब गाय को
मुष अपने पीतांबर सों पोंछिते तब बछरा करते
तब पकरि राषते चलन न देते और जब घोरा कर
ते तब पीठि ऊपर असवारी करते जब हाथी करते
तब ग्रीवा ऊपर असवारी करते ऐसें करत गज्जन
के घुटुरू घिसि गए ऐसी कृपा श्री नवनीतप्रिया

जी गज्जन धावन के ऊपर ऐसी करते भोगसाम
ग्री जो चहिये सो मांगि लेते ऐसी कितनीकवार्ता
हैं सो कहां तांई लिषिये और एकदिन श्री नवनी
तप्रियाजी नें गज्जनधावनसों कही जो मोकों श्री
गुसांईजी श्री आचार्यजी महाप्रभून के घर पध
राय ता समय श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री गोकु
ल मे हुते तहां गज्जन आयकें श्री आचार्यजीम
हाप्रभून सों कह्यो जो महाराज श्री नवनीतप्रिया
जी की ऐसी आज्ञा भई है जो मोकूं श्री आचार्यजी
महाप्रभून के पास पधराय तब श्री आचार्यजीम
हाप्रभून नें कही जो भलो पधराय तब गज्जनधाव
ननें श्री नवनीतप्रियाजी श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके मंदिर में पधराये तब श्री आचार्यजी महा
प्रभूननें जैसें प्रस्ताव बन्यों तैसें पधराय भोग
समर्प्यो पाछें रात्रिकों आप बहुत सों धो लगाय
कें श्री नवनीतप्रियाजी कों अपनी सिज्या ऊप
र ले पोढे दूसरे दिन नई सिज्या करवाई ताऊ
पर पोढे परि वह सिज्या छोटी भई तब श्री नव-
नीतप्रियाजी नें कह्यो जो हूंतो या सिज्या ऊपर

न पोढूंगो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू ननें कही
जो ऐसें कसें वनें तब श्री नवनीत प्रियाजीनें क
ह्यो जो कछू बाधक नाहीं है तब श्री आचार्यजी
महाप्रभू आप सोंधी लगायकें पासही ले पोढे
पाछें दूसरे दिन सिज्या बडी कर वाई तापर पोढा
ए तब पोढे ता पाछें थोरे से दिन रहिकें श्री आचा
र्यजी महाप्रभू श्री गोकुल ते अडेल कों पधारे त
ब गज्जन हू साथ गयो गज्जन धावन विना श्रीनव
नीतप्रियाजी एक क्षण हूं न रहते और ऐसें ही श्री
नवनीत प्रियाजी बिना गज्जन एक क्षण हूं न रह
तो तब एक दिन श्री नवनीत प्रियाजी के लिये श्री
अक्काजीनें गज्जन धावन कों पांन लेवे पठायो क
ह्यो जो पांन ले आवो तब गज्जन ऐसें तो कहि न
सक्यो जो श्री नवनीत प्रियाजी मो सों हिले हैं सो
में कैसें जाऊं तातें अन वोल्यो पान लेन कों उठि
चल्यो सो थोरी सी दूरि गयो इतने में ज्वर चढि आ
यो सो उहांई पडि रह्यो और इहां श्री अक्काजीनें
श्री नवनीत प्रियाजी कों भोग समर्प्यो तब श्रीअ
क्काजीसों श्री नवनीत प्रियाजीनें कह्यो जो गज्जन

कों बुलावो मेरो गज्जन आवेगो जब भोजन करूंगो तब श्री अक्काजीनें मनुष्य दोय बुलावन कों पठाए तब वे मनुष्य देषें तो गज्जनधावन बडी दूरि पर्यो है ज्वर चढि रह्यो है मनुष्य तहां तें बुलाय लाए तब गज्जन आप स्नान करि मंदिर में गयो तब तत्काल ज्वर उतरि गयो तब गज्जन नें श्री नवनीतप्रियाजी सों कह्यो जो बाबा भोजन क्यों नाहीं करत अब भोजन करो तब भोजन श्री नवनीतप्रियाजी नें कीयो गज्जनधावन सों श्री नवनीतप्रियाजी ऐसे सानुभाव हुते श्री नवनीतप्रियाजी ते एकक्षण न्यारो भयो जो तत्काल ज्वर चढि आयो और जब निकट आयो तब तत्काल ज्वर उतरि गयो तातें गज्जनधावन श्रीनवनीतप्रियाजी के सदा पास रहते सो वे गज्जनधावन श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं सो कहांलांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥२३

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक नारायणदास ब्रह्म

चारी सारस्वत ब्राह्मण महाबन
में रहते तिन की वार्ता

सो नारायण दास के सेव्य श्री ठाकुर जी श्री गोकुलचं
द्रमा जी सो नारायण दास श्री गोकुलचंद्रमा जी की
नीकी भांति सों सेवा करते और गायन कों घास षवाव
ते सो धोय पोंछि कें षवावते ताको तात्पर्य यह जो
श्री ठाकुर जी दूध आरोगत हैं जो मति दूध में रज आवे
ऐसें करते और श्री आचार्य जी महाप्रभू जब श्री गो
कुल पधारते तब नित्य प्रातःकाल श्री गोकुल ते म-
हाबन पधारते श्री गोकुलचंद्रमा जी की सेवा करिबे
कों सो सेवा करि भोग समर्पि कें पाछें श्री गोकुल पधा
रते और नारायणदास जहां हाथ पाव धोयते कोंबर
हे में जाते जा ठौर ते मांटी षोदते ता ठौर द्रव्य निकस-
तो ताऊपर मांटी डारि कें उठि आवते परि द्रव्य को-
स्पर्स न करते नारायणदास ऐसे त्यागी हुते सो एक दि
न नारायण दास सोवत हुते तहां षाट के आसपास
द्रव्य के ढेर भए हुते तब नारायण दास देषें तो षाट
के आस पास द्रव्य के ढेर भए हैं तब नारायणदास नें-
भती जी सों कही जो बेटी बेगि उठि घर में वि गारब

कृत भयोहैबुहारिकें कूरोसब बाहिर डारि आउतब नारायण दास तो वरहे में देहकृत कों गए पाछें भ तीजी नें सोई कीयो सब बुहारिकें कूरे कीनांई बा हिरि डारि दीनों जागे सबलीपडारी पाछें नाराय ण दास स्नान करिकें मंदिर में गए तब सेवासिंगारस ब करिकें श्री ठाकुरजी के साम्हें देखें सो श्री ठाकुरजी नें नारायण दास को अति सुंदर दर्शन दीयो तब अ ति प्रसन्न श्री ठाकुरजीकों देखिकें नारायण दासनें कह्यो जो महाराज यह घटा काहे कों उनहीहैं न जानें कहां वरसेंगी पाछें आपही कह्यो जो यह घटा श्री आचार्यजी महाप्रभूनकोसरवस्व हेउहां बरसेंगी पाछें नारायण दास श्री गोकुलचंद्रमाजी कों राजभोग समर्पिकें बाहिर आय बैठे तब ह्र दो भरि आयो जो श्री ठाकुरजीकों न भांतिसों- आरोगत हें ऐसा बिचार मनमें लाए तब भतीजी नेंकही जो श्री आचार्यजीमहाप्रभून के सेवक जहां भोग समर्पत हें सो श्री आचार्यजी महाप्रभू नकीकांनिते आरोगत हें सो तुमतो श्री आचार्य- जी महाप्रभून के सेवक परम कृपापात्र भगवदी

यहो तातें तुम्हारो समर्प्यो क्यों न आरोगेंगे तुमसं
देह क्यों करत हो तब नारायणदास नें कह्यो
जो बेटी आरोगेंगे जब जानियें तब कोई वैस्न
व अपने घर आय अचानक महाप्रसाद लेय
तब जानियें जो श्री ठाकुरजी आरोगे होंयगे वै
ष्नव ऊपर नारायणदास को ऐसो भाव हुतो ॥
वार्त्ता प्रसंग ॥ २ ॥ बहुरि एक दिन नारायणदास
श्री गोकुलचंद्रमाजी को सिंगार करि रसोई में
गए तहां सिंगार भोग कों सिद्धि करि कें सिरा
यवे कों थार धरयो इतने में एक वैस्नव नें नारा
यणदास के पास आयकें बधाई दीनी जो श्री
आचार्यजी महाप्रभू श्री गोकुल ते पधारत हैं
सो नारायणदास सुनत ही तातीषीरि कों डब
रा में मेल श्री ठाकुरजी कों भोग समर्पि उतावले
श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों आए
तब आय कें श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्श
न करि कें दंडोत कीनी सो श्री आचार्यजी महाप्र
भून के चरनारविंद ऊपर मांथो मेलि रहे तब ना
रायणदास को मांथो पकरि आप श्री हस्तसों उ

उठायो और पूछ्यो जो श्री गोकुलचंद्रमाजी के इहां
कहा समय है तब नारायणदासनें कही जो मह
राज अब ही सिंगार भोग समर्पिकें आयो हों सो
सुनिकें श्री आचार्यजी महाप्रभू तत्काल पधारे
तब जातही स्नान करिकें मंदिर में हाथ धोयआ
चमन की झारी हाथमें लेकें भोग सरायबेकों मं
दिर में पधारे तब भीतर जाय कें देषें तो श्री गोकुल
चंद्रमाजी के श्री हस्त षीरिसों भरे हैं और श्री ह
स्त कमल षेंचि रहे हैं तब श्री आचार्यजी महाप्र
भूननें श्री गोकुलचंद्रमाजीसों कही जो महारा
ज श्री हस्त कों क्यों षेंचि रहे हो तब श्री गोकुलचं
द्रमाजीनें कही जो तुम कों आए जानिकें मोकों ना
रायणदास ताती षीरि समर्पिकें तुम्हारे पास गयो सो
षीरि मेरे हाथ सों ताती लागी सो मेंनें थोरी सी चा
टि कें हाथ झटके सो सब मंदिर में छींट लागी हैं औ
र मेरे हाथ और ओष्ठ राते भए हैं सो श्री गोकुल
चंद्रमाजी के हाथ और ओष्ठ अजहूं लाल हैं पा
छें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें षीरि पंषासों सी
री करि भोग समर्पिकें बाहिर आए तब नारायण

दाससों षीजे और कह्यो जो तैंने श्री ठाकुरजी कों ता
ती षीरि समर्पी तब नारायणदासनें श्री आचार्यजी
महाप्रभूनसों बीनती कीनी जो मैं राज कों पधारे
जानिकें उतावलो राज पास आयो तब श्री आचा
र्यजी महाप्रभूननें कही जो आज पीछें ऐसो काम
कबहू मति करियो पाछें समय भयो तब श्री आचा
र्य महाप्रभूननें भोग सरायो तब श्री गोकुलचं
द्रमाजीनें श्री आचार्यजी महाप्रभूनके दोऊ श्री
हस्त पकरिकें कह्यो जो तुम षीरि महाप्रसाद लेउ-
तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो महारा
ज जाति व्यवहार की कठिन है तब श्री गोकुलचं
द्रमाजीनें कह्यो जो यह मेरी आज्ञा है तातें तुम क
छू विचार मति करो षीरि को महाप्रसाद लेउ त
ब श्री गोकुलचंद्रमाजीनें षीर को महाप्रसाद है
सो अपने आगें ही श्री आचार्यजी महाप्रभूनकों
लिवायो तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें लीनों
तादिन ते षीरि अन सखडी में होत है नारा
यण दास सों श्री गोकुलचंद्रमा जी ऐसी भांति
सेवा कर वावते हे नारायण दास ऐसे भगवदी

यहे तातें श्री गोकुल चंद्रमाजी ऐसी कृपा करते वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ बहुरि कितेक दिन पाछें नारायण दास की देह थकी सो बहुत आसक्ति भई तब एक दिन श्री गोकुल चंद्रमाजी नें नारायण दास सों कही जो नारायणदास तू कछू मांगि तब नारायणदासनें कही जो महाराज हूं यह मांगत हूं जो तुम श्री गुसांईं के घर पधारि सेवा कर वावो नारायणदास के मन में यह जो श्री ठाकुरजी और कहूं सुषन मानें गे सेवा आछी भांति सों न होयगी सो नारायण दास नें अंत समें श्री ठाकुरजी के पास यह मांग्यो पाछें कितेक दिन में नारायण दास की देह छूटी तब श्री गोकुलचंद्रमाजीनें कितेक दिन तांईं कृष्ण दास स्वामी के पास सेवा करवाई पाछें श्री गुसांईंजी के घर मथुरा में पधारे सो श्री गुसांईंजीनें श्री रघुनाथजी के माथें पधराय दीए सो वे नारायण दास ब्रह्मचारी श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ता ते इन की वार्ता कहां तांईं लिषिये ॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ १५ ॥ संबंध ॥ ५८ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के

सेवक एक क्षत्राणी महावन में रहती ताकी वार्ता है

सो एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभू पृथ्वीपरिक्रमा करत करत महावन पधारे सो वा क्षत्राणी कों चारि स्वरूप प्रप्ति भए हे सो चारों स्वरूप श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगें आनि राषे सो तिन चारों स्वरूपन के नांम एक तो श्री नवनीत प्रियाजी और एक श्री गोकुलचंद्रमाजी और एक श्री ललित त्रभंगीजी और एक श्री लाडिलेजी ये चारयों स्वरूप श्री आचार्यजी महाप्रभून नें चारि वैष्णव न के मांथें पधिरायदीए सो याभांति श्री गोकुलचंद्रमाजी तो नारायण दास ब्रह्मचारी के मांथें पधराय और श्री लाडिलेजी जीय दास क्षत्री के मांथें पधराय और श्री ललित त्रभंगी जी देवा क्षत्री के मांथें पधराए और श्री नवनीत प्रियाजी गज्जन धावन के मांथें पधराए याभांति चारयों स्वरूप चारि वैष्णव न के मांथें पधराय दीए तब चारयों वैष्णवनसों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो ये मेरे सर्बस्व हैं सो स्वरूप तुम्हारे मांथें पधराए हैं

सो इन की सेवा तुम नीकी भांतिसें करियो और तुमसें जब सेवा न होय आवे तब हमारे घर प धराय जेयें पाछें श्री नवनीतप्रियाजीनें तो कछू क दिन गज्जनधावन के मांथेंसेवा करवाई पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभून के घर पधराए सो स व तो गज्जनधावन की वार्तामें लिष्योहे और श्री गोकुलचंद्रमा जी ने कितेक दिन ताई नाराय णदास ब्रह्मचारी के मांथे सेवा करवाई पाछें कृष्ण दासस्वीमी के पास सेवा करवाई पाछें श्री गु सांईजी के घर पधारे पाछें श्री गुसांईजी नें श्रीरघु नाथजी के मांथें पधराए सो प्रकार नारायणदा स ब्रह्मचारी की वार्ता में लिख्यो हे और श्रीलाडि लेजी को प्रकार सब जीयदास की वार्ता में लिख्यो हे सो अब श्री आचार्यजी के कुलमें बिराजतहें और श्री ललितत्रिभंगी जी अंतर्ध्यान भए सो प्र कार देवाक्षत्री कपूर की वार्ता में लिख्यो हे सो व ह क्षत्राणी श्री आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपा पात्र भगवदी यही ता की वार्ता कहां तांई लिषिये वार्ताप्रसंग॥१॥ संबंध॥५९॥ वेष्नव॥२२॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक जीयदास क्षत्री सूर
तिनकी वार्ता लिष्यते

सो जीयदास के मांथें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें श्री लाडिलेजीकी सेवा दीनी सो जीयदासके पास श्री लाडिलेजी नें चारि पहर सेवा करवाई सो जीयदास कें चारि बेटा हुते तिनमें पुरुषोत्तमदास छवीलदास इन दोऊ भाइनमें कोई एकदिन सेवा कीनी पाछें दोऊ भाईनकें संतति न भई तब इनके पाछें इनके मांमा क्रष्णदास चोपडा हुते तिनके मांथें श्रीलाडिलेजी पधारे सो कितेक दिन तांई क्रष्णदास चोपडा सों सेवा करवाई सो भली भांति सों सेवा कीनी सो एक समें महामरी आई सो क्रष्णदास के घरके सबकुटंबकी देह छूटी तब क्रष्णदास अकेले रहे तब क्रष्णदास के मित्र हरजी तथा मथुरामल्ल क्षत्री हुते सो क्रष्णदास तहां आय रहे सो कितेक दिन तांई क्रष्णदासनें और हरजीनें दोऊ मिलिकें सेवा कीनी पाछें क्रष्णदास की देह छूटी तब हरजी भाईनें डेढ वर्षलों सेवा कीनी पाछें श्री गुसांईंजी के घर पधारे॰

सो श्री लाडिलेजी अब बिराजत हैं सो वे जीयदास श्री आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता को पार नांही सो कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ९६ ॥ संवंध ९६ ॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के सेवक देवा क्षत्री कपूर तिनकी वार्ता लिष्यते

सो देवा कपूर के मांथें श्री आचार्यजी महा प्रभून नें श्री ललित त्रभंगीजी की सेवा पधराय दीनी सो देवा कपूर की जब लों देह रही तब लों सेवा कीनी-ता पाछें देवा कपूर की स्त्री की देह छूटी ताको संस्कार करि आए ता पाछें मंदिर उघारकें देषें तो श्री ठाकुर जी नाहीं और सामग्री सब धरी है एक श्री ठाकुरजी नाही हैं सो जानें कहां अंतर ध्यान भए या ते यों जानी परी जो देवा कपूर कें चारि बेटा हुते परि उनके पास सेवा न करवाई श्री ठाकुरजी तो स्नेह के बस हें सो भगवद इच्छा ऐसी ही भई ताते देवा कपूर तथा देवा कपूर की स्त्री श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इन की वा

तीं कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ संबंध ॥ ६२ ॥ वैष्णव ॥ २७ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक दिनकर दास सेठ
तिन की वार्ता

सो दिनकर दास कों कथा के ऊपर बहुत रुचि हुती सो श्री आचार्यजी महाप्रभु आप अडेल में कथा कहते तहां दिनकर दास नित्य सुनते सो एक दिन दिनकर दास रसोई करत हुते सो आटो सान्यों हुतो ऊपरा वराय दीने हे लीटी करि राषी हुती इतने में श्री आचार्य जी महाप्रभून को सेवक जल घरिया सो श्री ठाकुरजी को जल भरिवे कों आयो तब दिनकर दास नें पूछी जो श्री आचार्यजी महाप्रभू कहा करत हैं तब वा जल घरिया ने कही जो पोथी षोली है अब कथा कहेंगे तब दिनकर दास नें काची ही अंगा करी लीनी से की नाहीं वेगी उठि वस्त्र पहरि कें आयो आय कें कथा सुनी श्री आचार्य जी महाप्रभू कथा कहि रहे हे तब वा जल घरिया नें श्री आचार्य जी महाप्रभू

न सों कह्यो जो महा राज दिनकर दासनें कां ची-
अंगा करी लीनी से की हू नाहीं तब दिनकर दा
स सों श्री आचार्य जी महा प्रभू न नें कह्यो जो तू का
ची अंगा करी क्यों षाय आयो है तब दिनकर
दास नें कह्यो जो महा राज अंगा करी तो नि
त्य लेंउ गो परि यह अमृत क था क ब सुनूंगो
तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें कह्यो जो अब
ते तू रसोई करि श्री ठाकुर जी कों भोग समर्पि
प्रसाद लेइ पहुंचि कें जब आवे गो तब पोथी-
षोलूं गो तेरे आए विना कथा न क हैंगे आज ते
हमारी कथा को श्रोता तू तातें तू निश्चिंत हो-
यकें आइयो तब ता दिन ते दिनकर दास बे गि
ही रसोई करि भोग समर्पि प्रसाद लेकें जब क-
था के समय आवते तब श्री आचार्य जी महा
प्रभू पोथी षोलते सो वे दिनकर दास सेठ श्री
आचार्य जी महा प्रभून के ऐसे कृपा पात्र भ
गवदी यहे सो इनकी वार्ता को पार नाहीं तातें
अब कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वै
ष्णव ॥१८॥ संबंध ॥ ६२॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक मुकंददास कायस्थ ताकी वार्ता

सो मुकंददास आप कबि हुते सो कबित्त कर ते सो कवित्त बहुत कीए हैं श्री आचार्यजीम हाप्रभून के तथा श्री गुसांईजी के तथा श्रीठा कुरजी के बहुत कवित्त कीए हैं और मुकंद- सागर एक ग्रंथ कीयो हो सो एक समें मुकंददास उज्जैन के कारकून होय कें आए तब तहां के- पंडित सब आय मिले तब पंडितन नें मुकंद दास सों कह्यो जो तुम हमारे पास श्री भागवत सुनों तो सुनावे तब मुकंददास ने कह्यो जो तुम हमारो भागवत जानत हो तव उन पंडितननें कह्यो जो तुम्हारो कहा श्री भागवत न्यारो है तव मुकंद दासनें एक श्लोक को व्याख्यान कीयो पाछें महीना लों सुनायो परि आप काहू पास कथा न सुनी को ऊ पंडित कदाचित व्याख्यान करतो ताकों बहुत- भांति दूषन देकें आवते जो काहे तें सुबोधनीमें ब हुत भवे सहो मुकंददास को श्री आचार्यजी महा

प्रभूनके चरण कमल पर द्रढता हुती तातें सुबोध
नीस्फुर्ई रूपहुती ऐसें करत करत कितने क दिनमें
उज्जेन में मुकंद दास की देह छूटी तब काहू वैष्ण
वनें श्री आचार्यजी महा प्रभून के आगें आय
कही जो महा राज मुकंद दासनें अवंतिकापाई
तब श्री आचार्यजी महा प्रभूननें कह्यो जोऐसें
मति कहो तातें ऐसें कहो जो मुकंद दासको अ
वंतिकानें पाए सो वे मुकंद दास श्री आचार्य
जी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदी
यहे तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं सोकहां
ताई लिषिये ॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ संबंध ६३॥ वैस्नव २६

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक प्रभूदास जलोटा क्ष
त्री सीहनंदके वासी
तिनकीवार्ता

सो प्रभूदास के सेव्यठाकुर श्रीमदन मोहन जीसे
राज नगर सिकंदर पुर में बैठे हे सो जब श्री आ
चार्यजी महा प्रभू मथुरा पधारे तब प्रभूदास सा
थ हे तब एकदिन श्री आचार्यजी महा प्रभून

पसंध्या वंदन करिकें स्नान करत हुते विश्रांतिके ऊपर तहां और बैष्नव चारि पांच बैठे हे तबतहां रूप सनातन कृष्न चैतन्य के सेवक नें श्रीआचार्य जी महाप्रभून सों पूछी जो ये बैष्नव कोंन हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो ये हमारे सेवक हैं तब रूप सनातन नें कह्यो जो ये ऐसे दुर्लभ क्यों रहत हैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो में इन कों बहुत बरजे जो तुम या मार्ग में मति परो परि इन मेरो कह्यो नमांन्यों ताको फल ये भोगत हैं परि रूप सनातनकछू समझे नाहीं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करिकें रूपसनातन तो गए पाछें कितेक दिनमें एक बैष्नव रूप सनातन के साथ को श्रीजगन्नाथ जी के दर्शन कों गयो तहां कृष्न चैतन्य मिले तब कृष्न चैतन्य नें वा बैष्नव सों श्री आचार्य जी महाप्रभून के कुसल समाचार पूछे और कह्यो जो नीके हें कहां मिले हुते कहा करत हुते तव वा बैष्नव ने कृष्न चैतन्य सों कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू मथुरा पधारे हुते सों

र विश्रांति ऊपर मिले हुते बहुत नीके हैं और
श्री आचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों रूप
सनातन हूं गए हुते विश्रांति ऊपर सो श्री आ
चार्यजी महाप्रभून सों रूप सनातन नें और वै
ष्णव न की बात पूछी जो ये ऐसे दुर्लभ क्यों र
हत हैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कही
प्रभूदास की बात कही जो मैं इन कूं बहुत बर
जे परि इन मेरो कह्यो न मान्यों ताको फल ये
भोगत हैं सो यह बात सुनि कें कृष्ण चैतन्य कों
मूर्छा आई सो एक महूर्ति लों मूर्छा रही पाछें
सावधान भए तब फेरि पूछो जो तुमनें कहा बा
त कही तब वा वैष्णव ने फेरि कह्यो जो श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो या मार्ग में मति
परो तब कृष्ण चैतन्य कों फेरि मूर्छा आई सो
दोय महूर्त लों रही पाछें फेरि सावधान भए ऐ
सें तीनि वार पूछो सो तीन्यों वार मूर्छा आई चौ
थी वार फेरि वा वैष्णव सों पूछी जो कहा कही त
व वानें कृष्ण चैतन्य सों कही जो अब मोपे क
ही न जाय जो यह बात एसी है जो केवल बिर

ही होय सो जानें रूपसनांतन कहा जानें॥वा
र्ताप्रसंग॥१॥और एक समें प्रभुदास नें वेगी
रसोई करी सो दारि नो काची रही और अंगा
करी जरगई तव प्रभुदासके मन में आई जो
एसी सामग्री श्रीठाकुर जी कों कहा समर्पूं सो
चरणो दिक मेलि कें प्रसाद लियो और श्री
ठाकुर जी तो वाट देषत ही रहे जो प्रभूदासभो
ग समर्पेगो और मे आरो गूंगो और प्रभूदास ने तो
विगरी सामग्री जान कें न समर्पी तव श्री ठाकुर
जीनें श्रीआचार्य जी महा प्रभूनसों कही जो आ
जमोकों प्रभू दास ने भोग समर्प्यो नाही मेंनें वा
ट देषी जो अव मोकों प्रभूदास भोग समर्प्यो गो औ
र में आरोगूंगो परि प्रभूदास नें भोग नसमर्प्यो त
व उत्था पनके समें प्रभू दास दर्शन कों आए तव
श्री आचार्य जी महा प्रभून नें प्रभूदास सों कह्यो
जो आज तेंनें श्रीठकुरजी के विनु समर्पे प्रसा
द लीयो तव प्रभू दास नें सांची वात कही जो मह
राज दारि तो काची रही और अंगा करी जरिगई
तातें ऐसी सामग्री जानि भोगसमर्प्यो ना हीं चर

णोदिक मेलि कें प्रसाद लीयो तव श्री आचार्य जी
महाप्रभून नें कह्यो जो ऐसी रसोई क्यों करी श्री
ठाकुरजी ने तो वडी वार लों वाट देषी जो प्र-
भूदास भोग समर्पेंगो और में आरो गूंगो ता
नें तेंनें ऐसी रसोई क्यों करी सावधान ह्वै कें क्यों
न करी पाछें सावधान ह्वै कें करन लागे ॥ वा-
र्ता प्रसंग ॥ २ ॥ और एक समें श्री आचार्य जी म
हाप्रभू व्रज में पाव धारे हुते तव प्रभूदास साथ
हे तव एक दिन श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
व्रज में श्री गोवर्द्धन के निकट स्थल भोग धर
यो पाछें भोग सरायो तव प्रभूदास सों श्री आ-
चार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो प्रसाद लेउ त
व प्रभूदास नें कह्यो जो महाराज मेंनें स्नान-
नाही कीनों तव श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
प्रभूदास सों कही जो तू देषि तव श्लोक करिकें
दिखायो सो श्लोक ॥ वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे
पत्रे चतुर्भुजः ॥ यत्र वृन्दावनं तत्र लक्ष्यालक्ष
कथा कुतः ॥ १ ॥ जलादिभिः रजःपुञ्ज रज
सोपि जलं वरं यत्र वृन्दावनं तत्र स्नानास्नान

न कृपा कुतः॥४॥ यह श्लोक पढ़िकें प्रभूदा
सकों दिखायो वृजको स्वरूप वृक्ष वृक्षवि
षें वेणु धारि पत्र पत्र विषें चतुर्भुज देषेया
भांति को प्रभूदास कों दर्शन करवायो ऐसो सा
क्षस्य वृजको स्वरूप दिखायो पाछें प्रभूदासनें
प्रसाद लीयो दंडोत करि कें प्रभूदासके ऊपर श्री
आचार्य जी महाप्रभून की ऐसी कृपा हुती सो
आपनें कृपा करि कें वृजको स्वरूप दिषायो
॥वार्ता प्रसंग॥३॥ और एक समें श्री आचार्य
जी महाप्रभू आप मंदिर में हुते तब ऐसी मनमें
आई जो श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पिये सो द
ही को भोग समर्पिये ता समें प्रभूदास बाहिर हु
ते सो प्रभूदास नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के
अंतःकरन की जानी तब प्रभूदास बाहिर गए
तब गांमें जाय कें एक अहीरी मिली तासों पू
छो जो तेरें दही है तब वा अहीरी नें कह्यो जो
हां रही है तब प्रभूदासने कह्यो जो लाव त
ब अहीरी दहीले आई तब प्रभूदासनें क
ह्यो याको मोल कहि तब वा अहीरी ने क

ही जो तू मोकों कहा देयगो तब प्रभूदास नें क
ह्यो जो तू मांगेगो सो देंउगे तब वा अहीरी नें
कही जो एक टका दे और कहा मुक्ति देयगो
तब प्रभूदास नें कह्यो जो यह तो टका ले और
तोकों मुक्ति दीनी तब वा अहीरी नें कही जो तू
मोकों लिखि दे जो मुक्ति दीनी तब प्रभूदास
नें लिषि दीनी और दही लेकें घर आए सो
दही भीतर दियो तब श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें वह दही भोग समर्प्यों सो श्री ठाकुर
जी आरोगे सो वह दही अति स्वाद भयो पा
छें गुसांई दास सांझ के समें दर्शन को आए
तब वह बात श्री आचार्य जी महाप्रभून सों
कही जो महाराज प्रभूदास नें दही के ऊपर मु
क्ति दीनी सो लिषी आए तब श्री महाप्रभू जी नें
प्रभूदास सों पूंछी जो प्रभूदास वह दही अति
स्वाद भयो हुतो सो तैनें वाको मोल कहा दि
यो हुतो तब प्रभूदास नें कह्यो जो मह
राज वा अहीरी नें एक टका और मुक्ति मांगी
सो एक टका और मुक्ति दीनी तब श्री आचार्य

जी महा प्रभून नें कह्यो जो तैनें कछू नदीनो
तव प्रभू दासनें कही जो महाराज हूं कहा करूं
जो मोपै मांग्यो हुतो सो दीनो जो भक्ति मांगती
तो भक्ति देतो पाछें वा अहीरी की सखीनें कह्यो
जो तोकों तो ठग लीनी तव वा अहीरीनें सखी
सों कह्यो जो तू कहा जानें ये वडे भगवद्भ
क्त हैं इनको वचन सत्य है तव कितनेक
दिन में वा अहीरी की देहि छूटी तव यम दूत
आए इतने में विस्नु दूत हू आए सो आपुस
में झगरन लागे तव यम दूतन सों विस्नु दूत
ननें कही जो याकों तो श्री आचार्य जी महा
प्रभून के सेवक प्रभू दास नें मुक्ति दीनी है सो
कागद याकी साडी के घूंट ते बंध्यो है सो य
ह वात वा अहीरी के संग सो देरननें सुनी परि
आंखिन नदेखे पाछें वा अहीरी कों विस्नु दूत ले
जान लागे तव वा अहीरी नें विस्नु दूतन सों क
ह्यो जो मेरी सखी को दर्शन देउ वाकों अवि
स्वास है पाछें विस्नु दूतन नें वाकों दर्शन दी
नों तव वह कहन लागी जो मो हू कों लेजाउ

तव विसु दूतन नें कही जो हमारे हाथ कहा है
हमतो आग्याकारी हैं तातें तू प्रभू दास सों कहि त
व वह सखी प्रभू दास के पास आई तव प्रभू दास
नें वाकों श्री आचार्य जी महा प्रभून के पास नाम
दिवायो तव वाहू को कार्य भयो पाछें विसु दू
त वा अहीरी कों लेगए तव वाकी मुक्ति भई पा
छें वा अहीरी के संग कुटंव नें वाकी साडी के पूर
ते कागद षोलि कें देखो तव वाँच कें रोवत नें
रहे सो प्रभू दास कों श्री आचार्य जी महा प्रभून
की कृपा तें एसी सामार्थ हुती सो वे प्रभू दा स
वडे भगवदी यहे तातें इनकी वार्ता कहा ता-
ई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥४॥ वैसव ॥२०॥
संवंध ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अव श्री आचार्य जी महा प्रभून
के सेवक प्रभू दास भाट सी
ह नंद के तिनकी वार्ता

सो वे प्रभू दास भाट श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी
भांति सों करते सो वहुत दिन सेवा करत वीते पा
छें वृद्ध भये तव वहुत आसक्ति भए तव वा

नी जो यह देह दिन चारि पांच में छूटेगी त
व सावधान ता छूटी असावधान भए तव सग
रे मिलि कें प्रभूदास कों प्रयो दिक तीर्थ हे त·
हां लेगए जव प्रयो दिक आयो तवसावधा·
न भए आंषि खोलि कें देषें तो प्रयोदिक तीर्थ·
है तव प्रभूदास नें कही जो मोकों इहां क्यों
लाए हो तवसगेर जनेन नें कह्यो जो यह प्र·
योदिक तीर्थ है तुम्हारी अंत अवस्था देषि
कें लाए हैं तवप्रभूदास नें कही जो मोकों प्र·
योदिक सों कहा कांम है मैंतो श्री आचार्य जी
महाप्रभून को सेवक हों मोकों प्रयोदिक क
हा कृतार्थ करेंगो मोकों वरस एक लों द हांए
षोगे तोऊ मेरी देहि यहां न छूटेगी तातें मो
कों सीहनंद लेचलो जव अपने श्रीठाकुर
जीके चरण देषूंगो तव देह छूटेगी तव दि
न पांच सात लों राषें परि दिन दिन प्रभूदास·
कों सरीर नीको भयो सावधान भए तवफिर·
सीहनंद लेगए तव अपने सेव्य श्री ठाकुर
जी को देषे दर्शन करि कें दंडोत कीनी तव

प्रभुदास नें श्रीठाकुर जीसों कह्यो जोश्रीआ
चार्य जी महाप्रभून नें तुमकों मेरे मांथें पधरा
ए हैं और येतो बावरे लोग तुम्हारोआ
श्रय छुडाय कें मोकों तीर्थ आगें लेग
ए परि श्री आचार्य जी महाप्रभू ऐसी
क्यों करें जो मेरी देह तीर्थ पै छूटें पाछें
श्रीठाकुरजीकीसेवा सिंगार करिकें वेगि वेगि भो-
ग समर्प्यो भोगसराय अपनों सबकियो पाछेंसब
न ते कह्यो जोतुम वेगि वेगि प्रसाद लेउ तापा
छें मेरी देह छूटेगी तबसब प्रसाद ले चुकेंत
ब सबनसों प्रभूदासनें जैसी कृष्ण कह्यो और
प्रभूदासनें तत्काल देह छोडी पाछें सीहनंद
में एककीरत चोधरी हुतो सोप्रभूदासकीनिं-
द्या करन लाग्यो और कह्यो जो प्रभूदास त्र-
योदिक ते उलटो फिर आयो औरसीहनंद-
में देह छोडी एसीनिंद्या करतो सो एक दिनरा
त्रि कोंसोयो हुतो तहां कोऊ चारिजने हाथ-
में मुगदर लेकें आए सोकीरत चोधरीकोंब
हुत मार्यो तबकीरत चोधिरीनें कह्यो जोतु

म मोकों क्यों मारत हो तव उन कहो जो प्रभू
दास की निंदा तू क्यों करत है तव कीरत चो
धरी नें कह्यो जो अव में निंदा न करूंगो और

वहुत मनुहार करी तव उन कह्यो जो तू फे
रि निंदा करेगो तो तोकों या ही भांति सों मारें
गे तव कीरति चोधरीनें कह्यो जो अवतें निंदा
न करूंगो भक्ति करूंगो पाछें स्तुति करन लागे
तव प्रभूदास की वात चले तव कीरत चोधरी क
हे जो वे वडे महा पुरुष हैं तव और लोग कह
न लागे जो पहलें तो तुम प्रभूदास की निंदा क
रत हुते और अव स्तुति क्यों करत हो तव सवन
कों कीरत चोधरी नें अपने देह की व्यवस्था दि
षाई और कह्यो जो रात्रि कों कोऊ चारि जने
आपकें मार मार हाड चूरन कियो तातें भगवदी
य की निंदा सर्वथा न करनी और जो करे तो या
लोक में यही हाल होय और परलोक में अघोर न
र्क में जाय सो वे प्रभूदास भाट श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इ
न की वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥

॥ वैसव॥ ३१॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभू नके

सेवक पुरुषोत्तम दास आग

रे में राजघाट ऊपर रहत हु

ते तिनकी वार्ता है

सो एक समें श्री गुसांई जी आगरे पधारे हुते तव पुरुषोत्तम दास के घर उतरे तव पुरुषोत्तम दासकी स्त्री छिपि रही तव पुरुषोत्तम दास सों श्री गुसांई जीने पूछो जो तेरी स्त्री कहां गई है तव पुरुषोत्तम दास ने कह्यो जो जनेऊ टूटी होयगी पाछें श्री गुसांई जी वेगि वेगि रसोई करि दारि भाति साक चार पांच करे तव रोटी वेलिवे कीवेरि पुरुषोत्तम दास की स्त्री आई तव श्री गुसांई जीनें पूछों जो अवलों तू कहां ही तव पुरुषोत्तम दास की स्त्री ने कह्यो जोराज कछू कांम करत ही पाछें पुरुषोत्तम दासकी स्त्री ने रोटी वेलि वेलि दीनी तव रसोई सिद्धि भई तव श्री गुसांई जीनें श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय पाछे वही थार कटोरा पडगी सव उन

पात्रन में श्रीगुसांई जीसों कही जो भोजन करि
ये तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो ये तो श्री ठाकु
र जी के पात्र हैं इनमें भोजन कैसें करें तातें हम
इन पात्रनमें भोजन न करेंगे तब पुरुषोत्तम-
दास तथा उनकी स्त्रीनें कह्यो जो महाराज -
की कृपा ते कछू द्रव्य निवटो नाही और पात्र
नए मगामेंगे आप इन में भोजन करिये तब श्री
गुसांई जी भोजन करन कों बैठे तब पुरुषोत्त
म दास की स्त्री श्रीगुसांई जी के पास बैठी के प
षा करन लागी और कह्यो जो महाराज और -
सामग्री आएगी तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो
मोकों रुचेगी सो में आपे गहूंगो तब पुरुषोत्तम
दास नें कह्यो जो महाराज श्री नंदराय जी के घ
र कैसें आरोगत हो ऐसें कहिकें स्त्री पुरुष दों -
नों जनें श्रीगुसांई जी कों बहुत सामिग्री लि-
वाय सो तिन के संकोच के लिये श्री गुसांई जी-
कहें जो तुम कहोगे सो करेंगे तब भोजन करि
ए पाछें आपने सेव्य श्री ठाकुर जी की सेया ऊ
पर पिछोरा बिछाय श्री गुसांई जी कों पाढ़ा

॥वैस्नव॥२१॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभू नके

सेवक पुरुषोत्तम दास आग

रे मेंराजघाट ऊपर रहत हु

ते तिनकी वार्ता है

सो एक समें श्री गुसांई जी आगरे पधारे हुते तब पुरुषोत्तम दास के घर उतरे तब पुरुषोत्तम दासकी स्त्री छिपि रही तब पुरुषोत्तम दास सों श्री गुसांई जीने पूछो जो तेरी स्त्री कहां गई है तब पुरुषोत्तम दास ने कह्यो जो जनेऊ टूटी होयगी पाछें श्री गुसांई जी वेगि वेगि रसोई करि दारि भाति साक चार पांच करे तब रोटी वेलिवे कीवेरि पुरुषोत्तम दास की स्त्री आई तब श्री गुसांई जीने पूछो जो अब लों तू कहां ही तब पुरुषोत्तम दास की स्त्री ने कह्यो जो राज कछू कांम करत ही पाछें पुरुषोत्तम दासकी स्त्री ने रोटी वेलि वेलि दीनी तब रसोई सिद्धि भई तब श्री गुसांई जीनें श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो पाछें समयानुसार भोग सराय पाछे वही थार कटोरा षडगी सब उन

पात्रन में श्री गुसांई जीसों कही जो भोजन कीर ये तब श्री गुसांई जी ने कह्यो जो ये तो श्री ठाकु र जी के पात्र हैं इन में भोजन कैसें करें तातें हम इन पात्र नमें भोजन न करेंगे तव पुरुषोत्तम-दास तथा उनकी स्त्रीनें कह्यो जो महाराज -की कृपा ते कछू द्रव्य निवटो नांही और पात्र नए मगामेंगे आप इन में भोजन करिये तव श्री गुसांई जी भोजन करन कों वैठे तव पुरुषोत्त मदास की स्त्री श्री गुसांई जी के पास वैठी कें पं षा करन लागी और कह्यो जो महाराज और सामग्री आरोगो तव श्री गुसांई जी ने कह्यो जो मोकों रुचेगी सो में आरोग्यूंगो तव पुरुषोत्तम दास नें कह्यो जो महाराज श्री नंदराय जी के घ र कैसें आरोगत हो ऐसें कहिकें स्त्री पुरुष दों नों जनें श्री गुसांई जी कों वहुत सामिग्री लि-वाय सो तिन के संकोच के लिये श्री गुसांई जी कहें जो तुम कहो गे सो करेंगे तव भोजन की ए पाछें अपने सेव्य श्री ठाकुर जी की सैया ऊ पर पिछोरा विछाय श्री गुसांई जी कों पोढ़ा

ए पुरषोतम दास चरण सेवा करन लागे स्त्री पं
षा करन लागी पाछें घडी एक रहिकें श्री गुसांईं
जी नें दोऊनसों कह्यो जो अब तुम जायकें मह
प्रसाद लेउ तब उन कह्यो जो महाराज महाप्र
साद तो नित्य लेतहैं परि तुम्हारी सेवा कब कों
गे सो वे स्त्री पुरुष दोऊ जनें श्री आचार्य जी महाप्र
भून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इनकी
वार्ता कहां तांई लिषिये॥ वार्ता प्रसंग॥१ वैस्नव॥२२॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून।
के सेवक त्रपुर दास कायस्थ
सेरगढ के वासी हुते
तिनकी वार्ता

सो त्रपुर दास को श्री आचार्य जी महा प्रभून
ऊपर तथा श्री गोवर्द्धन नाथ जी के विषें बहु
त समत्व हुतो जहां बैठिते जहां ठाढे होते तहां श्री
नाथ जी कों पीठि न दे कें बैठिते पीठि दे कें ठाढे
रहोते सो त्रपुरदास एक तुरक कें चाकरी क
रते परगना बहुत कमायो जो कछू वस्तु आ
वती सो पहलें श्री नाथ जी कों पहुचावते

और साक सालन पहुचावते ऐसें सदा सर्व दा करते सो एक दिन वा तुरक नें चपुरदास कों वंदी खाने में दीए और कह्यो जो तेनें मेरो द्रव्य वहुत षायो है सो जव वह तुरक सोयो तवकोऊ चारि जने हाथ मेंमुगदर लेकें आए सोआयकें वा तुरक कों षाटते ओंधो पटिक वहुत मार्यो तव वातुरक नें कह्यो जो तुम मोकों कों मारत है तव उनने कह्यो जो तेंनें चपुर दास को वंदी खानें में कोंदियो है तव वह तुरक वहुत विलविलानों हा हा करिकें नांकि भूमि में घसिकें उनसों कह्यो जोमोकों तुम मारोम नी में अवहीं चपुर दास कों छोडत हों तवउ न कहयो जो चपुरदास कों नछोंडेगो तो हम याही भांति सोंनित्य मारेंगे ऐसें कह्यो तव वे तो गए तव वा तुरक नें आयकें अपनें लोगन सोंकही जो चपुर दास को वंदी खानेमें ते अ वेही छोडि देउ तव मनुष्य चपुर दास कों छोडनगए तव चपुरदास नें उनसों कह्यो जो अवतो रात्रि वहुत गई है तातें सवारें छोडि

यो तब वे मनुष्य फिरि आए और वा तुरक सों क
ह्यो जो साहिब त्रपुरदास कहत हैं जो अबतो रा-
त्रि बहुत गई है सवारें छोडियो तब वा तुरकनें
अपनें मनुष्यनसों कह्यो जो तुम अबहीं त्रपु
रदास कों छोडि लावो तब वे मनुष्य वेगही
जाय कें त्रपुरदास कों छोडि लाए तब वा तुर
क नें त्रपुरदास सों कह्यो जो तुम आपने घर-
जाउ तब त्रपुरदास ने कह्यो जो अबतो रात्रि
बहुत गई है सवारें जाऊंगो तब वा तुरक ने
त्रपुरदास सों कह्यो जो त कहा काहू को जी
व लेइगो तातें तू अब हीं इतनी वेर अपने
घर जाउ तब त्रपुरदास अपने घर आए॥
वार्ता प्रसंग॥१॥ बहुर कितनेक दिन पाछें
त्रपुरदास वाही तुरक के साथ अटकि गए
पाछें एक दिन रसोई यानें त्रपुरदास सों क-
ह्यो जो चरणोदिक महाप्रसाद निवटो है रंच
कहू नाहीं तब त्रपुरदास नें रसोई यासों कह्यो
जो पांडे तैंनें हम सों पहलें क्यों न कह्यो ह
म चरणोदिक महाप्रसाद मगायदेते अब क

हा करिये तव रसोईया चुप करि रह्यो तव सव
रें उठि के चत्रपुरदास वा तुरक के दरवार जान
लागे तव कह्यो जो पांडे रसोई करि श्री ठाकुर
जी कों भोग समर्पि प्रसाद लीजियो मेरी वाट म
त देषियो मेरो आवनों नवनेगो और मन में
यह निश्चें कीयो जो जव लों यह देह चलेगी
तव लों काम काज करूंगो और देह जवन च
लेगी तव पड रहूंगो परि चरणोदिक महाप्र
साद लीये विना जलपान न करूंगो यह निरधा
र अपने मन में कीयो तव तुरक के दरवार गए
तव रसोईयाने स्नान करि रसोई करन ला
गो तव आधी रसोई भई इतने में एक
लरिका वरस दस को तीन थेली ला
यो सो एक थेली में तो चरणामृत और
एक थेली में श्री आचार्य जी महाप्रभून कों
चरणामृत और एक थेली में श्री नाथजी
को महाप्रसाद सो वे तीनों थेली रसोईया कों
दीनी और कह्यो जो ये तीनों थेली चत्रपुर
दास ने पठाई हैं सो थेली देकें वह लरिका

तुरतही चल्यो गयो पाछें रसोई सिद्ध भई त
व श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो पाछें सम
यानुसार भोग सरायो तव रसोइया ने त्रपुरदा
कों बुलाय वे कों मनुष्य पठायो परि त्रपुर
दास आए नाही तव दोय तीनि वार मनुष्य
बुलायवे कों पठायो तव त्रपुरदास नें रसोई
यासों कह्यो जो पांडे तुम मोकों कहे कों बुला
वत हो मैंतो चरणाम्रत महाप्रसाद लीए वि
ना जलपान नकरूंगो तव रसोईयानें त्रपुर
दास सों कह्यो जो चरणाम्रत महाप्रसाद की
थेली तो तुमहीनें पठाई है एक लरिका वर
स दसको हुतो सो तीन थेली देगयो है तव
त्रपुरदास ने कह्यो जो वह लरिका कहां है
मोकों दिषाय तव रसोईयाने कह्यो जो वह
लरिका तो तुरत ही थेली देकें चल्यो गयो तव
त्रपुरदास नें जान्यों जो ये श्री ठाकुरजी के कां
महें तव आपकों धिक्कार करन लाग्यो जो
मैंनें ऐसो हठ क्यों कियो जो श्री ठाकुरजीकों
श्रम करनों पड्यो सो आप धिक्कार वहुत कर

न लागो जो मेनें श्रीठाकुरजी कों श्रम बहुत
करवायो पाछें सांन करि चरणामृत महा
प्रसाद लीयो पाछें समर्प्यो महाप्रसाद ली
यो ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २॥ बहुरि कितने क
दिन में त्रपुरदास की चाकरी छूटी सो सी
तकाल के दिन आए तब श्रीनाथजी कों :
कबाय पठावो तो कहांते पठावे इतनों
समों घर में नाहीं त्रपुरदास की कबाय ह
रवर्ष जाती सो श्रीनाथजी आप अंगी का
र करते तब त्रपुरदास नें कह्यो जो अब
कहा करिये तब एक हाति पीतर की हु
ती सो वेची ताके दांमन की गजी मगाई
सो गजी आई ताकी कबाय बनवाय कें श्रीनाथ
जी कों पठाई सो गजी देषिकें भंडारी नें भंडा
र में डारि दीनी तब कितने क दिनमें श्रीगुसां
ईजी श्रीनाथजी द्वार पधारे सो जब श्रीना
थजी को श्रंगार करन लागे तब श्री गुसांई
जी सों श्रीनाथजी ने कह्यो जो मोकों सीत ब
हुत लागत है तब श्रीगुसांईजी ने कह्यो जो द्व

सरी अंगीठी लावो तव दूसरी अंगीठी लाए तो
हू कही जो मोकों सीत वहुत लागत है तव
श्रीगुसांई जी नें गद्दल उढायो तव हू श्रीना
थजीनें कही जोमोकों सीत लागत है तव
श्री गुसांई जीनें तीसरी अंगीठी मंगाई तव
हू कही जोमोकों सीत लागत है तव श्रीगुसां
ई जी नें भंडारी कों वुलायो श्रौर वासों पूछो
जो कोंन कोंन वैस्रवन की कवाय श्राई हू
ती तव जा जा वैस्रव की श्राई हुती ता ता वैस्र
वन को नाम लीयो तव श्री गुसांई जी नें कही
जो त्रपुरदास की कवाय नाहीं श्राई तव भंडा
री नें कह्यो जो त्रपुरदास की एक रंगीन कवा
य श्राई है सो भंडार में पडी है तव श्री गुसांई
जीनें कह्यो जो वह रंगीन कवाय ले श्रावे तव
भंडारी वह रंगीन कवाय ले श्रायो तव श्री गुसां
ईजी देषें तो मैली मरगजीसी हो रही है तव वा
कों फारि पोछ कें तत्काल दरजी वुलाय कें फर
गुल सिद्धि करवाई तव वह फरगुल श्रीनाथ जी
कों उढाई तव श्री नाथ जीनें कह्यो जो श्रव मेरे

सींत निवर्त्तभयो ऐसे श्री नाथ जी भक्ति के प-
क्षपात जो भक्ति भावकी वस्तु कों याभांति
अंगीकार करें सोवे नपुरदास श्री आचार्य जी
महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्रभगवदीय है तातें
इनकी वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ताप्रसंग ॥
३॥ वैस्नव ॥ २३॥ ॰ अब श्री आचार्य जी महा

प्रभून के सेवक पूरन
मल्लक्षत्री तिनकी
वार्ता लिष्यते

सो पूरन मल्ल की गांठि में द्रव्य बहुत हुतो सो पूरन
मल्ल कों श्रीनाथ जी की आग्या भई हुती जो तू मेरो
मंदिर समराउ तब पूरन मल्ल श्री आचार्य जी महा
प्रभून के पास आयो ओर आपकें कहो महारा-
ज मोकों श्रीनाथ जी की आग्या ऐसी भई है जो
तू मेरो मंदिर समराउ तब श्री आचार्य जी महाप्र
भून ने कह्यो जो मंदिर वेगि समरावो तब पूरन
मल्ल ने श्री आचार्य जी महाप्रभून सों नाम पायो
पाछें मंदिर उठावन लाग्यो सो द्रव्य हुतो सो सब
नीव खोद वे में लग्यो जब सब द्रव्य निवट्यो पाछें

पूरन मल्ल पूरव चाकरी कों गए तब राजसी लोग
न नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों पूछो जो म-
हाराज आग्या देव तो हम मंदिर सवरावें तव
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्रीनाथ जी सों पू-
छो जो महाराज ये राजसी लोग मंदिर सवरान
कहत हैं सो समरावें तव श्री नाथ जी नें श्री आचा
र्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो पूरन मल्ल आवेगो
तव मंदिर समरावेगो तव राजसी लोगन सों श्री-
आचार्य जी महाप्रभून नें नाहीं कीनी तव वे फिर
गए तव कितनेक दिन में पूरन मल्ल पूरव ते व-
हुत द्रव्य कमाय कें लायो तव पूरन मल्ल नें
कितनेक दिन में मंदिर समराय कें सिद्धि कर-
वायो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून नें आ
छो महूर्त्त देषिकें श्री नाथ जी को मंदिर में पा
ट वैठाए तव पूरन मल्ल ने वहुत द्रव्य षरच्यो
॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वहुरि श्री गुसांई जी श्री-
नाथ जी द्वार पधारे तव पूरन मल्ल श्री नाथ जी
के दर्शन कों आयो सो अति आनंद सों दर्श
न कियो तव श्री गुसांई जी ने कह्यो जो पूरन

मल्ल तेरे मन में और कछू मनोरथ है सो राखे
मति तव पूरन मल्ल ने श्री गुसाँईजी सों कह्यो जो
महाराज मेरे मन में एक मनोरथ रह्यो है जो अ
ति सुंदर अति सुगंध को अरगजा आपने हा
थन सों में समर्पूं तव श्री गुसाँई जी नें आग्या
दीनी जो जा समर्पे तव पूरन मल्ल नें अति उत्त
म सुगंध को अरगजा करिकें श्रीनाथ जी कों
समर्प्यो तव पूरन मल्ल नें अपने मनमें अति आ
नंद पायो तापाछें पूरन मल्ल श्री नाथजी के
पासते श्री गुसाँई जी के पास आयो तव श्रीगु
ईंजी पूरन मल्ल के ऊपर वहुत प्रसन्न भए
तव श्री गुसाँई जी आप ओढे है सो उपरना
पूरन मल्ल कों उढायो तव पूरन मल्ल नें अति
आनंद पायो पाछें श्री गुसाँई जी नें श्रीनाथ
जी कों पंचामृत सों स्नान करवायो पाछें अंगा
वस्त्र करिकें सेवा श्रृंगार करि कें रसोई कर
भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सराय कें पा
छें श्री गुसाँई जीनें श्रीनाथ जी को प्रसादी ग
इल पूरन मल्ल को उढायो पाछें प्रति वरस

प्रसादी गद्दल श्री गुसांई जी पूरन मल्ल कों दे.
ते सो वे पूरन मल्ल श्री गुसांई जी के तथा श्री आ
चार्य जी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भ
गवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहा तांई लि
षिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २॥ वैस्नव ॥ २५॥ संबंध

अप्न श्री आचार्य जी महाप्रभून।
के सेवक पादवेंद्र दास कुम्हा
र तिन की वार्ता

सो श्री आचार्य जी महाप्रभून तथा श्री गुसांई
जी जब परदेस कों पधारते तब पादवेंद्र दा
स इनके साथ सामग्री लेकें चलते हडवाई
कनात विना बाँस की छोटी रावटी तथा ए
क दिन को सीधो सामग्री इतनों बोझ लेकें
संग चलते और रसोई की चाकरी सब करते.
रात्रि कों पहरो देते ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १॥ बहु.
रि श्री गुसांईजी श्री गोकुल में हुते तब रा:
त्रि पहर एक गई हुती तब श्री गुसांई जीने
कह्यो जो या बिरियां मंदर की नीव षोदी जा
यतो मंदिर मेलो दृढ होय अब भलो मूहूर्त है

ऐसें कहिकें श्री गुसांईं जी तो पोढे पाछें पाद
वेंद्र दासनें एक पहर में नीव षोदी सो षोदसि
द्धि कर राषी सो जब पिछिली रात्रि कों श्री गु
सांईं जी पोढ़ कें उठे तव देषें तो मांटी न कें
ढेर परे हैं तब पूछों जो यह मांटी कैसी है तब
वैस्नव ने कह्यो जो महाराज पाद वेंद्र दासनें
षोदी है तब श्री गुसांईं जीनें पाद वेंद्र दास सों
पूछों जो यह नीव तेंनें षोदी है तब पाद वें
द्र दास ने कह्यो जो महाराज रात्रि कों बाबर
आपने आग्या करी हुती ताही वेर षोदी है
सो नीव ऐसी बडी षोदी जो महीना एक लों
राज मजूर दस पंद्रह लगें तोहू भरी न जाय
सो ऐसी सामर्थ पाद वेंद्र दास में हती॥ वार्ता
प्रसंग॥२॥ और पाद वेंद्र दासनें श्री नाथ
जी द्वार कों कूवा आपने हाथ नहीं सों षोद्यो
सो मांटी निकसी ता की ईंट पकाई आपने हा
थन हीं कूवा चिन्यों परि जल षारी निकस्यो
तब पाद वेंद्र दास सोरों गयो श्री गंगाजी में ते
जल लेकें अंजुली भरि भरि के डारे और क

है जो वा कूवा को जल आप सो करो ऐसें क
हिकें तर्पण कीयो ऐसें करत जब जान्यों
जो जल मीठो भयो तब श्री गंगाजी में ते निक
स्यो पाछें श्री नाथजी द्वार आए तब वा कू
वा को जल श्री नाथजी कों अंगीकार कर
वायो सो पादवेंद्र दास श्री आचार्य जी महा
प्रभून के परम कृपा पात्र भगवदीय हैं ताते
इन की वार्ता कहा तांई लिषिये॥ वार्ता प्र
संग॥ ३॥ वैस्नव॥ २५॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभू
न के सेवक गुसांई दास सार
स्वत ब्राह्मण तिन की वार्ता है

सो एक समें श्री आचार्य जी महाप्रभून कों
श्री ठाकुरजी को स्वरूप प्राप्त भयो सो स्वरू
प गुसांई दास के माथें सेवा को पधराय दीये
और कही जो इन की सेवा नीकी भांति सों
करियो सो गुसांई दास सेवा नीकी भांति सें
करन लागे सो गुसांई दास सों श्री ठाकुरजी
सानुभाव भए बोलन लागे पाछें कितनेक

दिनमें एक वैस्नव सों गुसांई दासने कह्यो:
जो तुम इहां रहो तो हमकों सहाय ता होय
हम तुम मिलि कें सेवा करें परि वह वैस्नव·
हां नकरें पाछें एक दिन श्री ठाकुर जी ने गु
सांई दाससों कह्यो जो तूमोकों वा वैस्नव के
मांथे पधराव पाछें वा वैस्नव सों गुसांई दास
ने कह्यो जो श्रीठाकुर जी की आग्या तो ऐसी
भईहै जो तू मोकों वा वैस्नव के मांथे पधराव
तातें भगवद इच्छा ऐसी ही दीसतहै तब वा
वैस्नव नें गुसांई दास सों कह्यो जो तुम कहा
करोगे तब गुसांई दासने कह्यो जो हूं तो वद्रि
का श्रम जाऊंगो वहांमेरी देह छूटगी तब·
वा वैस्नव नें गुसांई दास से कह्यो जो श्रीठा
कुरजी की गति नाही जानी जातहे जो तु·
म्हारी देह वहां न छूटे औार तुम इहां फिर
आवो तोमें श्रीठाकुरजीकें देंउगो नाहीं तब·
गुसांई दास नें कह्यो जो श्री ठाकुर जी ऐसी·
तो न करेंगे औार कदाचित करें तो तुम्हारे·
द्वार पोरिया रहूंगो श्रीठाकुर जी के दर्शनक

सो करूंगो तब वा वैस्नव ने श्री ठाकुर जी पध
राए सो नीकी भांति सों सेवा करन लाग्यो पाछें
गुसांई दास तो वद्रिका श्रमगए सो वद्रिका
श्रम में उहां गुसांई दास की देह छूटी पाछें
वा वैस्नव नें गुसांई दास की देह छूटी की षव
रि पाई तब वह वैस्नव सुषसों सेवा करन ला
ग्यो तब वह वैस्नव श्री महाप्रभूजी की कृपा
ते भलो वैस्नव भयो सो वे गुसांई दास श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदी
य होय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिषि
ये वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैस्नव ॥ २६ ॥ संवंध ॥ ॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून के
सेवक माधो भट्ट कास्मीर के वा
सी तिनकी वार्ता है

सो माधो भट्ट प्रथम केसव भट्ट के सेवक हुते
सो केसव भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के
पास आए सो वहुत दिन रहे सो श्री आचार्य
जी महाप्रभू कथा कहते सो केसव भट्ट सुनते
सो माधो भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के से

वकन में जाय बैठिते तब भगवद् वार्ता कहते
सो प्रथम प्रसंग चले तब माधोभट्ट सों केसव-
भट्ट ने कह्यो जो तू मेरो संग छोडि कें उहां के
सेवकन में क्यों जात है उहां जायके हांसीठ
ठोरी करत है तब माधोभट्ट ने केसव भट्ट सों क
ह्यो जो मोकों तुम्हारे संग तथा तुम्हारी कथा
ते उहांकी हांसी आछी लागत है ताते हो जा-
त हों तब केसव भट्ट ने जान्यों जो अब यह हमा
रे काम को नाही अब हमारे काम ते गयो पा
छें केसव भट्ट नें श्री आचार्य जी महाप्रभून-
सों कह्यो जो मैंने श्रीभागवत तुम पासते सुनी
परि मोकों कछु बोध न भयो तब श्री आचार्य
जी महाप्रभूनने कह्यो जो तुम मेरी बराबर बै
ठिके सुन्यों और ग्यात को भाव राख्यो ताते-
बोध न भयो और माधोभट्ट की श्रीभागवत-
की स्फुर्ति भई यह दैवी सृष्टि को प्रकार जा
ननो तब श्रीभागवत की कथा सम्पूरन भ
ई तब केसव भट्ट नें श्री आचार्य जी महाप्रभून
सों कह्यो जो कछु गुरु दछना लेउ तब श्री

आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो जो हम क
छू लेत नाहीं तव केसव भट्ट नें कह्यो जो में
तुम कों एक सेवक समर्पत हों सो माधो भट्ट
श्री आचार्य जी महाप्रभून कों सोंपे पाछें के
सव भट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास
ते विदा होयकें अपने देस कों गयो पाछें मा
धोभट्ट नें श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास
नांम पायो पाछें समर्पण करवायो ॥ वार्ता
प्रसंग ॥ १ ॥ और जा गांम में माधोभट्ट रहत
हुते ता गांम में एक वडो ग्रस्थ रहत हुतो ता
के एक वेटा हुतो सो मरिगयो तव वह ग्रह
स्थ वहुत रोवन लाग्यो विलाप करन लाग्यो
और कह्यो जो कोऊ याकों जिवावे गो तो में
हूं जीऊंगो नाहीं तो में हूं मरूंगो ऐसें कहि
कें वहुत सोक करे तव एक वैस्नव पेंडे में
जात हुतो तव वा ग्रस्थ को विलाप देषिकें
वानें कह्यो जो या गाम में माधो सारिके भ
गवदीय रहत हैं वे वडे भगवदीय महा
पुरुष हैं तिनके पास तू जा वे कृपा करेंगे त

वे तेरो लरिका जीवेगो तव वह ग्रहस्थ माधो
भट्ट के पास आयो। और वहुत विलाप करन
लाग्यो और माधोभट्ट सों कह्यो जो यह लरि
का मेरो जीवेगो तो मैंहूं जीऊंगो नातर मैंहूं
मरूंगो याभांतिसों वहुत विलाप करे और रो
वे तव वा ग्रहस्थ कों देषिके माधोभट्ट कों द
या आई तव मनमें विचार करन लागे जो या
को वेटा जीवेनो आछोहे यह ग्रस्थ भलोहे य
ह वहुत विलाप करतहे वहुत दुष पावत हैय
ह विचारिकें माधोभट्ट के मनमें वहुत षेद भ
यो और कह्यो जो याको दुष दूरि होय तो भलो
है पाछें माधोभट्ट मंदिरमें जायकें श्री ठाकुर
जीसों वीनती कीनी एक श्लोक करिकें श्री
ठाकुरजी के आगे कह्यो सो श्लोक॥ दया स
र्व समर्थस्य दुखारो वदयालुता विश्वोद्धार
ण दक्षस्य उत्तवे कस्य सोभने ॥१॥ यह श्लो
क श्रीठाकुर जी ने सुनिकें कह्यो जो यह कित
नीक वातहै जो तुमकों दया आई तो वा सों
कहो जो जा तेरो वेटा जीवेगो पाछें माधोभट्ट

श्री ठाकुरजी कों पोढायकें बाहर आए तब वा
परस्थ सों कह्यो जो आ तेरो बेटा जीवेगो परि वा
ग्रस्थ कों विस्वास नपरे मनमें विचारे जो हूं
घर जाऊंगो और कदाचित न जीयो होय तो
कहा करूं मुखते तो कछू कह्यो न जाय परि
मनमें विस्वास परे नाही इतने में वाके घर के
लोग दोरि कें आय वासों कह्यो जो तेरो बेटा जी
यो है ताकी बधाई देव तब वा ग्रहस्थ माधो
भट्ट कों दंडोत करिकें अपने घर आयो पाछें व
धैया की बधाई दीनी और बहुत हरषित भयो
पाछें माधोभट्ट नें अपने मनमें विचार कियो
जो बहुत अनुचित कियो अब ये लोग याही
भांति सों नित्य दुष देंयगे यातें अब या गाम में
रहिवे को काम नाही ऐसो विचार कें रात्र ज
ब आधी गई तब श्री ठाकुरजी कों जगाय संपु
ट में पधराय कें तुरतही गाम छोडिकें चले सो
अडेल में श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास
आय रहे दया आए ते अस्थल छूटो श्री ठा
कुरजी कों आधी रात्रि के समें भोजनीप·

सो। ताते भगवदीय कों जो काम करनों सो बि
चार के करनों बिना बिचारें सर्वथा नहीं कर
नों ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २॥ और श्री आचार्यजी म
हाप्रभू श्रीभागवत की सुबोधनी कहते सो
माधोभट्ट वेगि वेगि लिषित जाते और जाठो
र न समझ परे ताठोर लेषनी छोडि के बैठि
रहते तब श्री आचार्य जी माहाप्रभू माधोभ
ट्ट कों समझाय कें अर्थ कहते तव माधोभट्ट
समझि कें आगे लिषिते और श्री आचार्य जी
महा प्रभून के आगे माधोभट्ट या भांति सों बै
ठिते जो पावन दीसे ऐसे सावधानी सो रहते
॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३॥ और एक समें श्री आचा
र्य जी महा प्रभू परदेस कों पधारे तव माधो
भट्ट साथ हे तब श्री आचार्य जी महा प्रभू पें
डे में एक गाम में उतरे तब रात्रि पहर डेढ़
गई हुती तब माधोभट्ट उठि कें लघुबाधा
कों गाम में आए तहां चोरन नें तीर चला
यो सो माधो भट्ट कें लाग्यो तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभून को नाम लेत माधोभट्ट

नें देह छोडी तव इतने में श्री आचार्य जी म
हाप्रभून के साथ के वैस्नव आइगए तव दे
खें तो माधोभट्ट की देह छूटी है तव वैस्नव न
के मनमें संदेह भयो जो माधोभट्ट सारिके
वैस्नव की ऐसी गति क्यों वूझिये तव साथके
वैस्नवनें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों
पूंछो जो महाराज यह वात कैसे होय जो
माधो सारिके वैस्नव की एसी गति क्यों वू-
झिये तव श्री आचार्य जी महा प्रभूननें उनवै
स्नवनसों कह्यो जो माधो भट्टने तो श्री ठा
कुर जी के चरणार विंद चांपे सो इन कों कछू
करतव्यता रही नाहीं यह वडो भगवदी
यहो परि इनसों एक भगवद अपराध प·
स्यो हो तव वैस्नवनने पूछी जो महाराज ऐ
सो कहा अपराध पस्यो हो तव श्री आचार्य
जी महा प्रभून ने कह्यो जो यह पहलें आप
ने सेव्य श्री ठाकुर जी की सैया ऊपर फू·
ल विछावत हो सो एक दिन विना जानें फू
लन में सुई रहिगई सो माधो भट्ट ने नाहीं

जानी सेवा सुई को श्रीठाकुर जी के श्री अंग में स्पर्स भयो सो ता अपराध ते ऐसें भयो पोरि याकी देह सावधान नासों छूटी है भगवद् नाम ही लेत छूटी ताते यह श्री नाथ जी के पास है मेरी कान ते श्रीनाथ जी वुरी गत कवहूं न करेंगे अपने पास ही राषेंगे यह श्री आचार्य जी महाप्रभून नें अपने श्री मुषसों कह्यो ताते वैसवन को श्री ठाकुर जी की सेवा नीकी भांति सों करनी वज्ञत सावधानी सों वेमाधोभट्ट श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता अव कहां ताईं लिषिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैस्नव ॥ २० ॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून
के सेवक गोपालदास तिन
की वार्ता

सो गोपालदासने मार्ग चलन वारेन को अपने घर के पास विश्राम के लीऐं अस्थल करि राख्यो ज्ञतो जो मार्ग में विश्राम करें ता

को हेन पह जो कोई भगवद भक्त आयर·
है तासों भगवद वार्ता करें ताकारन आस्थ
लकरि राख्यो हुतो सो उहांएक समें पद्मरा
वल उज्जेन के वासी सो द्वारिका आवते हेसो
रात्रि कों वागाम में आय बसे सो गोपालदास·
से वासों पहुंचिके पद्मरावल के पास आए
और पद्मरावलसों पूछो जो तुम कहंतेआ
ए हो तब पद्मरावल ने कह्यो जो हम श्रीद्वा
रिका जीते आए हें तबगोपालदास ने श्री·
रणछोडजी के कुसल समाचार पूछे तब
उहांके समाचार पद्मरावल ने गोपालदा
ससों कहे पाछें पद्मरावल की जो बालप
नेते अवस्था हुती सोवात चाली जोपद्म·
रावल द्वारिका में बहुत रहते श्रीरणछोड
जी के दर्शन करते सो जब षरची निवड·
ती तब अपने घर आवते सो पद्मरावल के
जिजमांन मावजी पटेल आजन कुनबीगां
म के देसाई हुते सो पद्मरावल द्वारिका·
जीते आवते तबमावजी पटेल षरची देते

सोलेके जब पद्म रावल द्वारिका जीकों जे
ने ऐसें वरसदिन में तीन वार जाते पद्म रावल
कों श्री रणछोड जीके विषें वहुत आसक्ति हु
ती सो श्री रणछोड जीकी वार्ता पद्म रावलने
गोपाल दास के आगें कही तव गोपाल दास
ने अपनेमनमें कही जो जैसी इनकों श्री रण
छोड जीके दर्शन में आसक्ति है तैसी इन
कों श्री महा प्रभून के विषें आसक्ति होय ते
इनको कार्य होय ताते इनसों कछु कहि
ये तवगोपाल दास नें पद्म रावल सों पूछो जो
तुमसो कवहूं श्री रणछोड जी वोलतहें कछु क
हत हें कछु मांगत हैं तव पद्म रावल नें क
ह्यो जो मोसों तो कवहू कछु कहत नाहीं त
व पद्म रावल ने गोपाल दाससों पूछो जो
कहा श्री रणछोड जी काहू सो वोलत हें तव
गोपाल दास नेकह्यो जो हांहां वोलतहें तव
श्री आचार्य जी महा प्रभून की वार्ता कही जो
तुमने एते दिन श्री रणछोड जीसे ए हें सो श्री
रणछोड जी प्रगट भए हैं तव पद्म रावलने पू

को जो वे कहां हें तव गोपालदासनें कही जो
वे अडेल मे हें तव पद्मरावल नें कही जो जै-
सो दर्शन श्रीरणछोडजी देत हें तैसो दर्शन श्री
आचार्यजी महाप्रभू देहिंगे तवगोपालदास ने
कही जो हांहां देहिंगे तवपद्मरावल के मनमें वि
स्वास आयो जो यह वात सत्य है ताही दिनते
पद्मरावल को आतुरता भई जो कव में जा
ऊं और कव श्री महाप्रभून को दर्शन पाउं
सो रात्रि को वहां रहे तापाछें सवारें गोपा
लदास सो विदा होयकें तहांते चलो सो मा
र्ग में विचार करत जाय जो में कव जाऊं-
और कव श्री आचार्य जीमहाप्रभून को द
र्शन पाऊं ऐसें विचार करत अपने घर डा
न में आए परिचित्त उदास में रहो पाछें मा
वजी पटेल से मिले तव मावजी पटेलने पूछी
जोगुरुजी अवकें तुम्हारो मन प्रसन्न देषिय
त नाहीं सो काहेते तव पद्मरावल नें गोपाल
दास सों सुनी हुती सो वात कही जो श्रीरणछोड
जी अडेल में प्रगट भये सो मेरो मनोरथ दर्शन क

रिवे को है सो जानो हो कब जाऊंगो तब माव
जी पटेल नें कह्यो जो तुम श्रीरणछोड जीके द
र्शन कों जात हो सो मोहू कों अपने साथ ले च
लो तब पद्मरावल ने कह्यो जो तुम राजसी लोग
हो तुम्हारो साथ बहुत मनुष्य होंयगे और
यह दर्शन तो एकांत स्थल को है ताते यह वा
त तो मोकों भावत नाहीं तब मावजी पटेल नें
कह्यो जो हूं गे सर्व था तुम्हारे संग अकलोही
चलूंगो तब पद्मरावल ने कह्यो जो भलो तब ये
समाचार अपनी स्त्रीसों कहे और कह्यो जो में
तो पद्मरावल के संग अडेल दर्शनकों जात हों त
ब स्त्रीनें कह्यो जो वहां कहा है तब मावजी पटे
ल ने कह्यो जो वहां श्री वल्लभाचार्य जी प्रगट भ
ए हैं सो साक्षात श्रीरणछोड जी प्रगटे हें और मैं
सो दर्शन श्रीरणछोडजी देत हैं तैसो दर्शन श्री
आचार्यजी महा प्रभू देत हे सो यह बात सुनि
कें मावजी पटेल की स्त्री के मन में बहुत उत्साह
भयो और कह्यो जो आप के संग मेंहू चलूंगी तब
मावजी पटेल ने कह्यो जो मैं तो पावन सों चलूं

गो तूं केसें चलेगी तब स्त्री ने कही जो में हू पाछन
चलूंगी मेरे कछू लरिका तो है नाहीं तब फेरि
मावजी पटेल ने कह्यो जो हम तुम दोऊ जने च
लेंतो घर कोंन के भरोसें छोडें तब स्त्री ने कह्यो:
जो मेरो घर ते कछू प्रयोजन नाहीं हों सब थी तु
म्हारे साथ चलूंगी तब मावजी पटेल ने अपने
मन में विचास्यो जो याकों बहुत आतुरता भई द
र्शन की बहुत मनोरथ है तब कह्यो जो भलो तू
हू चल तब मावजी पटेल ने अपनो घर काहू भ
ले मनुष्य के हवाले करि दीनों तब पद्मरावल मा
वजी पटेल तथा उनकी स्त्री विरजो ये तीनों
चले सो तब प्राग पुहुंचे तब अडेल को दर्शन भयो त
व बहुत आतुरता भई जो श्री यमुनाजी होय के च
ल्यो जैये तासमे श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री यमुनाजी
ऊपर पधारे हुते सो संध्या वंदन करत हुते तहां सेव
क रोय चारि साथ हुते तब इन तीन्यों न कों श्री आचार्य
जी महाप्रभून को दर्शन भयो तब तो बहुत ही आतुर
ता भई तासमें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें इन को दे
ख्यो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें सेवक

नसों कह्यो जो यह नाव पार ले जाउ पद्मरावल
श्रीरणछोड जी के सेवक आए हैं सो इन तीन्यो
न कूं नाव में बैठार के वेग ले आउ सो नाव लेके
वे सब पार आए तब उन वे सवन नें कह्यो जो
पद्मरावल तीन्यो जने होय सो आवो श्रीआचा
र्य जी महाप्रभून ने नाव पठाई है तब पद्मराव
ल और मावजी पटेल तथा उनकी स्त्री विर
जो इन तीन्यों जनेन को नावमें बैठाय के लेआ
ए तब श्री आचार्य जी महाप्रभून को दर्शन भ
यो सो जैसे गोपाल दास ने कहो हुतो तैसो
ई दर्शन भयो सो दर्शन करिकें मनमें बहुत
प्रसन्न भए पाछे पद्मरावल नें श्री आचार्य जी
महाप्रभून पास नाम पायो सो नाम पाय केंप
छे तब पद्मरावल नें वीनती करिकें कह्यो जो
महाराज अंगीकार करिये तब श्री आचार्य
जी महाप्रभूनने प्रसन्न होयकें कह्यो जो तू
कहा कहत है तब पद्मरावल ने कह्यो जो
मोको गोपाल दास ने कह्यो है तासों निवेदन
करवाइये और पद्मरावल नें वीनती करकें

कह्यो जो महाराज मावजी पटेल और माव-
जी पटेल की स्त्री विरजो ये दोऊ आपकी सर
ण आए हैं सो इनकों नाम निवेदन कृपा क
रि कें करिवाईये तब श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें कृपा करकें उनकों नाम समर्पण करवा
यो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप भीतर
पधारे तब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें पद्म
रावल सों कह्यो जो तुम महाप्रसाद इहांई
लिजिये तब पद्मरावल नें बीनती करकें कह्यो
जो महाराज मोको तुमनें श्रीरणछोडजी को-
दर्शन दीनों है सो स्वरूप आप कृपा करिकें
आरोगोगे तब श्री आचार्य जी महाप्रभूनको-
दर्शन भोजन करतमें पद्मरावल कों श्रीरण
छोड जी को दर्शन भयो जो साक्षात श्रीरण
छोडजी भोजन करतहें तब पद्मरावल-
को दृढ विस्वास भयो तब श्री आचार्यजी म
हाप्रभू आप भोजन करिकें विराजे तब मह
प्रसाद की पातरि पद्मरावल कों कृपा करि
कें दीनी पाछें पद्मरावल नें बीनती कीनी जो

महाराज मोकों कहा आग्याहै तब श्रीआचा
र्यजीमहाप्रभूननें आग्यादीनी जो तुम श्रीठाकु
रजी की सेवा करो तब पद्मरावल नें कह्यो जो
जैसो मेरो मन महाराज के स्वरूपमें लग्योहै तै
सो मन सेवा में लगे तो सेवा करूं तब श्रीआचा
र्यजी महाप्रभूननें कह्यो जोतुम श्रीठाकुरजी
की सेवा तो करो जोतुमारो मनोरथ श्रीठाकुर
जी सब पूरन करेंगे तब पद्मरावल श्रीआचार्य
जीमहाप्रभून सों विदा होयकें अपने देसकों
गए तब पद्मरावल अपने देसमें जायकें श्री
ठाकुरजी कीसेवा करन लागे तब अपने सेव्य
श्रीठाकुरजी की सैया बनवाई सो सैया छोटीभ
ई तब श्रीठाकुरजीनें कह्यो जोयासैया पै मोपै
सोयो जाय नाही पाछें पद्मरावल नें दूसरी सै·
या बडी करवाई ताके ऊपर श्रीठाकुरजीपोढन
लागे और श्रीठाकुर जी सानुभाव जनावन
लागे और एकसमें पद्मरावल की स्त्री नें श्री
ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो तामें षीर तातीस
मर्पी तबश्री ठाकुरजी नें षीरि में श्री हस्तमेल्यो

तब षीरि बहुत ताती लागी सो श्री ठाकुर
जीनें श्री आचार्य जी महा प्रभून सों
कह्यो और श्री हस्त कमल दिखायो सो लाल
परिगयो तब पद्मरावल श्री आचार्य जी महाप्र
भूनके पास बैठे हुते तब पद्मरावल सों श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो तेरी स्त्री ने श्री
ठाकुरजी को ताती खीर समर्पी सो श्री ठाकुर
जी कों ताती षीर न समर्पिये तब पद्मरावल
नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो श्री
ठाकुर जीनें एक महूर्त लों सीरी क्यों न होनें दी
नी तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कह्यो
जो श्री ठाकुर जी तो बालक हैं श्री ठाकुर जी कों
भोग धरे पाछें बिलंब न सहि सकें यातें जो भो
ग धरिये सो बहुत ताती न धरिये सो पद्मराव
ल कों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें ऐसी आग्या
दीनी आग्या देकें श्री आचार्यजी महाप्रभून नें
श्री ठाकुरजी को ऐसो अनुभव जतायो पाछें
पद्मरावल अपने घर कों आए तब यह बात
अपनी स्त्री सों कही पाछें पद्मरावल बहुत

सावधांनी सों सेवा करन लागे श्री आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते श्रीठाकुरजी सानुभाव-ता जनावन लागे जो चहिये सो मांग लेते आप नी सब बात कहते सो वे पद्मरावल गोपालदास के संग ते ऐसें भगदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ०२८

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के से

वक पद्मरावल सांचोरा ब्राह्मण

उज्जैन के वासी तिनकी वार्ता

सो पद्मरावल अडेल में आइके श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक भए सो गोपालदास वास वाडा के तिनकी वार्ता में लिष्यो है विस्तार करि के पाछें अपने देसको चलन लागे तब श्री आ चार्यजी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महा राज हों तो अति मूर्ष हों जड हों कछू जानत नांही और मेरी जात के ब्राह्मण महा कर्मी-जड हें स्मार्त हें सो मो कों दुख देत हें तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनने अपने चरणारविंद को चंदन और चरणामृत दीनों और कह्यो-

जो तोकों सब सिद्धांत स्फुरेगो सो चरणामृत ली
नों सो इतनेही में सब सिद्धांत स्फुरे भयो पाछें
अपने देस उज्जेन कों आए पाछें बडे बडे ब्रा
ह्मण प्रति रति पूछन लागे तब जितने ननें
पूछो तिनकों प्रति उत्तर देके सब विदा कीए।
सो पद्मरावलकों श्री आचार्य जी महाप्रभून
की कृपा ते ऐसो विद्या स्फुरे भई जो बडे बडे
पंडित जीतके विदा कीए वे पंडित प्रति उ-
त्तर देन सके ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ और पद्मराव
ल द्वारिका श्रीरणछोड जीके दर्शन कों च-
ले तब श्री रणछोड जीने स्वप्न में कह्यो जोरा
ज नगर में एक सेवक हमारो है ताके घर तूजै
यो और पाक उहां ई करियो तब पद्मरावल-
ने कह्यो जोमहाराज मैं तो जानत नाहीं औ
र बिना बुलाए मैं कोन के घर जाऊं तब श्रीर
ण छोड जीनें कह्यो जो वह तो को आपुही बु
लावनकों आवेगो पाछें श्रीरणछोड जीने-
अपने सेवकसों कह्यो जो पद्मरावल इहां-
आवेंगे सो उनकी सेवा तू नीकी भांति सों क

रियो ऋौर ऋपने घर पधराय पद्मरावलको रसोई भली भांति सो करियो तव वा सेवकनें श्रीरणछोडजी सों कह्यो जो महाराज में उन कों कैसें जानूंगो तव श्रीरणछोडजी ने कह्यो जो वेतो प्रसिद्ध हें तू ऋापही ते जानेगो तव कितनेक दिनमें पद्मरावल उहां ऋाए सो वागाम के वाहिर उतरे सो पद्मरावल के साथ एक विद्यारथी हुतो तासों पद्मरावल ने कह्यो जो तू गांम में जायकें कोरी भिक्षा मांगि लाउ तव वह विद्यारथी गांम में गयो सो चारि पांच ठोरते कोरी भिक्षा मांग लायो तव पद्मरावलनें वा विद्यारथी सों कह्यो जो तू ऋन्य जा जा कें सो लायो है ताता कों उलटो फेरि ऋाउ तव वह विद्यारथी जा जा कों ऋन्य लायो हो जोता को फेरन लाग्यो तव एकनें कह्यो जो तुम लेगए हे ऋव फेरन कों ऋाए हो तव वा विद्यारथी ने कह्यो जो में कहा करूं हमारे वडे गुरु हैं तिनकी ऋाग्या मांनी चहिये तव वा विद्यारथी सों कह्यो जो तुम्हारे गुरु को नाम कहा है तव वा विद्या

रथी ने कह्यो जोमेरे गुरू को नाम पद्मरावल है
तव वह श्रीरणछोडजी को सेवक विद्यारथी
केसाथ चलो आयो सो आयकें पद्मरावलसों
कहो जोमेरे घर पधारो तव पद्मरावल नेकह्यो
जोहूंतो काहूके घर जातनाहीं तव वानेकह्यो
जो मोकों श्रीरणछोडजी ने आग्या दीनीहै जो
तू पद्मरावल को अपने घर पधराईयो रसोई
भली भांतिसों करवाईयो तव पद्मरावल को
अपने घर पधराए रसोई भली भांति सों करवा
ई सो पद्मरावल ने रसोई कारि श्रीठाकुर जीकों
भोगसमर्प्यो पाछें प्रसाद लीयो और रात्रि कों
उहांई सोयरहे तव सवारें पद्मरावल चलनला
गे तव श्रीरणछोडजी को सेवक राषन लाग्यो
तव पद्मरावल रहे नाहीं ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २॥
वहुरि एकदिन आटो वहुत मिल्यो और घृत
थोरो मिल्यो तवजितनी रोटी वा घृतमें चुप
रीगई सो तो उपर धरी और कोरी हुती सोनी
चे राषी तव श्रीठाकुरजी को भोग समर्प्यो औ
रकह्यो जो महाराज विनु चुपरी रोटी तोरहन

दीजियो और चुपरी रोटीं आरोगियो तब श्रीठा
कुरजी नेंतो सबही रोटी आरोगी पाछें पद्मराव
ल सों कह्यो जोतेंनें मेरे आगें काहे कों धरी मे
रे आगें तू धरेगो जोमें आरूगूंगो पाछें महाप्र
साद लेनकों बैठे तब रोटी बहुत अद्भुत स्वाद
भई तब पद्मरावल नें कितनीक रोटी बची
सो साथ बांधिलीनी सो नित्य जब पाक करि
भोग समर्प्यें पाछें प्रसाद लेन बैठिते तब रो
टी मेंते एक टूक मेलिलेते तब महाप्रसाद ले
ने पाछें कितनेक दिनमें द्वारिका जाय पहुं
चे तब श्रीरणछोड जी को दर्शन कीयो दिन
पांच सात रहिके श्रीरणछोडजी सों विदा हो
य कें चले तब मार्ग में गोपालदास बांसवाड
के घर आए तब रात्रि को उहांई रहे तब पद्म
रावल ने गोपालदाससों कह्यो जो तुम्हारी कृ
पाते मो को श्री आचार्यजी महाप्रभून को द
र्शन भयो और तुम्हारी कृपाते मोपे श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें कृपा करी सो पद्मरा
वल श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा

पाच भगदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तां·
ई लिषिये वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैस्नव ॥ २६ ॥ से

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके
सेवक पुरुषोत्तम जोसी सांचो
रा ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो एक समे पुरुषोत्तम जोसी वनारस कों च
ले सो मार्ग में उज्जेन आयो सो उज्जेन आयकें
पूछो जो पद्मरावल के वेटा कहां रहत हें सो
पद्मरावल कें वेटा चारि हुते सो तीन वेटा तो द
कठोरे हुते और वेडे वेटा हूसभट्ट सो न्यारे हु
ते सो पुरुषोत्तम जोसी जहां पद्मरावल के ती
न्यों वेटा इकठोरे हुते तिन के घर गए तिनने
पुरुषोत्तम जोसी कों थोरेसो अन्न दीयो सो
कछू भूषेर हे तव मन में कह्यो जो पद्मरावल
के वेटा ऐसे क्यों वृप्रिये वेतो सूचे ब्राह्मण हें
पाछें हूसभट्टनें सुनी जो पुरुषोत्तम जोसी
आए हें तव हूसभट्ट ने पुरुषोत्तम जोसी कों
अपने घर पधराय तवभली भांति सों प्र·
साद लिवायो तव पुरुषोत्तम जोसी वहुत

प्रसन्न भए दिन चारि राखे तब पुरुषोत्तम जो
सी चलन लागे तब कृस्नभट्ट हू साथ चले सो म
जल जाय उतरे तब रात्रिकों जब कृस्नभट्ट सोए
तब पुरुषोत्तम जोसीने अपनी स्त्री सों पूछी जो
कृस्नभट्ट सोए तब स्त्रीने कही जो हां सोए तब पु
रुषोत्तम जोसीनें श्री आचार्य जी महाप्रभून की
वार्ता कही पाछें कृस्नभट्ट ने मनमें विचार्यो जो
पुरुषोत्तम जोसीने मेरे आगें श्री आचार्य जी म
हाप्रभून की वार्ता नाहीं कही परि हों अब कछू
चर्चा वार्ता चलाऊं सो जब श्री गोकुल मंजल पां
च सात रह्यो तब कृस्नभट्ट नें प्रसंग चलायो सो पु
रुषोत्तम जोसी घोड़ा पै हुते सो वनो विह्वल भए
तब कृस्नभट्टनें पुरुषोत्तम जोसी सों कह्यो जो ए
क ओर ते तुम पांमें रहो और एक ओर ते में पांम
तहां तब कृस्नभट्ट नें वार्ता चलाई सो भगवद्वा
र्ता में पुरुषोत्तम जोसी तो विह्वल भए सो घोड़ा
ऊपर रह्यो न जाय तब दोऊ जने आस पास
पांमे जांय ऐसें करत मंजल आय उतरे तब
घोड़ा ऊपर ते उतारन लागे तब पुरुषोत्तम जो

सीने कह्यो जोमोकों तुम क्यों उतारत हो तब कृ
सभट्ट नें कह्यो जोमजल को मुकाम आय पहुं
च्यो है ताते उतारत हैं परि पुरुषोत्तम जोसी
कों मंजल आइवे की षवर नाहीं भगवद्वा
र्ता में रसा विष्ट भए संपूरण दिवस भयो परि प्र
साद लेवे की हू कछू सुधि रही नाहीं ऐसें करत
कितनेक दिन में श्री गोकुल आय पहुंचे तब पु
रुषोत्तम जोसी नें श्री गुसांई जी को दर्शन कीयो
और श्री गुसांई जी सों पूछो जो महाराज कृस्नभ
ट्ट के ऊपर ऐसी कृपा काहेते भई है तब श्री गुसां
ई जीनें कह्यो जोयाकों चाचा हरिवंस जी को सं
ग है ताते ऐसो भयो तब पुरुषोत्तम जोसी को
गर्भ निवृत भयो और अति प्रसन्न भए और
कृस्नभट्ट सों आप वार्ता पूछन लागे पाछें
कितनेक दिन रहि कें श्री गुसांई जी सों विदा
होयकें चले सो उज्जैन आए मार्ग में भगवद्
वार्ता करत चले आए और दोऊ जने अति
प्रसन्न भए सो वे पुरुषोत्तम जोसी श्री आचार्य
जी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगदीय हे ता

ने इनकी वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैसव॥३॥ संवंध ॥ ८७॥ ९॥ ९॥ ९॥

अव श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक जगन्नाथ जोसी तिन की वार्ता

सो जगन्नाथ जोसी ने श्री ठाकुर जी कों वागो प-हराय सव सिंगार करिकें राजभोग को थार आ-गें आंनि राष्यो तव जगन्नाथ जोसी के मन में आ-ई जो श्री ठाकुरजी वागे पहरे हीं आरोगत हैं ता-तें थार छूट जायगो तव श्री ठाकुरजी ने जगन्ना-थ जोसी के मनकी जानी तव थार में लात मारिकें डारि दीनों तव जगन्नाथ जोसी नें और पाक वे-गी वेगि करिकें थार परोसि श्री ठाकुरजी के आ-गें आनि राष्यो तव श्री ठाकुर जी के मनमें आई जो वैसें हीं फेरि लात मारिकें डारि दीनों तव फे-रि तीसरी वेर पाक करिकें श्री ठाकुरजी के आ-गें आनराष्यो तवहू श्री ठाकुर जी नें लात मा-रिकें डारिदीनों जव चोथी वेर पाक करन ला-गे तव जगन्नाथ जोसी वहुत भ्रमित भए पा

कें नीचो मांथो करिकें विचार करन लागे जो कौं न अपराधते श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं थार डारि देतहें पाछें बहुत वीनती कीनी तव श्रीठाकुरजी नें यह वात जताई जो तू थार छुइ देते डरपत है तोतू हमारे आगें काहे कों आनि राषत है इतनों वचन श्रीठाकुरजी को सुनिकें जगन्नाथ जोसी चोंकि उठे तव नाक भूमिसों घसि वहुत मनुहार करिकें कह्यो जो महाराजमें तो कछु जानत नाही अव मेरो अपराध क्षमा करिये पाछें श्रीठाकुरजी आरोगे परि मांस देय लों वोले नाहीं फेरि वहुत वीनती कीनी तव बोलन लागे ऐसो सरल भाव हुतो ॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ १ ॥ और जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पिते तामें ताती षीर वहुत समर्पिते सो श्रीठाकुरजी वेसीही ताती षीर आरोगते सो कितनेक दिन पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू गुजरात पधारे तव षिरालूमें जगन्नाथ जोसी के घर उतरे तव श्री ठाकुरजी को दर्शन कीयो तव देषें तो श्री ठाकुरजी केओ

षरातेहैं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें श्री
ठाकुरजी सों पूछो जो महाराज जी क्यों रोते
षराते क्योंहें तब श्री ठाकुरजी नें कह्यो जो
जगन्नाथ जोसी मोकों ताती षीर बहुत स
मर्पत है सो तेसी ही में आरोगत हों तब जग
न्नाथ जोसीसों श्री आचार्य जी महाप्रभून नें
कह्यो जो तू ताती षीर श्री ठाकुरजी कों क्यों
समर्पत है तब जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो
महाराज हमतो कछू जानत नाहीं जो ऐसी
बात है हमतो जानत जो ताती षीर भली त
ब श्री आचार्य जी महाप्रभूननें कह्यो जो षी
र सुहाती भली षीर बहुत ताती न समर्पिये
ता पाछें जगन्नाथ जोसी वैसें ही करन लागे
वार्ता प्रसंग ॥२॥ और एक समें श्री आचार्य
जी महाप्रभूनके दर्शन करिवे कों जगन्ना
थ जोसी अडेल कों चले तब मार्ग में अन्न
कूट को दिन आयो तब ऐक सेवक साथ हु
तो तासों कह्यो जो चांमर झारि घृत षांड
और कछू आछी सामग्री मिले सो सब ले

आउ तव वह सेवक गयो तव देषें तो गाममें
कछू नाहीं तव वह सेवक फिर आयो और
कह्यो जो इहां तो कछू मिलत नाहीं एक ज्वा
रि मिलत है तव जगन्नाथ जोसीने कह्यो जो
भलें ज्वारि ही ले आव तव गाम में जायकें ज्वा
रि लीनी तव आछीभांति कूट फटक छांनि
वीन चुनि के ले आए पाछें जगन्नाथ जोसी
ने वा ज्वारि को ढोमर कीयो तव वा सेवकने क
ह्यो जो भुसी निकसी है सो ताकों टोकरा में करि ऊ
पर राष्यो जो ताकी वाफसों जलदी होय आवेगो
तव जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो भलें तव वह ढो
मर षदषदान लाग्यो तव वह टोकरा वामे गिर
पर्यो सो सब एक ठौरो मिलि गयो पाछें भगवद
इच्छा मानि कें जैसो तैसो श्री ठाकुरजी को भोग
समर्प्यो पाछें भोग सराय महाप्रसाद लीयो तव
जोसी रात्रि को सोयो तव श्री ठाकुरजीने कह्यो
जो मेरे पेट में दूषत है तव जगन्नाथ जोसीनें सु
नत आैर सोंठि और अजवांयण समर्प्यो परि
मनमें पश्चाताप वहुत भयो पाछें श्री ठाकुरजी

नेंकह्यो जो अब मेरे पेटमें सबभयो ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ बहुरि एक समें जगन्नाथ जोसी अपनेसेव्य श्रीठाकुरजी कों उत्थापन करिकें पास ठाडे हुते श्रीठाकुरजी कों मूठा करत हुते और वैस्नव ठाडे दर्शन करत हुते तासमें एक रजपूत गरासिया आ यो सो अवैस्नव हुतो सो आयकें वैस्नवनमें ठाडो भयो तासमें एक डोकरी फूलकी माला ले कें आ ई सो वह माला दूरितें श्रीठाकुरजीके ऊपर वानें डारी तब जगन्नाथ जोसी कों रिस चढी सो माला वैस्नवन के ऊपर डारी सो वह माला एक वैस्नवके गरे में जाय परी तब वा गरासिया रजपूत कों रिस आई तब गरासिया नें अपनें मनमें विचारी जो देषो या जोसी नें माला वाकों दीनी और मोकों न दीनी परि भलो जो रजपूत को जायो जो या जोसी कों ठौर मारूं तब वह रजपूत तरवार हाथ में ले कें नित्य तकत फिरे दाव पावे तो घात करे तब जगन्नाथ जोसी एक दिन बाहिभूमि तें आवत हु ते तब वा रजपूत नें जगन्नाथ जोसी के ऊपर पीछे ते तरवार चलाई तब श्रीठाकुरजी नें वह तरवार

श्री हस्त सों थांभी और श्री मुषसों कह्यो जो याकों
मारे मति तव वह रहिगयो तव जगन्नाथ जोसी
फिरिकें देषें तो श्री ठाकुरजी श्रमित भए पीछे ठा
डे हें तव जगन्नाथ जोसी नें वा गरणसिया सों कह्यो
जो फिटिरे पापी तेंनें यह कहा कीयो तव वह रज
पूत तरवार डारिकें जगन्नाथ के पाव न पर्यो औ
र कह्यो जो मेरे ऊपर कृपा करिये अनुग्रह करि
ये और जगन्नाथ जोसी के पांव हाथसों पकरि र
ह्यो तव जगन्नाथ जोसी कों दया आई तव वा
कों नांम दीयो सो जगन्नाथ जोसी ऐसे कृपा पात्र
भगवदीय हे तव वा रजपूत कों जगन्नाथ जोसी
नें नांम दीयो निवेदन करवायो तव वह भलो
भगवदीय भयो वेस्नव के वीच ठाडो रह्यो ताको
फल सिद्धि भयो वे जगन्नाथ जोसी ऐसे कृपापा
त्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लि
षिये वार्ता प्रसंग ॥४॥ वेस्नव ॥७१॥ ॥ ॥

अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक जगन्नाथ जोसी की मा
ता तिनकी वार्ता लिष्यते

ताकें द्वै बेटा हुते बडे बेटा तो नरहर जोसी औ
र छोटे बेटा जगन्नाथ जोसी षिराल्लू के वासी
तिन दोऊनसों मांतानें कह्यो जो तुम जाइकें :
श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास नाम पाइआ
वो और समर्पण कर बाइ आवो और बेटान के
हाथ में एक एक मोहर दीनी सो मोहर एक ला
ठी में मेलिकें वे दोऊ भाई अडेल कों चले सो
कितनेक दिनमें अडेल जाय पहुंचे सो श्री आ
चार्यजी महाप्रभू तो अडेल में हुते नाहीं आप
तो पुरुषोत्तम क्षेत्र श्री जगन्नाथ राय जी के द
र्शन कों पधारे हुते पाछें जगन्नाथ जोसी नर
हर जोसी नें बिचार कियो जो हम फिरि चलें-
गे तो हमारी मांता षीजेगी जो नाम समर्पण की
ए बिनु तुम कों आए ताते आपन पुरुषोत्तम-
क्षेत्र चलें यह अपनें मनमें बिचार करिकें ज-
गन्नाथ जोसी और नरहर जोसी ये दोऊ भाई
पुरुषोत्तम क्षेत्र कों चलें सो थोरे से दिनमें पु-
रुषोत्तम क्षेत्र जाय पुहुंचे श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र-
जी के मंदिर में जायकें पूछो जो श्री आचार्यजी

महा प्रभू आप कहां रहत हें तव एक वैसवनें घर वताइ दीनों तहां ये दोऊ भाई गए तव श्री आचार्य जी महा प्रभून को दर्शन करिकें वैठे तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें पूछो जो तुम्हारी मांता नीकी है तव इन कों वहुत आश्चर्य भयो जो ये तो हम कों पहचांनत हें और हम तो कवहूं देषे नाही और श्री आचार्य जी महा प्रभून नें फेरि पूछो जो श्री ठाकुर जी के दर्शन करि आए तव इन दोऊन नें कह्यो जो महाराज नाहीं कीए तव श्री आचार्य जी महा प्रभून नें आग्या दीनी जो जायकें दर्शन करि आवो तव ये दोऊ भाई दर्शन कों गए तहां देषें तो श्री आचार्य जी महा प्रभू श्री जगन्नाथ राय जी के पास ठाडे हें तव इन कों आश्चर्य भयो जो यह कहा हम तो इन कों अवहीं घर देषि आए हुते तव मन में फिर जानी जो दूसरी वार होइगी तहां होय कें आए होइगे परि मन में संदेह भयो पाछें दर्शन करिकें आए तव देषें तो श्री आचार्य जी महा प्रभू वैठे हें तव आयकें दंडोत करिकें वैठे तव दोऊ भाई विस्मय भए आपुस में मोहाडो

देषन लागे चक्रत होयरहे तब श्री आचार्य जीम
हाप्रभून नें पूछो जो दर्शन करि आए और जो तु
म्हारे मन में संदेह आयो हुतो सो निवर्त भयो तब
इन दोऊ भाईन नें कह्यो जो महाराज संदेह हतो
निवर्त भयो तब श्री आचार्य जी महा प्रभून नें क
ह्यो जो तुम्हारी माता नें भेट मोहर पठाई हें सो
लावो तब लाठी में ते मोहर काढिकें आगें राषी
पाछें नाम निवेदन करवायो अपनों महात्म
इन दोऊ भाईन कों आपनें ऐसो दिषायो सो स्वरू
पासक्ति भई ता पाछें उहां कितनेक दिन रहिकें
आग्या मांगि कें चले सो मार्ग में श्री आचार्य जी
महाप्रभून के स्वरूप को विचार करत जांय ऐसें
करत अपने घर आय पहुंचे तब माता सों सब
समाचार कहे तब माता बहुत प्रसन्न भई पाछें
श्री आचार्यजी महा प्रभून की कृपा ते भले भग
वदीय भए ताते इनकी वार्ता अब कहां तांई
लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ÷ ॥ ÷ ॥

अब श्री आचार्य जी महा प्रभून के
सेवक नरहर जोसी जगन्नाथ

जोसीके वडे भाई तिनकी वार्ता लिष्यते

सो एक समें नरहर जोसी पुरुषोत्तमक्षेत्र श्री जगन्नाथरायजी के दर्शन कों चले सो तहां मजलजाय उतरे तव स्नान करिकें रसोई करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो तव देषें तो एक वालक वरस दस को एक रूष ऊपर ते उतरिकें आप ठाडो भयो तव वा वालक कों देषि कें नरहर जोसी कों आश्चर्य भयो जो यहां यह लरिका कहां ते आयो तव वह लरिका नरहर जोसी के आगें हाथ पसारें मांगन लाग्यो तव नरहर जोसी नें अपनें मन में विचार्यो जो यह सुन्दर लरिका मेरे आगें काहे कों हाथ पसार्यो तव नरहर जोसी नें द्वै रोटी घीसों चुपरिकें तिनके ऊपर दार धरिकें वा वालक के हाथमें दीनी तव वह वालक इमली के रूष ऊपर चढिगयो पाछें फेरि नरहर जोसी देषें तो वह वालक नाहीं तव दूसरे दिन मजल जाय उतरे स्नान करि श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो तव तैसें ही वह वालक इमली के रूष ऊपर ते उतरिकें

आयो और तैसें हीं हाथ पसाक्ष्यो तव नरहर जोसी
कों और संदेह भयो जो कोऊ छलिवेकों आयो है
य तो कैसें देउ और जो भगवद्स्वरूप होय तो प्र
सादी महाप्रसाद कैसें देउ तव यह संदेह करिकें
वा वालक कों कछू न दीनों तव वह वालक रूष ऊ
पर चढिगयो पाछें नरहर जोसी नें महाप्रसाद ली
नों सो यह वात षिरालू में जगन्नाथ जोसी सों श्रीठा
कुरजी नें कही जो आजमें नरहर जोसी के पास ग
यो हो तहां मैं हाथ पसारकें मांग्यो परि मोकों क
छू न दीयो तव जगन्नाथ जोसी नें वह दिन वह म
हीना वह संवत् वह वार लिषि राष्यो जो नरहर जो
सी आवेंगे तव पूछेंगे तव कितनेक दिन पाछें नर
हर जोसी अपने घर आए तव मांता सो भाई सों मि
ले पाछें दूसरे दिन दोऊ भाई सेवा में न्हाए तव
जगन्नाथ जोसीनें श्री आचार्यजी महाप्रभून के
कुसल समांचार पूछे जो नीके हें पाछें जगन्नाथ
जोसी नें नरहर जोसी सों कह्यो जो अमुके संवत
में अमुक महींना में अमुकी तिथि अमुके वार प
टनाते आगें पैंडसें मजल उतरे तव रसोई करिकें

श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो तहां को ऊबालक
हाथ पसारत देष्यो तब नरहर जोसी नें कह्यो
जो एक दिन तो में सुन्दर बालक देषिकें देरोटी
घीसों चुपरि ता ऊपर दार धरि कें दीनी और
दूसरे दिन तो मो कों संदेह भयो जो कोऊ छलि
वे कों आयो होय तो कैसें देउं तातें नदीनी तब ज
गन्नाथ जोसी नें कह्यो जो तुमनें बुरी कीनी जो
न दीनी वे तो श्रीठाकुरजी आप हुते और जब
आपन दोऊ भाई श्री आचार्यजी महाप्रभून के
दर्शन कों गए हुते तब हमारी माता नें मोहर भे
ट पठाई हुती सो आपन संदेह करि राषी हुती
तब आप श्री आचार्यजी महाप्रभून नें मांगि ली
नी तातें अपने मार्ग में श्री आचार्य जी महाप्रभू
न विना श्री ठाकुरजी विना और संदेह न करनें
अपनें मार्ग में श्री आचार्यजी महाप्रभून के ब
ल प्रताप तें उन विना कछू न संभवे तब दोऊ
भाईनके मनमें यह निश्चय भयो ॥ वार्ता प्रसंग
॥१॥ और एक समें नरहर जोसी को जिजमान
अपलिथान गाम में रहतो ताको नाम महीधर

जी हुतो तथा वाकी वहनि को नाम फूलवाई हु
तो तिनसों नरहर जोसी नें कह्यो जो तुम श्रीगु
सांई जीके पास नाम पावो वैस्नव होउ त
बउन कह्यो जो भलें अवस्य तुम श्रीगुसांईजी
कों पधरावो तव नरहर जोसी आगें आइकें श्री
गुसांई जी को पधराय कें आलियान में गए तव
महीधर जी तथा फूलवाई सों कह्यो जो श्रीगु-
सांईजी पधारे हैं तव दोऊ भाई वहनि अत्यंतप्र
सन्न भए तव महीधर जीनें नरहर जोसी सों क
ह्यो जो में श्री गुसांई जी कों षाली हाथन कैसें
पधराऊं तव मही धरजी नें नरहर जोसी सों रु
पैया मोहर नकी षीचरी करवाय कें न्यों छावर
करिकें श्रीगुसांई जी कों अपने घर में पधराय
तापाछें महीधर जी फूलवाई तथा सव वाल-
गोपाल सव कुटंव कों श्री गुसांई जीके पास ना
म दिवायो निवेदन करवायो और भलीभांति
सों श्रीगुसांई जी की सेवा करिकें विदा कीए पा
छें श्री गुसांई जी द्वारिका कों पधारे तव नरहर
जोसी षिराल अपने घर आए तापाछें कितने

क दिन में श्रीग्रलियान गाम में श्रागि लगी ता
समें नरहर जोसी थिराल्‌ के तालाव के ऊपर
ते नित्य कर्म करिकें तुलसी फूल की डारी तथा
झारी हाथ में लेकें घर आवत हुते तासमें नरहर
जोसी के मनमें आई जो अलियान गाम में आग ल
गी तव नरहर जोसी पेंडे में ठाडे होयकें तुलसी द
ल वीच में धरिकें झारी मेंते जल लेकें अंजुली
सों तुलसी दल के पास पांनी की धारा करिकें कुं
डलिया कीनी इतनें ही में अलियान में आग वु
झी और महीधर जी की हवेली घर सव वच्यो ता
पाछें कितनेक दिन में नरहर जोसी अलियान गा
म में गए तव फूलवाई नें नरहर जोसी सों कह्यो
जो इहां आगि को उपद्रव वहुत भयो है सो श्री
गुसांई जी की कृपा ते अपने तो कल्याण भयो त
व नरहर जोसी ने कह्यो जो प्रभून की कृपाते स
दा कल्याण हीं होय इतनों कहिकें नरहर जो
सी थिराल्‌ आए तव महाप्रसाद लीयो पाछें दो
ऊ भाई एकांत वैठे तव नरहर जोसीनें जगन्ना
जोसी सों कह्यो जोमें एक दिन नित्य कर्म करि

कें तलाव के ऊपर ते आवत हुतो तुलसी फूलकी
डारी तथा मारी मेरे हाथ में हु ली और अलिधान
गाम में आगि लगी सो सब बात कही तब नरहर
जोसी सों जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो आपन कों
इतनों हठ कीयो न चाहिये जो श्रीठाकुर जी को श्र
म करवायो यह अपने मार्ग की रीति नाहीं तब नर
हर जोसी नें कह्यो जो मैं तो हठ नाहीं कीयो परि मेरे
मन में ऐसी आई जो ये अबहीं वैसव भए हैं और
आगि लगी तातें मैंनें ऐसो कियो तब दोऊ भाई हंसि
मुसिक्याय चुप करि रहे पाछें कह्यो जो प्रभू बडे
कौतिकी हैं इनकी कृपातें सब भलो होय आपन
हठ न कीजे यह अपनों धर्म नाहीं तातें श्री वल्लभरा
जकुमार की अद्भुत लीला है सरण आए तिनको
अतिही कल्याण होय सो वे नरहर जोसी तथा ज
गन्नाथ जोसी तथा इनकी माता ऐसें कृपा पात्र भ
गवदीय हे जो परमार्थ के लीए ऐसो कीयो तातें इ
नकी वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांई लि
खिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैसव ॥ ३ ॥ ५ ॥ ५ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के

सेवक रांणां व्यास सांचोरा
ब्राह्मण गोधरा के वासी
तिन की वार्ता लिख्यते

सो जगन्नाथ जोसी नें प्रथम रांणां व्यास पास नांम पायो हुतो फिरि श्री आचार्य जी महाप्रभून पास नाम पायो परि जगन्नाथ जोसी रांणां व्यास के पास वहुत रहते सो एक समें रांणां व्यास भगवद् इच्छा ते गोधरा की वेस्या नें इन सों संग कीयो सो वात राजद्वार में सुनी तव हाकिम के प्यादे रांणां व्यास कों लेन आए तव जगन्नाथ जोसी नें रांणां व्यास कों और गाम में करि दीनें पाछें जगन्नाथ जोसी तहां अकेले रहे और वे प्यादे आए हुते सो रांणां व्यास कों ढूंढन लागे तव जगन्नाथ जोसी ने कह्यो जो रांणां व्यास तो इहां नाहीं चलो हों उत्तर देउंगो तव जगन्नाथ जोसी कों लाइ कें हाकिम के आगें ठाडो कीयो तव हाकिम नें कह्यो जो रांणां व्यास कहां हें उननें पराई स्त्री सों अन्याव कीयो है तातें वाकों लावो और मैं तो जगन्नाथ जोसी कों नीकें जानत हों जो जाको नांम

जगन्नाथ जोसी सों कबहूं अन्याव न करे यह तो
रांणां व्यासनें अन्याव कीयो है तातें उनकों ला
वो तब जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो मेरी कही सु
नों तो में कहूं तब हाकिम नें कह्यो जो कहो तब
जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो रांणां व्यास नें अ-
न्याव नाहीं कीयो रांणां व्यास ऐसो कांम कब
हू न करे तब हाकिम ने कह्यो जो क्यों जानियें त
ब जगन्नाथ जोसी नें कह्यो जो मेरी कही मांनो
तो में कहूं जो रांणां व्यास के बदले जो कछू क
हो सो में करूं तब हाकिम नें एक पैया को मुगद
ल मगायो सो अग्नि में मेलिकें तातो कीयो तब
जगन्नाथ जोसी स्नांन करिकें आयो तब जग-
न्नाथ जोसी नें ठाडे होय कह्यो जो रांणां व्यास
नें अन्याव कीयो होय तो मोकों अग्नि जराइ कें
भस्म करि डारियो और नाहीं अन्याव कीयो
होय तो मुगदल सीतल होय जइयो पाछें वह
मुगदल अग्नि में सु काढि कें दोऊ हाथनसों उ
ठाय अपने गरे में मल्यो सो घडी एक त्यों राष्यो
सब जने बोले जो जोसी तू काढि तब जगन्ना

य जोसी नें कह्यो जो हूं काढिकें कोनकें गरे में डारूं तब हाकिम नें कह्यो जो मेरे गरे में डारो पाछें जोसी नें भूमि में डारि दीनों तब भूमि जरगई तब सब जनें कहन लागे जो जगन्नाथ जोसी तुम धन्य हो तुम सांचे हो तुम कों तुमारे धनी को ऐसो सांच है यों कहिकें जगन्नाथ जोसी को समाधान करिकें कह्यो जो जोसी तुम कछू मांगो में तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हों तब जोसीनें कह्यो जो इतनों मांगत हों जो जानें यह चुगली करी है तासों कछू मति कहियो तब यह सुनि कें हाकिम तथा और सब जने बहुत प्रसन्न भए पाछें जगन्नाथ जोसी अपने घर आए वे ऐसे भगवदीय हे जो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते कहा न होय ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ और पहलें राणां व्यास नें माधो दास सारस्वत के पास नाम पायो हुतो पाछें श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक भए तब परम वैस्नव भए सो वे राणां व्यास सिद्धपुर में रहते सो राणां व्यास और जगन्नाथ जोसी सरस्वती में स्नान करत हुते तासमें एक रजपूतानी स

ती होइवे कों आई तव रांणां व्यास के पास जग
न्नाथ जोसी हुते तिननें पूछो जो सती होतहै
ताको प्रकार कहा तव रांणां व्यास नें कह्यो जो प्रे
त के संग वृथा ऐसो सरीर जरावत है सो रांणां व्या
स नें मूड हलाइ कें कह्यो जो वह रजपूतानी स
ती होन आई हुती ताने देख्यो तव वा रजपूतानीं
नें साथ के मनुष्यन सों कह्यो जो हूं तो न जरूंगी
मोकों सत नाहीं है तातें मेरी हत्या चढेगी ऐसें क
हिकें वहुत हंसि दीनी और जरी नाहीं तव वे लो
ग म्रतक कों जरायकें वा स्त्री कों गाम के वाहिर
झोंपरी करि दीनी तव स्त्री उहां रही ता पाछें रांणां
व्यास न्हाइवे कों आए तव वा स्त्री नें आयकें रांणां
व्यास सों पूछो जो तुमनें मूड हलायकें कहा वात
कही ता वात के देषेते हों न जरी तातें मोसों वह वात
कहो तव रांणां व्यास नें कह्यो जो हम तो आपुस
में हसत वात करत हुते तव स्त्रीनें कह्यो जो हम
सों काहे कों दुरावत हो जो वात होय सो कहो औ
र वहुत आग्रह कीयो तव रांणां व्यास नें कह्यो जो
हम आपुसमें हंसत हुते जो यह ऐसी उत्तम देह

पायकें नाहक प्रेत के साथ जरावत है यादेह सों श्री ठाकुर जी की सेवा न कीनी न भजन कीयो ऐसी उत्तम देह धरिकें श्री ठाकुरजी कों न भज्यो तब वा स्त्री नें रांणां व्यास सों कह्यो जो हूं तो तुम्हारी सरण हों जो जाभांति यह देह श्री ठाकुरजी के कांम आवे सो करो तब यह वात सुनिकें रांणां व्यास नें कह्यो जो अब तो तोकों सूतक है सूतक उत्तरेगो तब होयगो तब स्त्री अपनें स्थल कों गई पछि वाकों वहुत विरह उतपन्न भयो जो दिन प्रति आवे सो रांणां व्यास को दर्शन करि जाय ऐसें करत सूतक उतस्यो तब सुद्ध होय कें रांणां व्यास के पास आई तब रांणां व्यास नें कह्यो जो तू सवारें आईयो सो वा स्त्री नें वा दिन कछू षायो नाहीं पहलें चना चवाय कें रहती सो वा दिन वानें जलपांन हू नाहीं कीयो पाछें प्रातःकाल भयो जब रांणां व्यास के आइवे को समो भयो तब आयकें वैठिरही तब रांणां व्यास आए और स्नान करिकें भगवद् स्मरन करन लागे तब वा स्त्री सों कह्यो जो तू स्नान करिकें वैठि रही पाछें रांणां व्यास नें श्रीआ

चार्य जी महाप्रभून को ध्यान धरि कें वाके कान
में नाम सुनायो तब नाम सुनत ही वा स्त्री कों भग
वद् भाव उत्तपन्न भयो तब वा स्त्री नें रांणा व्या
स सों पूछो जो अब मैं कहा करूं तब रांणा व्यास
नें कह्यो जो अब तू भगवद् सेवा करि तब वा स्त्री
नें कह्यो जो मेरी स्थिति तो ऐसी है जो तुम कछू ट
हल देउ सो मैं करूं पाछें रांणा व्यास उपरना पर
दनी धोय वे कों देते सो धोय कें सिद्ध करिकें
पुहुचावती प्रसाद रांणा व्यास के घर लेती ऐसें
करत रांणा व्यास के घर को कांम काज सब कर
न लागी पाछें भगवद् सेवा को सब काम काज क
रती सो कितनेक दिन पाछें रांणा व्यास के घर श्री
आचार्यजी महाप्रभू पधारे तब रांणा व्यास ने वा
स्त्री कों श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नाम नि
वेदन करवायो तब वह स्त्री परम वैस्नव भई सो
रांणा व्यास श्री आचार्य जी महाप्रभून के ऐसे प
रम भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई
लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैस्नव ॥२२॥
अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के

सेवक राम दास सारस्वत
ब्राह्मण राजनगर में
रहते तिनकी वार्ता

सो राम दास जी के मांथें नटवर गोपाल जी श्री आचार्य जी महाप्रभून नें और अपनी पादुका जी सेवा के लीऐं पधराय दीनी सो सेवा सदैव करें ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे सो राम दास विवाह करि कें प्रथ्वी परिक्रमा को चले सो कितनेक दिन में प्रथ्वी परिक्रमा करिकें अपने घर आए परि राम दास स्त्री कों अंगीकार न करते तब दिन दै चार रहिकें द्वारिका कों चले तब राम दास की स्त्री हू साथ चली परि राम दास स्त्री कों साथ न आवन देहिं ईंटनसों मारे परि राम दास की स्त्री तो दूरि भई साथ भई और राम दास के दास की पातरि में कठिन उ‍वरे सो षाय नाहीं तो यों ही परि रहे परि पति के साथ ही रहे तब एक दिन श्री रणछोड जी नें राम दास सों कही जो तू अपनी स्त्री को अंगीकार करि त्याग कहा कों करत हे तब राम दास नें कह्यो जो में विरक्त हों वैरागी हों मेरो स्त्री सों कहा काम है तब

श्री रणछोड जीनें कह्यो जो तेनें विवाह काहे कों कीयो जो तू श्री आचार्य जी महा प्रभून कों सेवक है तोकों ऐसी निठुरता न चहिये जो श्री आचार्यजी महा प्रभून कों सेवक जानि कछू कहत नाहीं अब हों कहत हों तू अपनी स्त्री कों संगी कार करि तब रामदासनें अपनी स्त्री सों कह्यो जो तू मेरे साथ चली आव तब मार्ग में रामदास के साथ चली जान लागी तब मजल जाय उतरे तब रामदासनें अपनी स्त्री सों कही जो तू वस्त्र साजले के डेरामें बैठी रहियो और में ऊपरा बीनि लाऊं पाछें आप स्नान करि रसोई करी श्री ठाकुर जी कों भोग समर्प्यो भोग सराय पाछें प्रसाद लीयो और स्त्री कों प्रसाद दीयो सो कितनेक दिन मार्गमें चले आए पाछें एक दिन श्रीरणछोड जी ने राम दास कों आग्या दीनी जो तू अपनी स्त्री कों नाम देत ब रामदास ने कह्यो जो हूं नाम कैसें देउ तब श्री रणछोड जीनें कह्यो जो तू नाम दे मेरी आग्या है तब श्री आचार्य जी महा प्रभून को नाम ले श्री रणछोड जी की आग्याते स्त्री को नाम दीयो तब

स्त्री के हाथ को महा प्रसाद लेन लागे पाछें कित
नेक दिन में श्री आचार्यजी महाप्रभू राज नगर
पधारे तब रामदासनें आय कें श्री आचार्यजी
महाप्रभून के दर्शन कीये तब रामदासनें कह्यो
जो महाराज मेरी स्त्री कों नाम समर्पण कर वाइये
तब आपने कह्यो जो अबतो तेनें नाम दीयोहे फे
रि कहा तब रामदासनें कह्यो महाराज में तो श्री
रणछोडजीकी आग्याते नाम दीयोहे और मो
कों श्री रणछोडजी की आग्या हे जो श्री आचार्य
महाप्रभून के पास नामनिवेदन करि वाइयो तब
यह सुनि कें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें नाम-
निवेदन करवायो पाछें घर आय ग्रहस्थाश्रम क
रन लागे वे रामदास श्री आचार्यजी महाप्रभून
के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इन की बा.
र्ता कहां तांई लिषिये॥ वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥३४

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक गोविंद दुबे साचोरा
ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो गोविंद दुबे श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांतिसें

करो परि मन में बहुत विग्रह हुतो तब गोविंद दुबे नें श्री आचार्यजी महाप्रभून को वीनती पत्र लिषि पठायो जो महाराज मेरे मनमें विग्रह बहुत रहत हैं तातें में कहा करूं तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें नवरत्न ग्रंथ प्रगट करि गोविंद दुबे कों लिषि पठायो और पत्र में लिष्यो जो या ग्रंथको पाठ तू नित्य करियो सो तेरी विग्रहता सब मिटिजायगी सो कृपा पत्र आयो तब गोविंद दुवे नवरत्न को पाठ करन लागे सो पाठ करत गोविंद दुबेकी विग्रहता सब मिटि गई तब श्री ठाकुर जीकी सेवा नीकी भांतिसों करन लागे ॥ वार्ताप्रसंग ॥ २ ॥

और एक समें गोविंद दुबे मीरां वाई के घर हुते तहां मीरां वाई सों भगवद वार्ता करत अटके तब श्री गुसांईंजीनें सुनी जो गोविंद दुबे मीरां वाई के घर उतरे हे सो अटके हैं तब श्री गुसांईं जीनें एक श्लोक लिषि पठायो सो एक ब्रजवासी के हाथ पठायो तब वह ब्रज वासी चल्यो सो जहां जाय पहुंच्यो तासमें गोविंद दुबे संध्या बंदन करत हुते तब ब्रजवासीनें आयकें वह पत्र दीनों सो

पत्र बांचिकें गोविंद दुबे तत्काल उठे तब मीरां बा
ईनें बहुत समाधान कीयो परि गोविंद दुबे नें फि
रि पाछें न देख्यो ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २॥ और एक स
में श्री आचार्य जी महाप्रभू आप द्वारिका पधा
रे तब गोविंद दुबे और जगन्नाथ जोसी और पांच
सात वैसव हुते सो आपके साथ हे तब श्री आचा
र्य जी महाप्रभूनसों द्वारिका में वीनती कीनी जो
महाराज कछू कथा कहिये तब श्री आचार्य जी
महाप्रभू न नें गोविंद दुबे सों कह्यो जो अब ही नें
मो कों अब कास नाहीं तब गोविंद दुबे नें वीन
ती कीनी जो महाराज थोरी सी ही कहिये तब
श्री आचार्य जी महाप्रभून नें कथा कहिवे कों पो
थी षोली तब इतनें में गोविंद दुबे सों श्रीरण छो
डजी बातें करन लागे तब आपनें गोविंद दुबे सें
कह्यो जो पोथी षुलायकें बातें कोन सों करत हें
तब श्री आचार्य जी महाप्रभून नें फिर देष्यो जो
श्री रणछोड जीसों बातें करत हे तब आपनें पोथी
बांधी और आप पोढे ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३॥ और सब
वैसव श्री आचार्य जी महाप्रभून के पास कोमहा

प्रसाद पावते तब एक दिन श्री आचार्य जी महाप्र
भून नें षवाससों कह्यो जो तुम इन वैस्नवन को था·
र को महाप्रसाद मति देउ सो ता दिन श्री आचार्य·
जी महाप्रभू भोजन करिकें उठे हुते सो उठत ही ष·
वासनें थार छूइ कें मांजि धर्यो तब श्री आचार्य·
जी महाप्रभून के थार को महाप्रसाद न मिल्यो सो ता
दिन सब वैस्नवन नें उपवास कर्यो तब श्री रणछो·
डजी नें श्री आचार्य जी महाप्रभून सों कह्यो जो तु
म इन वैस्नवन को थार नित्य देत हो तैसें इन को·
नित्य दीजियों तब दूसरे दिन श्री आचार्य जी महा·
प्रभून नें गोविंद दुबे और जगन्नाथ जोसी सों कह्यो
जो तुमनें काल्ह महाप्रसाद क्यों न लीनो तब वैस्न·
वन नें कह्यो जो महाराज कालि आपके थार को
महाप्रसाद न मिल्यो तब श्री आचार्य जी महाप्रभू
न नें कह्यो जो तुमको अपने थार को महाप्रसाद तो न
देतो परि तुमारी सिपारस बडी ठौर ते भई है ताते अ
ब देनों पर्यो पाछें जो नित्य थार को महाप्रसाद दे
त हुते तैसेंई देन लागे तब ये वैस्नव प्रसन्न होय·
कें रसोई करन लागे तब तहां तांई श्री आचार्य जी

महा प्रभू द्वारिका में विराजे तहां तांई वै स्रवण सरेहे पाछें श्री आचार्यजी महा प्रभू श्री रण छोड जी सें विदा होय कें अडेल को पधारे तब सब वैष्णव श्री आचार्यजी महा प्रभून के साथ आए सो श्री आचार्यजी महा प्रभून कों अडेल में पहुंचाय कें फेरि अपने अपने घर आए पाछें श्री ठाकुर जी की सेवा करन लागे सो वे गोविंद दुवे श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ३४

अब श्री आचार्यजी महा प्रभून के
सेवक राजा दुबे माधो दुबे दो
ऊ भाई सांच्योरा ब्राह्मण
ए तिनकी वार्ता
है

सो ता गाम में दोय भाई सांच्योरा ब्राह्मण और रहते सो एक नाम हरि कृष्ण हुतो और एक को नाम राम कृष्ण हुतो सो वडो भाई राम कृष्ण पढो बहुत हुतो और छोटो भाई मूरष हुतो और

वह बडो भाई पढो हुतो सो गांम के चौतरा ऊ
पर बैठिकें पटेल के आगें कथा कहतो और
छोटो भाई मूरष हुतो सो षेती की रषवारी कर
तो सब टहल करतो सो वह बडो भाई कछु कांम
गयो हुतो दूसरे गांम में सो तादिन इहां की क-
था रहि गई पाछें एक दिन मेह की वर्षा वहुत भई
सो वह छोटो भाई षेत तें उठिकें घर आयो तब भा
वजनें वासों कह्यो जो तुम रोटी जें लेउ तब वा देव
रनें कह्यो जो सीत बहुत लागत है और में बहुत
भीज्यो हूं तातें तू तातो करि परोसै तो में जेऊं त
व भावजनें कह्यो जो तू षायतो षा नातर में जा
यकें सोय रहत हूं अब तू कहा गांम के चौंतरा उ
पर बैठिकें पटेल के आगें कथा कहेगो के दादे
को गरास फेरेगो तातें षानों होय तो षा नातर हूं
जायकें पडि रहूंगी और जेसो है तैसो षा नातर
कहूं उठिजा तब वा देवर के मन में बहुत दुष ला-
ग्यो और अपने मन में विचार्‌यो जो इं याटे सबकी
त्याग करूं कहूं निकसि जाऊं ता पाछें घर में तें
निकसिकें मन में विचार करन लाग्यो जो राजा

दुवे माधो दुवे बडे महापुरुषहैं ताते इनकोंनम
स्कार करकें जाऊं पाछें तहां गयो तव राजा दुवे
माधो दुवे दोऊभाईन कों नमस्कार कीयो और
रोवन लाग्यो तब दुबेजीनेपूछ्योजोतू कोंन है पा
छें देषि कें पहचान्यों तब वासों कह्यो जो तू तो
अमुके को बेटाहै हरिकृष्ण तेरो नाम है और
तू हमारी ग्यातिकोहै सो तो कों ऐसो कहा दुष
है तासों तू रोवतहै तब यानें कह्यो जोमेरे दु
षकोपार नाहीं तब दुवेजी नें कह्यो जोतू अपनों
दुष कहितोकों कहा दुरवहै तब यानें कह्योजो
तुम मेरे दुरव कोंदूरिकरों तो में कहूं तुम बडे हो
महापुरुषहो तव दुवेजीनें कह्यो जो श्री ठाकुर
जी बडेहैं वे सबकोदुष दूरि करेंगे तू अपनों
दुष कहि तव यानें सब समाचार कहेजो मो
कों भावजने ऐसे २ वचन कहेहैं सो मेरे हृदे
में षटकतहैं तातें में तुम्हारेपास आयोहूं
सो मेरो दुष तुमसों दूरि होयगो पाछें दुवेजी
नें वाको समाधान कीयो समाधान करिकें
वाकों महाप्रसाद लिवायो पाछें रात्रिकोंसो

यरह्यो तव प्रातः काल भयो तव व्रासों दुवे
जीनें कह्यो जो तू स्नान करि आउ तब वह जा
इ कें देह कृत करि स्नान करिकें आयो तब मा
धो दुवे सूं राजा दुवे नें कह्यो जो अब कहा करिये
तुमही जानों तुम्हारी जीभ चली है जो कछू करे
गे नांही तो कैसें छूटोगे फाउदस भ्योहे तवमाधो
दुवेनें कह्यो जो अवतो तुम्हारी सरण आयोहे
तुम श्री आचार्यजीमहाप्रभून केसेवक होअवतोया
कोकार्यकीयोचहियेतवपहलेंतोयाकोंक्षोरकरवायो
पाछेंस्नान करवायकें मंदिर केद्वारके आगेबैठायोतव
माधोदुवेनेंराजादुवेसोंकह्योजो अब याको कहनोहो
यसोकह्योतवराजादुवेनेंमाधो दुवेसोंकह्यो जो तुम्हा
रो यह कांमहे मेरो कांम नाहीं तातेतुमहीकहो त
व माधो दुवेनें राजा दुवेसों कह्यो तुम वडेहो ताते
तुमही कहो तव राजा दुवे नें माधो दुवेसों कह्योजो
मेरी आग्या हे ताते तुमही कहो तवमाधो दुवेनें
व्राकूं उपदेस दीयो अष्टाक्षरमंत्र कांनमें कह्यो
पाछें व्राकूं अष्टोत्तरसत नाम कोजप करवायोसो
प कीयो सो एक २ माला जप कीए पाछें संस्कृतवो

लन लाग्यो तब माधो दुवे नें राजा दुवे सों हंसिकें कह्यो जो अब आग्या होय तो याकों एक वार फेरि जप करवाइये तव राजा दुवे नें माधो दुवे सों कह्यो जो अवस्य करवाइये पाछें माधो दुवे नें वाकों दूसरी वेर जपकरवायो तब भगवद्स्वरूप स्फुर्द भयो और पुराण इतिहास्यमें ग्यान भयो तव माधो दुवे नें राजा दुवे सों फेरि हंसिकें कह्यो जो आग्या होय तो अब फेरि याकों जप करवाइये तब राजा दुवे नें माधो दुवे सों कह्यो जो अब यह इतने ही को पात्र है अधिकी समाय नाहीं और कह्यो जो तुम कछू मनमें मति लाइयो जो हमतें भयो है ताते यह कछु भयो है सो सब श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते भयो है हमारो तुम्हारो स्वरूप तो वे जानत हैं पाछें वानें वहां ई प्रसाद लीयो पाछें दुवे जी की आग्या मांगिकें अपने गांम के चोतरा ऊपर जाय बैठो और कथा कहन लाग्यो पहलें वडो भाई कथा कहतो सो वह गांम गयो जानि कें कोई आवतो नाहीं सो वादिन क

हूतें वाको सेवक आयो तानें कथा कहत देख्यो तब वानें गांमके पटेल सों आय कही जो तुम कथा सुनिवेकों क्यों नाहीं गए भट्टजी तो कथा कहि रहेहैं तब पटेल आय कें देखे तो भट्टजी कथा कहि रहेहैं तब पटेलनें कह्यो जो भट्टजी अब तांई तुम कथा कहन कों नांही आए तब भट्टजीनें कह्यो जो पहलें बडे भाई कथा कहते तातें में नाही आवतो अब वे और गांम गएहैं तातें में कथा कहिवेकों अब आयोहूं तब वे भट्टजी भगवद इच्छा तें भली कथा कहन लागे तातें सब कोऊ बहुत प्रसन्न भए और सब कोऊ कहन लागे जो हमारो वडो भाग्यहैं जो अब कें ऐसो ब्राह्मण मिल्यो तब कितनेक दिन में वह कथा संपूरण भई तब सब नें मिलिकें भट्टजी की पूजा करी और कह्यो जो अब तो तुमही कथा कहिवो करो कथाकों आइयो पाछें वह ब्राह्मण माधोदुबे के पास आयो और आइ कें वीनती करी जो तुम्हारी कृपा तें मेनें कही सो जा की यह पूजा मिलीहै सो तुम लेउ यह सब द्रव्य तुम्हारो

हे तुम मेरे गुरू हो तब राजा दुबे माधोदुबे नें-
वासों कह्यो जो हमारे और तुम्हारे गुरू श्री आ
चार्यजी हैं तातें यह द्रव्य सब उनको है हमारो या
में कछू नाहीं तातें यह द्रव्य सब उनको है हमारो
यामें कछू नाहीं तातें यह द्रव्य सब अडेल पहुं-
चावनों तब वा ब्राह्मणनें सब द्रव्य अडेल पहुं
चायो सो कितनेक दिन पाछें रामदास सांचोरा
ब्राह्मण और जगन्नाथ जोसी ये वैस्नव श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के दर्शन कों अडेल जात हे तिन
के हाथ वह द्रव्य अडेल पहुंचाय दीयो तब कित
नेक दिन में वाको बडो भाई आयो वह गांम गयो
हुतो सो आयो तब यानें राजा दुवे माधो दुवे सों क-
ह्यो जो तुम आग्या देउ तो मेरे पिता को ग्रास है सो
फेरें तब दुबेजी नें कह्यो जो अब कहा कछू संदेह
है तुम्हारा सब सिद्धि होइगो तब वह दुबेजी सों आ
ग्या लेकें वा गांमकों चल्यो सो जाय पहुंच्यो पाछें
वा राजा सों मिल्यो आसीर्वाद दीयो तब वह राजपू
त वा भट्ट को देषिकें बहुत प्रसन्न भए और कह्यो
जो हमारो बडो भाग्य जो तुम कृपा करिकें आ

ए और कह्यो तुम डेरा करो तब उन डेरा कीयो-
पाछें रसोई की सामग्री चलती करी पाछें स
वजने भट्टजी के पास आइ बैठे तब भट्टजी नें-
एक श्लोक को व्याख्यान करो तब वे सब ज
ने बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो तुम पांच
रात्रि कृपा करिकें रहो पाछें तुम्हारी विदा करें
गे ऐसें कहिकें वे तो अपने घरकों गए पाछें र
सोई करि श्री ठाकुरजी कों भोगसमर्प्यो
भोग सराय कें महाप्रसाद लीयो तब दूसरे दि
न सब मिलि कें बिचार करन लागे जोभट्टजी-
की विदा कब करिये और कहा करिये और
यह ब्राह्मण बहुत योग्य है और बहुत दिन-
में आयो है तब उन सबन में एक हुद्दहु तोति
ननें कह्यो जो याकों १०० मन तो अन्न देउ-
और एक सत याकों मुद्रा देउ और याके पि
ता को ग्रास पुरातन भूमि है सो एक १०० बिघा
है सो याकों लिषि देउ इतनों देउ जो हमहू ब्राह्म
णरिणते छूटें तब सब नें कह्यो जो यह ठीक वा-
त कहे है सो याको कह्यो सबन कों करनों चहिये

पाछें सव नें मिलि कें चीठी लिषि दीनी और क
ह्यो जो याको अन्न सिद्धि है सो लेजाउ तब भ
ट्ट नें कह्यो जो यह सव अन्न मेरे घर पहुंचावो
तब वा अन्न के गाडा भरि दीने और कह्यो जो
अपने साथ लिवाय लेजाउ और सव नें मिलि
कें वस्त्र दीने और गाय और एक भेंसि और
सत मुद्रा इतनों याकों दीयो और कह्यो जो तुम
इतनों प्रति वर्ष आय कें लेजायो करो तब भट्ट
जी उन सवन सों विदा होयकें अपने गाम कूंच
ले सो आय पहुंचे तब अपने द्वारे के आगें आ
य पुकारयो और पुकारि कह्यो जो भाभी किवाड
षोलि हों पटेल्ल के चोंतरा ऊपर कथा कहि कें औ
र पिता को ग्रास फेरि कें आयो हों ताते अव तू द्वा
र षोलि तव भाभी किवाड षोलि कें देषे तो देव
र सांचें ही ठाडो है तब देषि कें वाको वडो भाई उ
ठि आयो तब देषे तो छोटे भाई के ऊपर भगव
द तेज विराजत है तव वह वडो भाई डरप्यो जो
मति यह कछू मनमें वुरी लावे तव वह छोटो भा
ई भाभी के पाय लाग्यो और कह्यो जो तुम्हारे

वचनतें मोकों श्री ठाकुरजी की कृपा भई है त
ब वाके बडे भाई नें कह्यो जो स्नान करो महाप्र
साद लेउ तब छोटे भाई नें कह्यो जो मैं तो राजा
दुवे माधो दुबे कों नमस्कार कीए विना जल पा
न न करूंगो तब वाके बडे भाई नें कह्यो जो य
ह कहा तब छोटे भाई नें कह्यो जो यह भयो है
सो सब उनकी कृपातें भयो है मो कों तो तुम
नीकें जानत हो जैसो हों तैसो तब बडे भाई
नें कह्यो जो मैं तुम्हारे साथ चलूंगो तब दोऊ
भाई राजा दुबे माधो दुवे के घर गए तब जाय
कें बडे भाई नें उन कों नमस्कार कीयो और
छोटे भाई नें दंडोत करी तब राजा दुवे नें माधो दु
वे सों कह्यो जो तुम्हारो सेवक आयो है और य
ह प्रसंग या के बडे भाई के आगें मति कहियो त
ब दुवेजी नें कह्यो आवो बैठो तब वे दोऊ भाई
बैठे तापाछें दुवेजी सों छोटे भाई नें सब वार्ता
निवेदन करी तब दुवेजी नें कह्यो जो तेरे ऊप
र श्री आचार्यजी महाप्रभून को श्रीहस्त है त
तें ऐसो क्यों न होय तब वाके बडे भाई नें क

ह्यो जो हम तो श्री आचार्यजी महाप्रभून के द
र्शन नाहीं करे हम तो तुम देखे हो और जेसें या
के ऊपर कृपा करि कें याकों कृतार्थ कीयो है तै
सें मोकों हूं आप कृपा करि कें कृतार्थ करो तब वा
कों हूं दुवेजी नें कृतार्थ कीयो नांम सुनायो पा
छें दोऊ भाईन कों महाप्रसाद लिवायो पाछें
छोटे भाई नें दुवेजी सों कह्यो जो आग्या होय तो
अन्न ये मुद्रा गाय भेंसि कपडा सब उहां सों ला
यो हों सो आप के मंदिर में आवे तब दुवेजी नें
कह्यो जो तुम तो जानत ही हो जो या द्रव्य के धनी
तो श्री आचार्यजी महाप्रभू हैं तब वाने कह्यो
जो आपकी आग्या प्रमान तव दुवेजी नें कह्यो
जो अन्न और गाय भेंसि और सब द्रव्य इकठो
रो करो पाछें दुवेजी सों दोऊ भाई विदा होय कें
अपने घर आए तब सब द्रव्य हुतो सो इकठो रो
कीयो पाछें दिन थोरे से में श्री आचार्यजी महा-
प्रभू द्वारिका पधारे तब सिद्धपुर में रांणा व्यास के
घर उतरे तब राजा दुवे माधो दुवे और वह सब द्र
व्य लेकें श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों

सिद्धपुर में आए तब आयकें श्री आचार्यजीम
हा प्रभून के दर्शन कीए पाछें इन दोऊ भाईनकों
श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नांम निवेदन
करवायो और वह द्रव्य हुतो सो सब भेट कीयो
तब दिन द्वे चारि रहिकें आप आगें पधारे तब
राजा दुबे माधो दुबे और ये दोऊ भाई ब्राह्मण
श्री आचार्यजी महाप्रभून सों विदा होयकें अ
पने घर आए पाछें ये दोऊ भाई ब्राह्मण राजा
दुबे माधो दुबे के संगतें बडे भगवदीय भए ता
तें संग करनों सो भगवदीय को करनों ये राजादु
बे माधो दुबे ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे तातें इ
नकी वार्ता कहां तांई लिषियें॥ प्रसंग॥१॥वै॰३४

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
केसेवक उत्तिम श्लोकदा
ससांचोरा ब्राह्मणति
नकीवार्तालिषेंहें

सो उत्तिम श्लोकदास श्री नाथजी के सेवकनकी
रसोई करते और सबन कूं आप परोसते तातें स
ब सेवक उत्तिम श्लोक दास कूं महतारी करिवो

लते सेवकन कों प्रीति सों परोसते तातें श्री गु
सांईजी इनके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते वे उत्तम
श्लोकदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृ
पापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तां
ईं लिषिये ॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्नव ॥ ३६ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक ईस्वर दुवे सांचो
रा ब्राह्मण तिन की
वार्त्ता लिष्यते

सो ईस्वर दुवे श्री नाथजी के सेवकन की रसोई कर
ते और उत्तिम श्लोक दास हू श्री नाथजी के से
वकन की रसोई करते सो तब उत्तिम श्लोक दा
स की देह छूटी तब श्री गुसांईजी नें ईस्वर दुवे
को नांम उत्तिम श्लोक दास राष्यो सो वे श्री ना
थजी के सेवकन की रसोई करते सो अपनी गां
ठि ते घृत मगाय कें सबन कें नेगि ते अधिक घृ
त परोसते तातें या हू सों सब सेवक मह तारी क
हिकें बोलते सो यह बात श्री गुसांईजी नें सुनी
सो सुनि कें बहुत प्रसन्न भए तब ईस्वर दुवे सों

श्री गुसांईं जीनें पूछी जो तुम अपनी गांठिते द्र
व्य को घृत मगाय कें काहेकों परोसतहो तब ई-
स्वर दुवे नें कह्यो जो महाराज इनकों सेवामें श्र
म वहुत होत हैं तब यह सुनिकें श्री गुसांईं जी
बहुत प्रसन्न भए और कहें जो याको सव सेवक
न ऊपर ऐसी वात्सल्य है तब ईस्वर दुबेसों श्री
गुसांईं जी नें कह्यो जो तू मांगि हों तेरे ऊपर बहु
त प्रसन्न भयो हों तब ईश्वर दुबेंने प्रसन्न होय
कें कही जो महाराज मेरो मन तुम ऊपरतें अ
प्रसन्न न होय तब श्री गुसांईं जीसूं वैस्नव नें कह्यो
जो महाराज यानें यह कहा मांग्यो तब श्री गुसां
ईं जी सुनिकें चुपकरि रहे तब श्री गुसांईं जी सूं
हरिदास नें पूछी जो महाराज मेरे मन में संदेह
है जो उत्तिम श्लोक दासनें यह कहा मांग्यो तब
श्री गुसांईं जी नें कह्यो जो यह संदेह तो उनहीं सों
मिटेगो तब उन वैस्नवननें उत्तिम श्लोक दास
सों पूछी जो तुमनें श्री गुसांईं जी पास कहा मा
ग्यो तब उत्तिम श्लोक दासनें कह्यो जो जब
श्री गुसांईं जी मोपर प्रसन्न होयकें कह्यो जो हूं

तेरे ऊपर प्रसन्न भयो हौं तातें तू कछू मांगि तब
श्री गुसांईं जी मोकों प्यारे लागे तब मनमें वि
चार भयो जो आज प्रभूजीकी प्रसन्नता तें षरे
प्यारे लागत हौं और में सेवक हौं और जो कदा
चित कोऊ अपराधतें मन प्रसन्न होय जाय त
ब मेरो मन मति कहूं विगरे तातें यह माग्यो जो
सदा निरंतर तुम्हारे चरणारविंद पर मन रहे सो
उनके दीए ते रहे तब यह बात सुनिकें सब वैष्ण
व बहुत प्रसन्न भए तब विचारें जो सेवक को ऐ
सोही धर्म चहिये पाछें श्री गुसांईं जी प्रसन्न हो
यकें श्रीअंग की सेवा दीनी सोवे मुषियाभीतरिया
भए वे उतिम श्लोक दास श्री आचार्यजी महा-
प्रभून के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे तातें
इन की वार्त्ता को पार नाहीं तातें इन की वार्त्ता अ
ब कहां तांईं लिषिये ॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वै. ३७ ॥
अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक
वासुदेव दास छकडा सारस्वत ब्राह्म
ण सीहनंद के तिन की वार्त्ता
सो एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभून के बडे पु

ने श्री गोपीनाथजी सों अडेलतें आगरे पधारे सो आगरे में बैस्नवननें एकसौ एक महोर भेट कीनी पाछें आगरे तें श्री गोपीनाथ जीद्वार पधारे सोसाथ समस्त बैस्नव भए तब श्री गोपीनाथ- जीनें आग्या करी जोकोऊ ऐसो बैस्नव है जोएक सौ एक मोहर हमारे घर पहुंचावे तव वासुदेव दास नें कह्यो जो महाराज मोहर मोकों देउ में पहुंचाऊंगो तब वे मोहर वासुदेव दास छकड़ा- कों दीनी सो मोहर लाय में मेलिकें गोला कीयो सो गोला की पूजा करत मार्ग में चले गए सो दिन पांच में अडेल जाय पहुंचे सो गांम के बाहिर गोला फोरिकें मोहर काढि पाछें श्री गुसांईजी के घर जाइकें मोहर श्री गुसांईजी कों दीनी और श्री गोपीनाथजी को पत्र श्री गुसांईजी कों दीनों पाछें श्री गुसांईजी नें वह पत्र वांचिकें मोहर सव गिनि लीनी पाछें श्री गुसांईजी नें वासुदेवदास कों महाप्रसाद लिवायो पाछें वासुदेव दास नें श्री गुसांईजी सों वीनती कीनी जो महाराज पत्र को जुवाब लिषिये और पत्र में मोहर न की पहुंच

लिषिये जो हूं तो सवारें जाऊंगो तव श्री गुसां ईजी नें वा पत्र को जुवाब लिषि दीनों जो मोहर पहुंची ताकी पहुंच लिषिकें पत्र वीड्यो सो बी डकें बासुदेव दासकों दीनों पाछें वासुदेव दास- सोय रहे तब रात्र घडी एक रही तब वासुदेव दास उ ठिकें श्री गुसांई जी के पास आयकें दंडोत करिकें अडेल तें चले सो पांच दिन में श्रीजी द्वार आए श्री गुसांईजी को पत्र हो सो श्री गोपीनाथजीकों दीनों दिन दस में अडेल आए और गए सो पत्र वांचि कें श्री गोपीनाथजी बहुत प्रसन्न भए और पूछी जो वासुदेव दास मोहर कोंन भांति सों लेग ए हुते तव वासुदेव दास नें कह्यो जो महाराज मो हरन को गोला करि कें वा गोला की पूजा करत ले गयो तव श्री गोपीनाथजीनें कह्यो जो या भांति कबहू न रषिये जो स्वरूप करि मानिये ताकों या भांति कैसे करिये तव वासुदेव दासनें कह्यो जो- महाराज प्रतिष्ठा तो न भई हुती ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ बहुरि एक समें श्री गुसांईजी श्री मथुराजी में वि राजत हुते सो एक समें श्री गुसांईजी श्रृंगार क

रि सेवातें यहुंचिकें बाहिर बैठक में विराजे सो
बैठक में बैठिकें रूप चंदनंदा कों पत्र लिष्यो तामें
बसंत कों सामग्री मगाई तब वासुदेव दाससों क
ह्यो जो तू इतनी सामग्री लेकें संध्या कों आईयो
तब भंडारी कों आग्या दीनी जो एक टोकरा या
कों प्रसाद को देउ तब भंडारी नें ऐसें रीछ कों आ
हार दीनों टोकरा में तब श्री गुसांईजी नें वासु
देव दास कों आग्या दीनी जो तो कों पनहीं पहरे
की कछू चिंता नांही पैंडे में प्रसाद षात चल्यो जै
यो तब वासुदेव दास सोई करत आए सो जब आ
गरे आय पहुंचे तब तांई प्रसाद षाय चुके तब
झारी झारिकें रूपचंद नंदा के घर गए तासमें रूप
चंदनंदा अपने घर प्रसाद ले चुको हो चलू लेकें सी
क करत हो सो वासुदेव दास पत्र लेकें आए तब रू
पचंद नंदा नें हाथ धोय पोंछिकें वह पत्र मांथें च
ढायकें लीनों और भाई सों कह्यो जो वासुदेव दा
स आए हैं सो घर में कहो ये भूषे होंइगे तव बा
सुदेव दास नें कह्यो जो मो कों तो मथुरा जानों है
तासों मो कों सषडी महाप्रसाद लेबे को अवका

सना हीं तातें सामग्री लेदेउ तोमें जाऊं इहां तो
प्रसाद लेंउ गोंनाहीं तवरूपचंद नंदा वस्त्र पहरि
कें सामग्री लेन गए तब वासुदेव दास साथ गए
तवरूपचंद नंदा नें छोटे भाई गोपाल दाससों क
ह्यो जो अपने घरमें जितनों प्रसाद होय सो तू ले
कें छार छू दरवाजे बैठियो हम आवतहैं तबछो
टे भाई नें जितनों घरमें प्रसाद हो सो सव लेकें छार
छू दरवाजे आय बैठो और रूपचंद नंदा बाजार
में आयकें सब सामग्री लीनी तव वासुदेव दासनें
कह्यो जो मेरो अगलो धरतो प्रसादी है तव सव सा
मग्री पिछिली और कटिसों दृढ करि वांधी पाछें
रूपचंद नंदा और वासुदेव दास छार छू दरवाजे
आए तव देषें तो छोटो भाई बैठो है प्रसाद लीए
सो सव प्रसाद सों वासुदेव दास की झोरी भरी और वि
दा कीए आप दोऊ भाई घरकों आए और वासुदे
व दास मथुरा कों आए सो तीसरे पहर श्रीगुसांई जी
स्नान करिवे कों पधारे हुते तासमें वासुदेव दास
सामग्री लेकें आय ठाडो भयो तब श्री गुसांई जी
ने कहि कें वासुदेव दास की कटितें सामग्री षोलिलीं

नी और श्री गुसांईंजी वासुदेव दास कै ऊपर बहुत प्रसन्न भए और आग्या दीनी जो तो कों महाप्रसाद की सामग्री राषी है सो जाय कें प्रसाद ले तब वासुदेव दास विश्रांति स्नान करि कें आयो तव प्रसाद लीनों सो वासुदेव दास की छुधा बहुत हुती मण डेढ षाते परि जैसो बहुत षाते तैसो बहुत पराक्रम हुतो मथुरा तें दोय पहर में आगरे गए और आए ऐसे पराक्रमी हुते॥ वार्ता प्रसंग॥२॥ बहुरि नित्य प्रति श्री गुसांईंजी श्री ठाकुरजी की सेवा करि कें वाहिर आय कें षवास सों कहते जो तू थैली पीढा ले कें विश्रांति जैयो और आप दर्शनार्थ जन्म स्थान पधारते सो जन्मस्थान दर्शन करि कें पाछें श्री गुसांईंजी विश्रांति स्नान कों पधारते या भांति सों श्री गुसांईंजी नित्य करते सो एक दिन मथुरिया चोबे सव मिलि कें क़ाज़ी के पास जाय कें चुगली करी जो तुम इन सों लागा वांधी करो तो इन के सेवक आए हैं सो तुम कों दोय चारि हजार रुपैया ये देंइगे तव क़ाज़ी मनुष्य दोय सें हथियार बांधि कें जन्मस्थान आय ठाडो भयो इ

तनेमें श्री गुसांईजी श्री केसोरायजीके दर्शन-
कों पधारे तब दर्शन करिकें वाहिर आए पाछेंघो
रा ऊपर सवार भए तब क़ाज़ीनें कह्यो जो अव तु
म कहांजाउगे तब वासुदेवदासनें श्री गुसांईजी
सों वीनतीकरी जो महाराज मोंकोंवुरी नजर दी-
सतहे तब श्री गुसांईजीनें कह्यो जो ये तेरो कहा
करेंगे तोसों होयसो तूहू करि तब वासुदेवदास देषे
तो एक के हाथमें ढाल और गुरज देषी सो ताकें
वासुदेवदासनें एक थपेड मारी सो थपेड लगत
मात्र वहतो गिरिपस्यो तब वाकी ढाल और गुरज
लेकें वासुदेवदासके पाछें मनुष्य वीस पच्चीस हुते
तब वे भाजिकें एक हवेलीमें वैठि दरवाजो देकें छि
पिरहे तब श्री गुसांईजी घोरे ऊपर सवार भए और
उनके दरवाजे होयकें पधारे तब वासुदेवदासनें श्री
गुसांईजीसों कह्यो जो महाराज अब भले इकठो
रे भएहैं जो आग्याहोय तो इन सबनकों दरवाजे
तोरिकें मारों तब श्री गुसांईजीनें नाहीं करी और
कह्यो जो तेरो ये कहा लेतहें पाछें श्री गुसांईजी
वि[illegible]ांति पधारे तब दूसरे दिन श्री गुसांईजी स्नान

कों पधारे तब वह क़ाज़ी अपने मनुष्यनकोसाथ
लेकें गरेमें पटुका देकें आय कें बीनतीकरीजोम
हाराज आज हम कन्हैयां देषे औरभीमहूं देषेजो
प्रभूजीके प्रताप तेंसबडरे तब श्री गुसांईजीनें
कह्यो जो यह ऐसोहुतो जोफिरि यासों बोलते तो
अकेलो यह सवन कोंमारतो तुमसवठौर रहते
औार याके मनमें तोबहुत आईहुती परि हमकों
ऐसी न करनीहुती पाछें क़ाज़ी कोसमाधानकरि
कें घरकोंपठायो सो श्रीगुसांईजीकीकृपातें श्री
आचार्यजीमहाप्रभूनकेसे वकऐसे सामर्थ वान
हुते ॥ वार्ताप्रसंग ॥ ३ ॥ औार सीहनंद में उत्सवहो
तो तब वासुदेव दासकोंबुलावते नाहीं तब ए
क समें सीह नंद के वैष्नव मिलिकें श्री गोकुल श्री
गुसांईजीके दर्शनको आए सोतिन के साथ वा-
सुदेव दासहू आए तब वैष्नवननें श्री गुसांईजी
को दर्शनकीयो पाछें उहांर हिकें कोई समें पाय
कें वासुदेव दास नें श्रीगुसांईजी सों बीनतीकरि
कें कही जो महाराज ये वैष्नव मोकों सीह नंद में
उत्सव होतहै तब वुलावत नाहीं तब श्री गुसांई

जी चुपकरिरहे तबपाछें उनवैष्णवनकोंजवडे
एकों बिदाकीए तबतिनमेंतें चारिपांचमुषिया
रहे सोतिन कों श्रीगुसांईजीनेंराषे और सब वै
ष्णवनकोंडेरा पठाए तब श्रीगुसांईजीनें उन वै
ष्णवनसोंपूछो जो तुम वासुदेव दास कों उत्सवकी
र्तनमें क्यों नाहीं वुलावतहो तव उन वैष्णवनने
वीनती करिकें कही जो महाराज वासुदेवदासको
वडे उत्सवमें तो वुलावतहैं और छोटे उत्सवमें तो
नाहीं वुलावत जो ये भूषे रहें तो दोष लागे तव श्री
गुसांईजी नें आग्या दीनी जो तुम वंधान वांधो जो
१०० वैष्णवनको वुलावो तो पचास ५० तो और वै
ष्णवनकोंवुलावो और पचास ५०में एक वासुदेव
दासको वुलावो और जहां पचास ५० वुलावो तो प
च्चीस तो और वैष्णव वुलावो और पच्चीसमें एकवा
सुदेव दास कूं वुलावो और जहां पचीस २५ वुला
वो तहां तेरह १३ तो और वैष्णव वुलावो और वा
रह १२ में एक वासुदेव दास कोंवुलावो ऐसें दस
तांई श्री गुसांईजी नें वंधान वांध्यो ऐसें पांचतां
ई वंधान वांध्यो ऐसें जितने वुलाउने होंय तितने

तो और वैष्नव बुलावो और आधेनमें एकवा
सुदेव दास कों बुलायो तब उन वैष्नवनने कह्यो
श्री गुसांई सों जो महाराज ये तो भूषेर हैं गे तब
श्री गुसांई जीनें उन वैष्नवन सों कह्यो जो दस
तांई तुम आधेमें वासुदेव दास कों बुलावो तामें
चाहे सो होउ ताकों तुम कहा करोगे सो यह प्र
कार मेंनें तुम कों करि दीनों है सो मेरी आग्या
तें तुम कों कछू बाधा नाहीं जो तुम आधेमें वासु
देव दास कों षुसी सों बुलावो पाछें भूषो रहै तो
तुम कों कछू दोष नाहीं परि यह श्री आचार्य
जी महाप्रभून को सेवक है तातें बासुदेव दास
कों बुलाए बिन तुम उत्सव मति करियो तब वैष्
नवन नें कह्यो जो महाराज की आग्या होइगी सो
ई करेंगे तब वे कोई कदिन श्री गोकुल रहिकें
पाछें सब वैष्नव सीहनंद कों गए तब वे वैष्नव
सोई करन लागे श्री गुसांईजी वासुदेव दास कों
श्री आचार्यजी महाप्रभून को सेवक जानि कें ऐसी
कृपा करते सो वे वासुदेव दास श्री आचार्यजी म
हाप्रभूनके ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय है ता

तें इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब इनकी वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग॥४॥वै.७८।सं.१०८

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक बावा वेणु और कृष्णदास घघरीया देवदास तिनकी वार्ता है

सो वे बावा वेणु हृदय के नेत्रन सों देषते सो बावा वेणु और छोटे भाई कृष्णदास ये दोऊ भाई श्री केसोरायजी के आगें कीर्तन करते तहां या देवदास हू कीर्तन करत में साथ हुते तब कीर्तन करनलागे सो यह पद गावतहुते जो देषिरी नेंनन गिरवर धरन सो यह पद गावत कृष्णदासनें अपनी देह छोडी तब या देवदास नें बावा वेणु सों कह्यो जो कृष्णदास नें यह पद गावत अपनी देह छोडी तब बावा वेणु नें कह्यो जो हम तो अपनी देह श्रीनाथजी द्वार में छोडेंगे पाछें कृष्णदास को संस्कार श्री केसोराय जी के पिछवारें कीयो ता पाछें सूतक उतर्यो तब सुद्ध होयकें श्रीनाथजी द्वार चले सो कितने

क दिन में श्री नाथजी द्वार आय पहुंचे तव पर्व
तऊपर जायकें बावा वेणु नें श्री नाथजी के द
र्शन कीए पाछें वावा वेणुनें कीर्तन कीए त
व श्री नाथजी के कंठतें फूलकी माला गिरी सोमा
ला और एक वीडा रामदास भीतरियानें बावा बे
णु कूं दीनों सो वावा वेणुनें मांथें चढाय कें लीनों
तव रामदास भीतरियानें वावा वेणु सों कह्यो जो
तुम्हारी विदा श्री नाथजी नें कीनी तव वावा व
णु नें श्री नाथजी कों दंडोत कीनी पाछें नीचें उत
रे सो आन्योर की ओर उतरे तव वावा वेणु नें या
दव दास सों कह्यो जो हूं यो पर्वततें नीचें उतरि कें
अपनी देह छोडुगो तू सावधान रहियो और तू वे
गो आईयो ऐसें यादव दास सों कहि कें वावा वेणु
पर्वततें नीचें उतरि कें श्री नाथजी को दंडोत क
रत मात्र अपनी देह छोडी पाछें यादव दासनें वा
वा वेणु को संस्कार कीयो पाछें सूतक उतरो तव-
सुद्ध होय कें यादव दास श्री गुसांईजी के पास आ
ए सो श्री गुसांईजी को दर्शन कीयो और दंडो
त कीनी तव श्री गुसांईजी यादव दास कों परम

भगवदीयजानिकें मनमें विचारें जोकोईएकदिन में यादव दासकीह्रस्थितिहै ताकेलीए श्रीगुसांईं जीविचारें जो श्रीनाथजीकी सेवामें यादव दास कों राषियें तो आछोहे तब श्रीगुसांईंजीनें कह्यो जो यादव दासतुम अकेलो हो तातें अब श्रीनाथ जीकी सेवाकरो तब श्री गुसांईंजी की आग्यातें या दव दास श्रीनाथजी की सेवा नी कीभांतिसों करी सो सेवा सोंप हुंचिकें यादव दास नीचें उतरे औरनी कीभांतिसों सेवाकरते सो कहूं बंगालामेंजायकें या दव दास लकडी परीहोंय सो इक ठोरी करी पाछें जबजान्यों जो लकडी सिद्धिभई तब श्री नाथजी पास आग्यामांगिकें दंडोत करिकें नीचें उतरे सो अग्नि लेकें जहां लकडी इकठोरी करीहुती तहां आप आए सोलकडीनको श्रीनाथजी कीध्वजा के अगारीचोंतरा बनायो सोचोंतराके ऊपर आप पोढे जा दिसा को ब्यारि चलत हुती तादिसा कों अ ग्नि धरिकें ध्वजाकों प्रनाम करिकें श्रीनाथजीको स्मरन करिकें यादव दासने अपनी देह छोडी पाछें ब्यारि ते अग्नि जरिउठी सो जरिकें भस्म होय गई

यादवदासनें अपने हाथ सों अपनों संस्कार की
यो तथा बाबा वेणु को संस्कार कीयो ताको हेत य
ह जो यादव दासनें कृष्न दास को संस्कार कीयो ता
तें यादव दासनें अपनों यही विचार कीयो जो सब
सेवकनको मेरो संस्कार करिबे में कष्ट होयगो औ
र सेवा में विरोध होयगो तातें यादव दासनें अप
नों संस्कार अपने हाथन सों कीयो और पहलें
बाबा बेणु नें यादव दास सों कह्यो हुतो जो तू बे
गो आईयो विलंब मति करियो सो तो श्री गुसां
ईंजी नें श्रीनाथजी की सेवा सोंपी तातें इतनें दि
न विलंब भयो पाछें दिन द्वे भए तब श्री गुसांईंजी
नें पूछो जो यादव दास देषियत नाहीं सो कहां ग
यो है तब सेवकननें कह्यो जो महाराज यादवदा
स कछूं वनमें लकडी इकठोरी करत हुते तब श्री
गुसांईं जी नें कह्यो जो उहां जाय कें देषो तो तब
श्री गुसांईंजी के कहत मात्र बैस्नव जायकें देषें
तो उहां कछू नाहीं राष की ढेरी परी है तब बै
स्नवननें श्री गुसांईंजी सों आयकें कह्यो जो म
हाराज उहां तो कछू देषियत नाहीं राष की ढे

रीपरीहै तब श्री गुसांईजी आपने श्रीमुषसों क
ह्यो जो ऐसो भगवद्भक्त जो काहूकों दुषन देतो
बे यादव दास श्री महाप्रभून के ऐसे परम भगवदी
यहे जो स्व इच्छातें आपनी देह छोडी सो सब ग्वा
लन नें देख्यो सो चक्रत होय रहे तातें बाबा बेणु
और कृष्ण दास घघरी और यादव दास बनियो ऐ
से कृपा पात्र भगवदी यहे तातें इनकी वार्ता को
पार नांही सो अब कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्र
संग ॥१॥ वैष्णव ॥३५॥ संबंध ॥१०५॥ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेव
क जगतानंद सारस्वत ब्राह्मण था
नेस्वर के वासी तिन की वार्ता

सो जगतानंद सरस्वती ऊपर कथा कहते तब ए
क समें श्री आचार्यजी महाप्रभू थानेस्वर पधा
रे सो जगतानंद सरस्वती ऊपर कथा कहि रहे हुते सो
तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू जाय बिराजे तब ज
गतानंद नें एक श्लोक को व्याख्यान कीयो तब श्री
आचार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो याको व्याख्यां
न भावतो बहुत है तब जगतानंद नें कह्यो जो श्लो

ककी अर्थ है सो तो कह्यो जो श्रीसुकदेवजी नें कह्यो सो तो कह्यो तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननें कह्यो जो श्रीसुकदेवजी लरिका हैं तब जगतानंद नें कह्यो जो अधिकी व्याख्यान होय तो तुमहीं आयकें कहो तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननें कह्यो जो तू तो व्यास आसन बैठो है हम तेरे अति हूम क्यों करिकें तब इतनों सुनत मात्र जगतानंद चोकी छोडिकें उठि ठाडो भयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें चोकी ऊपर वस्त्र बिछाय कें ताके ऊपर पोथी धरी और आपनी चें बैठे और वा श्लोक को भाव फेरिकें वाको अर्थ कह्यो सो व्याख्यान करत २ तीन पहर बीते तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो या श्लोक को व्याख्यान तो मास दोय तीनि लों बीतेगो परि अब तुम भूषे होउगे तातें अब तुम उठो तब जगतानंदनें कह्यो जो महाराज आप तो ईश्वर आपके भाव घटिवे के नाहीं तहां तांई चाहो तहां तांई कहो पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननें पोथी वांधी तब जगतानंदनें साष्टांग दंडोत की

नी और कह्यो जो महाराज मेरो घर पावन करि
ये तुम तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो तू तो अन्यमार्गी
यहै हम तेरे घर कैसें पधारेंगे तब जगतानंद सर
स्वती नें स्नान करि कें आय ठाडो भयो और बीन
ती करि कें कह्यो जो महाराज मोकों कृपा करि कें
नाम दीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कृ
पा करि कें नाम दीयो तब श्री आचार्यजी महाप्र
भू वाके घर पधारे और जगतानंद के घर सेव्य ठा
कुरजी हुते सो वे तुलसी मांरु वे ठिते तहां वे सदाए
क लोटी श्री ठाकुरजी के ऊपर डारते तब श्री ठाकु
रजी कूं श्री आचार्यजी महाप्रभूननें तुलसी में सूं
काढि कें पंचामृत सों स्नान करवाय न्यारे बैठाए
पाछें शृंगार करि राजभोग समर्प्यो पाछें जगता नं
द कों सेवा की विधि सिषाई और कह्यो जो नित्य
याही भांति सों सेवा करियो तब जगतानंद भले भ
गवदीय भए सो श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति
सों करन लागे सो वे जगतानंद श्री आचार्यजी म
हाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है तातें इन

कीबार्ता कहांतांई लिषिये। प्रसंग॥१वे॥४०॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक
आंनंददास बिस्वंभर दास दोऊ भा
ई क्षत्री हुते तिन की वार्ता है

सो वे दोऊ भाई अति कृपापात्र भगवदीय हे सो वे दोऊ भाई एकत्र बैठि कें भगवद् वार्ता करते तथा श्री आचार्यजी महाप्रभून की वार्ता अहनिंस करते कबहू वार्ता कहत छोटे भाई कों निद्रा आय जाती तब श्री ठाकुरजी हुंकारी देते तब बडे भाई आंनंद दास सो तो भगवद् वार्ता के आवेस में जानते नाहीं जो हुंकारी कोंन देतहे जब वार्ता कहि चुकते तब आंनंद दास बिस्वंभर दास सों पूछते जो मेंनें तोसों वार्ता कही सो तू समझ्यो तब विस्वंभरदासनें कह्यो जो मेंतो इहां तांई सुनी पाछें मो कों तो निद्रा आई हुती तब आनंददासनें कह्यो जो तूतो अब तांई हुंकारी देत हुतो तब विस्वंभर दासनें कह्यो जो मेंतो हुंकारी दीनी नाही तब आनंददासनें कह्यो जो श्री ठाकुरजीनें हुंकारी दीनीहे यगी तब दोऊ आंनंद दास विस्वंभर दास अप

तें इनकी वार्ता को पार नाहीं सो अब इनकी वार्ता
कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥४॥ वै. ३ पा. सं. ८०

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक बावा वेणु और कृष्णदा
स घघरीया देवदास तिनकी
वार्ता है

सो वे बावा वेणु हृदय के नेत्रन सों देषते सो बा
वा वेणु और छोटे भाई कृष्ण दास ये दोऊ
भाई श्री केसोरायजी के आगें कीर्तन करते त
हां या देव दास हू कीर्तन करत में साथ हुते तब
कीर्तन करन लागे सो यह पद गावत हुते जो देषिरी
नैंनन गिरवर धरन सो यह पद गावत कृष्णदा
सनें अपनी देह छोडी तव या देव दास नें बावा
वेणु सों कह्यो जो कृष्ण दास नें यह पद गावत
अपनी देह छोडी तव बावा वेणु नें कह्यो जो
हू हमतो अपनी देह श्री नाथजी द्वार में छो
डेंगे पाछें कृष्ण दास को संस्कार श्री केसोराय
जी के पिछवारें कीयो ता पाछें सूतक उतर्यो त
व सुद्ध होय कें श्रीनाथजी द्वार चले सो कितने

कदिन में श्रीनाथजी द्वार आय पहुंचे तब पर्व
तऊपर जायकें बाबा वेणनें श्रीनाथजी के द
र्शनकीए पाछें बाबा वेणनें कीर्तन कीए त
ब श्रीनाथजीके कंठतें फूलकी माला गिरीसोमा
ला और एक बीडा रामदास भीतरियानें बाबा बे
णकूं दीनों सो बाबा वेणनें मांथें चढाय कें लीनों
तब रामदास भीतरियानें बाबा वेणसों कह्यो जो
तुम्हारी विदा श्रीनाथजीनें कीनी तब बाबा ब
णनें श्रीनाथजी कों दंडोत कीनी पाछें नीचें उत
रे सो आन्योर की ओर उतरे तब बाबा बेणनें या
दव दाससों कह्यो जो हूं यापर्वततें नीचें उतरिकें
अपनी देह छोडूंगो तू सावधान रहियो और तू वे
गो आईयो ऐसें यादव दाससों कहिकें बाबा वेण
पर्वततें नीचें उतरिकें श्रीनाथजीको दंडोत क
रतमात्र अपनी देह छोडी पाछें यादव दासनें बा
बाबेणको संस्कार कीयो पाछें सूतक उतरो तब-
सुद्ध होयकें यादव दास श्रीगुसांईजी के पास आ
ए सो श्रीगुसांईजीको दर्शन कीयो और दंडो
त कीनी तब श्रीगुसांईजी यादव दास कों परम

भगवदीयजानिकें मनमें विचारें जोकोईएकदिन
में यादव दासकीहूस्थितिहै ताकेलीए श्रीगुसांई
जीबिचारेंजो श्रीनाथजीकीसेवामें यादव दास
कोंराषिये तो आछोहै तवश्रीगुसांईजीनेंकह्यो
जो यादवदासतुम अकेलोहो तातें अब श्रीनाथ
जीकी सेवाकरो तब श्री गुसांईजी की आग्यातेंया
दव दास श्रीनाथजी की सेवा नी कीभांतिसों करी
सोसेवासोंपहुंचिकें यादवदास नीचें उतरे औरनी
कीभांतिसों सेवाकरते सोकहूं वंगालामेंजायकेंया
दव दास लकडी परीहोय सोइक ठोरी करी पाछें
जवजान्योंजो लकडी सिद्दिभई तव श्री नाथजी
पास आग्यामांगिकें दंडोत करिकें नीचें उतरे सो
अग्नि लेकें जहां लकडी इकठोरी करीहुती तहां
आप आए सोलकडी नको श्रीनाथजी कीध्वजा
के आगारीसेंतरावनायो सोचोंतराके ऊपरआप
पोढे जादिसाको व्यारिचलतहुती तादिसा कों अ
ग्नि धरिकें ध्वजाकों प्रनाम करिकें श्रीनाथजीको
स्मरन करिकें यादव दासने अपनी देह छोडी पाछें
व्यारि ते अग्निजरिउठी सोजरिकें भस्महोय गई

यादव दासनें अपने हाथ सों अपनों संस्कार की
यो तथा बाबा वेणु को संस्कार कीयो ताको हेत य
हजो यादव दासनें कृष्न दास को संस्कार कीयो ता
तें यादव दासनें अपनों यही विचार कीयो जो सब
सेवकन को मेरो संस्कार करिबे में कष्ट होयगो औ
र सेवा में विरोध होयगो तातें यादव दासनें अप
नों संस्कार अपने हाथन सों कीयो और पहलें
बाबा वेणु नें यादव दास सों कह्यो हुतो जो तू वे
गो आईयो विलंब मति करियो सो तो श्री गुसां
ईंजी नें श्री नाथजी की सेवा सोंपी तातें इतने दि
न विलंब भयो पाछें दिन द्वै भए तब श्री गुसांईंजी
नें पूछो जो यादव दास देषियत नांही सो कहां ग
योहे तब सेवकननें कह्यो जो महाराज यादव दा
स कहूं वनमें लकडी इकठोरी करत हुते तब श्री
गुसांई जीनें कह्यो जो उहां जायकें देषो तो तब
श्री गुसांईंजी के कहत मात्र वैस्नव जायकें देषें
तो उहां कछू नांही राष की ढेरी परी है तब वै
स्नवननें श्री गुसांईंजी सों आयकें कह्यो जो म
हाराज उहां तो कछू देषियत नांही राष की दे

रीपरीहै तब श्री गुसांईजी अपने श्रीमुषसों क
ह्यो जो ऐसो भगवद्भक्त जो काहूकों दुषन देतो
बे यादव दास श्रीमहाप्रभून के ऐसे परम भगवदी
यहै जो स्व इच्छातें अपनी देह छोडी सो सब ग्वा
लन नें देष्यो सो चकृत होय रहे तातें बाबा बेणु
और कृष्णदास घघरी और यादव दास बनियो ऐ
से कृपा पात्र भगवदी यहै तातें इनकी वार्ता को
पार नाहीं सो अब कहां तांई लिषिये ॥ वार्त्ता प्र
संग ॥१॥ बैष्नव ॥ ३५ ॥ संबंध ॥ १०५ ॥ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेव
क जगतानंद सारस्वत ब्राह्मण था
नेस्वर के वासी तिन की वार्ता

सो जगतानंद सरस्वती ऊपर कथा कहते तब ए
क समैं श्री आचार्यजी महाप्रभू थानेस्वर पधा
रे सो जगतानंद सरस्वती ऊपर कथा कहि रहे हुते सो
तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू जाय बिराजे तब ज
गतानंदनें एक श्लोक को व्याख्यान कीयो तब श्री
आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो याको व्याख्यां
न भावतो बहुत हैं तब जगतानंदनें कह्यो जो श्लो

ककौ अर्थ है सो तो कह्यो जो श्री सुकदेवजी
नें कह्यो सो तो कह्यो तब श्री आचार्यजी महाप्र
भूननें कह्यो जो श्री सुकदेवजी लरिका हैं तब ज
गतानंद नें कह्यो जो अधिकी व्याख्यां न होय तो
तुमहीं आय कें कहो तब श्री आचार्यजी महाप्र
भूननें कह्यो जो तू तो व्यास आसन बैठो है हम
तेरे आगे हम क्यों करिकरें तब इतनों सुनत
मात्र जगतानंद चौकी छोडि कें उठि ठाडो भयो
तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें चौकी ऊपर व
स्त्र बिछाय कें ताके ऊपर पोथी धरी और आपनी
चें बैठे और वा श्लोक को भाव फेरि कें वाको अ
र्थ कह्यो सो व्याख्यान करत २ तीन पहर बीते तब
श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो या श्लोक
को व्याख्यान तो मास दोय तीनि लौं बीते गो परि
अब तुम भूषे होउगे तातें अब तुम उठो तब ज
गतानंदनें कह्यो जो महाराज आप तो ईश्वर आ
पके भाव घटिवे के नाहीं तहां तांईं चाहो तहां
तांईं कहो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें पो
थी बांधी तब जगतानंदनें साष्टांग दंडोत की

नी और कह्यो जो महाराज मेरो घर पावन करि
ये तुम तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभूनने कह्यो जो तू तो अन्य मार्गी
यहे हम तेरे घर कैसें पधारेंगे तब जगतानंद सर
स्वतीनें स्नान करि कें आय ठाडो भयो और बीन
ती करि कें कह्यो जो महाराज मोकों कृपा करि कें
नाम दीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कृ
पा करि कें नाम दीयो तब श्री आचार्यजी महाप्र
भू वाके घर पधारे और जगतानंद के घर सेव्य ठा
कुरजी हुते सो वे तुलसी मांरुवे ठिते तहां वे सदाए
क लोटी श्री ठाकुरजी के ऊपर डारते तब श्री ठाकु
रजी कूं श्री आचार्यजी महाप्रभूननें तुलसी मेंसूं
काढि कें पंचामृत सों स्नान करवाय न्यारे बैठाए-
पाछें शृंगार करि राजभोग समर्प्यो पाछें जगतानं
द कों सेवा की विधि सिषाई और कह्यो जो नित्य
याही भांति सों सेवा करियो तब जगतानंद भले भ
गवदीय भए सो श्री ठाकुरजी की सेवा नीकी भांति
सों करन लागे सो वे जगतानंद श्री आचार्यजी म
हाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इन

कीबार्ता कहांतांई लिषिये। प्रसंग॥१॥ वै॥४०॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभून के सेवक आनंददास विस्वंभर दास दोऊ भाई क्षत्री हुते तिन की वार्ता है

सो वे दोऊ भाई अति कृपापात्र भगवदीय है सो वे दोऊ भाई एकत्र बैठि कें भगवद वार्ता करते तथा श्री आचार्यजी महाप्रभून की वार्ता अहर्निस करते कबहू वार्ता कहत छोटे भाई कों निद्रा आय जाती तब श्रीठाकुरजी हुंकारी देते तब बडे भाई आनंद दास सो तो भगवद वार्ता के आवेस में जानते नाहीं जो हुंकारी कोंन देत है जब वार्ता कहि चुकते तब आनंद दास बिस्वंभर दास सों पूछते जो मैंने तोसों वार्ता कही सो तू समझ्यो तब विस्वंभर दास नें कह्यो जो मैं तो इहां तांई सुनी पाछें मो कों तो निद्रा आई हुती तब आनंददास नें कह्यो जो तू तो अब तांई हुंकारी देत हुतो तब विस्वंभर दासनें कह्यो जो में तो हुंकारी दीनी नाही तब आनंददास नें कह्यो जो श्रीठाकुरजी नें हुंकारी दीनी है यगी तब दोऊ आनंद दास विस्वंभर दास अप

ने मनमें बहुत प्रसन्न भए और कह्यो जो हमा
रो वडो भाग्य है श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी
कृपाते श्रीठाकुरजीनें हुंकारी दीनी हमारी कही
सव वार्ता सुनी तातें वे दोऊ भाई आनंददास
विस्वंभरदास श्री आचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे
कृपापात्र भगवदीय हे तातें इन की वार्ता कहां
तांई लिषिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्नव ॥ ४१ ॥ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके
सेवक एक ब्राह्मणी हुती तिन
की वार्ता हे

सो ब्राह्मणी के मांथें श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें श्री बालकृष्नजी की सेवा पधराई हुती सो व
ह ब्राह्मणी श्री बालकृष्नजी की सेवा करती प
रि वह अपने घरमें निपट निकंचन हुती तातें
श्री ठाकुरजी के आगे मांटी के कूंजा भरि राष
ती और रसोई में मांटी के पात्र और घर निप
ट संकीर्ण इतने ही में सब रसोई मंदिर आचा
र हुतो और नेत्रन सों थोरो दीसें वृद्ध भई तातें
ऐसें सेवा करती सो और वैष्नव देषिकें सेवा-

करत में सो आपुसमें सब चर्चा करन लागे जो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें या ब्राह्मणी के मांथें कहा जानि कें सेवा पधराई है यह तो कछू सम झतनाहीं एसें सब बेस्नव आपुसमें चर्चा वार्ता करन लागे सो एक दिन श्री आचार्यजी महाप्रभून को कोस ऊपर गांम हुतो तहां पधारे हुते पाछें तहां ते फिरे तब तहां तें वा ब्राह्मणी के द्वार के आगें होय कें निकसे तब साथ के बेस्नव हुते तिननें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज आपनें वा ब्राह्मणी के मांथें श्री बालकृष्णजी की सेवा पधराई है ताको यह घर है सो याके घर पधारिकें देखिये याको घर याको आचार कैसो है तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप असरणसरण अंतरजामी वा ब्राह्मणी के घर पधारे सो तासमें वह ब्राह्मणी रसोई करत हुती रोटी करिकें घीसों चुपरत जाय और श्रीठाकुरजी आप आरोगत जाय परि वाकों तो दीसतनाहीं हाथ सों टटोरे कहे जो रोटी आगें दीसत नाहीं कहा मूसा बिलाई लेजात हैं एसें कहे और

रोटी करतजाय और ठाकुरजी आरोगतजांय सो श्री आचार्यजीमहाप्रभू आप ठाडे ठाडे देषें पाछें श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें वा डोकरीसों कह्योजो अरीबाई तेरो बडोभाग्यहे जो तेरी करीरोटी श्री ठाकुरजी आप आरोगतहें तव वह बाई श्री आचार्यजीमहाप्रभूनकों दंडोतकरिपाछेंबोली जो महाराज में नाहीं जानी जोराज पधारेहें मोकों तो कछू दीसति नाही परितुम्हारी कानितें श्री ठाकुरजी मान लेतहें तव श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें वैष्णवनसों कह्यो जो श्री ठाकुरजीतो केवलस्नेहकेबसहें तातें मेरी कानिसों श्री ठाकुरजी आरोगतहें और उनकी भक्तिमानलेतहें तवबेस्नव मुसिकायकेंचुप करिरहे पाछें श्री आचार्यजीमहाप्रभू अपनेघरपधारे वा बाईके ऊपरबहुत प्रसन्न भए वह बाई श्री आचार्यजीमहाप्रभूनकी गसी कृपापात्रभगवदीयही तातें इनकी बार्ताको पार नाहीं सो कहां तांई लिषियें॥

प्रसंग ॥१॥ वैस्नव ॥४२॥

अव श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके

सेवक एक क्षत्राणी तिनकी वार्ताहै

सो वह क्षत्राणी आप चरखा कातती सो सूत के पै सा होय तीनि आवते सो ताकी जो सामग्री आव ती सो ले आवती रसोई बालभोग करि श्रीठाकु रजी कों भोग समर्पिती ऐसें निर्वाह करती सो एक दिन ऐसो विचार कर्यो जो सूत काते सो थो रो थोरो अधिक काते सो इक ठोरो करत जाय सो टका दस बारह को भेलो कीयो सो सूत बेचिकें टका दस बारह आए सो तिन को घृत षांड ले आ ई सो घर आयकें मेदा छानी पाछें दूसरे दिन सेवकें लडुवा सिद्धि कीए और मन में कही जो दि न दस बारह कों सामग्री सिद्धि भई है सो दिन दस बारह कों निश्चंत भई हों सो तादिन श्री ठाकुरजी कों आरोगाई और वाकी सामग्री एक हांडी में क रिकें मंदिर में धरि राषी पाछें श्री ठाकुरजी कों राज भोग समर्प्यो भोग सराय आरती करिकें आप म हाप्रसाद लेकें पाछें चरषा कातन बेठी तब श्रीठा कुरजी आप सिंघासन ते उतरि कें सामग्री की

हांडी लेकें सिंघासन ऊपर आय बैठे सो हांडीमें तें लडुवा कादिकें आप आरोगन लागे तव मंदिर में हांडी षडषडान लागी तव व्राक्षत्रांणीनें कह्यो जो कहा मूंसा विलाई होय देषूं तो सही कोंन है तव वह क्षत्रांणी कातत हुती सोत हांतें उठिकें देषन गई मंदिर के किवाड षोलिकें देषे तो श्री ठाकुरजी सिंगासन ऊपर हांडी लेकें बैठे हैं और वामें ते लडुवा कादिकादिकें आरोगत हैं तव वह क्षत्रांणी देषिकें छातीकूट न लागी और कहन लागी जो यह सामग्री तो तुम्हारे ही लीए दिन दस वारह कों करि राषी हुती यह तुमनें कहा कीयो जो आजही आरोगे तव श्री ठाकुरजी नें कह्यो जो कहा तू लेषो करिकें आज ही निवरी तेनें आलसके लीए इकठोरी करि राषी हुती सो कहा नित्य नई न होती तव वह क्षत्रांणी वोली जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो अव तें नई सामग्री नित्यप्रति करिकें समर्पूंगी सो श्रीठाकुरजी याके लीए आरोगे जो यह दिन दस वारह कों निश्चंत होती तो याकों आरति रहती नाहीं औ

र जो नित्य की नित्य सामग्री करे तो याकों आ
रति रहे जो मोकों सामग्री करनी है ताते श्री
ठाकुरजीनें ऐसी करी ताते श्री ठाकुरजी की सा
मग्री दिन चार ते अधिकी न करनी और या
क्षत्राणीनें छाती कूटी जो श्री ठाकुरजी आरो
गे ताके लीए कूटी श्रीठाकुरजी तो प्रसन्न होयकें
आरोगे वानें छाती याके लीए नाही कूटी जो श्री
आचार्यजी महाप्रभून के मार्ग की तो यह मर्या
दा है जो श्रीठाकुरजी के आगें भोग धरिये सो आ
रोगें उठाय धरिये सो सामग्री होय सो न आरोगे
तो श्रीठाकुरजीनें आचार्यजी महाप्रभून के
मार्ग की मर्यादा छोडी तो कदाचित मोहूकों छो
डें याके लीए वा क्षत्राणीनें छाती कूटी तब श्रीठा
कुरजीनें कह्यो जो तू तो आजही लेषो करि निव
री नित्य नई कहा न होती तब याकों निश्चय भ
यो जो मार्ग की मर्यादा तो श्रीठाकुरजी नें नाहीं
छोडी हों दस चार हू दिन कों निश्चंत होय बैठती
ताके लीए श्रीठाकुरजी आरोगे ताते वह क्षत्रा
णी ऐसी परम भगवदीय ही तिन कों श्रीठाकुर

जीसेवाते एकक्षणहूं स्वास्थ होंन देते नाहीं सेवामेंसदा आरति रहै सोकियो वाक्षत्रांणीसों श्रीठाकुरजीऐसे सानुभाव हुते जो चहिये सोमांगिलेते ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही तातें इनकी वार्त्ताको पार नाहींसो कहांतांई लिषिये ॥ वार्त्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ४३ ॥ संबंध ॥ ११३ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून केसेवक
सासबहू दोऊक्षत्रांणी सासको
नांम गोरजा बहूकोनामसम
राई सीहनंदकीवासीतिन
कीवार्त्तालिख्यते

सोइनके मांथें श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें श्रीदामोदरजीकीसेवा पधराई हुती सो इन सासबहूनतें श्रीठाकुरजी बहुत सानुभाव हुते सो एक समें श्रीआचार्यजीमहाप्रभू आप थानेस्वर पधारे तब थानेस्वरहीमें रहे परिसीहनंदन पधारते जो काहेते जो थानेस्वर औरसीहनंद के वीचसरस्वती नदीहैसो श्रीआचार्यजी महाप्रभू सरस्वतीउलंघन न करते काहेते जो आप आचार्य हैं तातें आप थानेस्वरही

मेंरहतेसो श्री आचार्यजीमहाप्रभू आपयानेस्वर-
पधारे तव सासनें वहूसें कह्यो जोमें श्री आचार्यजी
महाप्रभून के दर्शन कोंजातहों तू श्रीठाकुरजीकी
सेवानीकीभांतिसेंकरियो सिंगार करि रसोईकरि
कें भोगसमर्पियो इतनें वहूसोंसासकहिकें श्री
आचार्यजीमहाप्रभूनकेदर्शनकों गई तववहू
न्हायकें सेवाकरनलागी जब पाकसिद्धिभयो त
व श्रीठाकुरजीकोंभोगसमर्प्यो तवसमयभयो-
तब भोगसरावन गई तवदेषे तो सामग्रीसव य
थास्थितिज्योंकी त्योंहे तववहूनें वीनतीकीनी
जो महाराज में कछू जानत नाहीं औरसासनें तो मो
सों कह्यो नाहीं और तुम आरोगत नाहीं सो काहे
ते अव हों कहा करूं ऐसें वहुत विलविलायकें
षेदकरन लागी जो मोसों कछू चूकपरी होइगी
रसोई आछीनभई होइगी तथा पात्र मांजिवे
में सुद्धनभए होंयगे कछू तो भयो होयगो जो
श्री ठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें भोग स
राय पात्र मांजे आछी भांति सों धोय पोंछि
कें फेरि रसोई करि दूसरी वार जवपाकसिद्धि

भयो तब श्रीठाकुरजी को भोग समर्प्यो और मनमें कहत जाय जो मोतें कछू चूक परीहोयगी हौं तो कछू जानत नाहीं कहा भयो तातें श्री ठाकुरजी आरोगे न होयगे अब आछी भांसों पात्र मांजिकें रसोई करीहे सो अब श्रीठाकुरजी आरोगेंगे सोजब समय भयो तबदूसरी वेर भोगसरावन गई तब देषे तो श्रीठाकुरजी के आगें सामग्री यथास्थितिहे तब फेरि बिलबिलावे रोवे और वीनती करे और कहे जो महाराजहों कछू जानत नाहीं सो तुम क्यों नाहीं आरोगत और अपने मनमें विचार करती जाय जोमोकों रसोई करनों आवत नाहीं कै मेरी देहको कछू दोषहे एसें विचार करत जाय और भोगसरावत जाय और छातीभरि आवे और कहे मेरोकोन अपराध होयगो जो श्रीठाकुरजी आरोगत नाहीं पाछें फेरि जब पात्र आछी भांतिसों मांजिकें तीसरी बार भोग समर्प्यो समय भयो तब भोग सरावन गई तब फेरि सामग्री यथास्थिति हेतब तो महा षेद भयो जो अबहूं कहाकरूं श्रीठाकुर

जीभूषे रहेंगे सासनें तो कछु मोसें कह्यो नाहीं
ऐसें कहै तब मूर्छा षायकें श्री ठाकुरजी के आगें
भूमि में गिरिपरी और बहुत दुष करन लागी अ
मित बहुत भई तातें वाकों तनक निद्रा हू आई
सवारे सों जल हू नाहीं लीनों सो कंठ जुटे सूषे अ
ति व्याकुल है कें परी तब श्री ठाकुरजी ते वाको दु
ष सह्यो न गयो तब सिंघासनतें नीचे उतरि कें श्री ठा
कुरजी नें वासों कह्यो जो तू काहे कों षेद करत है हों
तीन्यों वेर आरोगो हूं तू कछू संदेह मति करे तब या
नें कह्यो जो में कैसें जानूं तब श्री ठाकुरजी नें कह्यो
जो तू भूषी है कछू षायले तब कह्यो जो हूं तो न षा
ऊंगी जब आप कों आरोगत देषूंगी तब लेंउगी
तब श्री दामोदर जी नें कह्यो परि यह तो मानें ना
हीं तब आप जल की झारी लेकें आए और कहें
अरी तेरो गरो सूक्यो जात है तू तनक जलपान तो
ले तब श्री ठाकुरजी अपने श्री हस्त सों वाके मु-
ष में जल चुवायो तब कह्यो जो सवारे तू देषेगी
त्यों में आरोगूंगो तब उठिकें सषडी महाप्रसाद
सब गायन कों षवाय रसोई पोत कें रसोई की सा

मग्री सब सिद्धि करि राषी रात्रि कों उत्साह सोंसोय रही पाछें प्रातःकाल उठिकें नित्यकर्मकरि स्नान करिकें तथा रसोई करितव पाकसिद्धि भयोतव श्री ठाकुरजी कों भोग समर्प्यो जब ठेरासरकावन लागी तब श्रीदमोदरजी बोले जो तू अब टेरा काहे कों सरकावत है अब तू देषि में आरोगत हों और सब सामग्री यथास्थिति रहेगी तवसम राई तहांठाडी भई और श्रीठाकुरजी भोजनक रत देषे तब श्रीठाकुरजी आप भोजनकीएपा छें सब सामग्री थारमें ज्यों की त्यों यथास्थितिर ही तव श्री ठाकुरजीनें कही जो याही भांतिसों तू नित्य जानिलीजियो तब समराईनें कही जो महाराज हों तो देषूं तवही मानूं ता पाछें नित्य भोगधरे तब श्रीठाकुरजी कों भोजन करत देषे तव श्री ठाकुरजीहू समराई के देषत भोजन करें जो चाहे सो मांगिलेंय पाछें हांसादिक करेंपा छें ताकों सव रस को अनुभव करवायो सो सम राई सकल रस को अनुभव करन लागी तबय ह बात श्री दामोदरजीनें श्री आचार्यजी महा

प्रभूनसों कह्यो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू
ननें समराई की सास गोरजा सों कही जो श्रीठा
कुरजी कछू सानुभाव जनावत हैं तब गोरजा तो
कछू बोली नांही पाछें गोरजा श्री महाप्रभूनसों
बिदा होयकें सीहनंद आपने घर आई तब दूस
रे दिन सास नें सेवा करि रसोई करिकें श्रीठाकुर
जी कों भोग समर्प्यो जब भोग सर्‍यो तब बहू बों
कि उठी जो श्री ठाकुरजी आरोगे नांही तब सा
सनें कह्यो जो सुनि बहू श्री ठाकुरजी तो लरिका
हैं ताते तोही सों हिले होंयगे ताते रसोई तू बे
गि करि तब बहूनें रसोई करि भोग समर्प्यो तब
श्री ठाकुरजी नें कह्यो जो मैं तो अबही आरोगो
हों तब बहूनें कह्यो जो मैं तो देषूं तब मानूं तब
भोग समर्पिकें कह्यो जो महाराज आरोगो तब स
मराई के देषत श्रीठाकुरजी आरोगे सो जब सास
रसोई करै तब बहू कों बुलावै जो थार ले जाउ सो ब
हू थार ले जायकें आरोगावै ऐसें नित्य प्रति करै
सो ये बात श्री ठाकुरजी नें श्री महाप्रभूनसों कही
पाछें बहू श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों

यानेस्वरगई तब आपकें श्री आचार्यजी महाप्रभून कोदर्शन कीयो तासमें श्री आचार्यजी महाप्रभू पाक करत हुते तब समरा ई रोटी बेलन कोंबेठी तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें बहूसों कह्यो जो तेरी सब बात हमसों श्री ठाकुरजी नें कहीहे जो हम कों समराई भली भांतिसों सुष देतहे तब समराई मुसिकायरही औरकह्यो जो इतनी हू वात श्री ठाकुरजी के पेट में नांहीं ठहरी तो कहाकरिये पाछें कह्यो जो महाराज लरिका कों कहा पूछतहो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनिकें वहुत प्रसन्नभए और आप श्री मुषसों कहें जो देषो इनसों श्री ठाकुरजीको ऐसो संबंध हे और कहें जो या वहू के ऊपर बहुत कृपाहे और बहू सालन करती सो नीकी भांति सो करती सो श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो नित्य सालन क्यों नाहीं करत तब बहू बोली जो लरिका के मनमें आवे सो करिये तब यह सुनि कें श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्नभए याकी सास गोरजा बहुत सामग्री उत्यम करती सातें श्रीठा

कुरजी कों बहुत प्रीय लागती तातें इनसास
बहून के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते तातें इनसा
स बहून कों दर्शन देवे कों श्रीमहाप्रभूजी त
था देषिवेके निमित प्रिति वर्ष आय थानेस्वर
पधारते तव श्री आचार्यजी महाप्रभू कहते जो क
हा करिये जो सरस्वती उलंघनी नाहीं नातर इ
नकों सीहनंद्र में दर्शन देतो सो ये सास बहूएसी
कृपा पात्र भगवदीय हीं तातें इनकी वार्ता क
हां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥२॥ वै ॥४४॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून
के सेवक कृस्नादासी रुक्मिनी
बहूजी की षवास हुती

सो कृस्नादासी अडेलमें श्री रुक्मिनी बहूजीकी
षवासी करती सो एकसमें रुक्मिनी बहूजीकें
गर्भ रह्यो हो तव कृस्नादासी नें कह्यो जो अबकें
बेटा होयगो तिनको नाम श्री गोकुलनाथजी
धरूंगी सो गर्भ के दिन संपूरन भए तव रुक्मि
नी बहूजी के पेटमें विथा भई तब कृस्नादासीनें
जायकें जोतसीसों पूछ्यो जो अब महूर्त कैसोहै

तव राजो तसीनें दिन नीको न कह्यो तव कृष्णा
दासी फिरि आयकें श्री रुक्मिनी वहूजी के पेट
पे हाथ फेर्‌यो और कह्यो जो महाराज अब तो
मति पधारो आजको दिन नीको नाहीं तव पेट
की व्याधि सब दूरि भई पाछें दिन दोय तीन बीते
तब कृष्णा दासी नें विचार्‌यो जो अब फेरि पूछि
ये जो आज दिन कैसो है तव कृष्णा दासीनें फेरि
जायकें पूछो जो आज दिन कैसो है तव राजो त
सीनें कह्यो जो आज दिन बहुत नीको है तव कृ
ष्णा दासी नें आयकें श्री रुक्मिनी बहूजी सों वी
नती करिकें कह्यो जो महाराज अब पोढिये अ
व बालक प्रगट होय तो भलो है तव बहूजी महा
राज पोंढीं तव कृष्णदासी नें बहूजी महाराज के
पेटपें हाथ फेर्‌यो और कह्यो जो महाराज अब
पधारिये तव श्री गुसांईंजी श्री नाथजी द्वार पधा
रे हुते तव पेटमें व्यथा भई और बालक को ज
न्म भयो तव तासमें कृष्णा दासीनें श्री गोकुल
नाथजी नांम धर्‌यो ता पाछें श्री गुसांईंजी कों
वधैया पठायो तव श्री गुसांईंजी अडेलकों

पधारे तव नांमकरण कीयो तव श्रीवल्लभनां
म धस्यो परि कृस्ना दासीकी कांनिते श्रीगोकुल
नाथजी नांम राष्यो ऐसी कृस्ना के रूप रकृपा जो
जाके कहे ते दोऊ नांम प्रसिद्धि भए ॥ वार्ता प्रसंग
॥ १ ॥ पाछें श्रीघनस्यामजीको जन्म भयो तव नांम
करण विचारन लागे तव श्री वल्लभजीनें कह्यो
जो श्री गोकुलनाथजी नांम धरो तव श्रीगुसांई
जीनें कह्यो जोय ह नांम तो तिहारो तव दोऊ
नांम प्रमाण कीए सो श्रीवल्लभकुलके विषें
सव कोऊ श्री वल्लभ नांम कहत हें और सव
जगत में श्री गोकुलनाथजी नांम प्रसिद्धि भयो
और जन्म पत्र में श्री कृस्न हें सो गोप्य राष्यो-
श्री गुसांईजीनें कह्यो जो यह नांम गोप्य रहे
ताते कृस्ना दासी श्री आचार्यजी महाप्रभून-
की ऐसी कृपा पात्र हुती सो इन की वार्ता कहां
तांई लिषिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वेस्नव ॥ ४५ ॥

अव श्री आचार्यजी महाप्रभूनके
सेवक वूलामिश्र पंडित ति
न की वार्ता हे

सो बूला मिश्र एक कपूर क्षत्री के प्रोहित हुते ता
की स्त्री कें संतति न हुती तब वानें दूसरो बि
वाह कीयो वाहू स्त्री कें संतति न भई तब बहु
नें वा क्षत्रीसों कह्यो जो तुम हरिवंसपुराणसुनों
तव तुम्हारें संतति होयगी तब वा क्षत्रीनें जाय
कें बूला मिश्रसों प्रार्थना करी जो तुम मोकों हरि
वंसपुराण सुनावो तब बूलामिश्रनें कह्यो जो अ
वतो मोकों अवकास नाहीं जब अवकास-
होयगो तब तुम्हारे घर जाय कें सुनाऊंगो त
ब वह क्षत्री अपने घर आयो जब एक मही-
ना बीत्यो तब एक दिन अचानक बूलामिश्र
वा क्षत्रीके घर पधारे तब बूला मिश्र को वा क्ष
त्रीनें बहुत आदर सन्मान कस्यो तब बूला
मिश्रनें कह्यो जो तुम दोऊ स्त्री पुरुष स्नान-
करिकें आय बैठो तब दोऊ स्त्री पुरुष स्नान
करिकें आय बैठे तब बूलामिश्रनें देह सुद्ध होय
बेके लीएं एक दान करवायो पाछें हरिवंसपुरा-
ण को एक श्लोक अंत को सुनायो सो श्लोक ॥
इदं मया ते हरि कीर्तनं महद श्रीकृष्णमहात्म्या

यपार मुहुतं अव एयवस्त्रीषु समासु तत्फलेपच्या
पि लोकेषु सदुर्लभं महत १ यहहरिवंस पुरां
ण के अंतकों श्लोक सो बूला मिश्रनें वा क्षत्री
कों सुनायो और आसीर्वाद दीयो और मंत्राक्ष
त पढिकें वा क्षत्रीकी बडी स्त्रीकी गोदमें दीए
तव वा क्षत्रीनें कह्यो जो मिश्रजी तुमनें यह का
हा कीयो यह तो स्त्री धर्महूं नांही होतहै तव बू
लामिश्रनें कह्यो जो ठाकुरजी सर्व सांमर्थवा
नहैं जो देनहार होयगे तो याही कों पुत्र देइगे अ
वतो मैंनें याकों अक्षत दीए सो तो दीए तव इत
नों कहिकें बूला मिश्र अपने घरकों चलनलागे
तव उन स्त्रीनें वहुत वीनती कीनी जो मोकों सं
पूरण हरिवंस पुरांण सुनावो तव बूला मिश्रनें क
ह्यो जो तोकों श्री ठाकुरजी संपूरणको फल एकही
श्लोकमें देइगें ऐसें कहिकें बूला मिश्र तो अप
नेघरकों आए पाछें वा बडी स्त्रीको रितु आई
पाछें गर्भवंत भई तब कितनेक दिनमें वाकें पुत्र
भयो व बूला मिश्र श्रीमहाप्रभून के ऐसे भगवदी
यहै तिनके अनुग्रहते वाकें पुत्र भयो हरि वंस-

पुरांण की एक श्लोक सुने ते संपूर्ण सुने को फल भयो ताते बूला मिश्र ऐसे परम कृपा पात्र भगव दीय हे ताते इन की वार्ता कहां तांई लिषिये॥ वार्ता प्रसंग॥ १॥ वैष्णव॥ ४६॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक मीरां बाई के प्रोहित राम दास तिन की वार्ता

सो एक दिन मीरां बाई के श्री ठाकुरजी के आगें रा म दासजी कीर्तन करत हुते सो रामदासजी श्री आ चार्यजी महाप्रभून के पद गावत हुते तब मीरां बाई बोली जो दूसरो पद श्री ठाकुरजी को गावो तब रामदासजी नें कह्यो मीरां बाई सों जो अरे दारी रांड यह कौंन को पद है यह कहा तेरे षस म को मूंड है जो जा आजते तेरो मुहुंडो कबहू न देषूंगो तब तहां ते सब कुटंब कों लेकें राम दा सजी उठि चले तब मीरां बाई ने बहुतेरो कह्यो परि रामदासजी रहे नाहीं पाछें फिरिकें वाको मु ष न देष्यो ऐसे अपने प्रभून सों अनुरक्त हुते सो वा दिन ते मीरां बाई को मुष न देष्यो वाकी वृ

त्ति छोड़िदीनी फेरि व्वाके गाम के आगें होयकें निकसे नाहीं मीरां बाईनें वहुत वुलाए परिवे रा मदासजी आए नाहीं तव घर बैठें भेट पठाई सो ऊफेरिदीनी औरकह्यो जो रांड तेरो श्री आचार्यजी महाप्रभून ऊपर ममत्व नाहीं जो हम कों तेरीवृत्तिः कहा करनी है हमारे तो श्री आचार्यजी महाप्रभू सरवस्वहैं हमतो उनके हैं उनविना हमारें सर्वस्व त्याग करनों उनके चरणारविंद को आश्रय राषनों एसीवृत्ति वहुतेरी होंइगी वे रामदास श्री आचार्य जीमहाप्रभूनके एसे परमकृपा पात्र भगवदीयहेता ते इनकीवार्ताकहांताईलिषिये॥ प्र०१॥ वै०४७

अव श्री आचार्यजी महाप्रभूनके से
वक रामदास चोहांन तिनकी
वार्तालिष्यते

सो रामदासचोहांन श्री गोवर्द्धन की कंदरा में रह ते सो प्रथमजव श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीना थजीद्वार पधारे तव श्री गोवर्द्धन नाथजीकोंप टवेठाए तव रामदासकंदरामेंसूं वाहिर आए तव श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें रामदासजी

सो कह्यो जो रामदासजी श्री गोवर्द्धननाथजी की
सेवा सावधानी सों करियो तब रामदासजी नें ए
क मंदिर छोटो सो ईंटन को बनवायो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें वा मंदिर में श्री नाथजी कों
पधराए सो पहलें श्री गोवर्द्धन नाथ जी श्री गोव
र्द्धन पर्वत ऊपर विराजते सो ब्रज बासी लोगन नें
एक फूंस की छांनि करि राषी हुती ता छांनि में वे
ठेते और कबहू कबहू दूध दही ब्रजवासी स
मर्पिते देव दमन यह नांम कहते सो दूध दही मां
षन सब आरोगते तथा श्री गोपाललालजी य
ह नांम कहते सो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें
श्री गोवर्द्धन नाथजी कों मंदिर में पधराय पाछें
श्री नाथ जी नांम प्रगट भयो तब ते सब कोऊ
श्री नाथजी कहन लागे वे रामदासजी श्री आ
चार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भग
वदीय हे ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं सो स
ब कहां तांई लिषिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ४८

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक रांमानंद पंडित सारस्वत

ब्राह्मणतिनकी वार्तालिष्यितेहैं

सो एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभू थानेस्वर पधारे तहां रांमांनंद पंडित केघर उतरे सो रात्रि कों उहां पोढे हुते सोजब पिछली रात्रि भई तब रांमांनंद पंडित नें अपनी स्त्री सोंकह्योजो बेगि उठि गोवर श्रोरिले चोकाकों चहियेगो नातर सवारें ये वैक्षव उठेंगे सो लेजांयगे तबयह बात श्री आचार्यजी महाप्रभून नेंसुनी तासमें श्री आचार्यजी महाप्रभू हाथ पाव धोयवेको उठेहुते तब अतिक्रोधवंत भए तव श्री आचार्य जी महाप्रभूननें रांमांनंद पंडितकों बुलायो तव आप गडुवा में तेजल लेकें वाके हाथ में मेलि के मंत्र पढिकें वहजल सों वाकों छिरक्यो और अपने श्रीमुषसों श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो में तेरोत्याग कीयो तें नें मेरे सेवकनसों योंकह्यो जोतूवेगि उठि गोवरऔरि लेनातर वैस्नव उठेंगेतो लेजाइगेतो तूसवारेरसोई कोसामांनकहांतेकरेगोऐसेकहिकेतह्यांते उठिचलेक्षणएकरहे नाहीं सो थानेस्वरते एक गांमताऊपर मही

तीर्थ है तहां आयकें आप स्नान कीयो सोज
ब श्री आचार्यजी महाप्रभू रामानंद पंडितके
घरते चलन लागे तब थानेस्वर के बैस्नवन नें
बहुत वीनती कीनी परि श्री आचार्यजी महाप्र
भू रहे नाहीं औरकह्यो जो मेंइहां रहिकें जलपान
न करूंगो तापाछें काहूनें रामानंद पंडित पास
नांम पायो हो तिनसों श्री गुसांईजी गंगोज्व क
हते तव श्री आचार्यजी महाप्रभू थानेस्वर प
धारे पाछें रामानंद की अवस्था विकल भई त
ब वजार में जो बस्तु देषतो सो षातो कछू मर्यो
दा न रही परि इतनी मर्यादा तो करे जो षाय
सो समर्पिकें षाय यों कहें जो श्री गोवर्द्धन ना
थजी तुम आरोगियो इतनो कहिकें मुख में मे
लै सो एक दिन हलवाई की दुकानपें जलेवी ब
हुत आछी देषी सो जलेवी वामें तें लेकें कह्यो जो
श्री नाथजी तुम आरोगियो ऐसें कहिकें षाई
सो तासमें श्रीनाथजी नें श्री आचार्यजी महा
प्रभूसों कह्यो जो आज तो हमनें जलेवी बहुत
आछी आरोगी हें तव श्री आचार्यजी महा

प्रभूननें कह्यो जो कोंनें समर्पी हैं तव श्रीनाथजी नें कह्यो जो तुम्हारे सेवक रामानंद नें समर्पी हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो महाराज में तो वाको त्याग कीयो तुम वाके इहां क्यों आरोगे हो तव श्रीनाथजीनें कह्यो जो तुम मोकों काहेकों सोंपत हो हम तुम्हारी कांनिते अंगीकार करत हैं तुम हम कों जाकों सोंपत हो ताको तुम त्याग करत हो परि हम तुम्हारे सोंपेकों नाहीं छोडत हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभू चुप करि रहे तव यह वात श्री आचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास हरसानी सों कही तव दामोदरदास हरसानी नें वीनती कीनी जो महाराज आप याकों अंगीकार कव करोगे तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास सों कह्यो जो यासों अव वैस्नव को अपराध पडेगो तो हम याकों लक्षजन्म पाछें अंगीकार करेंगे श्रीनाथजी नें अंगीकार कीयो तो है परि इतनों अंतराय भयो तातें वैस्नव सों वोलनों सो विचारि कें वोलनों विना विचारें सर्वथा

बोलनों नाहीं ऐसें बैष्नव कों रहनों ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ बैष्नव ॥ ४६ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक विष्नुदास छीपा तिनकी वार्ता लिष्यिते

सो विष्नुदास वृद्ध भए तब श्री गोकुल में श्री गुसांईं जी की बैठक के द्वारे की द्वार पाल की करते और कोई पंडित आवतो तासों विष्नुदास पूछते जो तुम क्यों आए हो और कहां जात हो तब उन पंडितनने कह्यो जो हम श्री गुसांईं जी के पास वाद करन आए हें तब विष्नुदासनें उन पंडितन सों कह्यो जो तुम मोसों वाद करि लेउ तब विष्नुदास उन पंडितन सों वाद करिकें निरुत्तर करि देते ब्याकरन सास्त्र पुरांण इतिहास सब सास्त्रन के बचन लेकें निरुत्तर करि देते तब वे पंडित अपने मनमें समाधांन करिकें पाछें फिरि जाते और वे पंडित अपने मन में कहते जो जिनके द्वार पाल ऐसे हें तो तिनके धनी की कहा बात होयगी सो श्री गुसांईं जी लों काहू पं

डितकों नजान देते ह्वार ह्रीते ऱे पंडित निरुत्तर ह्वे यकें फिरि जाते तव एक दिन श्री गुसांईं जी नें कह्यो जो कोई पंडित अब वाद करन कों नाहीं आवत सो का हेत तब वैष्णव न नें कह्यो जो महाराज उन पंडितन कों बिष्णु दास निरुत्तर करि देत हें तातें पंडित अपने मनमें समाधान करिकें फिरि जात हें तब श्रीगुसांईजी श्रीमुष सों कह्यो जो बिष्णुदास तुमकों तो श्री महाप्रभून की कृपा ते एसी सामर्थ्य है जो तुम पंडितन कों जीतकें निरुत्तर कर देत हो परि उन ब्राह्मणन कों अतिक्रम होत हे तातें अब जो कोई पंडित वाद करन कों आवे ताकों हमारे पास आवन दीजो तब उन पंडितन कों जान देते ऱे बिष्णुदास श्री आचार्य जी महाप्रभून के एसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे उनकों एसी सामर्थ्य हुती जो पंडितन कों निरुत्तर करि दूषन करते ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ और एक भट्ट हुतो सो श्रीगुसांईजी सों कहतो जो तुम्हारे सेवकन कों में जिमाऊं तव श्री गुसांईं जी चुप करि रहते सो वह श्रीगुसांईजी कों सु

सर हुतो श्रीघनस्यामजी को नाना हुतो सोएक दिन वा भट्टनें श्रीगुसांईजी कों नोंत्यो तब श्री गुसांईजी उनके घर भोजन कों पधारे तब तहां विष्णुदास जल पांन को गडुवा लेकें साथ गए तब श्री गुसांईजी भोजन करिकें उठे तब श्री गुसांईजी कों बिष्णुदासनें सुद्ध आचमन करवायो पाछें श्री गुसांईजी मंदिर में पधारे तब बिष्णुदास कों श्री गुसांईजीनें आग्या दीनी जो तुम प्रसाद लेकें वेगे आइयो सो जा थार में श्री गुसांईजी भोजन कीए हुते ता थार में ते प्रसाद अपनी पातरि में धरिकें थार धोय धस्यो पाछें आप प्रसाद लैवे कों बैठे तब भट्टजी और सामग्री लेकें आए तब बिष्णुदासनें कह्यो जो मो कों नाहीं चहियत तब भट्टनें कह्यो जो तूं ठिनका है कों लेत है नीकी सामग्री लेउ तब बिष्णुदासनें कह्यो जो मो कों नाहीं चहियत मेरी पातरि में डारोगे तो मेरी पातरि छूइ जायगी तब भट्टजी कों क्रोध भयो पाछें उन भट्टजीनें श्री गुसांईजी सों कह्यो जो तुम्हारे सूद्रनें मो सों ऐसें

कह्यो जो मेरी पातरि में मति डारो और डारो गे तो मेरी पातरि छूट जायगी तब श्री गुसांईं जी चुप करि रहे पाछें श्री गुसांईंजी मुसिकाय कें भट्टजी सों कह्यो जो तुम हमारे सेवकनकों जिमावन कहत हुते सो तुमसों एक हमारो सूद्र न जिमायो गयो और सेवकन कों कैसे जिमावोगे तब भट्टजी मुसिकाय कें चुप करि रहे सो वे विष्णु दास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे ताते इन की वार्ता को पार नाहीं सो अब कहां तांईं लिषिये ॥वार्ता प्रसंग॥२॥ वैष्णव॥२०॥ संबंध

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जीवनदास क्षत्री कपूर सीहनंद के बासी तिनकी वार्ता

सो एक समें सीहनंद के सब वैष्णव मिलि के श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों अडेल आवत हुते सो एक दिन मार्ग में मजल जाय उतरे तहां सब वैष्णव अपने अपने चौका देत हुते तासमय मेह चढि आयो तब वैष्णवननें कह्यो

जो वर्षा आई ऐसो कार्यभयो तब जीवन दा
स बोले जो तुम चिंता मति करो तब जीवन
दासने श्री आचार्यजी महाप्रभून को नाम ले
कें मेह कों आनिदीनी जो तो कों श्री आचार्य
जी महाप्रभून की आनि हे जो तू वर्षे मति त
व वह मेह रहि गयो पाछें सब वैष्णवनने भो
ग समर्पि महाप्रसाद लीयो तहां रात्रिकों
सोए ता पाछें सब वैष्नव अडेल आए तब
श्री आचार्यजी महाप्रभून को दर्शन कीयो पा
छें यह बात सबन नें श्री गुसांईजी सों कही
जो महाराज एक दिन हम सब वैष्नव पाक क
रतहुते तासमें मेह चढि आयो तब जीवन दा
सनें आप की आनि देकें ऐसें कहि कें मेह कों
वरज्यो तब यह सुनि कें जीवन दास सों श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें पूछो और कह्यो जो क्यों र
तेनें हमारी आनि दीनी और कदाचित वर्षा
होती तो तू कहा करतो तब जीबन दासनें क
ह्यो जो महाराज वह कोंन हे जो आप की आं
नि दीए उपरांत वर्षे यह इंद्र की कहा सामर्थ्य हे

तब यह बात जीवन दासकी सुनिकें श्री आचा
र्यजी महाप्रभू मुसिकायकें चुपकरिरहे उन
जीवन दास पै श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी
ऐसीकृपाहुती उनजीवन दास कों श्री आचा
र्यजी महाप्रभूनके स्वरूपको ऐसो ग्यान हु
तो सो आंनि देकें मेह बरज्यो तिनकी कहांक
हिये तब वैष्नवननें कह्यो ये बडे भगवदीय
हें ते जीवन दास श्री आचार्यजी महाप्रभून
के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकीवा
र्ता अबकहांतांई लिषिये॥वार्ताप्रसंग॥१॥ वै ०५१॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके
सेवक भगवांन दाससारस्वत
तिनकीवार्ता

सो उन भगवान दास नें श्री आचार्यजी महाप्र
भून की सेवा नीकी भांति सों कीनी तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभू भगवान दास के ऊपरबहु
त प्रसन्नभए तब भगवान दास कों श्री आचा
र्यजी महाप्रभूननें आपकृपाकरिकें अपनी श्री पा
दुकाजी की सेवा दीनी जो तू इनकी सेवा नी

कीभांति सों करियो तब भगवान दास श्रीपा
दुकाजीकी सेवानी कीभांति सों करते सो ऐसी
भांति सों सेवा करते जो श्रीठाकुरजी इनसोंसा
नुभाव ह्वते वातें करते सो एक समें श्रीआचार्य
जी महाप्रभू भगवान दास के घर पधारे सो जा
ठोर श्री आचार्यजी महाप्रभू बिराजत हे ताठो
र नित्य उठिकें सवारें भगवानदास दंडोत करते सो
याते वा ठोर पर कोऊ पाव न धरतो ऐसो उन कों भा
व ह्हो सो वे भगवान दास श्रीआचार्यजीमहाप्रभून
के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इन की वार्ता क
हां तांई लिषिये ॥ वार्ता ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक भगवान दास श्रीनाथ
जीके भीतरिया तिन
की वार्ता हे

सो एक समें श्री नाथजी के वालभोग की सामग्री
करत भगवान दास सों कछू सामग्री ढरी तव
श्री गुसांईजी भगवान दास के ऊपर बहुत षीजे
और भगवान दास कों सेवा ते भिन्य वेठारे सो

भगवान दास गोविंद कुंड ऊपर आये अच्युत
दास के पास आये बेठे पाछें श्रीगुसांईजी आ
प स्नान करिवेकों गोबिंद कुंड ऊपर पधारे औ
र भगवान दास तो पूंछरीकी ओर अच्युत-
दास के पास हुते सो भगवान दासनें सब समाचा
र कहे पाछें जब श्री गुसांईजी गोबिंद कुंड स्नान
करिकें अच्युत दासकों दर्शन देंन पधारे तब
श्री गुसांईजी के दर्शन करिकें अच्युत दासकी
आंषिनमें सूं आंसून को प्रवाह चल्यो सो देषि
कें अच्युत दासकों श्री गुसांईजीनें अच्युतदा
ससों पूछो जो अच्युतदास तुम कों ऐसो दुःख क
हांहे तव अच्युतदासनें श्री गुसांईजीसों कह्यो-
जो महाराज श्री आचार्यजी महाप्रभूनकों तो श्री
नाथजीनें आग्यादीनीहें जो तुम जीवनकों ब्र
ह्मसंबंध करावो सो सात लाष जीवन कों तुमद्वारा
अंगीकार करनों हें और श्री आचार्यजी महा
प्रभूननें तो तुमकों सोंपे हें और तुम जीवनकों
अपराधदेषनलागे और जीवतो सदा अपराध
हीते भरयोहे और जीवन कों अंगीकारकरनों

तुम्हारे हाथ है तातें अब जीवन को अंगीका
र कैसें होयगो तब श्री गुसांईजी यह वात
सुनिकें आप भगवान दास को हाथ पकरिकें
श्री गोवर्द्धन पर्वत ऊपर ले चढे और श्री गो
बर्द्धन नाथजी की सेवा जारी तिसों करते ता
रीति सों सेवा करन की आग्या दीनी और कही
जो अब तें सावधानी सों सेवा करियो और सा
मग्री आछी भांति सों करियो तब भगवान दा
सनें तासमय श्री गुसांईजी के आगें नयो पद
करिकें गायो सो पद ॥ राग सारंग ॥ श्री विठ्ठले
स चरण कमल ॥ सो यह पद गायो सो सुनिकें श्री
गुसांईजी बहुत प्रसन्न भए पाछें भगवान दा
स सावधानी सों सेवा करन लागे तातें भगवा
न दास श्री आचार्यजी महा प्रभून के ऐसे कृ
पा पात्र भगवदीय है सो इन की वार्ता कहां
तांई लिषिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ५३ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक
अच्युत दास सनोडिया ब्राह्मण
तिनकी वार्ता है

सोवे अच्युतदास मांनसी गंगा ऊपर रहतेत
हांचक्रतीर्थहै तहां रहते सोनित्य अंगारके
समें श्रीनाथजी के दर्शनकों आवते सोदर्श
न करिकें अपने स्थलकों आवते सोउनअ
च्युतदासनें श्रीनाथजी की तीनि परिक्रमां
इंडोती करीहुती तब श्रीगुसांईजी अच्युत-
दासके ऊपर बहुत प्रसन्न भए और श्रीगुसां
ईजी अपने श्रीमुषसों कहते जो अच्युतदास
बडे भगवदीयहैं और बडे महापुरुषहैं सोवे
अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभूनके तथा
श्रीगुसांईजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय
हैं तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता-
प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्नव ॥ ५४ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके से
वक अच्युतदास गोडब्राह्मण
तिनकी वार्ता लिष्यते

सोवे अच्युतदास बडे भगवदीयहै और श्री
आचार्यजी महाप्रभूननें इनके माथें श्रीम
दनमोहनजी की सेवा पधराई हुती और आप

कों पाट वैठारे हुते सो अच्युत दास श्री मदनमो
हनजी की सेवा नीकी भांति सों करते तब श्रीमद
नमोहनजी आप अच्युत दास सों सानुभाव हु
ते वातें करते और अच्युतदास ऊपर श्रीठा
कुरजी ऐसी कृपा करते और एक दिन अच्युत
दास श्री नाथजी के दर्शन कों आवत हुते तब
श्री गोबर्द्धन नाथजी की एक दंडोती परिक्रमां
करते ऐसे भगवदीय हे और जब श्री गुसांईजी
के पास आवते तव श्री गुसांईजी अच्युत दास
कों दंडोत न करन देते और कहते जो ऐसे श्री-
आचार्यजी महाप्रभून के कृपा पात्र भगवदी
यहें ताते इन कों दंडोत न करन दीजिये पाछें
जब श्री आचार्यजी महाप्रभून नें लौकिक ली
ला आसुर व्या मोह लीला दिषाई तब अच्युतदा
सनें श्री मदन मोहनजी कों श्री आचार्यजी महा-
प्रभू नके घर पधराए आप श्रीवद्रीनाथजी के
दर्शन कों उठिगए तव उहां जायकें श्रीवद्रीना
थजी के दर्शन करिकें अन्न जल को त्यागकरि
अपनी देह छोडी पाछें श्री मदन मोहनजी कों

श्री गोपीनाथजीनें श्री गोवर्द्धननाथजी के पास
पधराए वे अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके ऐसे भगवदीयहे जिन श्री आचार्यजी महा
प्रभूनको स्वरूप साक्षात् करिजान्यों और उन
की श्री महाप्रभूनके ऊपर बडी आसक्ति हुती जो
परोक्षभए पाछें अन्न जलको त्यागकीयो तब दे
ह छोडी भक्तिमार्गको स्वरूप केवल विरहासक्ति
है सो वे अच्युतदास ऐसे भगवदीयहे तातें इनकी
वार्ता कहांतांई लिषिये ॥ वार्ता ॥ २ ॥ वैष्णव ॥ ५५

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक अच्युतदास सारस्वत
ब्राह्मण तिनकी वार्ता हे

सो एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभूनके संग अ
च्युतदासनें पृथ्वीपरिक्रमा कीनी हुती सो श्री
आचार्यजी महाप्रभूननें अच्युतदासको आप
नी पादुकाजीकी सेवा दीनी सो अच्युतदासनें
अति उत्तिम रीतिसों श्री पादुकाजीकी सेवा कीनी
तातें श्री आचार्यजी महाप्रभू अच्युतदासको नि
त्य दर्शन देते और जो श्री आचार्यजी महाप्र

भूननें संन्यास ग्रहणकीयो सोकेवलबिनके भा
वार्थ कीयो तब एक वैष्नवसों श्री आचार्यजीम
हाप्रभूननें कह्यो जो एक डोंगी कासी कोंभाडे
करिलाउ तब वह वैष्नव डोंगी भाडे करिलायो
ताके ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू चढिकें ब
नारस पधारे तहां संन्यास डेढ महीना तांई र
ष्यो तब वह वैष्नव जो कासी में गयोहो सो का
सीतें कडामें आयो तब अच्युतदास तथा सबवै
ष्नवन सों कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें संन्यास ग्रहण कीयो फेरि कासी पधारे सो
उहां डेढ महीना तांई रहे पाछें असुरव्यामो
हलीला दिषाई तब अच्युतदास नें वा वैष्न
वसों कह्यो जो तोकों भ्रम भयो होयगो तब वा
वैष्नव नें कह्यो जो मैं श्री आचार्यजी महाप्रभू
नके साथ हुतो सो कासीतें देषिकें अबही हों
आयो हों तब अच्युतदासनें कह्यो जो ऐसी प्रभू
कबहू न करें जो जीवनकों असुरव्यामोहली
ला दिषावतहैं तब अच्युतदासनें मंदिर के किवा
ड षोलकें वा वैष्नव कों श्री आचार्यजी महा

प्रभून के दर्शन करवाए तब देषें तो श्रीमहाप्रभू-
जी बिराजे हैं और पोथी देषत हैं तब वा वैस्नव
नें दंडोत कीनी तब श्री महाप्रभूजीनें कह्यो
तुम कछू संदेह मति करो यह भागवत लौकि-
क रीति सों देह धरे की लीला है और सिंघासन
बैठि कें अलौकिक लीला नित्य है ताते यह ली
ला अबहू अवतार प्रगट है ताते तहां आए
हैं तातें संदेह न करनों यह आसुर व्यामोह लीला
है सो श्री गुसांईजी सर्वोत्तम में लिषें हैं जो भाक्त
तानुकृति व्याज मोहि तासुर मानुषः मनुष्य
देह धरें ताकी यह लीला है सो अच्युत दास
ऐसे स्वरूप निष्ठा के जिनकों श्री आचार्यजी म
हाप्रभून के स्वरूप को ऐसो दृढ विस्वास हो वे अ
च्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृ
पापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई
लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ५६ ॥ संबंध ॥ १२८

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेव
क नारायणदास ब्रह्मचारी अंबाल्लय के वा
सी तिनकी वार्ता है

सो वे नारायणदास देसाधिपतिके चाकर हुते तिनकों राज द्वार को कांम बहुत हुतो ताते श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों आय सकते नांही परि अंतःकरन में श्री आचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन की आतुरता बहुत जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब जाऊंगो परि आय सकते नाही ताते नारायणदास नें एक चाकर राष्यो ताको महींना चारि रुपैया को कीनों और वासों कह्यो जो तेरो यह कांम है जो मो कों छिनु छिनु में सुरति दिवायो करि जो भैयाजी श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों कब चलोगे यह कहि कें सुनाउ जो हम कों श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन की सुधि रहे सो वह चाकर योंही कह्यो करे तब नारायणदास अपने कार्य में बैठे तब आगे आय कें ठाडो होय कें एक घडी उपरांत कहे जो भैयाजू श्री आचार्यजी महाप्रभूनके दर्शन कों कब जाउगे ऐसें नित्य दिन प्रति कहे और नारायणदास श्री आचार्यजी महाप्रभून कों भेट बहुत पठावते नारायणदास ऐसे भगवदीय हे सो उन

को चित्त सदा श्री आचार्यजी महाप्रभूनके च रणारविंद में रहतो ताते श्री आचार्यजी महाप्रभू उन के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इन की वार्ता कहां तांई लिषिये॥ वार्ता प्रसंग॥ १॥ वैस्नव ५२॥ संबंध १२९

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक नारायणदास भाट मथुरा में रहते तिन की वार्त्ता

सो नारायणदास कों श्री मदनमोहनजीनें आग्या दीनी हुती जो वृंदावन में अमुकी ठोर हो सो उहां सों काढि कें मोकों बाहिर पधराउ तब नारायणदास तहां जाय कें श्री मदनमोहनजी कों बाहिर पधराय कें पाछें जब श्री गोपीनाथजीनें श्री मदनमोहनजी कों सिंघासन पाट बैठारे तब कितने कदिन तांई नारायणदासनें सेवा कीनी तब उन के पाछें उन को कोऊ न हुतो ताते बंगाली गोडिया सेवा करन लागे श्री गोपीनाथजीनें पाट बैठारे ताते सब कोऊ दर्शन कों जात हे वे नारायणदास ऐसे भगवदीय हे तिन कों श्री मदनमोहन

जी आप कृपा करि कें वृंदावन पधारे श्रीमदनमो
हनजीनें श्रीआचार्यजीमहाप्रभून कोसेवक
जानिकें नारायणदास के ऊपर कृपाकीनी ताते
वे नारायणदास श्रीआचार्यजी महाप्रभून के
ऐसे कृपापात्रभगवदीय हे ताते इन की वार्ताक
हांतांई लिषिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैस्नव ॥ ५८ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक नारायणदासचोहाने
ठठे के तिन कीवार्ता

सो वे नारायणदास ठठे के पात्साह के दीवानकु
लकुल्लाकृते जो नारायणदास दीवान करे
सो कछू होय पाछे कितनेक दिनमें वह पात्सा
ह नारायणदास के ऊपर कोप्यो तब नाराय
णदास कों पकरयो तब वहुत मारयो और वं
दीषानमें दे दीयो पाछें पचास लाष रुपैया
को दंड वाके माथें कीयो सो दिन प्रति पांच ह
जार भरने और जा दिन रुपैया न भरे ता दिन
नारायणदास कें पांचसे कोरडा मारने पात्सा
हनें ऐसो वंधान कीयो तव एकसमें श्रीआचार्य

जी महाप्रभून के सेवक दोऊ भाई ब्राह्मण तिननें अपने मनमें विचार कीयो जो ठठे में नारायणदास दीवानहे सो हम उनके पास चलें हमकों अपनी कंन्याको विवाह करनोंहे तातें जो वे कछू देंयतो कंन्याको विवाह करें सो ऐसो विचारिकें वे दोऊ भाई अपने घरतें ठठेको चले सो ठठेमें जाय पहुंचे तब उहां जायकें सुन्यों जो नारायणदास तो बंदीषानेमें पस्योहे तब वे दोऊ भाई अपने मनमें बहुत ही विचार करन लागे जो अब कहा करिये तब ऐसो विचार इन दोऊ भाईननें कीयो जो अब इहांसों चलिये तब प्रातःकाल यह बात नारायणदासनें सुनी जो वे दोऊ भाई श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक गाममें आएहें सो उननें सुनी जो नारायणदास तो बंदीषानेमें पडेहें तातें अब इहांसों प्रातःकाल चलेंगे तब नारायणदासनें उनके पास मनुष्य पठायो और कहवाइ पठाई जो तुम आए सो मेरो बडोभाग्य हे मेरे पास तुम प्रातःकाल होयकें दर्शन अपने मोकूं देकें जेयो तब वे दोऊ भाई प्रातःकाल उठिदेहकृति करि तिलकमुद्रा

करि नित्य कर्म सों पहुंचि कें श्री आचार्यजी महा
प्रभून को चरणांमृत और महाप्रसाद लेकें जहां
नारायणदास बंदीषाने में हुते तहां दोऊ भाई ना
रायणदास के पास जाय मिले तब नारायणदास
कें उन कों देषि कें परम आनंद भयो और बहुत
प्रसन्न भए तब उन दोऊ भाईन नें चरणांमृत औ
र महाप्रसाद नारायणदास कों दीनों तब नाराय
णदासनें लीनों और कह्यो जो मो कों बंदीषाने
में बैष्नवन को दर्शन भयो तब नारायणदास
नें श्री आचार्यजी महाप्रभून के कुसल समाचार
पूछे पाछें भगवद्वार्ता के प्रसंग करन लागे इतने
में नारायणदास के घर तें पांच हजार रुपैयान की
थेली आई सो द्वारपालन नें थेलीन के ऊपर मो
हरछाप करि कें नारायणदास के पास पठाई तब
नारायणदासनें वे पांचों थेली उन दोऊ भाईन
कों सोंपि दीनी और दंडोत कीनी और कह्यो
जो अब तुम वेगि पधारो और श्री आचार्यजी
महाप्रभून कों मेरी दंडोत करियों और तुम अ
पनी कंन्या को विवाह या द्रव्य तें भली भांति सें

करियों तव वे दोऊ भाई ब्राह्मण नारायणदास
ते विदा होय के चले तव इतने में पात्साह बोल्यो
जो पांचों थेली नारायणदास वारी लावो तव दर
बांन बोल्यो जो पांचों थेली न ऊपर मोहर छाप-
करिकें नित्य नारायणदास के पास पठावत हें सों
ही पठाई हें तब पात्साह बोल्यो जो षजानची कों
बुलावों तव मनुष्य जाय कें षजानची कों बुलाय
लाए तव षजानाची आगें आय ठाडो भयो तव पा
त्साहनें षजानची सों पूछो जो क्यों रे तेरे पास ना
रायणदास के पास तें पांचों थेली आई हें तव ष
जानची नें कही जो साहब मेरे पास तो नाहीं आ
ई तव पात्साह कों बहुत क्रोध भयो और कह्यो-
जो नारायणदास कों बुलावो तवनारायणदास
कों बंदीषाने में ते बुलाए सो लाय कें पात्साह के
आगें ठाडो कीयो तव नारायणदास तें पात्सा
हनें पूछो जो नारायणदास आज थेली क्यों ना
हीं आई पाछें पोरो सों गाढो कोरडा करिकें को
रडा वारो बुलायो और पात्साह नें पांच सै कोरडा
को हुकम दीयो और पात्साह बोल्यो जो नाराय

एा दास सांच कहि जो आज थेली क्यों नाहीं आई
द्वार पालनने तो मोहर छाप करिकें तेरे हवाले की
नी और तेंनें यह कहा कीयो तू सांच कहि नाहीं
कोरडा लागत हैं तब नारायण दास सलाम करि-
कें बोल्यो जो हजरत आज मेरे गुरु भाई आए हुते
सो वे पांचों थेली उनकों दीनी और मेंनें अप
ने मनमें कह्यो जो में आज मार षाइ रहूं गो परि
यह घडी कहां हें तब पात्साह चुप करि रह्यो पाछें
एक घडी विचारिकें कह्यो जो स्यावास तू अपने
गुरु के मार्ग में ऐसो सांच्यो है सो में तेरे ऊपर बहु
त प्रसन्न भयो तब पात्साहनें वाही समय वेडीक
टवाई कें घोडा सिरो पाउ मगाय कें नारायण दा
स कों पहराया घोडा दीयो और निवाज्यो तब
फेरि कें अपनों कुलकुल्ला दीमान राष्यो जे
सो पहले हुतो तैसोई कीयो काम सब सोंप्यो
और नारायण दास के मांथे दंड कीयो हुतो
सो सब मांफ करिकें सिरो पाव पहराय कें कह्यो
जो जा घर होय आउ सो सिरो पाव पहरिकें घो
डा ऊपर चढिकें नारायण दास घर कों गए सो

वे दोऊ भाई वैष्णव गांम में ही हुते सो वे दोऊ भाई वैष्णव सुनिकें नारायणदास सों मिलिवेकों आए तव नारायणदास उन सों मिले भेटे और कह्यो जो मेरे गुरू के सेवक आए तो में छूट्यो तव उन वैष्णवन नें कह्यो जो श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा तें क्यों न छूटे तव नारायणदास नें हजार मोहरन की एक थेली वैष्णवन के हाथ श्री आचार्यजी महाप्रभून कों भेट पठाई पाछें वे दोऊ भाई उहां सों चले सो कितनेक दिन में श्री गोकुल आए तव श्री आचार्यजी महाप्रभू श्री गोकुल में हुते सो उन दोऊ भाई वैष्णवननें आयकें श्री आचार्यजी महाप्रभून को दर्शन कीयो और नारायणदास की हजार मोहरन की थेली आगें राखी तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें नारायणदास के कुसल समाचार पूछे तव उन वैष्णवननें सब समाचार कहे तव श्री आचार्यजी महाप्रभू आपने श्री मुष सों कहे जो जाको वैष्णव ऊपर ऐसो दृढस्नेह है ताको कष्ट क्यों रहे पाछें वे वैष्णव ब्राह्मण श्री आचार्यजी महाप्रभूनतें विदा होयकें आप

नेघरकोगए सोवेटीकोंविवाहआछीभांतिसों कीयो औरपहलें उनकोनामनरियाहुतोसोसे वकभए पाछें श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननेंनारा यणदासनामधर्‌यो जाकोऐसोमन होयतापेश्री ठाकुरजीऐसीक्रृपाकरें प्रभूजीकोनामभक्तवत्स लहे सो अपनेकोंथोरे हीमेंक्रृपाकरतहेंसोवेना रायणदास ऐसे क्रृपापात्रहुते इनकीवार्ता कहां तांईलिषियै ॥वार्ता॥२॥वैस्नव॥७९॥

अबश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनकेसेवक

राकक्षत्रांणी अकेलीसीहनंदमें

रहतीतिनकीवार्ता

सोवाक्षत्रांणीकें श्रीनवनीतप्रियाजीबिराजेंहे श्रीठाकुरजीसानुभावहे सोवहबाई अकिंचनसे वाजबकरिपहुंचे तबसूत काते तामें जोकछुब ढती आवे तासों निर्वाहकरे सोघरकेद्वारकाछि नतरकारी बेचन आवें तब श्रीठाकुरजीमंदिरमें तें पुकारकेंकहें अरी प्रभुकीतरकारीबिकन आई हे तूले ऐसें श्रीठाकुरजीकहें तबवहक्षत्रां णीसबभांतिकीतरकारी लेहिसोकेतिकतोका

ची समर्पै केतिक रसोई में छोंकिकें समर्पे और क
वहू काछिनको सब्द श्रीठाकुरजी न सुनें और व
ह काछिन आगें निकसि जाय तब वह बाई-
सामग्री कछू लेन सकें तब श्रीठाकुरजी वासों ब
हुत रारि करें जैसें लौकिक लरिका रारि करें तैसें
श्रीठाकुरजी वा क्षत्राणीसों झगरो करें और एक
दिन कछू पकवान बाल भोगकों होय न आयो
तब रोटी घीसों चुपरिकें रात्रि के लीएं ढांकि राषी
सो जब रात्रि आधी भई तब श्रीठाकुरजी बोले वा-
क्षत्राणी बाई कों जगाई और कहें जो हों भूषो हूं-
तब वा बाई ने कह्यो जो लालजी पकवान तो कछू
नाहीं हें और रोटी घृतसों चुपरि धरी हें तब श्रीठा
कुरजी कहें जो भलो रोटी ही लाउ तब बाईनें रो
टी आगें आनि राषी तब श्रीठाकुरजीनें वा बा
ई सों कह्यो जो तू मोकों रोटी की तुनरी करि कें
दे तब वह बाई श्रीठाकुरजी के श्रीहस्त में देत-
जाय तब अपने श्रीहस्त में ले कें कतरि कतरि
आरोगत जांय पाछें जब पान करिकें पोढें परि
वा क्षत्राणी के मनमें बहुत क्षोदु भयो और कहो

जो सवारें उधारे लाय कें पकवांन करि धरोंगी जो रा
त्रिकों श्री ठाकुरजीनें फीकी अकेली रोटी आरो
गी पाछें दूसरे दिन पकवांन करि धस्यो तव रात्रिकों
श्री ठाकुरजी नें मांग्यो तब पकवांन लेकें आगें
धस्यो तव श्री ठाकुरजी आरोगे तब कह्यो जो
अमुकी तेंनें पकवांन तो धस्यो परि मोकों पक
वांन वीच रोटी की तुतरी अति अद्भुत स्वाद ला
गी तब वा क्षत्राणी नें कह्यो जो महाराज में क
हा करूं मेरें कोई कमावान हारो तो है नांहीं में
तो अकेली होंमो ते तो कवहू कछू होय आवत
नाहीं तव श्री ठाकुरजीनें वा क्षात्रांणीसों कह्यो
जो तू नित्य पकवांन काहेकों करत है तू मोकों रो
टी चुपरिकें धरि राष्यो करि मोकों तो तेरी रोटी
वहुत रुचित है तातें तू संकोच मति करे हमकों
तो तेरी रोटी चुपरी वहुत स्वाद लागत हैं पाछें
वह रोटी करि राषती सो श्री ठाकुरजी आरोगते
वह क्षत्राणी श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी
कृपापात्र भगवदी यही ताते इनकी वार्त्ता कहां तां
ई लिषिये॥ वार्त्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥६१॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक दामोदरदास कायस्थ सेरगढ के वासी तिन की वार्ता हैं

सो तिन के सेव्य ठाकुर श्री कपूररायजी सो बहुत गोर स्वरूप हुतो तिन के पास श्री नवनीतप्रियाजी बैठिते सो एक समें दामोदरदास की स्त्री वीरबाई ताकें गर्भ रह्यो पाछें प्रसूत भई सो पुत्र जन्म भयो सो घर की बहू बेटी सब प्रसूत के कामकाज करन लागी सो श्री ठाकुरजी की सेवा में विलंब भयो तब वीरबाई प्रसूतक में ते वहुत कहे जो कोउ सेवा में न्हाउ श्री ठाकुरजी की सेवा में अबेर होत हे परि को उ न्हायनाहीं तब श्री ठाकुरजी नें वीरबाई सों कह्यो जो तू स्नान करि कें सेवा क्यों नाहीं करत है तब वीरबाई प्रसूतक में ते उठि कें श्री ठाकुरजी सों कह्यो जो महाराज मेरी तो यह विवस्था है ताते मो कों तो सेवा में आवनो नाहीं प्रसूतक में हूं अपरस छूट जायगी तब श्री ठाकुरजी नें वीरबाई सों कह्यो जो मो कों तो सेवा में विलब होत है मो कों इतनी अबार भई है और कोउ न्हात नाहीं

ताते तूहीन्हाउ तव ग्रह वीरवाई श्रीठाकुरजीके आगें हते उठिकें ग्रसूतकामें तेन्हाई कें काछदेकें श्रीठाकुरजीकी सेवा करिकें पाछें भोगसमर्यो पाछें समयानुसार भोगसरायकें अनोसर करि कें आप भोजन करिकें षाट में सोय रही श्रीठाकुर जीकी आग्यासों सेवा कीनी सोऐसें चालीस दिन तांई नित्य करती तब श्रीठाकुरजीनें कह्यों जोतेंनें मेरी आग्याहू मानी ओरबेद मार्गकी रीतिहू राषी तातें श्रीठाकुरजी वहुत प्रसन्न भए तवचा-लीस दिन वीते तवसुद्ध स्नांन करिकें सेवा करन-लागी पहले के पात्र वस्त्र सब अपरस दूरि कीने ओर दूसरे सव नए मगवाए पाछें भलीभांतिसों सेवा करन लागी तातें वह वीरवाई श्री आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी कृपापात्र भगवदी यही तातें इन कीवार्ता अवकहांतांई लिषिये॥ प्रसंग १॥ वैस्नव ६१

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक स्त्रीपुरुष दोऊ क्षत्री हुतेति नकीवार्ता

सो वे स्त्री पुरुष दोऊ जने सीहनंद में आय रहे

सो वह घर निपट छोटो हुतो तातें श्रीठाकुरजी तास में बैठिते सो आधी कोठरी में तो रसोई करते और आधी कोठरी में रहते और सैया कों ठौर न हुती तातें एक बांस को मेडा करि राष्यो हुतो ताके ऊपर श्रीठाकुरजी पोढते और आप स्त्री पुरुष दोऊ जने रात्रि कों आंगन में सोय रहते ऐसे करत तब चातुरमास के दिन आए तब मेह बरसतो तोऊ बे आंगन में सोय रहते परि भीतर न सोवते तब श्रीठाकुरजी भीतर सों बोलते जो अरे अमुका अमुकी हो तुम भीजत क्यों हो भीतर क्यों नाहीं सोवत हो वाहिर काहेकों पोढे भीजत हो तातें तुम भीतर आवो और हमतो ऊंचे मेडा पर हैं तुम नीचें क्यों नांही सोवत हो तब ब्राह्मणीनें कह्यो जो महाराज तुमतो ऊंचे मेडा ऊपर पोढत हो और मैं नीचें कैसें सोऊं तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयकें कहें जो कछू बाधक नाहीं तुम कछू संकोच मति करो हम तुमतें प्रसन्न होयकें कहत हैं तातें तुम भीतर घुसी सों सोय रहो पाछें तब वे दोऊ जने भीतर सोवन लागे परि ऐसी भांति सों सोवते जो तब कहूं स्वास बाजे-

तातें तूही न्हाउ तब वह वीरवाई श्रीठाकुरजीके आगें हते उठिकें असूतकामें तें न्हाईकें काछदेकें श्रीठाकुरजीकी सेवा करिकें पाछें भोगसमर्यो पाछें समयानुसार भोगसरायकें अनोसर करिकें आप भोजनकरिकें षाटमें सोय रही श्रीठाकुरजीकी आग्यासों सेवा कीनी सो ऐसें चालीस दिन तांई नित्यकरती तब श्रीठाकुरजीनें कह्यौं जो तेनें मेरी आग्या हू मानी और वेदमार्गकी रीतिहूराषी तातें श्रीठाकुरजी वहुत प्रसन्न भए तब चालीस दिन वीते तब सुद्ध स्नान करिकें सेवा करन लागी पहले के पात्र वस्त्र सब अपरस दूरि कीने और दूसरे सब नए मगवारा पाछें भलीभांतिसों सेवा करन लागी तातें वह वीरवाई श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकी ऐसी कृपापात्र भगवदीयहीतातें इनकीवार्ता अबकहांताईं लिषिये॥ प्रसंग १॥ वैस्नव ६१

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके सेवक
स्त्री पुरुष दोऊ क्षत्री हुते ति
नकी वार्ता

सो वे स्त्री पुरुष दोऊ जने सीहनंदमें आयरहे

सो वह घर निपट छोटो हुतो तातें श्रीठाकुरजीतास
में बैठिते सो आधी कोठरी में तो रसोई करते और
आधी कोठरी में रहते और सैया कों ठौर न हुती ता
तें एक बांस को मेडा करि राख्यो हुतो ताके ऊपर
श्रीठाकुरजी पोढते और आप स्त्री पुरुष दोऊ ज
ने रात्रि कों आंगन में सोय रहते ऐसे करत तब चा
तुर मास के दिन आए तब मेह बरसतो तोऊ वे
आंगन में सोय रहते परि भीतर न सोवते तब श्री
ठाकुरजी भीतर सों बोलते जो अरे अमुका अ
मुकी हो तुम भीजत क्यों हो भीतर क्यों नाहीं सो
वत हो वाहिर काहेकों पोढे भीजत हो तातें तुम
भीतर आवो और हम तो ऊंचे मेडा पर हैं तुम नी
चें क्यों नांही सोवत हो तब वा क्षत्राणीनें कह्यो जो
महाराज तुम तो ऊंचे मेडा ऊपर पोढत हो और मैं
नीचें कैसें सोऊं तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय के क
हैं जो कछू बाधक नांही तुम कछू संकोच मति करो ह
म तुमतें प्रसन्न होय कें कहत हैं तातें तुम भीतर षुसी
सों सोय रहो पाछें तब वे दोऊ जने भीतर सोवन ला
गे परि ऐसी भांति सों सोवते मति कहूं स्वास वाजे-

ऐसें सावधानी सों सोवते सोवे स्त्री पुरुष श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे
तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ प्रसं॰१॥ वे॰॥ ६२

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुन के सेव
क सूतार कारीगर अडेल में रह
ते तिनकी वार्ता है

सो उन सूतार ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू ब
हुत कृपा करते वा सूतार कें ऐसो नेम हतो जो
श्री आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन विना एक
दिना न रहतो तातें यह सूतार सब घर को कां
म काज छोडिकें नित्य श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के दर्शन कों आवतो तब घर के मनुष्य घर को
बहुत दुख पावते ताके लीऐं श्री आचार्यजी म
हाप्रभू आप वा सूतार के घर पधारते वासों श्री
आचार्यजी महाप्रभू बहुत वार्ता करते और
श्री आचार्यजी महाप्रभून की माता इलम्मागारु
जी सो श्री आचार्यजी महाप्रभून सों बहु बीज
नी और कहें जो तुम ऐसें अनुचित क्यों करत
हो ऐसें उचित नाहीं ऐसें कहिकें इलम्मागारु-

जीबहुत रिस करती परि श्री आचार्यजीमहाप्रभू
चोथे पांचमें दिन तोपधारते एसी कृपा श्री आ-
चार्यजीमहाप्रभू वा सूतार के ऊपर करते सो व
ह सूतार श्री आचार्यजी महाप्रभून कोऐसोकृ
पा पात्र भगवदीय हो ताते इन की वार्ता कहांतां
ईं लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्णव ॥ ६३ ॥

अब श्री आचार्यजीमहाप्रभून केसे
वक एक क्षत्री हुतो ताको अंन्य
मार्गीयकोसनेह हुतो

सो वा क्षत्रीसों अंन्यमार्गीयकोस्नेह हुतो सो ए
क दिन वह क्षत्री अंन्यमार्गीयकेघर गयो तब वा
क्षत्रीसों कह्यो जो तुम आज इहांई पाक करियो
तब वाके आग्रहते वा क्षत्री वैष्णवनें पाक वहांई
कीयो तब पाककरिकें वा अंन्यमार्गीय ठाकुर
के आगें श्रीनाथजीको नाम लेकें भोग समर्प्यो
पाछें समयानुसार भोग सराय वाकों प्रसाद दीयो
पाछें आपनें लीयो पाछे वहांई विश्राम कीयो-
सो निद्रावस भए तब वा अंन्य मार्गीयके सेव्यस्व
रूपनें स्वप्नमें कह्यो जो आजतो हम भूषे रहे तब

वा अंन्यमार्गीयनें कह्यो जो तुम कों तो वा वैष्ण
वनें पाकभोगसमर्प्यो हो और तुम भूषेके से रहि
गए तब उनके सेव्य श्रीठाकुरजी नें कह्यो जो वह-
तो श्रीनाथजी आप आरोगेहें हमकों तो श्रीना
थजीनें उहांते दूरि कीयो तब वह अंन्यमार्गीय
को मित्र सोयो हो ताकों जगायो तब वह जाग्यो त
ब सब समाचार कहे तब वा क्षत्रीनें कह्यो जो मेंतो
सों केतीक बार कह्यो जो तू श्री आचार्यजी महाप्रभून
को सेवक होउ सो याही के लीऐं हमारे प्रभूजी श्री-
आचार्यजी महाप्रभून की कृपा ते सेवक के हाथ
को आरोगतहें पाछें वह अंन्यमार्गीय सब कुटुंबस
हित श्री आचार्यजी महाप्रभून की सरण आयो स
ब सेवक भए पाछें वाके स्वरूप कों श्री आचार्यजी म
हाप्रभूननें पंचांम्रुत सों स्नान कर वायो पाछें पाट बे
ठारे ता पाछें भोग समर्प्यो समयानुसार भोग सरा
य कें सब वैष्णवन कों बुलाय महाप्रसाद लिवायो
पाछें वह अंन्यमार्गीय श्रीठाकुरजी की सेवा भ-
ली भांतिसों करन लाग्यो पाछें वह क्षत्री भलो वै
ष्णव भगवदीय भयो वा क्षत्री वैष्णव के संग ते भ

सोभगवदीयभयो तातेसंग करनों तोभगवदीयके करनों वह क्षत्रीबेष्नव श्रीआचार्यजीमहाप्रभून कों ऐसो कृपापात्रभगवदीयहो ताते इनकीवार्ताक हां तांई लिषिये॥ वार्ताप्रसंग॥ १॥ बैष्नव॥ ६४॥

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके से
वक लघुपुरुषोत्तमदास क्षत्री
तिनकी वार्ता है

सो वे लघुपुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजीमहाप्र भूनकों तथा श्रीनाथजी कों एकसार जानते श्री आचार्यजीमहाप्रभूनको स्वरूप साक्षात् पुरुषोत्त म करिजानते लघुपुरुषोत्तमदास की श्रीआचार्य जीमहाप्रभूनके ऊपर वडी आसक्ति हुती ताते श्री महाप्रभूजी लघुपुरुषोत्तमदास के ऊपर वहुत प्रसन्न रहते लघुपुरुषोत्तमदास दूसरोस्वरूप जान ते नांहीं श्रीठाकुरजीकों तथा श्रीमहाप्रभूजीकों एक जानते वे लघुपुरुषोत्तमदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लि षिये॥ वार्ताप्रसंग॥ १॥ वैष्नव॥ ६५॥

अव श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके

सेवक कविराज भाट तिनकी
वार्ता है

सो वे कविराज भाट ब्राह्मण हुते सो तीनि भाई हु
ते सो तीन्यों भाई श्री आचार्यजी महाप्रभून के
ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय भए उन कौं नाम
समर्पण करवायो पाछें श्रीनाथजी के सन्निधांन
बहुत कवित्त पढे नए नए कवित करिकें श्रीना
थजी के सन्निधांन कबित सुनावते पाछे श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के कबित बहुत कीए ताते
श्री आचार्यजी महाप्रभू कबिराज भाट के ऊप
र बहुत प्रसन्न रहते सो वे कबिराज भाट श्री आ
चार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगव
दीय है ताते इन की वार्ता कहां तांई लिषिये॥
वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक गोपालदास टोरा के वा
सीतिन की वार्ता है

सो गोपाल दास के कीए छंद बहुत हे सो गोपाल
दास की श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऊपर बहु

त आसक्ति हुती सो एक समें गोपाल दास आ
डेल आए सो दूसरे दिन श्री आचार्यजी महाप्र
भून को जन्म उत्सव हुतो सो श्री आचार्यजी म
हाप्रभू मार्कंडे पूजा कों बैठे हुते तासमें गोपा
लदास नें एक नयो छंद करिकें गायो सो पद॥
राग विलावल ॥ माधो मास भरि वैसाष श्री ब
ल्लभ हरि जन्म लीयो ॥ यह सुनिकें श्री आ
चार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए पाछें गो
पालदासनें बहुत छंद कीये सो वे गोपालदा
स श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र
भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिषि
ये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्नव ॥ ६७ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के से
वक जनार्दनदास चोपडा क्षत्री
तिनकी वार्ता लिष्यते

एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीनाथजी द्वा
र पधारे हुते पाछें श्री गोकुल आए तब जना
र्दनदास नें श्री महाप्रभून को दर्शन कीयो त
व कह्यो जो ये साक्षात पूरन पुरुषोत्तम हैं ईश्वर

हें तब जनार्दनदासनें बीनती कीनी जो महाराज मोकों सरण लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें जनार्दनदासकों आग्या दीनी जो स्नांन करिकें आउ तब जनार्दनदास स्नांन करिकें आये और दंडोत कीनी और बीनती कीनी जो महाराज मोकों नांम समर्पण करवाइये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें श्री नाथजीके संनिधांन जनार्दनदासकों समर्पण करवायो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी कृपाते जनार्दनदास भलो भगवदीय भयो सो श्री आचार्यजी महाप्रभू जनार्दनदासके ऊपर बहुत कृपा करते वे जनार्दनदास श्री आचार्यजी महाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ ६८ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके
सेवक गडुस्वांमी सनोडिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता हे

सो वे गडुस्वांमी आप स्वांमी कहावते सो एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभू वृंदावनमें पधारे हु

ते तब गडुस्वांमी कों आग्या भई श्रीठाकुरजी नें कृपा करिकें रात्रिकों स्वप्नमें जनायो जो सवारें श्री आचार्यजी महाप्रभू इहां पधारेंगे सो तू इनकी सरण जैयो तू सेवक हूजियो तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप सवारें पधारे तब गडुस्वामी स्नांन करिकें जहां श्री आचार्यजी पधारे हुते तहां गए तब जायकें गडुस्वांमी नें दंडोत कीनी औरवीनती करिकें कह्यो जो महाराज मोकों सरण लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मुसिकायकें कहें जो तुम तो आप स्वामी हो तुमकों सेवक कैसें करिये तब गडुस्वांमीनें श्री आचार्यजी महाप्रभूनसों वीनती कीनी जो महाराज मोकों भगवद आग्या भई है जो तू श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी सरण जैयो ताते महाराज मोकों सरण लीजिये तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनें गडुस्वांमी कों नांम दीयो पाछें निवेदन करवायो तब पाछें गडुस्वांमी नें जो सेवक कीए हुते तिन सबन कों श्री आचार्यजी महाप्रभून पास नांम दिवायो पाछें वे गडुस्वांमी बडे भगवदीय भ

ए श्री आचार्यजीमहाप्रभू आप गडुस्वामीकेऊ
परवहुतप्रसन्नरहते सोवे गडुस्वामीऐसेभगवदी
यहे ॥वार्ताप्रसंग॥ १॥ वैष्नव ॥ ६९ ॥

अवश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके
सेवककन्हैयांसालक्षत्रीतिन
कीवार्ताहे

सोउन कन्हैयांसालक्षत्रीकेऊपर श्रीआचार्य
जीमहाप्रभूवहुतप्रसन्नरहते बडीकृपाकरतेश्री
आचार्यजीमहाप्रभूननें आपकृपा करिकें अप
नेग्रंथ कन्हैयांसालकों पढाए सोईग्रंथ कन्हैयां
सालकेपासते श्रीगुसांईजीनेंपढे सो श्रीआचार्य
जीमहाप्रभूनकीकृपाते सवस्फुर्दरूपभएसोवेक
न्हैयांसालक्षत्री श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनकेए
से परमकृपापात्रभगवदीयहे तातेइनकीवार्ता
कहांतांईलिषिये॥ वार्ताप्रसंग १॥वैष्नव॥७०

अबश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकेसेव
कनरहरदास गोडियातिन
कीवार्ताहे

सोएकदिन श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननेंनरहर

दासके घर श्रीमदन मोहनजी पाटवैठे हुते सो श्रीमदन मोहनजीकी सेवा नरहरदासनें नीकी भांतिसों कीनी पाछें सरीर जब पर्यो तब सेवा न होय आई तब नरहरदासनें श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीके घर पधराए सो श्रीगुसांईजी श्रीरघुनाथजीके घर पधराए सो श्रीगोकुलचंद्रमाजी के पास जुदे बैठत हे न्यारे सिंगासन ऊपर बिराजते सो श्रीगुसांईजी नरहरदासके ऊपर बहुत प्रसन्न भए वे ऐसे भगवदीय हे और नरहरदास नें अपने मनमें बिचारी जो श्रीठाकुरजी कहूं न सुष पावेंगे श्रीगुसांईजीके घर सुष पावेंगे सो वे नरहरदास श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे सो इनकी वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्नव ॥ ७१ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभूनके
सेवक बादरायणदास तिन
की वार्ता लिष्यते

सो बादरायणदास और उनकी स्त्री मोरवीमें रहते सो बादरायणदासको पहलो नाम बाद

हुतो सो एक समें आछे भट्ट द्वारिका श्री-
रणछोडजी के दर्शनकों जात हुते सो मो
रवी में रात्रि कों वसे सो वादरायण दास नें
उन कों राषे तब वादरायण दास नें उ-
नपास नांमपायो पाछें आछे भट्ट के पास श्रीभ
गवत श्रवण कीयो तव श्रीभागवत संपूरण
करिकें वादरायण दासनें विदा होय कें आछे
भट्ट द्वारिका श्रीरणछोडजीके दर्शनकों गए
तव कितनेक दिन पाछें श्री आचार्यजी महा-
प्रभू आपद्वारिका श्री रणछोडजी के दर्शनकों
पधारे हुते तव मोरबी में उतरे सो वादरायणदा
स और उनकी स्त्री दोऊ जनेनें श्री आचार्यजी
महाप्रभून के पास फेरि कें नांम पायो पाछें सम
र्पण कीयो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप
मोरबी में दिन दोय रहे ता पाछें श्री आचार्यजी
महाप्रभू आप श्री रणछोडजी के दर्शनकों प-
धारे तव वादरायण दास और उनकी स्त्री श्री
आचार्यजी महाप्रभूनके संग गए तव दोऊ
स्त्री पुरुष श्री आचार्यजी महाप्रभून की सेवा

में रहें सो उन दोऊ ननें ऐसी सेवा कीनी जो श्री आ
चार्यजी महाप्रभू उन के ऊपर बहुत प्रसन्न भए
तव याको नाम पहलें वादाहुतो सो श्री आचा
र्यजी महाप्रभून नें याको नाम वादरायण दास
धस्यो ता पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू द्वारिका
सों चले तब वे दोऊ दोनों जनें श्री आचार्यजी म
हाप्रभून के साथ गए सो मोरवी लों साथ आए
पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू ते आग्या मांगिके
मोरवी में रहे पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आ
प श्री गोकुल पधारे वे वादरायण दास श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है
ताते इन की वार्ता कहां तांई लिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वै० ७२

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक
सद्दू पांडे मानिकचंद पांडे इन की
स्त्री तथा नरो वेटी आन्योरमें रहत हुते

सो जव श्री आचार्यजी महाप्रभू प्रथ्वी परिक्रमा
करत झारखंड में पधारे तव श्री नाथजी नें श्री आ
चार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो तुम मेरी सेवा कों
चलो वो व्रज में श्री गोवर्द्धन पर्वत है तहां हम तीन

दमन हैं देव दमन नागदमन इंद्रदमन तिनके
मध्यमें हम देवदमन हैं सो देव दमन मेरो नामहैं
सद्दू पांडेकोबडोभाई मांनिकचंद पांडेहे तहांग्र
म प्रगट भएहैं तब श्री आचार्यजी महाप्रभू परि
क्रमां झार षंड में राषिकें व्रजकों पाउधारे सोसे
वक कछू पांच सात साथ हे दामोदर दास हरसांनी
कृष्न दास मेघन रामदासजी माधोदास प्रभृत इ
त्यादिक श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक स
ब आन्योर में आए सो संध्यासमें श्री आचार्य
जीमहाप्रभू आय सद्दू पांडे के घर पाउधारे सो ए
क बडो चोंतरा सद्दू पांडे के घर के द्वारें हुतो ताके
ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू बिराजे तब सद्दूपां
डे नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो स्वा-
मी कछू षाउगे तब श्री आचार्यजीमहाप्रभून
नें कह्यो जो हम तो कछू न षांइगे तब कृष्न दा
स मेघन नें कह्यो जो ये तो अपने सेवक के हाथ
को लेतहैं विना सेवक तो ये काहू के हाथको ले
त नाहीं इतने में श्री गोबर्द्धन पर्वतते श्री नाथ
जी पुकारे जो नरो मेरो दूधलाउ तब नरो नेंकहीं

जो महाराज आज तो हमारें पाहुनें आए हें तातें दू
धनांही तब श्रीनाथजीनें कही जो तेरें पाहुनें आए
हें सो तो भलीभई हम कहा करें परि मेरो दूध तो लाउ
तब नरो बोली जो वारी लाल लाई तब नरो कटोरा
भरि कें लेगई श्रीनाथजीकों प्यायो तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास सों पूछो जो दम
लातें कछू सुन्यों तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें
कह्यो जो यह सब्द औरकार थंड को सब्द एक मि
लत है सो ऐसो जान्यों परतहे जो इहांई अगरे हें
सवारें चलेंगे तब इतनेमें नरो दूध प्याय कें आ
ई तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें नरो सों पूछो
जो तू कहां गई और कहा लेगई हुती तब नरो
बोली जो राज देवदमन कों दूध प्याय आई हों
तब नरो पे मांग्यो जो यामें दूध हे तब नरो नें कह्यो
जो रंचक हे तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें क
ह्यो जो यामें ते बच्यो हे सो हमकों दे तब नरो बो
ली जो महाराज घरमें बहुत दूध हे तब सद्दू पांडे
नें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों वीनती कीनी
जो महाराज म्हारे आपजी ने अब हमकों नाम

दीजिये तबश्री आचार्यजीमहाप्रभून के मानि
कचंद तथासद्दू पांडे तथाइनकी स्त्रीतथा नरो
ये सब सेवक भए उनके ऊपर आपनें हाथ फेरो
और नामदीयो ता पाछें वह दूध लीयो पाछें उन
के हू घर को दूध दही सब अंगीकार करे सो वे भ
ले भगवदीय हे तब श्री आचार्यजी महाप्रभू
ननें सद्दू पांडे सों पूछो जो कहो पांडे इहां ऊपर दे
वदमन प्रगट भए हैं सो कोंन भांति सों प्रगट भए
हैं तिनको आगरन तुम हम सों कहो सो श्री आचा
र्यजी महाप्रभू तो आप साक्षात ईश्वर हैं आप
ही करत हैं और आपही पूछत हैं सोकाहे ते जो
आप जीव के ऊपर कृपा करिवे के लीएं तब सद्दू
पांडेनें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों कह्यो जो म
हाराज एक हमारे गाम को ग्वाल हुतो सो सब गाम
की गायन को चरावतो सो सब प्रकार सद्दू पांडेनें
श्री आचार्यजीमहाप्रभून के आगें कह्यो सो सब
श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें सुन्यों सो श्री आचा
र्यजी महाप्रभू आप तो पूरन पुरुषोत्तम हैं आप
ही करत हैं सो वे सद्दू पांडे तथा मानिकचंद पांडे

और सब श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृ
पापात्र भगवदीय हैं जिनके पासते श्री आचार्यजी
महाप्रभू तथा श्री नाथजी जो चहिये सो मांगि लेते
और आप जिनके घर पधारते॥ वार्ताप्रसंग॥ १
और एक दिन श्री नाथजी इनके घर दूध पीवनकों
सोंने को कटोरा ले आए तब श्री नाथजी नें नरों
सों कह्यो जो दूध लाउ तब नरो तो वा कटोरा में दूध
डारत जाय और श्री नाथजी आप आरोगत जां
य सो दूध पीकें श्री नाथजी आप तो पधारे और-
कटोरा उहांई भूलि आए तब सवारें भए पाछें मं
गला आरती के समें भीतरियानें देषो तो मंदिर में
कटोरा नाहीं तब इतन में नरो कटोरा ले आई औ
र कह्यो जो यह कटोरा लेउ रात्रि कों लरिका भू
लि आयो है तब सब जने बहुत प्रसन्न भए वह
नरो एसी भगवदीय ही॥ वार्ताप्रसंग॥ २॥ और
एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभून सों श्री नाथ
जी नें कह्यो जो मो कों गाय मगाय देउ तब श्री-
आचार्यजी महाप्रभूननें दामोदरदास सहरसांनी
सों कह्यो जो श्री नाथजी नें गायन के लीरें आग्या

दीनी हैं सो श्री आचार्यजी महाप्रभूननें आप
ने हस्तयो छल्लासुवर्णको दीनौं और दामोद
र दास हरसांनी सों कह्यो याके दांमन की गाय
ले आवो तब दामोदर दासनें वह छल्ला सहूपां
डे कों दीनें और कह्यो जो याकों वेचि कें याके दां
मन की गाय लेदेउ श्री आचार्यजी महाप्रभून
नें गाय मगाई हैं तब सहूपांडेनें कह्यो जो श्री आ
चार्यजी महाप्रभू आप गायन को कहा करेंगे. त
ब दामोदर दासनें कह्यो जो श्री नाथजी नें श्री आ
चार्यजी महाप्रभून सों गाय मगाई हैं ताके लीयें
उन नें कही है तब सहूपांडेनें कह्यो जो मेरे इहां
गाय हैं सो कोंनकी हैं वे ऊतो श्री आचार्यजी महा
प्रभून की हैं जो चहियें सो लीजिये तब दामोदर दास
नें कह्यो जो श्री आचार्यजी महाप्रभून की ऐसी-
ही आग्या है तासे याकों वेचि कें गाय ले देउ-
तब सहूपांडेनें वह छल्ला वेचि कें ताकी गाय दो
य ले दीनी सो दोऊ गाय श्री आचार्यजी महाप्रभू
ननें श्री नाथजी कों समर्पी पाछें दस गाय सहूपां
डेनें श्री नाथजी की भेट कीनी पाछें सब वैश्नव

नकों षवर भई जो श्रीनाथजीनें गायन केलीऐं श्री आचार्यजी महाप्रभूनसीं आग्या करीहै सोवै ष्णवननें गाय पठाई काहूनें दोय काहूनें चारि काहूनें दस पठाई ऐसें करत दोयसै के आसरे गाय भेलीभई सो श्रीनाथजी कों गाय वहुत प्रिय हैं तवतें श्रीनाथजी कोनांम गोपाल श्री आचार्य जीमहाप्रभूननें धस्यो तब श्रीगुसांई जीनें गोपाल नांमसों गोपालपुर गांमबसायो ताहीतेसूरदास जीनें श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके प्रगट गोपाल नांमकीएहें प्रथम गायसुर गायो सोवे सहूपांडेत थानरीसवकोऊ श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीयहै सोइनकी वार्ता कोपार नांही तातें इनकी वार्ताकहांताईलिषिये॥ वार्ता प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥७२॥ संवंध॥१५६॥

अब श्री आचार्यजीमहाप्रभून के
सेवकनरहरदाससंन्यासी
तिनकी वार्ताहै

सो एकबेनाकोठारी हुतो तानें प्रथम नरहरदास संन्यासी के पास नांमपायोहुतो सोएक समें श्री आ

चार्यजी महाप्रभू आप द्वारिका पधारे हुते तब नर
हरदास संन्यासी ओर बेना कोठारी श्री आचार्यजी
महाप्रभून के साथ हे सो द्वारिका गए तब श्री आचा
र्यजी महाप्रभू आप नर हरदास संन्यासी के ऊपर
बहुत प्रसन्न भए तब नर हरदास संन्यासी नें बीन
ती कीनी जो महाराज मेरे ऊपर कृपा करिये तो में
प्रार्थना करत हों तब श्री आचार्यजी महाप्रभू मु
सिकायकें चुप करि रहे पाछें कहें जो कहा प्रार्थना
करत हे तब नर हरदास संन्यासी नें कह्यो जो महा
राज बेना कोठारी कों सरण लीजिये तब श्री आ
चार्यजी महाप्रभू ननें कृपा करिकें नाम सुनायो
निवेदन करवायो पाछें वे नर हरदास संन्यासी के
ऊपर बहुत प्रसन्न भए सो वे नर हरदास संन्यासी
श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भग
वदीय हे तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये॥
वार्ताप्रसंग॥१॥ वेष्णव॥७४॥ संबंध॥१४७॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेव
क गोपालदास जटाधारी श्रीनाथ
जी की षवासी करत हुते

सो श्रीनाथजी उनसों सानुभाव हुते और गरमी के दिनमें श्रीनाथजी कों भोग आवतो तब गोपालदास आप नेत्र मूंदिकें पंखा करते तब रात्रिकों श्रीनाथजी जगमोहन में पोढते तहां गोपालदास ठाडे होयकें आंषि मूंदिकें पंखा करते चारिपहर ठाडे रहते परि देह आलस कछू बाधा न करतो रात्रिके विषें श्रीठाकुरजी के श्रीस्वामीजी के बचन सुनतो तब आप श्रीमुखतें कहते जो गोपालदास आंषि षोलदेउ तेरो परदा कें सो तब गोपालदास कहते जो महाराज मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभून की आग्या नाहीं तातें में क्यों करि षोलों तब कबहू श्रीनाथजी अपने श्रीहस्तसों गोपालदास के मुखमें मेलते ऐसी कृपा करते तब ऐसें करत कितनेक दिन बीते तब एक दिन गोपालदासनें बीनती करिकें कह्यो जो महाराज मोकों प्रथ्वी परिक्रमा करिवेकी आग्या दीजिये मेरो मनोरथ प्रथ्वी परिक्रमा करिवे को है तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो अवस्य करिये पाछें गोपालदास आग्या मांगिकें प्रथ्वी परिक्रमा कों गए तब और वैस्नवननें कह्यो जो महाराज ऐसे कृपापात्र कों ऐसो

मनक्यों करहोय तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननेंकह्यो जोयह गयो तोहै परिजायसकें गोनाहीं मज़लिदो यचारिजायगो तबयाकों विरह होयगो ताविरह करिकें याकीदेह छूटेगी तबसब वैष्णवननें श्री आचार्यजी महाप्रभूनसों वीनतीकीनी जोमहाराजइनकी देह याभांतिक्यों पडे तब श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें कह्यो जोमहद अपराध इन श्रीठाकुरजी सों विगाडी ताकोनांम महद अपराध कहिये इनसों एक महद अपराध पड्यो है तासों इनकी यह गतिभई तबसब वैष्णवननें पूछो जोमहाराज इन की देह याभांति सों पडे तो सही परि महद अपराध काहे सों कहियतु है तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो यह गोपाल पहलें श्रीनाथजी के बाग की रषवारीकरतो सो एक श्री ठाकुरजीको सेवक ब्राह्मणकोलरिकाहुतो सो रात्रिकों वा बागमें तें फूल चुरायकें लेजातो सो एकदिन गोपालदासनें वाकों पकर्यो सोवह भाज्यो सो अपने मंदिर मेंदुवक्यो सो गोपालदासनेंजायकें वाकें मुक्की की मारी सो वात अब

श्रीठाकुरजीकोसुधिभई जोयाकोमहद अपरा
धपस्योहै तातेअब्बीपरिक्रमाकीइच्छाभईहै
सोगोपालदासपांचचारिमजलगयोपाछेंविर
हभयोसोविरहकरिकेंगोपालदासनेंदेहछोडी
तवयहवात श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननेंसुनी·
तब अपने श्रीमुखतेकहेंजोगोपालदासकेपर
लोकमेंतोहानिनाहीं जोयहश्रीनाथजीकेचरण
नपासपहुंच्यो तातेभगवद्दायकोसर्वथाविगाड
नकरनों भगवदीयकोविगाडकरेतोयाभांति
सोंहोय भगवदीयकेविगाडेतेगोपालदासकी
यहगतिभई वे गोपालदास श्रीआचार्यजीम
हाप्रभूनके ऐसेपरमकृपापात्रभगवदीयहे ता
तेइनकीवार्ता अबकहांतांई लिखियें॥वार्ता
प्रसंग॥१॥ वैष्णव॥ ७५॥

अबश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके
सेवककृष्णदासब्राह्मणाति
नकीवार्ता

सोवेकृष्णदासएकगांममेंरहतेपरिअस्किंचन
रहतेसोएकसमेंवैष्णवदसपंद्रहमिलिकेंश्री

आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन कों अडेल जात हुते सो जा गाम में कृष्णदास रहते ता गाम में आए सो कृष्णदास के घर आए तब कृष्णदास तो घर हुते नाहीं कछू कार्यार्थ के लीए कोस तीन ऊपर गए हुते और कृष्णदास की स्त्री घर हुती तब वा स्त्रीनें उन वैष्णवन कों साष्टांग दंडोत कीनी श्रीकृष्णस्मरन कहि बहुत आदर सन्मान करिकें अपने घर में बैठारे पाछें मन में विचारे जो अब कहा करिये तब सुधि आई जो वह बनिया नित्य टोक करत है जो तू मोसों मिलि तू मांगेगी सो दऊंगो सो आज वासों सीधो सामग्री लाऊं ऐसें विचार कें स्त्री चली सो वा बनियां की हाट पै गई तब वा बनियांनें टोकी तब वा बनियां सों स्त्रीनें कही जो में तोसों कालि मिलोंगी तू मो कों आज सो दाम चहियत है सो दे तब वा बनियांनें कह्यो जो तू मोसों कोल करे तो में मानूं तब वा स्त्रीनें वासों कोल करि दीनों तब वा स्त्री कों सीधो सामग्री चहियत हुतो सो दीनों तब लेकें घर आई तब घर आयकें रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो समयानुसार भोग

सगय अनोसर करिकें पाछें वैष्नवन कों महा
प्रसाद लिवायो तव वैष्नवननें महाप्रसाद भली
भांतिसों लीनों पाछें कृष्नदासघर आए तवसव
वैष्नवन सों मिले दंडोत करिकें भीतर गए तब
स्त्रीसों कह्यो जो कहा पधरिहै वैष्नवन कों प्रसा
द लिवाइये तव स्त्रीनें कह्यो जो प्रसाद तो लि·
वायोहै तव कृष्नदासनें कह्यो जो सीधो सा म·
ग्री कहांते लाई कहा प्रकार कीयो तव जो प्रका
र कीयो हुतो सो सव कह्यो और कह्यो जो यह व
नियां मोसों नित्य टोको करतो जो तू मोसों एक
दिन मिलि तू कहैगी सो देंऊंगो तव आजवा
सोंकोल करिकें सीधो सामग्री लाई हों तव कृ
ष्नदास वा स्त्री के ऊपर बहुत प्रसन्न भए पाछें
स्त्री पुरुष दोऊ जनेननें सीरे महाप्रसाद ली
यो पाछें कृष्नदास वैष्नवन के पास आय वै
ठे सब रीरात्र भगवद्वार्ता करत वीती जव स·
वारो भयो तव सब वैष्नव विदा होयकें चले
तव कृष्नदास थोरीसी दूर पहुंचावन गयो पा
छें आप घर आय स्नान करि श्रीठाकुरजीकों

सेवा करिकें व्याव्रत कों गए पाछें वा ऽस्त्रीनें रसो
ई करि श्रीठाकुरजी कों भोग समर्प्यो भोग सराय
ऽअनोसर करि महाप्रसाद ढांकि धर्यो तब कृस्नदा
स घर सांझ कों ऽआए तब वही सीरो महाप्रसाद दे
ऊजनेननें लीयो तब कृस्नदास ने ऽअपनी ऽस्त्री
सों कही जो तुम नें कालि वा वनियां सों कोल की
यो हुतो सो वह वनियां पेंडो देषत होयगो तातें
वा को कोल पूरो करिये तो भलो है तब वह ऽस्त्री
उवटनों करि न्हाय कें ऽस्त्री जन के सिंगार होत हैं
सो सब करिकें वह ऽस्त्री चली सो वर्षा के दिन हुते
सो मेह बरसि गयो हुतो सो मार्ग में कीच भई हुती
ताके लीए कृस्नदास नें ऽअपनी ऽस्त्री सों कही जो
तू मेरे कांधे पे बैठि ले में पहुंचाय ऽआऊं मार्ग में
कीच बहुत भई है तेरे पाय कीच में भरि जांयगे
तो वह वनियां देषिकें तेरो ऽअनादर करेगो तब
वा ऽस्त्री कों ऽअपने कांधे ऊपर चढायकें ले चले
सो वा वनियां की हाट के ऽआगें उतार दीनी त
ब वा ऽस्त्री नें वा वनियां को हेला पारिकें कह्यो
जो किवाड षोलि तब वा वनियां नें किवाड षो

लिदीने औरवा स्त्रीकोंभीतरलीनी तबवहवनि यांपायधोयवेकोंपानीलेआयो औरकह्योजो पायधोय तबवा स्त्रीनेंकह्योजोमेरेपायकीच सोंभरेनाहीं तबवा वनियांनेंकहीजोमार्गमें तोकीचवहुतभईहै औरतेरेपायकोरेकैसेंर हे तबवा स्त्रीनेंकह्योजोतू पूछिकेंकहा करेगो तू तेरोकांमकरि तबवा वनियांनेंकह्योजोयह लोवातकहीचाहिये तबवा स्त्रीनेंकह्योजोमेरो भरतारमोकोंकांधेऊपरचढायकेंलायोहै तवय हवातसुनिकेंवावनियांकोंबडोआश्चर्यभयोऔ रसबवृतांतहोसोपूछ्योजोयह कहा कारनहैसो सबमेरेआगेंकहि तबवा स्त्रीनेंजोप्रकारभयोहो सोसबकह्योसोसुनिकेंवह वनियां अपनेमनमेंधि कारकरनलाग्यो औरकह्योजोधन्यजन्मतुम्हा रो जोजिनकोएसोमन सांच्योहै औरधिकारज न्ममेरोहै तब दोऊहाथ जोरिकेंदंडोतकीनी- औरकह्योजोमेरोअपराध क्षमाकरिये और मेरेऊपर कृपाराखिये मेरीतुमबहनिहो एसें क हिवावनियांनें बहुतदुषमांन्यों पाछेंवावनि

यांनें १ स्त्री कों कपड़ा पहराय कें वाके घर पहुंचाय दीनी औौर कृष्णदास सों वा वनियां नें वहुत वी नती कीनी जो तुम मेरो अपराध क्षमा करो यह मेरी वहनि है औौर तुम मेरे पूज्य हो तव कृष्णदा सनें कही जो तेरो कहा अपराध है तू संकोच म ति करे फेरि वह वनियां कितनेक दिन पाछें श्री आ चार्यजी महाप्रभून को सेवक भयो नाम समर्पण कीयो तव वा वनियां को नाम श्री आचार्यजीम हाप्रभूननें ग्यानचंद धस्यो पाछें वह वनियां बडो भगवदीय भयो सो कृष्णदास के संगतें भयो तातें संग करनो तो भगवदीय को करनो जासों भगवद भक्ति उत्पन्न होय पाछें वह वनियां सदा कृष्णदा ससों नमत रहतो उनकी स्त्रीसों वहनि कहतो सो ऐसो संबंध राषतो सो वे कृष्णदास श्री आचार्यजीम हाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इन की वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ प्रसंग ॥ ९ ॥ वैष्णव ७६

अव श्री आचार्यजी महाप्रभूनन के सेवक संतदास चोपड़ा क्षत्री आगरे के ति नकी वार्ता है

सो वे संतदास पहलें बहुत संपतवान हुते व्योपार बहुत हुतो लाषन को व्योपार करते सो द्रव्य सब व्योपार ही में षोयो पाछें सेऊ के बजार में कोडी वेचन लागे टका २४ की पूंजी हुती सो जब ताई पैसा टाई कमावते तब ताई उहां बैठे रहते कोडीन की ढेरी पैसा की करि राषते सो गाहक पैसा धरिकें कोडीन की ढेरी ले जाते और संतदास आप पोथी बांचते मार्ग में काहू सों बोलते नांहीं भगवद रस में छकि के रहते और जो कोई भगवद भक्ति आवतो तासों बडे भगवद वार्त्ता करते और सों संभासन करते रसोई को टका एक लगावते और धेला की चवेनी आंनि धरते सो रात्रि कों वैस्नव आय के बैठते भगवद वार्त्ता कीर्तन करते सो जब चवेनी महाप्रसाद वांटि देते सो वैस्नव लेकें उठते ऐसें टाई पैसा में निर्वाह करते ऐसें करत कितनेक दिन बीते तब नारायणदास गोकुल सकेनें सुनी जो संतदास कें द्रव्य को बहुत संकोच है तातें नारायणदास नें संतदास को पत्र लिष्यो और एक मोहोरन की थेली पठाई सो हुंडी का

सिद लेकें आयो तब संत दास कों पत्र दीनों तब व
ह पत्र संत दासनें वांच्यो और तामें हुंडी ही सो
वांची तब हुंडी ही सोतो श्री गुसांईजी को पठा
ई और एक टका कासिद कों दीनों और संत
दासनें नारायणदास कों पत्र लिष्यो तामें लिष्यो
जो तुमनें हुंडी पठाई ही सोतो अडेल श्री गुसां
ईजी को पठाय दीनी और तुम्हारी प्रभुता में
हमारें एक दिन की रसोई न भई तादिन कीक
माई कासिद कों दीनी जब हुंडी पहुंची तब भंडा-
रीनें श्री गुसांईजी कों बचाई सो एकसो मुहोरन
की है सो नारायणदासनें गोड देसतें संतदास
कोंपठाई सो संत दासनें इहां पठाई है तब श्री
गुसांईजीनें कह्यो जो संतदासतो श्री आचार्यजी
महाप्रभून के बडे ही कृपापात्र भगवदीय हैं तातें बे
ष्नव कोद्रव्यकाहेकोंराषेंगे॥ वार्ता प्रसंग॥ २॥
बहुर कितनेक दिन पाछें श्री गुसांईजीनें श्री गो-
कुल वास कीयो तब संतदास उत्सव के दिन आ
गरेतें दर्शनकों आवते और श्री गुसांईजी आ
प आगरे पधारते तब संत दास के घर बिना तु

लाए पधारते आप श्री गुसांईजी श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक जानि ऐसी कृपा करते तब कितनेक दिन पाछें संतदास की देह थकी तब श्री गोकुल तें चापाभाई कों बुलायो सो चापाभाई श्री गुसांईजी की आग्या मानि कें आगरे आए तब संतदास नें चापाभाई सों कह्यो जो यह घर तुम्हारो है जानों तो कोई एक दिन स्त्री कों रहन दीजियो और जो जानो तो गहनें धरि दीजियो अथवा बेचकें दाम लेजाउ ऐसें कहिकें घर के षतपत्र चापाभाई कों सोंपि दीने तब चापाभाई षतपत्र लेकें श्री गोकुल आए तब श्री गुसांईजी सों सब समाचार कहे पाछें संतदास बहुत आसक्ति भए तब वैष्णव सब आय जुरे तब संतदास सों कह्यो जो तुम कहो तो रेणका स्थल अथवा मथुरा जहां कहो तहां ले चलें तब संतदास नें कह्यो जो मोकों कहा रेणका स्थल कृतार्थ करेगो तब वैष्णवननें कह्यो जो श्री गोकुल ले जांय तब संतदासनें कह्यो जो श्री गोकुल जाय कें कहा रज षूंदूंगो ऐसें कहिकें आगरे ही में देह छोडी

पाछें वे सब नकृत्य उहांई कीयो पाछें यह बात वै ष्नवननें श्री गुसांईंजीके आगें कही तब श्रीगुसां ईंजी अपने श्री मुख तें कहे जो वे संत दास ऐसे भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांई लिषिये वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैष्नव ॥७७॥ संबंध ॥

अब श्री आचार्यजीमहाप्रभूंनके सेवक
सुंदर दास श्रीजगन्नाथ रायजीके दसको
सपरें एक गांममें रहते तिनकी वार्ता

सो सुंदरदास उहां रहते तहां कृष्न चैतन्यको सेवक माधोदास सो उहां रहतो सो सुंदरदासकें और माधोदासकें परस्पर स्नेह बहुत हुतो सो सुंदरदास जब श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी सराहना करतो तब माधोदास कहतो जो मेरें जो कछू हे सो सब कृष्न चैतन्यको है सो जहां एक समें श्री आचार्यजीमहाप्रभू पाउधारे हुते तब सुंदरदासनें अपने घर पधराए तब श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें उहां रसोई करिकें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो पाछें भोग सरायो तब माधोदासनें थार आवत देष्यो तो पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू आप तो भोजन

करिकें पोढे तब माधोदासनें सुंदरदास सों कही जो तेरे गुरू के हाथते श्री ठाकुरजी आरोगें नांही औ रमें जो अपने ठाकुरजी कों आरोगावत हों सो तो र कछु ग्रास रहत नाही तब सुंदरदासनें श्री आचा र्यजी महाप्रभूनसों कही तब श्री आचार्यजी म- हाप्रभूननें माधोदास कों बुलाय कें पूछो तब मा- धो दासनें जो वृतांत हुतो सो सब कह्यो तब श्री आ चार्यजी महाप्रभूननें माधोदास सों कह्यो जो का ल्हि हम तेरे घर आवेंगे सो देखेंगे मेरे आगें श्री ठा कुरजी आरोगेंगे तब जानूंगो तब दूसरे दिन श्री आ चार्यजी महाप्रभू माधोदास के घर पधारे औरक ह्यो जो अब थार श्री ठाकुरजीके आगें आनि राषि तब माधोदास थार लेगयो श्री ठाकुरजीके आगें भोग धरिकें बाहिर आयो तब श्री आचार्यजी म हाप्रभू मंदिर के द्वार ऊपर बैठे रहे सो वहां एक प्रे त नित्य आयकें श्री ठाकुरजी के आगें नें षाय जातो सो वह प्रेत वाहु दिन आयो तब देषे तो श्री आचा- र्यजी महाप्रभू विराजे हैं तब वह प्रेत षिस्यानो औ र कह्यो जो राज अब कहूं भूषो रहूंगो तब श्री आचार्य

जी महाप्रभूननें कह्यो जो तेंनें अब ताई षायो सो तो
षायो परि अब न षान पावेगो तातें अब इहां सों जा
तब वह प्रेत फिरि गयो तब माधोदास भोग सराव
न गयो तब देषें तो थार जौं को त्यों भरयो हे तब मा
धोदासनें कह्यो जो तुम्हारे आगें मेरे श्री ठाकुरजी
आरोगे नाहीं ऐसे समान्य बचन बहुत बोले परि
श्री आचार्यजी महाप्रभू आप चुप करि रहे कछू
बोले नांहीं तब माधोदास रात्रिकों सोयो तब श्री-
ठाकुरजी के अनुचर आए सो बहुत मारयो औेर
षाट तें औंधो मारयो तब माधोदासनें उनसों क
ह्यो जो तुम मोकों काहे कों मारत हो तब श्रीजग
न्नाथ राय जीनें कह्यो जो तू श्री आचार्यजी महा
प्रभूनसों ऐसो समान्य बचन क्यों बोल्यो में तेरे इ
हां कब आरोगत हो जो तू भोग धरतो सो तो प्रेत षा
य जात हो आज श्री आचार्यजी महाप्रभूजी द्वार
ऊपर बैठे हुते तातें न षाय सक्यो तू उनसों क्यों
बुरो बोल्यो वे तो मेरो स्वरूप हैं तब माधोदासनें उ
नसों कह्यो जो में सवारें श्री आचार्यजी महाप्रभून
सों अपराध क्षमा कराय आऊंगो मेंनें ऐसें न जा

न्यों तब माधोदास प्रातःकाल उठिकें श्री आचा
र्यजी महाप्रभूनके पास आयो और साष्टांग दंडव
त कीनी और वीनती करिकें कह्यो जो महाराज
मेरो अपराध क्षमा करिये सो श्री आचार्यजी मह
प्रभू आपतो परम दयाल हैं तब प्रसन्न होयकें क
हें जो तेरो कहा अपराध है हम तेरे ऊपर बहुत प्र
सन्न हैं तब माधोदासनें वीनती कीनी जो महारा
ज मेरे घर पाव धारिये तब श्री आचार्यजी महाप्र
भू माधोदासके घर पाव धारे और प्रसन्न होयकें मा
धोदासकों नाम सुनायो ता पाछें माधोदासकों-
निवेदन करवायो ता पाछें श्री आचार्यजी महा
प्रभूननें माधोदासके ठाकुरकों पंचामृत सों स्ना
न करवायो ता पाछें श्री ठाकुरजी कों सिंगार करि
कें सिंघासन पाट बैठारे पाछें श्री आचार्यजी म-
हाप्रभूननें पाक करिकें भोग समर्प्यो तब समया-
नुसार भोग सराय अनोसर करिकें पाछें श्री आ-
चार्यजी महाप्रभूननें माधोदास सों कह्यो जो तूं वै
ष्णवनकों बुलाय लाउ तब माधोदासनें कह्यो जो
महाराज पांच सात वैष्णव बुलाय लाऊं तब श्री आ

चार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो पांचसात कीकहाहै जितने तेरेमनमें आवें तितने वैष्नव बुलाय लाव तब माधोदासनें श्रीमहाप्रभूजीसों कह्यो जो महाराज प्रसाद तो थोरो है और वैष्नव बहुत आवेंगे तो कैसें होयगी तब श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननें माधोदाससों यह कह्यो जो अरे तेरी भक्त लगई है प्रसाद कबहूं न घटे तेरे या गाममें जितने वैष्नव होंय सो बुलाय लाव पाछें जितने वैष्नव हे तिन सबनको बुलाय लायो तब सबनकों महाप्रसाद लिवायो तोहू वह थार भरयोहीरह्यो तब माधोदाससों श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननें कह्यो जो वैष्नवके विषें विस्वास चहिये जो भगवद्प्रसाद सदा अटूट रहै याभांति सों माधोदासकों श्रीमहाप्रभूजीनें अंगीकार कस्यो सो सुंदरदासके संगतें भयो तातें संग करनों तो भगवदीय को करनों सो वे सुंदरदास श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें इनकी वार्ता कहांताई लिखिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैष्नव ॥ ७८ ॥

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके से
वक मावजी पटेल तथा इनकी

स्त्री विरजो तिनकी वार्त्ता हैं

सो वे भावजी पटेल नथाइनकी स्त्री विरजो वरस दिन
में दोय वेर श्री गोकुल आवते श्रीनाथजीके दर्शन
कों तथा श्री गुसांईजीके दर्शनकों आवते सो श्रीगु
सांईजी इनके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते बहुत कृपा क
रते पाछें उनकों कृष्णभट्टको संग भयो तब विरजो
नें कृष्णभट्टसों कह्यो जो तुम हमारे माथें सेवा पधिरा
वो तो भलो है तब कृष्णभट्टनें श्रीगुसांईजीसों वीन
ती करिकें कह्यो और उनके माथें सेवा पधिराई सो
श्रीगुसांईजीनें श्रीठाकुरजीको पाट बैठास्यो सो स्ने
ह पूर्वक सेवा करते सामग्री भली भांतिसों करते श्री
महाप्रभूजीके सेवक दस कोसके ऊपर रहते तिनको
प्रसाद लिवावते ऐसें भली भांतिसों सेवा करी कृष्ण
भट्ट आदि देकें करी ॥ वार्त्ता प्रसंग ॥ १ ॥ और एक
समें वैष्णव सब प्रसाद लेनकों उत्सवके दिन बैठे हु
ते तब विरजोनें वैष्णवनकों अनसखड़ी महाप्रसा
द परोस्यो तब विरजोनें कृष्णभट्टसों वीनती कीनी
जो मोकों ऐसो मनोरथ है जो सब वैष्णव मंडलीवे
ठी होय और में सखडी महाप्रसाद सबनकों लि

वाकूं तब कृष्णभट्टनें कह्यो जो यह मनोरथ है सो तो भ
क्तिभावसों होय परि यह द्रव्यसाध्य है तब विरजोनें पू
छी जो द्रव्यसाध्य सो कहा ताको अर्थ मोकों समझाय
कें कहो तब कृष्णभट्टनें कह्यो जो यह वैष्णवमंडली ले
कें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के पास जैये पाछें श्रीगुसां
ईजी आज्ञा देंय सो करिये जो श्रीगुसांईजी आज्ञा
देंय तो सखड़ी महाप्रसाद लीयो जाय तातें यह द्रव्य
साध्य है जो मार्गमें सब खरच करिये और वैष्णवनकी
आज्ञा लेंनों तब विरजोनें मावजी पटेलसों कह्यो जो
मोकों यह मनोरथ है सो मनोरथकी यो चाहिये तब
मावजी पटेलनें कह्यो जो मेरे पास द्वै लक्ष मुद्रा हैं इ
नसों काम होय तो भलें ई करिये तब कृष्णभट्टनें क
ह्यो जो इनसों काम अवस्य होयगो आपन श्रीगुसां-
ईजी पास चलें तब श्रीगुसांईजी आज्ञा देंय सो क
रिये सो मावजीकी गांठिमें द्रव्य बहुत हुतो सो सब
लेकें उज्जेन आए पाछें कृष्णभट्टनें वैष्णव सब इक
ठोरे करिकें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी के दर्शनकों
आए सो श्रीगोकुल आयकें श्रीगुसांईजी के दर्श
न कीए पाछें कृष्णभट्टनें श्रीगुसांईजीसों वीनती-

कीनीजोमहाराजविरजोको ऐसोंमनोरथहैजोसख
डीमहाप्रसादमेरेहाथसोंसववैष्नवनकीमंडलीवै
ठीहोय तिनकों में परोसों तब श्रीगुसांईजीनें कही
जो यह मनोरथतोपुरुषोत्तमक्षेत्र विनान होय तब स
ब वैष्नवनकीमंडलीलेकेंविरजोचलीश्रीजगन्ना-
थरायजीकूं सोकितनेकदिनमेंजाय पहुंची तब श्रीज
गन्नाथजीकेदर्शनकीयापाछें जोमनोरथहुतो सो
सवनानाप्रकारकीसामग्रीकरवायकें श्रीजगन्नाथ
रायजीकों भोगसमर्प्यो पाछें वह प्रसाद सखडी अन
सखडी सव वैष्नवनकों विरजोने अपने हाथसों-
परोसिकें लिवायो विरजोनें सव मनोरथ पूरन की-
यो पाछें विरजो उहांकछुक दिन रहिके सव वैष्न
वनसहित श्री गोकुल आई तब श्री गुसांईजी-
को दर्शन कीयो दंडोत कीनी तापाछें जो वात क
रीसो सव श्री गुसांईजीके आगें कही पाछें और
जोद्रव्य बचोसोसब श्री गुसांईजी की भेटकीनों
तब श्री गुसांईजी विरजोकोभाव देषिकें वाके
ऊपर बहुत प्रसन्न भए पाछें सव वैष्नवनकोंम
हाप्रसाद लिवायो तव श्रीगुसांईजीने आप प्रसाद

लीयो तापाछें विरजो तथासब वैष्णव श्रीगुसांई
जीके साथ श्रीनाथजीद्वार आए तब श्रीनाथ-
जीके दर्शन कीए तब विरजो तथा श्रीगुसांईजीस
ब वैष्णव श्रीनाथजी तें विदा होयकें अपने देसकों
गए वह विरजो ऐसी भगवदीय ही ॥ वार्ताप्रसंग
॥२॥ और विरजो बरस दिन में दोयवेर श्रीगोकुल
आवती तब एक गाडातो गुड कोभरिलावती औ
र एकगाडा घृत कोभरिलावती सो एक महीनालों
रहती तामें १५ दिनतो श्रीगोकुल रहती और १५
दिन श्रीनाथजीद्वार रहती या भांत्ति सों विरजो रह
ती तब सामग्री करिकें भोग समर्पि भोगसरायकें
सब वांकि धरे जब गायन के ग्वाल आवते तब महा
प्रसाद दूध अंगीकार करते और षिरकेमें लिवा
वती और आवती जब दो रूप धरावनी करती सो
वह विरजो ऐसी भगवदीय ही सो ए वा रावल के
संगते तातें संग करनों तो भगवदीयको करनों
सो इन की वार्ता को पार नांही तातें अब कहां-
तांई लिषिये ॥ वार्ताप्रसंग ॥३॥ संबंध ॥१५५॥
अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के

सेवक गोपालदास रेडामें रहते
तिन की वार्त्ता

सो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें उनकों आज्ञा दी नी हुती जो तुम सबन कों नाम दीजियो ताते वे गोपालदास नाम देते सो एक समें श्री आचार्य जी रेडा में पधारे हुते तब गोपालदास तो घर न हुते गोपालदास के बेटा घर हुते गोपालदास कहूं व्यासक्ति कों गए हुते तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें गोपालदास के बेटान सों पूछो जो गोपाल दास कहां गए हैं तव गोपालदास के बेटा ननें कह्यो जो कछू श्री ठाकुरजी के काम गयो है तव यह सुनि कें श्री आचार्यजी महाप्रभून को मन अप्रसन्न भयो जो गोपालदास के बेटा ऐसें कैसें बोलतहैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो ये कैसे वैष्णव हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभून नें कह्यो जो इहां रहनों उचित नाहीं हैं तव फिरि अपने मनमें विचारें जो गोपालदास कों तो आवन दीजिये वह कैसें बोलतहैं तव पाछें संध्यासमें गोपाल-दास आए तव गोपालदासनें श्री आचार्यजी महा

प्रभूनकोदर्शनकीयो तवगोपालदाससोंश्रीआ
चार्यजी महाप्रभूननेंपूछो जोगोपालदास तुमक
हांगएहुते तबगोपालदासनेंकही जोमहाराज पे
टलाग्योहै तातेंव्याहृतिकोंगयोहुतो तबयहसुनि
कैंगोपालदासकेऊपर वहुत प्रसन्नभए औरआ
पश्रीमुषसोंकहें जोयह वैष्नव कोलक्षणहै जोव्या
हृतिमें श्रीठाकुरजी कोनांम नलेय ॥ वार्ताप्रसंग॥
१॥ औरएकसमें गोपालदास श्री नाथजीकेदर्श
नकों आए सोसाथएकसेवकहुतो तहांज्वरचढि
आयो सोलंघन हैचारिकीए तब रात्रकोंगोपा-
लदासकों प्यासलागी सोवा सेवक के पास जल-
मांग्यो सो सेवकतो सोयोहुतो सोसेवकनेंतोसुनी
नहुती तब श्रीठाकुरजीजलपांन की झारीलेकेंआ
ए सो गोपालदासकोंजल पिवायो औरवहझारी
उहांईधरिआए श्रीनाथजी कोहृदो अतिकोम
लहै तातें भक्तिकी आर्तिसहिनसके ॥ वार्ताप्रसंग
॥२॥ औरएकसमें गोपाल दासनेंचोषराविरहकरि
कैंगायो सोचोषरा वे की सिषंडी स्यामघन सखी
कंठमनोहर हार धन्यदिनजेनोंदेषसूंनयननंद

कुमार १ ऐसे चोषरावकृतकीए॥ वार्ताप्रसंग॥३॥
और एकसमें श्रीगुसांईजी आपरेडामेंपधारे त
बवाहिरडेराकीएहुते पाछेंजबगोपालदासउस्था
पनकेसमें श्रीगुसांईजीकेदर्शनकों आए तबद्वैवै
ष्णवननें कह्यो जो हमकों श्रीगुसांईजीकेपासनां
मदिवावो तबगोपालदासनेंकह्यो जो हमनांमदे
तेहैं सोनाम श्रीगुसांईजीदेतहैं तातें तुमकोंघरच
लिकें नांमदेंयगें परिउन वैष्णवनको मन श्रीगुसां
ईजी पासनांमपायवेकों सो तीनिवेर उन वैष्णवन
नेंकह्यो सोतीनोंवार गोपालदासनें वैसेंहीकह्यो
जो तुमकोंघरचलिकेंनांमदेंयगें सोयह बात श्रीगु
सांईजीनें अपनेकांननसोंसुनी पाछें उनवैष्णवन
सों श्रीगुसांईजीनेंकही जोतुम कहा कहतहो तब
उनवैष्णवननेंकह्योजो महाराज हमकों नामदीजि
ये तब श्रीगुसांईजीनें उनकों नामसुनायो उनकों
कृतार्थकरे पाछे गोपालदाससुं श्रीगुसांईजीनें
कहीजो गोपालदास तुम्हारो अंगीकार श्रीआ
चार्यजी महाप्रभूननेंकीयोहै सोतोदृढभयोहैप
रिजितने तुम्हारे पास नांम पाएहैं सोतो हमारेकव

हून होयगे सो श्रीगुसांईजी नें क्षोभ करिकें गोपाल दास सों कह्यो पाछें गोपालदास नें जितनेन कों नाम दीयो हुतो तिन सबन कों फिरि कें श्रीगुसांईजी के पास नाम दिवायो तब वे सर्व कृतार्थ भए तिनसों श्रीगुसांईजी गं गोज्व कहते उन गोपालदास कों स्वामित्व आयो तातें इन जीवन को अकाज भयो तातें वे गोपालदास श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हे सो इन की वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वैष्णव ॥ ८० ॥ संबंध

अब श्री आचार्यजी महाप्रभून के
सेवक सूरदासजी गऊघाट ऊपर
रहते तिनकी वार्ता हे

सो एक समें श्री आचार्यजी महाप्रभू अडेल तें व्रज कों पाव धारे सो कितेक दिन में गऊघाट आए सो गऊघाट आगरे के और मथुरा के बीचाबीच हे तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू पांव धारे सो गऊघाट ऊपर श्री आचार्यजी महाप्रभू उतरे तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू आप स्नान करिकें संध्यावंदन करिकें पाक करन कों बेठे और श्री आचार्यजी मह

प्रभूनकेसेवकनकोसमाजबहुतहुतो औरसेवक
हू अपने अपने श्रीठाकुरजीकीरसोईकरनला
गे सोगऊघाटऊपरसूरदासजीकोस्थलहुतोसो
सूरदासजीस्वामीहें आपसेवककरते सूरदासजीभ
गवदीयहें गांनवहुत आछोकरते तातें बहुतलो
ग सूरदासजीके सेवक भएहुते सो श्रीआचार्यजी
महाप्रभू गऊघाटऊपर उतरे सोसूरदासजीकेसे
वक देषिकें सूरदासजीसोंजायकहीजो आजश्री
आचार्यजी महाप्रभू आपपधारेहें जिननेंदक्ष
णमेंदिग्विजेकीयोहो सबपंडितनकोंजीतेंहेंभ
क्तिमार्गस्थापनकीयोहो सो श्रीवल्लभाचार्यजी
यहांपधारेहें तबसूरदासजीनें अपनेसेवकनसों
कह्योजोतूजायकें दूरिवेठिजव आपभोजनकरिकें
बिराजें तबषवरिकरियो हम श्री आचार्यजीमहा
प्रभूनकेदर्शनकोंजायगे सोवह तनकदूरिजाय
वैठो तब श्री आचार्यजीमहाप्रभू आपपाकक
रतहेंसोपाकसिद्धिभयो तबश्रीठाकुरजीकोंभोगस
मर्प्यो पाछें समयानुसार भोगसराय अनोंसर क
रिकें महाप्रसादलेकें श्री आचार्यजीमहाप्रभू

गादीऊपरविराजे तहांसबसेवककछुपछुचिकें श्री
आचार्य जीमहाप्रभूनके आस पास आयवैठे
तव वहसूरदासकोसेवक आयो सोसूरदाससों
कही जोश्रीआचार्यजीमहाप्रभू विराजेहैं तवसू
रदास अपनेस्थलतें आयकें श्रीआचार्यजीम
हाप्रभूनकेदर्शनकोंआए तबश्रीआचार्यजीम
हाप्रभूननेंकह्यों जोसूरआवोवैठो तबसूरदास
जी श्री आचार्यजीमहाप्रभूनकोदर्शनकरिकेंआ
गें आयवैठे तबश्रीआचार्यजीमहाप्रभूननेंकह्यो
जोसूरकछूभगवदजसवर्णनकरो तब सूरदासनें
कही जो आग्या सो सूरदासनें श्री आचार्यजीम
हाप्रभूनके आगें एकपदगायो सोपद॥रागधना
सरी॥ होहरिसबपतितनकोनायक॥ कोकरिस
केंबराबरि मेरीइतेमानकोलायक॥१॥ जोतुम
अजामेलसोंकीनीजो पाती लिषिपाऊं॥ हो
यबिसासभलोजियअपने औरपतितबुलाऊं
॥२॥ सिमिटजहांतहांतेंसबकोऊआयजुरेइक
ठोर॥ अबकें इतनें आनिमिलाऊं बेरदूसरीओ
र॥३॥ होडाहोडीमनहुलासकरिकरेपापभरि

पेट ॥ सबहिन लै पांयन तरि परिहों यहे हमारी भेट ॥ ४ ॥ ऐसी कितनी कवनाऊं थांनपति सुमिरन हे भयो आडो ॥ अबकी बेर निबार लेउ प्रभू सूरपतित को टांडो ॥ ५ ॥ और पद गायो ॥ राग धनासरी प्रभू में सब पतितन कोटी कों ॥ और पतित सब द्योस चारि के में तो जन्मत ही को ॥ १ ॥ बधिक अजामिलि गनिका तारी और पूतना ही को ॥ मोहि छांडि तुम और उधारे मिटे सूलि के सें जी को ॥ २ ॥ कोऊ न समरथ सेवकरन कों षेंचि कहत हों लीको ॥ मरियत लाज सूर पतितन में कहत सबन में नीको ३ ऐसो पद श्री आचार्यजी महाप्रभूनके आगें सूरदास जी ने गायो सो सुनिकें श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो सूर हे कें एसो घिघियात काहेकों हे कछू भगवद्लीला बर्णन करि तब सूरदास नें कह्यो जो महाराज हों तो समझत नाहीं तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो जा स्नांन करि आउ हम तो कों समझावेंगे तब सूरदासजी स्नांन करि आए तब श्री महाप्रभूजीनें प्रथम सूरदास कों नांम सुनायो पाछें समर्पण करवायो औ

र दसमस्कंधकी अनुक्रमणिका कही सोताते
सब दोष दूरि भए ताते सूरदासजी कों नंदधाभ
क्तिसिद्धि भई तब सूरदासजीनें भगवद् लीला
वर्णन करी अनुक्रमणिका ते संपूरणलीला
फुरी सो क्यों जानिये जो दसमस्कंधकी सुबोध
नीजी में मंगलाचरण को प्रथम कारिका कीए हैं
सो यह श्लोक सूरदासजी नें कह्यो सो श्लोक ॥ न
मामि हृदये सेषेली लाक्षराब्धिसायिनं ॥ लक्ष्मी
सहस्रलीलाभीः सेव्यमानं कलानिधि ॥ १ ॥ औ
रताही समें श्रीमहाप्रभून के सन्निधान पद की
ए सो पद ॥ राग बिलावल ॥ चकई री चलि चर-
ण सरोवरि जहां न प्रेम वियोग ॥ यह पद संपूर
ण करिकें सूरदासजी नें गायो ॥ सो यह पद दस
मस्कंध मंगलाचरण की कारिका के अनुसार की
यो सो या में कह्यो है जो तहां श्री सहस्रसहित नित
क्रीडत सोभित सूरदास या भांति पद कीए ताते-
जानी जो सूरदास कों संपूरण सुबोधनी स्फुरी सो
श्री आचार्यजी महाप्रभूननें जान्यों जो लीला कों
अभ्यास भयो पाछें सूरदासजी ने नंदमहोत्सव

कीयो सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनके आगेंगायो
सोपद ॥ रागदेवगंधार ॥ व्रजभयो महरिकें पूतज
व यह बातसुनी ॥ सोयह श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के आगें गायो सोसुनिकें श्री आचार्यजीमहाप्र
भू बहुत प्रसन्नभए और अपने श्री मुखतें कहेंजो
सूरदास मांनों निकट हीहुते ॥ पाछें सूरदासजीनें
अपनेसेवककीएहुते तिनसवनकों नांमदिवायोपा
छें सूरदासजीनें बहुत पदकीए पाछें श्री आचार्य
जी महाप्रभूननें सूरदासजीकों पुरुषोत्तम सहस्त्र
नांमसुनायो तबसूरदासजीकों संपूरणभागवत
स्फुर्तनाभई पाछें जोपद कीए सो श्री भागवतग्रंथ
मस्कंधतेद्वादश स्कंध पर्यंतकीए तातें वे सूरदास
जी श्री महाप्रभूनके ऐसे परमभगवदीयहे पाछें
श्री आचार्यजी महाप्रभू गऊघाटऊपर दिनकेयती
निविराजे पाछें फेरिव्रजकों पाव धारे तबसूरदा
सजीहू श्री आचार्यजी महाप्रभूनके साथव्रजकों
आए ॥ वार्ताप्रसंग ॥ २ ॥ अबजो श्री आचार्यजीम
हाप्रभू व्रजकों पाव धारे सोप्रथम श्री गोकुलपधा
रे तब श्री आचार्यजी महाप्रभूनकेसाथसूरदा

सजीहू आए तब श्रीमहाप्रभूजी अपने श्रीमुष
सोंकह्यो जो सूरदास श्री गोकुलकोदर्शनकरोसोसू
रदासनें श्रीगोकुलकोंदंडवत करी सोदंडवतकर
तमात्रश्री गोकुलकी वाललीलासूरदासजीकेह
देमें फुरी और सूरदासजीकेहदेमें प्रथम श्रीमहा
प्रभूननें सकललीला श्रीभगवत कीस्थापीहैतातें
दर्शनकरतमात्रसूरदासजीकों श्री गोकुलकीवा
ललीलास्फुर्दनाभई तवसूरदासजीनेंमनमेंविचा
र्यो जो श्री गोकुलकी बाललीलाकोवरणनकरिकें
श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके आगें सुनाईये जन्म
लीलाकोपदतोप्रथमसुनायोहै अवश्री गोकुलकी
वाललीलाकोपदगायोसोपद ॥ रागविलावल॥
सोभितकरनवनीतलियें। घुटुरुवनचलतरेणत
नमंडितमुखलेपकियें ॥१॥ चारुकपोललोलल
चन छविगोरोचनकोतिलकदियें ॥लारलटकन
मानोमत्तमधुपगनमाधुरीमधुरपियें ॥२॥ कठु
लाकंठवज्रकेहरिनष राजत हैंसखीरुचिहियें। धं
न्यसूरएकोपलपहसुषकहाभयोसतकलपजि
यें ॥३॥ यहपदसूरदासनें गायो सोसुनिकें आप

वहुत प्रसन्नभए याछें ऋौरहूं पदगाए तव श्रीमहाप्र भूजी ऋपने मनमें विचारें जो श्रीनाथजी के इहां ऋौर तोसव सेवाको मंडांनभयोहे॥ ऋौरकीर्तनकोमंडांन नाहींकीयोहे तातें ऋवसूरदासजीकोदीजिये तवआप श्रीजीद्वारपधारे सोसूरदासजीकोंसाथलीएहींसो श्रीनाथजीद्वारजायपहुंचे तव ऋाप स्नांनकरिकेमं दिरमेंपधारे तव सूरदासजीसोंकह्यो जो सूरदास कप र ऋाउ स्नांनकरिकें श्रीनाथजीकोंदर्शनकरित वसूरदासपर्वत ऊपरजायकें श्रीनाथजीकोदर्शन कीयो तव ऋापनें कह्यो जो सूरदासकछू श्रीनाथजी कोंसुनावो तवसूरदासनें प्रथम विग्यप्त कोपद गा योसोपद।।रागधनासरी॥ ऋवहोंनाच्यो वहुतगुपा ल॥ यह पद संपूरणकरिकें श्रीनाथजी के ऋागेंगा यो तव श्री महाप्रभूजीनेंकह्यो जोसूरदास ऋव तो तुममें कछू ऋविद्या रहीनाहीं तुम्हारी ऋविद्या तो प्रभूननें दूरिकीनी तातें कछू भगवदजसवर्ण न करो तवसूरदासनें महात्म ऋौरलीलाऐसो ज स करिकें गायसुनायोसोपद।।रागगोरी॥ कोंनसु कृत इन बृजवासिनकोयह पद संपूरणकरिकें गा

यो सो सुनिकें श्रीमहाप्रभूजी बहुत प्रसन्न भए सो जे
सो श्री आचार्यजी महाप्रभून नें मार्ग प्रकास कीयो
है ताके अनुसार सूरदासजी नें पद कीए श्री आचा
र्यजी महाप्रभून के मार्ग को कहा स्वरूप है महात्म
ग्यांन पूरवक सुद्दढ स्नेह की तो परम काष्टा है और
स्नेह आगें भगवांन को महात्म रहत नांही तातें भग
वांन बेर बेर महात्मजनावत हैं नाम प्रकरन में पू
तना करि सकट त्रनावृत करि गर्गाचार्य करि यम
लार्ज्जुन करि वैकुंठ दर्शन करि ऐसें करिकें भगवां
न के बहुत महात्म जताए परि इन ब्रजभक्तन को स्ने
ह परम काष्टापन्न है तातें ताही स में तो महात्म रहै य
हूं विस्मरत होय जाय ॥ वार्त्ताप्रसंग ॥ २ ॥ और सूरदा
सजी नें सहस्त्रावि धि पद कीए हैं ताको सागर कहि
ये सो सब जगत में प्रसिद्द भए सो सूरदासजी के पद
देसाधित नें सुने सो सुनिकें यह विचारी जो सूरदास
जी काहू रीति सों मिलें तो भलो सो भगवद् इच्छा तें
सूरदासजी मिले सो सूरदासजी सों कह्यो देसाधित-
नें जो सूरदासजी में सुन्यो है जो तुम नें विसन पद ब
हुत कीए हैं जो मो कों पन में स्वरनें राज दीयो है सो

सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं तातें तुमहूं कछू गावो तब सूरदासजीनें देसाधिपतके आगें कीर्तन गायो सो पद ॥ राग विलावल ॥ मनारे तू करि माधो सों प्रीति ॥ यह पद देसाधिपतके आगें संपूरण करिकें सूरदासजीनें गायो सो यह पद कैसो है जो या पदको अहर्निस ध्यान रहे तो भगवद अनुग्रहकी सदा स्फुर्ति रहे और संसारते सदा वैराग्य रहे और कुसंगको सदा भय रहे और भगवदीयके संगकी सदा चाह रहे और श्रीठाकुरजीके चरणारविंदऊपर सदा स्नेह रहे देहाधिक ऊपर आसक्ति न होय ऐसो पद देसाधिपतकों सुनायो सो सुनिकें देसाधिपत बहुत प्रसन्न भयो और कह्यो जो सूरदासजी मोकों परमेस्वरनें राज दीनों है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं तातें मेरो जस कछू गावो तब सूरदासजीनें यह पद गायो सो पद ॥ राग केदारा ॥ नाहिं न रह्यो मनमें ठोर ॥ यह पद संपूरण करिकें सूरदासजीनें गायो सो सुनिकें देसाधिपत अकबर पात्साह अपने मनमें विचार्यो जो ये मेरो जस काहेकों गावेंगे जो इनकों मेरो काहू बातको लाल-

चहोयतो गावें येतो परमेस्वर के जन हैं और सूर
दासजीनें यापद के समाज में गायो हो जो सूरदा
से दर्स कों एमरत लोचन प्यास यह गायो हो सो
देसाधिपत नें पूछो जो सूरदासजी तुम्हारे लोच
न तो देषियत नाहीं सो प्यासे कैसें मरत हैं और
बिन देषें तुम उपमा कों देत हो सो तुम कैसें देत हो
तब सूरदासजी कछू बोले नाहीं तब फेरि देसाधि·
पत बोल्यो जो इन के लोचन हैं सो तो परमेस्वर के
पास हैं सो उहां देषत हैं सो वरनन करत हैं तब देसा
धिपत नें सूरदासजी के समाधान की मन में विचा-
री जो इन कों कछू दीयो चहिये परि ये तो भगवदी
य हैं इन कों काहू बात की इच्छा नाहीं पाछें सूर दा·
सजी देसाधिपत सों विदा होय कें श्रीनाथजीद्वार
आए ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३॥ एक समें सूरदासजी मार्ग
में चले जात हे सो कोऊ चौपड षेलत हे सो वा चौप
डु के षेल में ऐसे लीन हे जो कोऊ आवते जाते की
सुधि नाही ऐसे षेल में मग्न हे सो देषि कें सूरदास
जी के संग भगवदीय हे तिन सों सूरदासजी नें क-
ह्यो जो देषो वृह शानी कैसे अपनों जन्म खोवत हैं

भगवाननेंतो मनुष्यदेहदीनी है सोतो अपनी सेवा भजनके लीएदीनी है सो येतो यादेह सों हाड कूटें हैं याभें यहलौकिकसिद्ध नाहि सो काहेतेंजो यालोक मेंतो अपजस औरपरलोक मेंभगवान नेवहिर्मुषताताते श्रीठाकुरजीनें इनकोंमनुष्यदेहदीनीहैतिन कोंचौपड एसी षेलनीचाहियेसोतासमें एकपद सूरदासजीनें अपनेसंगकेन सों कह्यो सोपद ॥ रागकेदारो ॥ मनतू समभि सोच विचारि ॥ भक्त विन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकारि ॥ १ ॥ साधसंगति डार फासाफेरि रसना सारि ॥ दाव अव कें परयोपूरो उतरि पहलीपारि २ ॥ वाकसत्रेसुनि अठारेपंचहीकोंमारि ॥ दूरितें तजितीनकानें चमकिचोकिविचारि ॥ ३ ॥ कामक्रोधजंजालभूल्योठग्योठगनीनारि ॥ सूरहरिकेपद भजनविनुचल्योदोऊकरिझारि ॥ ४ ॥ यहपद सूरदासजी अपनेसंगकेभगवदीयन सों कह्यो सो यापदमें सूरदासजीनें कहाकह्यो मनतू समभि सोचविचारि ये तीन्योंवस्तचोपडमेंचहिये सोई तीनोंवस्तभगवानकेभजनमेंचहिये काहितें

जोसमभिनहोय तो श्रवणकहाकरेगो तातें पहले तोसमभिचहिये औरसोच कहें चिंतासोभगवान के प्राप्ति की चिंतानहोय तोसंसारऊपर वैराग्य कैसें आवै तातेंसोचचहिये और विचार जोया जीवकों विचारही नहीं तो संग कुसंग में कहाकरेगो तातें विचार चहियेसोयेतीन्योंवस्तहें यतो भगवदीयहोय तातें येतीन्योंवस्तभगवदीयकों अवश्यचहिये औरचोपड में हू येतीन्योंवस्त चहिये समभिकहें गनिवोन आवै तो गोट कैसें चलै औरसोच अगमजो मेरें यह दाव पडे तोयह गोटचलूं विचारजो वाहीमेंतन्मनजोयेतीन्योंवस्त होयतो चोपड षेलीजाय सोवे सूरदास जी श्री आचार्यजीमहाप्रभून के ऐसे परमभगवदीयहें ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ बहुरि सूरदास जी श्री नाथजी द्वार आयकें बहुत दिनतांई श्री नाथजी कीसेवा कीनी बीचबीच में श्री गोकुल श्री नवनीतप्रियाजी के दर्शनकों आवते सोएक समें सूरदासजी श्री गोकुल आए श्रीनवनीतप्रियजी के दर्शन कीए और बाललीला के पद बहुत

सुनाए सो श्री गुसांईजी सुनिकें बहुत प्रसन्न भए पा
छें श्री गुसांईजी नें एक पालना संस्कृत में कीयो सो
पालना सूरदासजी कों सिखायो सो पालना सूर-
दासजी नें श्री नवनीतप्रियाजी झूलत हुते तास
में गायो सो पद ॥ राग रामकली ॥ प्रेष पर्यंक स-
यनं ॥ यह पद सूरदासजी नें संपूरण करिकें गा
य सुनायो श्री नवनीतप्रियाजी कों पाछें या पद
के भाव के अनुसार बहुत पद कीए सो सुनि कें-
श्री गुसांईजी बहुत प्रसन्न भए पालना के भाव
अनुसार पद गाये सो पद ॥ राग विलावल ॥ बाल
विनोद आंगन में की डोलनि ॥ मणिमय भूमि सु
भग नंदालय बलि बलि गई तोतरी बोलनि ॥१॥
कठुला कंठ रुचिर केहरि नख ब्रज माल बहुलई
अमोलनि ॥ वदन सरोज तिलक गोरोचन लरल
टकनि मधुप गन लोलनि ॥२॥ लोंन्यों कर प्रस
त आंनन पर कछू खाय कछू लग्यो कपोलनि
कैहे जन सूर कहां लों वरनों धंन्य नंदजीवन जग-
तोलनि ॥३॥ गोपाल दुरे हैं मांखन खात ॥ देखि
सखी सोभा जु वढी अति स्यांम मनोहर गात ॥१॥

उरि अवलोक ओटढाढीहैजिहिविधिनहिलष-
लेत। चत्रतनेंनचहूंदिसिचितवत औरसबनकों
देत ॥२॥ सुंदरकरआंननसमीपहरिराजतयह
अकार। जनुजलरुहतजिवेरविधिसोंलीऐंमिल
तउपहार॥३॥ गिरिगिरिपरतवदनतेंऊपरहैदद
धिसुतकेंविंदु॥ मांनहुसुधाकनषोरवतपियज-
नदहु॥४॥वालविनोदबिलोकसूरप्रभुवितभई
व्रजकीनारि॥फुरतनबचनवरजिवेकोमनरहीं
विचारिविचारि॥५॥रागजैतश्री॥कहांलगिब
रनोंसुंदरताई॥षेलतकुमरकतिकआंगनमेंने
ननिरषसुषपाई॥कुलहैलसतस्यामसुंदरकें
बहुविधिरंगविबनाई॥मानहुनवधनऊपरराे
जतमधुवाधनुषचढाई॥२॥सेतपीतअरुअसि
तलालमणिलटकनभालरुराई॥मानहुअ
सुरदेवगुरुसोमिलिभूमिजसोसमुदाई॥३॥अ
तिसुदेसम्रदुचिहुरहरतमनमोहनमुषवगराई
मानहुमंजुलकंजऊपरवरअलिआवलिफि
रिआई॥दूधदंतछविकहीनजातकछुअलिपल
लपकलकाई॥किलकतहंसतदुरितप्रगटतमानों

विंधुमेंविपुलताई ॥ ५॥ षंडित बचन देत पूरन सुष अ
द्भुत यह उपमाई ॥ घुटुरनु चलत उठत प्रमुदित मन सू
रदास बलिजाई ॥ ६॥ रागरामकली ॥ देषो सखी एक अ
द्भुत रूप ॥ एक अंबुजमध्य देखियत बीस दधिसुत-
जूप ॥ १॥ एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनू
प ॥ पंचवार चढि गहि देषियत कहो कहा स्वरूप २
सिसुगन में भई सोभा करो को कविचार ॥ सूर श्रीगो
पाल की छवि राषो यह निरधार ॥ २॥ ऐसे पद सूरदा
सजीने गाए॥ पाछें फेरि श्रीनाथजीद्वार आए॥ वार्ता
प्रसंग॥ ५॥ अब सूरदासजीनें श्रीनाथजाकी सेवा
बहुत कीनी बहुत दिनतांई ता उपरांत भगवद् इ
च्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायबे की है
यह विचारि कें जो नित्य लीला फलात्मक रास ली-
ला जो जहां करे हें ऐसी जो परासोली तहां सूरदा
सजी आए श्रीनाथजी की ध्वजा कों दंडोत करि
कें ध्वजा के साम्हें सन्मुष करि कें सूरदासजी सोए
परि अंत: करन में यह जो श्री आचार्यजी महाप्र
भू दर्शन दें यगे अब यह देह तो थकी तातें अ
ब या देह सों श्रीनाथजी को दर्शन होय तो जानि

यें परम भाग्य हे श्री गुसांईजी को नाम कृपासिं
धुहै भक्तन के मनोरथ पूरन करता हे ऐसे विचा
रि कें सूरदासजी श्री गुसांईजी को चिंतवन कर
तहैं और श्री गुसांईजी कैसे कृपासिंधुहै जैसें सू
रदासजी उहां स्मरन करत हे तेसें श्री गुसांईजी
इनकों छिन हू नाहि भूलतहें श्रीनाथजी को सिं
गार होतो तासमें सूरदासजी मणिकोठामें ठाडे थ
कीर्तनकरतेसो तादिनश्रीगुसांईजी श्रीनाथजी को सिंगा
र करत हुते और सूरदासजी कों कीर्तन करतन
देषे तब श्री गुसांईजी ने पूछो सूरदासजी नाहीं
देषियत सो काहेतें तव काहू वैष्णव ने कह्यो जो महा
राज सूरदासजी तो आज परासोली की ओडी जात
देषेहे तब श्री गुसांईजी नें जान्यों जो भगवद इच्छा
ते अब सानसमें हे तातें सूरदासजी परासोली गए
हैं तब श्री गुसांईजी नें अपने सेवकन सों कह्यो
जो पुष्टिमार्ग को जिहाज जातहै जाकों कछू लेनों
होय सो लेउ और जो भगवद इच्छा ते राजभोगआ
रती पाछें रहत हैं तो मेंहू आवत हों पाछें श्री गुसां
ईजी बेर बेर सूरदासजी की षबर मगायो करे जो

आवे सोई कहे जो महाराज सूरदासजी तो अचेतहें कछू बोलत नाहीं ऐसें करत श्रीनाथजीकें राजभोग को समय भयो सो राजभोग आरती करिकें श्रीगुसांईजी श्रीगिरराज ते नीचें उतरे सो आप परासोली पधारे भीतर के सेवक रामदासजी प्रभ्रत और कुंभनदासजी और श्रीगुसांईजी के सेवक गोविंद स्वामी चत्रभुजदास प्रभ्रत और सब श्रीगुसांईजीके साथ आए सो आवतही सूरदासजी सों श्रीगुसांईजीनें पूछो जो सूरदासजी कैसें हो तब सूरदासजीनें श्रीगुसांईजीकों दंडोत करिकें कह्यो जो महाराज आए हो महाराजकी बाट देषत हुतो यह कहिकें सूरदासजीनें एक पद कह्यो सो पद ॥ राग सारंग ॥ देषो देषो हरिजू को एक सुभाय ॥ अति गंभीर उदार उदधि प्रभु जांनि सिरोमनराय ॥१॥ राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समांन ॥ समझि दास अपराधि सिंधु सम बूंद न एको जांनि ॥२॥ वदन प्रसन्न कमलपद सनमुष देषतहीं हैं ऐसे ॥ ऐसे विमुष हु भए कृपा या मुषकी जब देषो तब तैसे ॥३॥ भक्त-

विरहकरतकरुणामयडोलतपाछेंलागे ॥सूरदास
ऐसेप्रभूकोंकतदीजैपीठअभागे ॥४॥ यहपदसू
रदासजीनेंकह्योसोसुनिकेंश्रीगुसांईजीबहुतप्र
सन्नभए औरकह्योजोऐसोदैन्यप्रभू अपनेसे
वकनकोंदेहियादैन्यकेपात्रएहीहैं तबवावेर
श्रीगुसांईजीकेपासठाडेहुते औरचत्रभुजदा
सहू ठाडेहुतेतवचत्रभुजदासनें कह्योजोसूरदा
सजीनें बहुत भगवद्जसवर्णनकीयोपरिश्रीआ
चार्यजी महाप्रभूनकोजसवर्णननाहींकीनों
तब यह बचन सुनिकेंसूरदासजीवोलेजोमैंतोस
बश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनकोहीजसवर्णनकी
योहै कछून्यारोदेषूंतोन्यारोकरूंपरितेरेसाथ
कहतहो याभांतिकहिकेंसूरदासजीनेंएकपद
कह्यो ॥सोपद॥ रागविहागरो ॥ भरोसोद्रढइन
चरणनकेरो ॥ श्रीवल्लभनखचंद्रछटाबिनुस
बजगमांझअंधेरो ॥१॥ साधनऔरनहींयाक
लिमेंजासोंहोतनिवेरो ॥ सूरकहाकहेदुविधिआं
धरोविनामोलकोचेरो॥ यहपदकह्योपाछेंसूर
दासजीकोंमूर्छाआई तबश्रीगुसांईजीकहें जो

सूरदासजीन्चितकी वृत्ति कहाहैतब सूरदासजी नेंएकपद औरकह्यो सोपद ॥रागविहागरो॥ वलि वलिबलिहो कुमर राधिकानंदसुवनजासोंरतिमांनी वेअतिचतुर तुमचतुर सिरोमनि प्रीतिकरीकैसेंहोत हैछांनी॥१॥वेजुधरततनकनकपीतपट सोतोस बतेरी गतिठांनी॥ तेंपुनिस्यामसहजवेसोभा अंब रमिस अपनेउर आंनी॥२॥ पुलकितअंगअब हीह्वै आयोनिरषिदेषिनिज देहसियांनी॥सूर सु जांन सखीकेबूझें प्रेम प्रकासभयोविहसांनी॥३॥ यहपद कह्योइतनो कहिकें सूरदासजीकोचित्तश्री ठाकुरजीकोश्री मुख तामें करुणारसकेभरेनेत्र दे षे तब श्रीगुसांईजी पूछो जोसूरदासजीनेत्रकीवृत्ति कहांहैं तवसूरदासजीनेंएकपद औरकह्यो॥सोपद रागविहागरो॥ खंजननैंनरूपरसमाते॥ अतिसे चारुचपल अनियारेपलपिंजरानसमाते॥१॥च लिचलिजातनिकट श्रवणनके उलटिपुलटिताटं कफदाते॥सूरदास अंजनगुण अटके नातरअब उडिजाते॥२॥इतनों कहतहीसूरदासजीनेंयास रीरकोत्यागकीयो सो भगवद्लीलामें प्राप्तभए

पाछें श्रीगुंसांईजी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आ
ए तातें सूरदासजी श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके परम
कृपापात्र भगवदीयहे सो इनकी वार्ताको पार नाहीं
तातें इनकी वार्ता कहांतांई लिषिये ॥ वार्ताप्रसंग
॥६॥ वैष्नव ॥ ८१ ॥ संबंध ॥

अब श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके से
वक परमानंददास कनोंजिया
ब्राह्मण तिनकी वार्ता

सो परमानंददासजी परम भगवदलीला मध्यपाती
श्रीठाकुरजीके परम सखा हे सो जब श्रीआचार्यजी
महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भए तब श्रीगोवर्द्धन
नाथजीकी आग्यातें दैवीजीवनके उद्धारार्थ और
तैसेंही श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनको श्रीठाकुरजी
को सब परकार प्रगट भयो और आप श्रीगोवर्द्ध
न पर्वतमें प्रगट भए सो गोपालदासजी वल्लभा
ख्यानमें गाए हैं जो अनेक जीव कृपा करें व्रादेसां
तर परवेस तातें परमानंददासजीको जन्म क
नोंजमें है कनोंजिया ब्राह्मणके घर भयो सो वे
परमानंददासजी बहुत योग्य भए और कवि भए

भगवद् कथाके पात्र भए कीर्तन बहुत आछे गावते तातें परमांनंददासजीके संग समाज बहुत रहतो आ पस्वामी कहावते आप सेवक करते सो भगवदइछा तें एकसमें परमांनंददासजी कनोंज ते आप आगरे आए सो आगमें उतरे सो उहां कीर्तन बहुत आछे गावते तातें बहुत लोग कीर्तन सुनिबेकों आवते औार अडेलतें कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इन के कीर्तन सुनिकें पार अडेल मंजाय कहते जो पर मांनंददासजी इहां आगमें आए हैं सो कीर्तन बहु त आछे गावत हैं सो श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक जलघरिया क्षत्री कपूर सो उनके राग ऊपर बहुत आसक्ति परि बे अवकास नाहीं पावें जो पर मांनंददासजीके कीर्तन सुनिवेकों आवें से वा में अवकास नाहीं जो आग जाइ सकें सो एकदिन एक वैष्णव आगते अडेलमें आयो सो वानें कह्यो जो आ जराकादसी है सो परमांनंददासजी आजु जागरन करेंगे सो यह सुनिकें वा जलघरिया नें अपने मनमें विचार्‍यो जो आजु परमांनंददासजीके कीर्तन सुनि वेकों चलनों सो वे क्षत्री कपूर जलघरिया अपनी

सेवासों पहुंच कें रात्रिकों अपने घर आए सोघर
आयकें अपने मनमें विचार कीयो जो यावेरनाव
वोमिले गी नाहीं तातें कहा कर्तव्य परि वे पैरिवे
में भले निपुन हुते सोमन में विचारी जोपैरि कें पार
जैये पाछें अपने घरतें चले सो श्री यमुनाजी केतीर
उपर आय ठाडेभए तब पर दनी पहरि कें वस्त्र सबमां
थे सों बांधि कें श्रीयमुनाजीमें पैरिकें पार आगमें आ
ए पाछें वस्त्र पहरिकें जाठौर परमानंद स्वामी उत
रे हुते तहां आए सो इनको कछू मिलापतो परमानं
द स्वामीसों हुतो नाहीं जहां और सब जनें बैठे हुते तहां
एकजाय बैठे परि एऊ श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके
सेवक हे सो सब को ऊ जानत हे तातें सबननें इनकों
आदर करि कें बैठाए सो एबैठे ता पाछें परमानंद स्वा-
मीनें कीर्तन को आरंभ कीयो सो परमानंदस्वामीनें
विरह केपद गाए सो विरह के पद का हेसों गाए जो प्र
थम इन को स्वरूप कहि आए हैं कंहीजो येलीलाम
ध्य याती श्री ठाकुरजी के परमानंद स्वामी परमस
खा हे सो उहांसों बिछुरे और इहां तो अब हीं श्रीठा-
कुरजी को दर्शन नाहीं भयो और श्री आचार्यजीमहा

प्रभून को दर्शन अवहोयगो श्री आचार्यजीमहाप्र
भूनके मार्गको यह सिद्धांत है जो भगवदीयनको सं
ग होय तो श्रीठाकुरजी कृपा करें ताही के लीए श्रीआ
चार्यजीमहाप्रभूननें परमानंद स्वामी के ऊपर अनु
ग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीय के अंतः
करनमें पेरिना करिकें परमानंद स्वामीके इहां पठा
ए सोए श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके सेवक कैसे हैं
जो जिनकों श्रीठाकुरजी एकक्षण हू नाहीं छोडत
इनके संग ही रहत हैं काहे तें सूरदासजी गाए हैं जो
भक्तविरह करत करुणामय डोलत पाछें पाछें औ
र जगन्नाथजोसीकी हू वार्ता में लिख्यो है जो जब रज
पूतनें तरवार चलाई तब श्रीठाकुरजीनें वाको हाथ प
कर्यो तातें श्रीआचार्यजीमहाप्रभूनके सेवकनके
सदा श्रीठाकुरजी निकट ही रहत हैं तातें परमानंद
स्वामीनें विरह के पद गाए॥ सोपद॥ राग विहागरो॥
ब्रजके विरही लोग विचारे॥ विन गोपाल ठगे से ठाडे अ
तिदुर्बल तन हारे॥१॥ मात जसोदा पंथ निहारत निर
षत सांझ सकारे। जो कोई कान्ह २ कहि बोलत अंषिय
न वहत पनारे॥२॥ यह मथुरा काजर की रेषा जे निकसे

ते कारे ॥ परमानंदस्वामी विनु ऐसें जैसें चंद्रा विनु तारे ॥ ३ ॥ औरपद गाए ॥ सोपद ॥ रागविहागरो सब गोकुल गोपाल उपासी ॥ जोगाहक साधन के ऊधो सो सब बचन ईस पुरकासी ॥ १ ॥ जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छांडति क्यों रतिजासी ॥ अपनी सीतलता तहां छांडति जद्यपविधु राहु है ग्रासी ॥ २ ॥ किहि अपराध जोग लिषि पठायो प्रेम भजन ते करत उदासी ॥ परमानंद ऐसी को विरहन मांगे मुक्त गुनरासी ॥ ३ ॥ राग कान्हरो कौन रसिक है इन वातन की ॥ नंद नंदन विनु कासों कहिये सुनिरी सखी मेरें दुःख या मन को ॥ १ ॥ कहां वे जमुना पुलिन मनोहर कहां वह चंद सरद रातिन को ॥ कहां वे मंद सुगंध अनल रस कहां वे षटपद जलजातन को ॥ २ ॥ कहां वे सेज पोढिबो वन को फूल विछोना म्रदु पातन को ॥ कहां वे दरस परस परमानंद कोमल तन कोमल गातन को ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ माई को मिलिबे नंद किशोरें ॥ एक बार को नैंन दिषावे मेरे मन के चोरें ॥ १ ॥ जागत जां मगन तन नहीं घूंटत कौं पाऊं गी भोरें ॥ सुनि री

सखी अब कैसें जीजे सुनि तम चरषग रोरें ॥ २॥
जो यह प्रीति सत्य अंतर गति जिन काहू बन होरें
परमानंद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिनदोरे ३
इत्यादिक पद बिरह के ऐसे परमानंद स्वामी ने सगरी
राति गाए पाछिली घडी चारि रात्रि रही तब जो जो
जागर नमें आए हुते सो सब अपने घर कों गए तैं
सेंही श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक एजलघ
रिया कपूर क्षू परमानंद स्वामी सों जै श्री कृष्न स्मर
न कहि कें चले और परमानंद स्वामी के कीर्तन सुनि
कें बहुत प्रसन्न भए और परमानंद स्वामी सों कह्यो
जो जैसे हमने सुने हुतें तातें अधिक देषे तुम परम
भगवद अनुग्रह पूरन होये जलघरिया क्षत्री कपू
र श्रीमहाप्रभून के परम भगवदीय हैं सो एजो
चलि आए सो परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्र
ह करिबे कों आए हैं नातर भगवदीय का हे कों
काहू के घर जांय और यह ऊपर कहि आए हैं
जो श्री आचार्यजी महाप्रभून के निकट ही रहत हैं
सो याको हेत यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरि
या क्षत्री कपूर की गोदमें बैठि के श्री नवनीतप्रिया

जीनें परमांनंद स्वामी के पद सुने जो श्री आचार्यजी
महाप्रभून के मार्ग की मर्यादा है जो श्री आचार्यजी
महाप्रभून के अनुग्रह विना श्रीठाकुरजी कृपा न
करें सो उन जल घरिया क्षत्री कपूर ऊपर श्री आ
चार्यजी महाप्रभून को परम अनुग्रह है तातें श्री
नवनीतप्रियाजी इन की गोद में बैठिकें परमानंद
स्वामी के पद काहेकों सुनने पडे सो ताको हेत यह
जो भगवदीय परमानंद स्वामी के ऊपर श्री नवनी
तप्रियाजी अनुग्रह करिवेकों आप पधारे हैं ता
तें सुने सो श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक ज
लघरिया क्षत्री परमांनंद स्वामी सों जैसी कृष्न क
हिकें चले सो श्री यमुनाजी के तीर ऊपर आए सो
उहां आयकें विचार कीयो जो नाव की वाट देषें तो
अवार होय औरसेवा छूटे औरश्री आचार्यजी
महाप्रभू नहीं तो षीजेंगे तातें जैसें पैरि कें आए हु
ते तैसें चलें सो पैरि कें पार गए सो पार आवत ही स्ना
न करिकें अपनी सेवा में तत्पर भए पाछें उहां मार्ग
में परमांनंद स्वामी रात्रि की के जागरन के श्रमित सों
आंषि लगी निद्रा आई सो हुतनैमें स्वप्न आयो

सो स्वप्नमें देषें जो जैसें रात्रिके जागरनमें श्रीआचा
जीमहाप्रभून केसेवक जल घरिया क्षत्री बैठेहैंऔ
रउनकी गोदमें श्रीनवनीतप्रियाजीके दरसनभए
और स्वप्नमें श्रीनवनीतप्रियाजी परमांनंदस्वामी
सोंकहें और परमांनंदस्वामीकी निद्रा षुलीसोवा
श्रीमुषकों कोऊ.सोक्ष्य कोटिकदर्पलावराय पर
मांनंदस्वामीनेंदेष्यो सोस्वप्नमें तोहदेमें धरिलीए
औरमनमें चटपटी लगी जो यह दर्शन फेरिकब
होयगो तबयह मनमें विचास्यो जोयह दर्शन उन
श्रीआचार्यजी महाप्रभूनकेसेवक क्षत्रीजल घरि
याविना न होयगो तातें होय तो उनके पासजैयेजो
उनसोंमिलें तबकार्यसिद्धिहोय ऐसो परमांनंदस्वा
मीनें अपने मनमें विचारकीयो सो तत्कालआगतें
अडेलकूंचले सो श्रीजमुनाजीके तीरऊपर आप
ठाडेभएसो प्रातःकालको समय भयो सो प्रथमना
वचली तापरबैठिकें पार उतरे तब आगेंजायकें देषेंतो
श्रीआचार्यजीमहाप्रभू स्नानसंध्या वंदन करतहैं
सो परमांनंदस्वामीकों श्रीमहाप्रभूजीको कैसो द
र्शनभयो साक्षात पूरणपुरुषोत्तम श्रीकृष्णचंद्र

सोश्रीगुसांईंजीवल्लभाष्टकमेंलिषेंहेंसोवस्तुत
कृष्णएवचरेसोदर्शनभयोजोश्रीआचार्यजीम
हाप्रभूनकेसेवकजलघरियाक्षत्रीकपूरकीगो
दमेंश्रीठाकुरजीकाहेसोंबैठे यहकारनजिनके
माथेंरेसेप्रभूविराजतहें परियरमानंददसामी
केमनमेंयहजोक्षत्रीकपूरमिलेंतोआछोसो
काहेतेंजोजिनकेमाथेंरेसेप्रभू औरजिनकेद
र्शनतेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभूनकोदर्शनभ
यो तापाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभूननेंअपनें
श्रीमुषसोंकह्योजोपरमानंदकछूभगवद्जसव
र्णनकरितवपरमानंददस्वामीनेंविरहकेपद गा
ए॥ सोपद। रागसारंग॥ कोनबेरभईचलेरी गो
पाले॥ लोचनसारगईहीन्योंतें बारबारबूझत
ब्रजवाले॥ १॥ तेरेतनकोरूपकहांगयोभामिनि
अरुमुषकमलसुषायरह्यो॥ सवसौभागगयोह
रिकेसंगहदेसोंकमलविरहदह्यो॥ २॥ कोबोले
कोनेंनउघारेकोप्रतिउत्तरदेहिविकलमन॥ जो
सर्वसुअक्रूरचुरायोपरमानंदस्वामीजीवनधन
॥ ३॥ रागसारंग॥ जियकीसाधनजियहीरहीरी

बहुरि गोपाल देषन नहीं पाए विलपति कुंज अही
री॥१॥ एक दिन सांझ समीप यह मारग वेचन जात द
हीरी॥ प्रीतिकेलीए दान मिस मोहन मेरी बांह गही
री॥२॥ बिन देषें घटी जात कलप सम विरहा अनल
दहीरी॥ परमानंद स्वामी बिन दर्शन नैनन नीद व
हीरी॥३॥ रागसारंग॥ वह वात कमल दल नैन की
वारवार सुधि आवत सजनी बहु दुरि दैनी सैनी सैन की
॥ वह लीला वह रास सरद की गोरज रंजित आवनि
अरु वह ऊंची टेर मनोहर मिस करि मोहि सुनावनि
२॥ वसन कुंज में रास षिलायो वियोग माई मैन की
परमानंद प्रभू सों क्यों जीवें जे पोषी मृदु बेन की।३
याभांति परमानंद स्वामी नें बिरह के पद गाए सो सु
निकें परमानंद स्वामी सों कह्यो जो कछू बाल लीला
वर्णन करि तब परमानंद स्वामी नें कह्यो जो महा-
ज मैं कछू समझत नाहीं तब श्री महाप्रभू ननें कह्यो
जो स्नान करि आउ हम तोको समझावेंगे। तब प
रमानंद स्वामी नें श्री महाप्रभून सों पूछें जो महा-
राज आपको सेवक विरक्त कहा है तब श्री आचा
र्यजी महाप्रभू ननें कह्यो जो कछू टहल करत होय

गो तब परमानंद स्वामी स्नानकों गए सो तब परमानंद
स्वामी आगें जाय कें देषें तो जमनुजलकी गागर ले
कें वह कपूर क्षत्री आवत हैं तब निकट आए सो सां
म्हें मिले सो उन कों देषिकें परमानंद स्वामी बहुत प्र
सन्न भए और परमानंद स्वामी नें उन कों नमस्कार क
र्यो और कह्यो जो रात्रिकों जागरन में आप पधारे
हुते सो श्री ठाकुरजी नें आप की गोद में बैठिकें मेरे
कीर्तन सुने सो आप की कृपा ते श्री ठाकुरजी नें मोसों
कह्यो जो में श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक ज
लघरिया क्षत्री की गोद में बैठि कें तेरे कीर्तन सुन
हैं और आपकी कृपाते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है
सो आवत ही तुम्हारी कृपाते मो कों दर्शन भयो इतनी
बात सुनिकें उन जलघरिया नें कह्यो जो ऐसें मति क
हो जो श्री आचार्यजी महाप्रभू सुनेंगे तो षीजेंगे जो
सेवा छोडि कें क्यों गयो ताते यह वात मति कहो तब
इतनों सुनिकें परमानंद स्वामी कों बहुत आश्चर्य
भयो और कह्यो जो ए धन्य हैं जिन ऊपर श्री ठाकु
रजी को ऐसो अनुग्रह है और ये अपनों स्वरूप छि
पावत हैं पाछें परमानंद स्वामी तो स्नान कों गए

और जलघरियां जलकी गागरि लेकें मंदिरमें गयो पाछें परमांनंद स्वामी श्रीजमुनाजीमें स्नान करिकें तत्काल आय श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें आय ठाडे भए तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो परमांनंद स्वामी आगें आउ बैठि तब परमांनंद स्वामी आप आगें आय बैठे तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें परमांनंद स्वामीकों नाम सुनायो पाछें मंदिरमें पधारिकें श्री नवनीतप्रियाजी के संन्निधान परमांनंद स्वामीकों ब्रह्मसंबंध करवायो पाछें अनुग्रह करिकें परमांनंद स्वामीकों अनुक्रमनिका सुनाई काहेतें जो प्रथम परमांनंद स्वामी सों श्री आचार्यजी महाप्रभूननें अपनें श्रीमुष सों कह्यो जो भगवद् जस वर्णन करि सो परमांनंद स्वामी नें विरह को पद गायो तब श्री आचार्यजी महाप्रभूननें कह्यो जो परमांनंद स्वामी बाललीला गाउ तब परमांनंद स्वामी नें कह्यो जो राज में कछू समझत नाहीं सो परमांनंद स्वामी नें काहेतें कह्यो जो करक हि आयहें जो ये श्री ठाकुरजीसों बिछुरे हें सो बिछुरेके दुःखकी तो स्फुर्ति रही और संयोग जो सुःख

हुतो ताको विस्मरन भयो जो काहे ते जो सब लीला वि
सिष्ट पूरण पुरुषोतम तो श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के घर पधारे हैं सो परमानंद दास कों श्री आचार्यजी
महाप्रभून नें अनुक्रमणिका सुनाई तब सब लीला
की स्फुर्ति भई और अनुक्रमणिका सुनाई ताको
कारन कहा जो श्री आचार्यजी महाप्रभून को नाम है श्री
भागवत पीयूष समुद्र मथन क्षमः सो श्रीमद्भागवत को
श्रीगुसांई जी अमृत को समुद्र करिकें वरणन कीए हैं
सो अनुक्रमणिका द्वारा श्री भागवत रूपी समुद्र श्री आ
चार्यजी महाप्रभून नें परमानंद स्वामी के हृदय में धर्‍यो
तातें वांणी तो सब अष्ट काव्य की समान है और सेसे
ऊ परमानंद स्वामी और सूरदास जी सागर भए सो
यातें जो श्री भागवत रूपी अंमृत को स्वरूप इन के हृ
दय में श्री आचार्यजी महाप्रभून नें धर्‍यो सो काहे
तें जो सब कोऊ सूरसागर और परमानंद सागर क
हते अब परमानंद दास सों श्री आचार्यजी महाप्रभू
श्रीमुष सों कहे जो बाललीला वर्णन करि सो पर
मानंद दास जी नें तत्काल बाल लीला के पद करि
कें श्री नवनीतप्रियाजी के सन्निधान गाए ॥ सो पद

रागसारंगी ॥ माई री कमलनैंन स्यांमसुंदर झूलतहैं पलना ॥ बाललीलागावतसवगोकुलकेललना ॥ १ ॥ अरुणतरुणकमलनख मनिजसजोती ॥ कुंचितकचभवराकतलटकतगजमोती ॥ २ ॥ अंगूठागहिकमल पांनमेलतमुषमांही ॥ अपनोंप्रतिविंद देषिफुनिफुनिमुसिकाही ॥ ३ ॥ जसुमतिकेपुन्यपुंज वारंवारलाले ॥ परमांनंदस्वामीगोपाल-सुतसनेहपाले ॥ ४ ॥ यहपद सुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू वहुत प्रसन्यभए फेरि औरपद गायो सोपद ॥ रागविलावल ॥ जसोदातेरेभाग्यकीकही नजाय ॥ जोमूरति ब्रह्मादिकदुर्लभ सो प्रगटेहैं आय ॥ १ ॥ सिवनारदसन कादिकमहामुनिमिलवे करतउपाय ॥ तेनंदलाल धूरिधूसरवपुरहतगोदलपटाय ॥ २ ॥ रतनजटितपोढाय पालनेंवदन देषिमुसिकाई ॥ झूलो मोरेलालवलिहारी परमानंदजसगाई ॥ ३ ॥ राग विलावल ॥ मणिमयआंगननंदकेषेलतदोऊभईया ॥ सोऐसेवाललीलाकेपद परमांनंद दासनेंगाए सोसुनिकें श्रीआचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्नभए सोपरमांनंददा

सजी श्री आचार्यजी महाप्रभून के पास हे सो परमानं
द दास कों आपने कीर्तन नकी सेवा दीनी सो परमानं
द दास जी श्री नवनीत प्रियाजी कों नित्य नए पद करि
कें भांति भांति के सुनावते जब अनोसर होतो तब पर
मानंद दास जी श्री आचार्यजी महाप्रभून के आगें प
द कीर्तन करें श्री आचार्यजी महाप्रभू नित्य कथा क
हते सो परमानंद दास जी नित्य सुनते सो ताही प्रसं
ग के कीर्तन करि कें परमानंद दास जी सुनावते सो एक
दिन परमानंद दास जीनें श्री ठाकुरजी के चरणारविंद
को महात्म सुन्यों सो चरणारविंद के महात्म को कीर्त
न करि श्री आचार्यजी महाप्रभून कों सुनायो सो सुनि
कें श्री आचार्यजी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भए सो पद
राग कान्हरो ॥ चरण कमल वंदों जगदीस गोधन
के संग धाए ॥ जे पद कमल धूरि लपटाने कर गहि गो
पीन के उर लाए ॥ १ ॥ यह पद संपूरण करि कें परमा-
नंददासजीनें गायो और श्री आचार्यजी महाप्रभू
न के स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायो सो पद
राग कान्हरो ॥ यह मांगों गोपीजनवल्लभ यह प
रमानंद दास स्वामीनें संपूरण करि कें गायो सो सु

निकें श्री आचार्यजी महाप्रभू अपने मनमें जाने
जो यह मिस करिकें परमानंद दास या पदकों सुना
यकें ब्रजके दर्शनकी प्रार्थना कीनी है तातें ब्रज
कों अवस्य चलनों ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ अब श्री
आचार्यजी महाप्रभू यह बिचार करें जो ब्रज कों प
धारिवेको उद्यम कीयो सो दामोदर दास हरसांनी
कृस्न दास मेघन परमानंद दास और यादव दास
हलवाई तथा रसोई की सामग्री संग लेकें चले-
और सब वैस्नव संग ले आप श्री आचार्यजी मह
प्रभू ब्रज कों पधारे सो ब्रज कों आवत परमानंद दा
स कों गाम कनोज आयो तब परमानंद दास नें
श्री आचार्यजी महाप्रभून सों बीनती कीनी जो म
हाराज मेरे घर पधारिये आपके अनुग्रहतें मेरो
भाग्य सिद्धि भयो है अब मेरो घरहू पावन करिये
तब श्री आचार्यजी महाप्रभू आप अंतरजामी कृ
पानिधान भक्तमनोरथपूरवक आप कृपा करिकें प
धारे सो परमानंद दासकें घर आछी भांति सों श्री-
आचार्यजी महाप्रभूननें रसोई करि श्री ठाकुरजी
कों भोग समर्प्यो पाछें भोग सराय कें आप प्रसाद ली

यो पाछें आप गादी तकियान के ऊपर बिराजे तब
परमानंद दास सों कह्यो जो कछू भगवद जस गावो
तब परमानंद दासजी नें मनमें विचारी जो या सम
य श्री आचार्यजी महाप्रभून को मन तो ब्रजमें श्री
गोवर्द्धननाथजी के पास है ताते विरह के पद गाऊं
सो विरह को पद एसो गायो जामें छिन हू कल्पस
मान जाय सो पद ॥ राग सोरठ ॥ हरि तेरी लीला की
सुधि आवे ॥ कमल नैंन मन मोहनी मूरति मन मन
चित्तवनावे ॥१॥ एक वार जाय मिलत माया करि
सो केसें विसरावे ॥ मुष मुसिक्यानि वंक अविलो
कनि चाल मनोहर भावे ॥२॥ कवहु कनि वडति
मर आलिंगन कवहुक पिक सुर गावे ॥ कबहुक सं
भ्रम क्वासि क्वासि कहि संग हीन उठि धावे ॥३॥ कवहु
कनैंन मूंदि अंतर गति मणिमाला पहिरावे ॥ परमा
नंद स्वामि ध्यान करि ऐसें विरह गमावे ॥४॥ यह प
द परमानंद दासनें गायो सो सुनि कें श्री आचार्यजी
महाप्रभून कों मूर्छा आई सो जा लीला को पद परमा
नंद दासजीनें गायो ॥ ता लीला विषें श्री आचार्यजी
महाप्रभू मगन भये सो देहानुसंधान न रह्यो सो तीन

नदिन लों श्री आचार्यजी महाप्रभून कों मूर्छा रही सो सब रे सेवक दामोदरदास हरसांनी प्रभृति श्री-आचार्यजी महाप्रभून के दर्शन करें सो वैसें ही बैठे रहे चतुर्थ दिन के प्रातःकाल श्री आचार्यजी महाप्रभू सावधान भए तब सब वैष्णव प्रसन्न भए तब परमानंददास जी मन में डरपे जो फेरि ऐसो पद न गाऊं फेरि सूधे पद गाए सो पद ॥ राग बिभाग ॥ माई री हों आनंद गुन गाऊं ॥ गोकुल की चिंतामणि माधो जो मांगो सो पाऊं ॥ १ ॥ जब ते कमलनैन ब्रज आए सकल संपदा बाढी ॥ नंदराय के द्वारें देषो अष्ट महासिद्धि ठाढी ॥ २ ॥ फूले फले सदा बृंदावन कामधेनु दुहि दीजे ॥ मारग मेघ इंद्र बरसावे कृष्ण कृपा सुष लीजे ॥ ३ ॥ कहत जसोदा सषियन आगें हरि उतकर्ष जनावे ॥ परमानंद दास को ठाकुर मुरली मनोहर भावे ॥ ४ ॥ और हू पद गायो सो पद ॥ राग गौरी ॥ बिमल जस बृंदावन के चंद्र को ॥ यह पद संपूरण करिकें गायो फेरि और गायो सो पद ॥ राग सारंग ॥ चलि री नंद गाम जाय बसिये ॥ यह पद संपूरण करिकें गायो सो या पद में यह कह्यो जो चलि री नंद गाम जाय बसिये सो

श्रीमहाप्रभूजी सुनिके व्रजकों पधारे सो प्रथम श्री
गोकुल पधारे सो श्री गोकुल आवत हीं श्री आचा
र्येजी महाप्रभू श्री यमुनाजी के तीर ऊपर छोंकर
के नीचें बैठक में तहां श्री आचार्यजी महाप्रभू वि
राजे और एक बैठक श्री द्वारिकानाथजी के मंदिर
के पास हे सो भीतर की बैठक हे सो रात्रि के विश्राम त
या रसोई की ठौर हे जहां श्री आचार्यजी महाप्रभू
न की घर हुतो जब आप श्री गोकुल पधारते तब उ
हांई उतरते सो यह भीतर की बैठक हे पाछें सब
बैस्नव ननें श्री यमुनाजी स्नान कीए और परमा
नंददासजीनें श्री यमुनाजी को जस वर्णन कीए-
सो पद ॥ राग रामकली ॥ श्री यमुनाजी यह प्रसाद
होंपाऊं ॥ तिहारे निकट रहोंनिसवासर रांम कृष्ण
गुन गाऊं ॥ १ ॥ मंजन विमल पावन जल चिंताकु
लष वहाऊ ॥ तिहारी कृपा भांनकी तनया हरिप
द प्रीति बढाऊं ॥ २ ॥ बीनती करों यही वर मांगों अ
धम संग विसराऊं ॥ परमानंददास फल दाता मदन
गोपाल लडाऊं ॥ ३ ॥ राग रांमकली ॥ श्री यमुनाजी
दीनजानि मोहि दीजे ॥ सो ऐसे पद संपूरण करिकें

श्रीयमुनाजीके परमांनंददासजीनें बहुतगाए श्री आचार्यजीके आगें तीरविषें गाए ताउपरांत श्रीमहाप्रभूजीनें परमांनंददासकोंबाललीलाविसिष्ट श्रीगोकुलकेदर्शनकरवाए सो परमांनंददासकों ऐसो दर्शन भयो जो सवव्रजभक्त श्रीयमुनाजलकी गागरिभरि लेजातहैं औरश्रीठाकुरजीमार्गमेंषेलतहैं औरव्रजभक्तनकोंजलकी गागरि उठाय देतहैंऔर उनकीकंचुकी तोरेहें याभांतिसें दर्शनभए सो तैसोई पद श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके आगेंगायो-सो पद ॥ रागविलावल ॥ जमुनाजल घर भरिचली चंद्रावलिनारी ॥ मारग खेलत मिले घन स्याम मुरारी ॥ १ ॥ नैंननसेंनैंना मिले मन रह्योहे लुभाई ॥ मोहन मूरति जियवसी पग धरो न जाई ॥ २ ॥ सब कीप्रीतिप्रगटभई यह पहली भेट ॥ परमांनंद ऐसीमिली जैसें गुडमेंचेंट ॥ ३ ॥ रागसारंग ॥ लालनेंकटेकी मेरी वैयां ॥ औघटघाटचल्योनहीजाई रपटतहों कालिंद्रीमहियां ॥ १ ॥ यहपद संपूरनकरिऐसेपद गाए तापाछें परमांनंददासनें वाललीलाकेपद वहुतगाए और श्रीगोकुलको स्वरूप

जामें आवे एसो पद गायो सोपद ॥ राग कान्हरो ॥
गावत गोपी मधुव्रज वानी ॥ जाके भवन वसत त्र
भुवन पति राजा नंद जसोदा रानी ॥ १ ॥ गावत वेद
भारती गावत गावत नारदादि मुनि ग्यांनी ॥ गा
वत गुन गंधर्व काल सिव गोकुल नाथ महात्म-
जांनी ॥ २ ॥ गावत चतुरानन जदुनायक गावत सेष स
हस्त्र मुख रास ॥ मन कर्म वचन प्रीति पद अंबुज अव
गावत परमांनंददास ॥ ३ ॥ यह पद परमांनंददास
नें गायो पाछें और पद गायो सो पद ॥ राग कान्हरो ॥
जसुमति गृह आवत गोपीजन ॥ वासर ताप निवार
न कारन बारंबार कमल मुख निरखन ॥ १ ॥ चाहत
पकरि देहरी उलंघन किलकि किलकि हुलसत मन
हीं मन ॥ लोंन उतारि दोऊ कर वारि फेरि डारत तन
मन धन ॥ २ ॥ लेत उठाय चांपत हीयो भरि प्रेम विव
स लागे दृग ढरकन ॥ चली लिपलना पोंढावन कों-
अरु कसाय पोंढे सुंदर घन ॥ ३ ॥ देत असीस सकल
गोपीजन चिरंजीवो लाग राज मुन परमांनंददासको
ठाकुर भक्त वछल भक्तन मन रंजन ॥ ४ ॥ रागहमी
र ॥ चिंते चिंते चितचोरी री माई ॥ यह पद संपूरन

करिकें गायो सो ऐसे पद परमानंद दासनें बहुत गाए
तापीछें श्री गोकुलनाथजी के दर्शन करिकें परमानं
द दास श्री गोकुल ऊपर बहुत आसक्तिभए तब ऐ
सेपद गाए जो जामें श्री आचार्यजी महाप्रभून की प्रा
र्थनाकीनी सो कहा प्रार्थनाकीनी जो मोकों श्री गोकु
लमें आयकें चरणारविंदके नीचें राषो नितप्रति प्र
भूनके दर्शन करों सर्वलीला विसिष्ट पूरन पुरुषोत्त
मेंहूं और यह पद गायोसोपद ॥ रागकान्हरो ॥ यहमां
गोंजसोदानंदन ॥ चरणकमल मन मन मधुकर या
छबिनैंनन पाऊं दर्शन ॥१॥ चरणकमल कीसेवाहो
ऊतन राजत बिजेलताधन नंदन ॥ वृषभानन्द नी
मेरें सर्वसुज्ञान जीवन धन ॥२॥ व्रजबसिबो जमुना
जल अचिबो श्री वल्लभ को दासयहीपन ॥ महा प्र
साद पाऊं हरि गुन गाऊं परमानंद दास जीवन धन॥
३॥ रागकान्हरो ॥ जबलगजमुना गाय गोवर्द्धन तब
लग गोकुल गांम गुसांई ॥ यह पद संपूरन करिकें प्रा
र्थनाके पद गाए ॥ तब कितेक दिन श्री आचार्यजी म
हाप्रभू श्री गोकुल में विराजे तापाछें सबवैष्णव
नकों संग लेकें श्री गोवर्द्धन नाथजी के दर्शनकों

पधारे ॥ वार्ताप्रसंग ॥ ३ ॥ अब श्री आचार्यजी महा
प्रभू स्नान करिकें पर्वत ऊपर पधारे सो आवत ही
परमानंद दासनें श्रीनाथ को श्रीमुख देखिकें वहां
के वहांरहे तब श्रीमहाप्रभूजीनें श्रीमुषसों कह्यो
जो परमानंद दास कछू भगवत लीला गावो तब प
रमानंद दास अपने मनमें विचारें जो कहा गाऊं
तब ऐसें विचारे जो जामें प्रथम अवतार लीला पा
छें चरणारविंदकी वंदना पाछें भगवद वर्णन को
स्वरूपता पाछें वालक्रीडाता पाछें श्रीठाकुरजी
को महात्म ऐसो पद परमानंद दासनें गायो ॥ सो पद
राग कान्हरो ॥ मोहन नंदराय कुमार प्रगट ब्रह्म नि
कुंजनायक भक्तहित अवतार ॥ १ ॥ प्रथम चरण
सरोज वंदों स्याम घन गोपाल ॥ मकर कुंडल गंड
मंडित चारु नैन बिसाल ॥ २ ॥ वलिराम सहित वि
नोद लीला संकर हेत ॥ दास परमानंद प्रभू हरि नि
गम बोलत नेत ॥ ३ ॥ और आसक्ति को गायो ॥ रा
ग पूरवी ॥ मेरो माई माधोसों मन मान्यों ॥ मेरो नैं
न और कमलनैनकों इक ठोरो करि सान्यों ॥ १
लोक वेद की कांन तजी में न्योंती अपनें आन्यों

राक गोविंदचरण केकारन बैर सवनसों ठान्यों ॥ २ ॥
अव क्यों भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यो जैसें पा
न्यों ॥ परमानंद मिल्यो गिरधरसों है पहली पहचा
न्यों ॥ ३ ॥ ऐसे पद परमानंद दासनें गाए ॥ तापीछें
श्री आचार्यजी महाप्रभू सैंन आरती करि श्रीनाथ
जीकों पाढाए तव अनोंसर करि आपनीचें पधा
रे तव परमानंददासहूनीचें आय वैठे तव रामदा
सभीतरियांनें परमानंद दासकों महाप्रसाद दूध
पठायो सो दूध परमानंददासजी लेबे लागे ॥ तव ता
तो लागयो तव परमानंददासजीनें सीरो करिकें ली
यो तापाछें रामदासनें पूछो जो तुमकों महाप्रसाद
दूध पठायोसो आयो तव परमानंद दासनें कही-
जोहां आयो परि दूध बहुत ताता हुतो सो रो सो दूध श्री
ठाकुरजीकें सं आरोगत है ता तें दूध तो सुहातो भलो तव रा
म दासनें कह्यो जो वहुत आछो आप भगवदी पहो
जैसें आग्या करोगे तैसें करेंगे तवसकारे सव सेव
क स्नानकरिकें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा में
तत्पर भए तव श्री आचार्यजी महाप्रभूननें स्ना
नकरिकें श्रीगिरराज ऊपर पधारे तव श्रीगो-

वर्द्धननाथजीकोजगाए तबवासमेंपरमानंद
दासजीजाइकेंश्रीठाकुरजीकेजगायवेकोपदगा
यो॥सोपद। रागविभास॥जागोगोपाललालमु-
खदेखोंतेरो॥ पाछेंगृहकाजकरोंनित्यनेममेरो
॥१॥विगसतनिसाअरुणदिसाउदितभयोभांन
गुंजतअंगपंकजवनजागियेभगवान॥२॥द्वारें
ठाढेवंदीजनकरतहेंपुकार॥वंसप्रसंगगावतह
रिलीलासार॥३॥परमानंदस्वामीदयालजगतमं
गलरूप।वेदपुराणपढतमहमालीलाअनूप॥४
यहपदपरमानंददासनेंगायोफिरिकलेऊकोप
दगायो सोपद॥रागरामकली॥पिछवारेंह्वेग्वा
लनटेरसुनायो॥कमलनेंनप्यारोकरतकलेऊ
कोटनमुखलोंआयो॥१॥अरीमेंपागेंपाएकव
नव्याइरहीहे वछराउहांईवसायो॥मुरलील
ईनलकुटियानलीनीअरवराएकोऊसषानबु
लायो॥चकतभईनंदजूकीरानीसत्यआयकि
धोंअपनोंपायो॥फूलेनअंगसमातरसवरत्रभु
वनपतिसिरछत्रजोछायो॥३॥मिलिवेठेसंकेत
सघनवनदिविधिभांतिकीयोमनभायो॥परमां

नंदसयानीग्वालिनि उलटि अंग गिरधर पिय ध्यायो ॥४॥ ऐसें पद परमांनंददासनें गायो तापाछें श्री गोवर्द्धननाथजी के मंगलाके दर्शन खुले तब परमांनंददासनें श्री गोवर्द्धननाथजीसों पूछे जो आपतातो दूधक्यों आरोगतहैं तब श्रीनाथजीनें कह्योजो येहूमकों समर्पतहैं सो आरोगतहैं तापाछें परमांनंददासजी नित्यकीर्तनकरिकें सुनावते तब तासमय एक राजा दर्शनकों आयो सो श्री गोवर्द्धननाथजी के दर्शन करे तब फेरि आयकें रांनीसों कहीजो श्री गोवर्द्धननाथजी ठाकुर बहुत सुंदर हैं तातें तू जायकें दर्शन करि आउ तब रांनी नें कही जो जैसें हूमारी रीतिहै सोहोयतो दर्शन करें तब राजानें कही जो श्री गोवर्द्धननाथजी के दर्शन में काहेको परदाहै तब रांनीनें मांनी नाहीं तब राजानें श्री आचार्यजी महाप्रभुनसों वीनती कीनी जो महाराज में तो रानीसों बहुत कहत हों परि वह आवत नाहीं तातें आप कृपा करिकें दर्शन करवावो तो वह करे तब श्री आचार्यजी महाप्रभुननें कही जो इहां ले आवो जो प्रथम वाकों एकांतमें दर्शन क

रखावेंगे ता पाछें औरलोग दर्शनकरेंगे तब रा-
जा अपनी रांनी कोंलिवायकें श्री गोवर्द्धननाथ-
जी के दर्शन करवाए सो सब लोग सरकिगए तब
रांनी दर्शनकरवेलगी तब इतनेमें श्री गोवर्द्धन-
नाथजी नें सिंघपोरिके किवाड षोलि दीए सो सब-
भीरदोरिकें रांनीके उपर परी सो रांनी के सब वस्त्र निक-
सिपरे और बहुत लज्जितभई तब राजा नें रांनी सों
कही जो मैं नें तो तोसों पहलेंही कह्यो हुतो जो श्रीठा-
कुरजी के दर्शन में काहे को परदा है ये ब्रज के ठाकुर
हैं इन नें काहू को परदा रख्यो नाहीं तब वासमें प-
रमांनंददासजीनें पद गायो सोपद ॥ राग देवगंधार
कौंन यह षेलिवे की बांनि ॥ मदन गोपाल लाल का-
हू की राषत नाहिन कांनि ॥ १॥ यह एक तुक परमांनं-
ददासजीनें गाई हुती तब श्री आचार्यजी महाप्रभू-
ननें कह्यो जो परमांनंददास ऐसें कहो जो भली यह
षेलिवे की बांनि तब परमानंददासजें ऐसें ही पद गा-
यो सोपद ॥ राग देवगंधार ॥ भली यह षेलिवे की बां-
नि ॥ मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राषत कां-
नि ॥ १॥ अपने हाथ लेदेत है वनवर दूध दही घृत

सांनि॥ जो वरजोतो आंषिदिखावे पर धनकों दिन रा
नि॥ २॥ सुनिरीजसोदासुतकेकरतव यहले मांट म-
थांनि॥ फोरिदारिदधिडार आजरमें कोनसहैनित
हांनि॥ ३॥ ठाढी देषत नंदजूकी रानी मूंदि कमलमु
खहांनि॥ परमांनंददास जानत हे बोलिवूझिधों आं
नि॥ ४॥ यह पद परमांनंददासनें गायो तापाछेंकि
तेक पद गाए जोजो लीला श्रीठाकुरजीनें करी सो ता
ता लीलाके पद परमांनंददासनें गाए सो एकदिन भ
गवदीय रामदासजी और कृष्णदासजी कुंभनदास
जी सब वैष्णव मिलिकें परमांनंददासजी जहां रहत
हुते तहां आए सो भगवदीय आए देषिकें परमांनंद
दासजी बहुत प्रसन्न भए जो आज मेरे घर भगवदीय
आए हैं सो मेरो बडो भाग्य हे और आज मेरो भा-
ग्य सिद्धि भयो हे सो काहेतें जो श्रीठाकुरजी भगवदी
यके हृदेमें सदा सर्वदा बिराजत हें तातें भगवदीय
नकी कृपा होय तो श्रीठाकुरजी अनुग्रह करें जो ऐस
े भगवदीय मेरे घर पधारे हें सो प्रथम भगवदीयकी
न्योंछावरि करी चहिये जो ए सो तो कछू नांही सो न्यों
छावरि करों तब यह विचारिकें परमांनंददासनें ए

सेंही पदकह्यो सोपद ॥ रागहमीर ॥ आऐमेरेंनंदनंद
नकेप्यारे ॥ माला तिलकमनोहरवानोंत्रभुवनकेउजि
यारे ॥ १ ॥ प्रेमसहित वसत मनमोहन नेंकहूंटरत नटा
रे। हृदेकमलकेमध्य विराजत श्रीव्रजराजदुलारे २
कहाजानोंकोंनपुन्यप्रगटभयोमेरे घरजोपधारे-
परमांनंदप्रभूकरीन्योंछावरि वारि वारि होंवारे ॥ ३
यह पदभगवदीयन की भेटकरि अपने आएभगव
दीयन कोंविदाकीये ता पाछें ऐसी रीतिसों परमांनं
ददासनें श्री नाथजीकीभली भांतिसोंसेवाकीनीसे
वेपरमांनंददासजी श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके ए
सेकृपापात्रभगवदीयहें ताते इनकीवार्ताकहांतां
ईं लिषिये ॥ वार्ताप्रसंग ॥ ९ ॥ संबंध १९९ ॥ वेष्नव ॥ ८२

अब श्री आचार्यजीमहाप्रभुन
केसेवककुंभनदास गोरवा
तिनकी वार्ता हें

सोवेकुंभनदासजी श्री गोवर्द्धनपर्वतकेपासजमुना
वतो गांमहे तामेंरहते सोजमुनावतो नाम वागांम
को काहेतेहेंजो श्रीजमुनाजीको प्रवाहसारस्वतक
ल्पमें याकेनिकटहुतोताते जमुनावतो नाम वा-

गांमकोहै तामें कुंभनदासजीरहते औरपरासोलीचंद्रसरोवरिकेऊपरकुंभनदासजीकीधरतीहुती सो उहांषेती करते सो कुंभनदासजीश्री गोवर्द्धननाथजीकेपरमसखाहुते औरकृपापात्रहुते सो अबहीं श्री गोवर्द्धननाथजी प्रगटहोयकेंश्रीमहाप्रभूजीकोंबुलावेंगे तब येभगवदीयप्रसिद्धि-होंयगे सो एकसमें श्रीआचार्यजीमहाप्रभूपृथ्वीपरिक्रमाकरतझारषंडमें पधारे सो झारषंडमेंश्रीगोवर्द्धननाथजीनें आज्ञादीनी जो हम गोवर्द्धनमेंतीनिदमनहैं नागदमन १ इंद्रदमन २ देवदमन ३ तिनकेमध्यमेंहमदेवदमनहैं सोमेरोनामहैतातेंतुमआयकेंहमकोंपधराओ औरहमारीसेवाकोप्रकारप्रगटकरो तबश्रीआचार्यजीमहाप्रभूननेंपृथ्वीपरिक्रमाउहांईराषिकेंवेगपधारेतबदामोदरदासहरसांनीकृष्णदासमेघनगोविंददुबेजगन्नाथजोसीरांमदासयेपांचवैष्णवसंगहुतेसो श्रीआचार्यजीमहाप्रभूश्रीगोवर्द्धनकीतरहटीआयकेंसहूपांडेकेचोंतराऊपरविराजेसोआगेंश्रीगोवर्द्धननाथजीकेआगरनमेंयहसहूपांडे

भमांनी नरी श्री आचार्यजीमहाप्रभून के सेवक
भए हुते तिनकों श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें श्री
गोवर्द्धननाथजीकी सेवा सोंपी और व्रजवासी व्रज
में श्री आचार्यजीमहाप्रभूनके सेवक बहुत भए औ
र कुंभनदासजी श्री आचार्यजीमहाप्रभूनकी सर
ण आए सो श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें श्रीगोव
र्द्धननाथजीकों एक छोटोसों मंदिर सिद्धि करवायो
तामें श्रीनाथजीकों पधिराये और रांमदास चोहा
नकूं सेवाकी आज्ञा दीनी और सब व्रजवासी लोग
दूध दही मांखन लावते सो श्री गोवर्द्धननाथजी आ
रोगत हुते और रांमदासकों जो भगवद् इछा
तें जो आय प्राप्ति होय सो भोग धरते और आप प्र
साद लेते और जे व्रजवासी लोग श्री आचार्यजी
महाप्रभूनके सेवक भए हुते तिनकों श्री आचार्य
जी महाप्रभूननें आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व
है सो तुम सब वातनसों यत्न राषियो और सेवामें
तत्पर रहियो और कुंभनदासकों और सब सेवकन
कों श्री आचार्यजीमहाप्रभूननें आग्या दीनी जो तु
म देवदमन के दर्शन कीए बिना महाप्रसाद मतिली

लियों तबयाभांतिसों आग्याकरिकेंश्रीआचार्य जीमहाप्रभूननें पृथ्वीपरिक्रमाझाडषंडमेंराषी हती अबकुंभनदासजीनित्यश्रीआचार्यजीम- हाप्रभूनकीकृपातेश्रीगोवर्द्धननाथजीकेदर्श- नकों आवते सोकुंभनदासजीकीर्तनबहुतनीके गावतेजो श्रीआचार्यजीमहाप्रभूननेंकुंभनदासजी कोंनामसुनायो औरब्रह्मसंबंधकरवायो तबकुंभ नदासजीनित्यनएपदकरिकेंश्रीनाथजीकोंसुना वते औरश्रीनाथजीकुंभनदासजीकेघरपधारते औरबहुतक्रीडाकरतेषेलते वातोंकरते औरब हुतकृपाकुंभनदासजीकेऊपरकरते अबरामदा सजीश्रीगोवर्द्धननाथजीकीसेवा करनलागे सोए कसमें मलेछकोउपद्रवभयो सोइहांमानिकचं द पांडेतथासद्दू पांडेरामदासचौहानकुंभनदासस बमिलिकें विचारकीयो जोयहमलेछआयोहैसो धर्मकोद्वेसीहै सोकहाकर्तव्यहै तबसबनेंकहीजो यामेंकहाकर्तव्यकहापूछनो आपनोंविचारयो कहाहोतहै तातेंश्रीनाथजीकोंपूछो जोमहाराज कहाकरें तबश्रीनाथजीनें आग्यादीनीजो हम

कोंइहांतेलेचलो हमइहांतेउठेंगे तबसवननें पू
छोजोमहाराजकहांपधारोगे तबआपने श्रीमुष
सोंकह्योजो टोंडकेघनेमेंचलेंगे तबएकभैसाम
गायो तापर श्रीगोवर्द्धननाथजीकों बैठाए तब ए
कओरतेतो रामदास पकरें रहे ओरएकओरते
कुंभनदासजी पकरेंरहे ओरसब सेवक संगचले
जातहैं तहां घनेमेंकांटे बहुत हुते सोउहांकांटे
नमें बैठे सो वस्त्र सवनके फटिगए ओरसरीरमें
कांटेलगे दुषबहुत पायो सोघनेमें एकतला वहु
तो तहांरूषनकोएकचोकहै तहांबडेरूषनीचेश्री
नाथजी विराजे सोकछूकसामग्रीसंगहुती सोराम
दासनें भोगधरिकें जलकोकरवाभरिकें आगेंध
रिकें सब वेस्नव बैठे तबश्रीगोवर्द्धननाथजीनेंकुं
भनदाससोंकह्योजो कुंभनदासजी कछू गावौत
ब कुंभनदासजी तो मनमेंकुढिरहेहुते तब एक
पदनयोकरिकें गायो सोपद ॥ रागसारंग ॥ भाव
तहै तोइ टोंडको घनों ॥ कांटे लगे गोषुरू चूंदफ
टोजात यह तनों ॥१॥ सिंहहै कहालोकडीकोडर
यह कहावांनकवन्यों ॥ कुंभनदासप्रभू तुम गो

बर्द्धनधर व्रहकौंनरांडढेडनीकोजन्यों ॥ २ ॥ यहप
द कुंभनदासनें गायो सोसुनिकें श्रीनाथजीमुसिक्या
यकें चुपकरिरहे इतनेमें श्रीगोवर्द्धनतें समाचार
आए जो व्रह मलेक्षकी फोज आई हुतीसोपाछी-
फिरिगई तबश्रीगोवर्द्धननाथजीपर्वतऊपर मंदिर
मेंपधारे ॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ अब श्रीनाथजी पर्वतऊ
परमंदिर मेंविराजे सोव्रजके लोगनकोंबहुतहरष
भयो जोधन्यदेवदमनजोऐसो उपद्रव आयोहुतोसो
इनकेप्रतापतेसब मिटिगयो तबकुंभनदासजीप्र
सन्नहोय के पद गाए सोपद श्रीगोवर्द्धननाथजीकों
सुनाये ॥ राग श्री ॥ चर्चरी ॥ जयतिजयतिहरिदास
सर्बधरनें ॥ यहपद संपूरनकरिकें गायो ॥ पाछें औेर
पदगाए सोपद ॥ राग सारंग ॥ कृष्नतनतरयानीर
यहपदसंपूरन करिकें कुंभन दासनें गायो पाछें नि
त्यऐसे पद कुंभनदासजी देवदमनकों सुनावते त
बकुंभनदासजीके पद सब जगतमें प्रसिद्ध भएसोस
बलोग इनके पद गावते तब इनकोपद काहू कला
मतनें सीख्यो सोफतेपुरसीकरीमें देसाधिपतिके
आगें कुंभनदासजीको कीयो पद वाकलामतनें-

गायो सो सुनिकें देसाधिपतिकौ चित्त वा पदमें गडि
गयो और मांड्योधुन्यों जो ऐसेहू महापुरुष है गए
हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेस्वरके होतहे तब वाक
लामतनें कह्यो जो आजीसाहिब अबहू हैं सोसुनि
कें देसाधिपति बहुत प्रसन्न भयो और वाकलामत-
सों कह्यो जो वे कहांहैं तब वाकलामतनें कही जो श्री
गोवर्द्धनकेपासजमुनावतो गांमहै तहां वे रहतहैं त
ब देसाधिपतिनें कही जोइहां बुलावो हम उनसों मि
लेंगे तब देसाधिपतिनें मनुष्य और असवारी कुंभ
नदासजीके बुलायबेकों भेजे तब कुंभनदासजी तो
घर हुते नाहीं परासोलीमें बैठे हुते सो मनुष्यननें
उहां बताय दीए तब कुंभनदाससों कह्यो जो तुम
को पात्साहनें यादि कीयेहैं तब कुंभनदासनें क
ही जो भैया मैं कछू देसाधिपतिको चाकर तो नां
हीं मेरो देसापतिसों कहा कामहै तब देसाधिपति
के मनुष्यननें कही जो बाबासाहिब हम तो कांममें
कछू समझत नाहीं परि हमकों देसाधिपतिको हु-
कमहै जो कुंभनदासको ले आवो तातें यह पालकी
है यह घोडाहै जापर चाहो ता पर बैठिकें चलियेह

मतो आएहैं सो आपकोंलेजाउंगे तबकुंभनदासनें
मनमें विचारकीयो जोबिनाजाएतोनिर्वाहनहोय
गोसोकुंभनदासजीतत्कालउहांतेपनहींपहरिकेंच
ले तब कुंभनदासजीकों जो लेबेकों आए हुतेतिन
नेंकहीजो बाबा असबारीमें बैठिये तबकुंभनदा-
सनें कह्यो जोभैयामें तोकबहू बैठ्योनाहीं पांछेंगे
सेंहीं चलेसो फतेपुरसीकरी आय पहुंचे सो देसाधि
पतिके डेराहूते तहां गए तबमनुष्यननें देसाधिप
तिसों कह्योजोकुंभनदासजी आएहैं तबदेसाधिप
तिनें कह्यो जोकुंभनदासजी आवो बैठो सो आपबै
ठे सो वह स्थलकैसोहै जोजामें जडावकीरावटीत
में मोतीनकी झालरिलगीहैं ऐसो स्थलहो तामें
बैठे तब मनमें बहुत दुषलाग्यो और कह्योजोया
सों तोहमारे ब्रजकेहीसनकेरूष आछेहैं सोजिन
में श्रीगोवर्द्धननाथजीषेलतहैं तबइतनेमें देसा
धिपतिबोल्यो जोकुंभनदासजीतुमनें विसनपद
बहुतकीएहैं सो मेनें तुमकों बुलायोहै तातें तुमक
छू विसनपद गावो तब कुंभनदासजीतो मनमें कु
देहुते सोविचारे जोकहागाऊं मेरी वांणी केभक्ता

तोश्रीगोवर्द्धनधरहैं और कछू गाएविनातोमेरोकां
मचले गोनाहीं तातें ऐसो गाऊं जो कबहू मेरोनां
मन लेइ काहेतें जोयाकेसंगतें मेरे प्रभू छूटेंहैं तातेंक
छू कठोर वचनकहूं जोबुरोमाने गोतोकहाकरेगो
तव यहमनमें आई जोजाको मन मोहनसंगकेरखेंो
केसव सेनहीं सिरते जोजगवेरपरे यह विचारिकें
तासमय कुंभनदासजीनें एकनयोपदकरिकेगायो
सोपद ॥ रागसारंग ॥ भक्तनकोकहासीकरीकाम
श्रवत जात पन्हैयांटूटी विसरिगयोहरिनाम ॥१॥
जाकोमुखदेखें दुखलागे ताकोंकरन परीपरनाम
कुंभनदासलालगिरधरविन यहसबझूठोधाम २
यहपद गायोसोसुनिकेंदेसाधिपति अपनेमनमें
बहुतकुढ्यो और कह्योजो इनकों काहूबातकोला
लच होयतो ए मेरोजस गावें इनकों तो अपनेघरमें
खरसों सांचोसनेहहै इतनों कहिकेंदेसाधिपतिनेंकुं
भनदासकोंसीषिदीनी तवकुंभनदासजी उहांतेंच
ले सो मार्गमें आवत अतिकलेस जोकबहूं प्रभून
को श्रीमुखदेषोंसो ऐसोविचारिकेंकुंभनदासजीआ
वतहैं तासमय पद गायो सोपद॥ रागधनाश्री॥ कबहूं

देषिहोंइननेंननु॥सुंदरस्याम मनोहर मूरत अंग अंगसुषदेननु॥१॥वृंदावनविहारदिनदिन प्रतिगो पहंदसंगलेननु॥ हंसिहंसि हरषिपतो वन पावन बाटिवादियपफेंननु॥२॥कुंभनदास कितेदिनवीते कीये रेणमुषसेंननु॥ अबगिरधरबिननिसिअरुवासर मनननरहतक्योंचेंननु॥३॥यह पदमार्गमें गावत आए सो आयकें श्रीगोबर्द्धननाथजी के दर्शनकीए औरदोयदिनलोदर्शननभए सो कुंभनदासजीकोंदोयजुगकीबराबरबरबीतेसो श्रीमुख देषतही सबदुखबिसरिगए तब एक पद गायो सोपद॥रागधनाश्री॥नेंनभरि देषोनंदकुमार॥तादिनतेसबभूलिगयोहोंबिसस्योपनिपरिवार॥१॥बिनुदेषेंहूं विकलभयोहों अंगअंगस बहार॥ तातेंसुधिहे सांवरीमूरतिकीलोचनभरि भरिवार॥२॥रूपरासिपरमितनहींमानोंकेसेंमिलोंकन्हाई॥कुंभनदासप्रभु गोबर्द्धनधरमिलिये बहुरि रीआई॥३॥रागधनाश्री॥हिलिगनकठिनहे यामनकी॥जाकेलियें देषिमेरीसजनीलाजगई सब तनकी॥१॥धर्मजाउ अरुलोगहंसो

सब अरु गावो कुल गारी ॥ सो क्यों रहे नाहिं विन दे
षें जो जाको हितकारी ॥ २ ॥ रस लुब्धक निमष न छां
डत ज्यों आधीन मृग गानों ॥ कुंभनदास सनेह प
रम श्रीगोवर्द्धनधर जानों ॥ ३ ॥ ऐसे पद बहुत कुंभनदास
जीनें गाए सो सुनिकें श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भए
और कह्यो रसमें विन रहत नाहीं ॥ वार्ताप्रसंग ॥ २ ॥
और एक समें राजा मानसिंघ सब ठौर ते दिग्विजय करि
कें अपने देसकूं चले तब मनमें विचारें जो बहुत दिनमें
आए हें ताते मथुरा वृंदावन होयकें चलनों सो यह
विचारिकें आगरे तें चले सो मथुरा आए तब विश्रा
ति स्नान करिकें श्रीकेसोरायजी के दर्शन करिकें वृं
दावन चले सो उष्णकाल के दिन हुते तब वृंदावन के
सब महंतनने जानी जो आज इहां राजा मानसिंघ द
र्शन कों आवेगो सो यह जानिकें श्रीठाकुरजी कों अ
छे आछे जरी के वागे बहुत आभरन पहराये पि छ
वाई चंदोवा सब जरीन के बांधे इतने में राजा मान
सिंघ दर्शन कों आयो सो भीतर मंदिर में आयकें
श्रीठाकुरजी के दर्शन कीए सो उष्णकाल के दिन हु
ते सो बहुत गरमी पडे सो तासमें राजा मानसिंघ

पैठहो न रह्यो गयो ॥ जो एसे दर्शन चारि पंचि बडे हु
ते सो तहां सब ठोर दर्शन करि सब ठोर ते बिदा होय
कें अपने डेरा में आए सो डेरा आय कें मन में विचारे
जो अब ही कूंच करें सो उहां सों असवार होय कें च
ले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाम आए सो मान सी
गंगा ऊपर डेरा कीए सो तहां श्री हरदेव जी के दर्श
न कीए सो उहां वृंदावन के महंतन नें बडे ठाठ बना
ए हे तैसो ई इहां ठाठ बनाय राख्यो हुतो सो राजा
मान सिंह तहां ते दर्शन करि कें चले तब काहू नें क
ही जो महाराज इहां श्री गोवर्द्धन नाथ जी बहुत-
सुंदर ठाकुर हैं तहां आप दर्शन कों चलो तब रा
जा मान सिंघ नें कह्यो जो इहां तो अवस्य चलनों ए
ठाकुर सब व्रज के राजा हैं ताते इन के दर्शन तो अ
वस्य करने तब उहां ते चले सो गोपाल पुर गाम आ
ए तब आय कें पूछी जो दर्शन को कहा समय है त
ब काहू नें कही जो उत्थापन के दर्शन तो होय चु-
के हैं अब भोग के दर्शन होयगे तब यह सुनि कें रा
जा मान सिंघ श्री गोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों
गिरराज ऊपर आए सो उष्न काल के दिन मार्ग के

अमितदूरिकेचले आए सो गरमीमें राजा बहुतव्या
कुलभयो हुतो इतनेमें भोगके किवाड षुले सो रा-
जा मानसिंघकों मणिकोठामें लेगए तिन दिनन-
में श्रीनाथजीकी सेवा वैभवसों होती हुती बडो मं
दिर सिद्धिभयो हुतो श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगें गु
लावजलकों सिंगार भयो हुतो निजमंदिर मणिको
ठा तिवारी सब जलमय होयरहे हुते सो तासमय रा
जा मानसिंघ दर्शनकों गए हुते सो श्रीगोवर्द्धननाथ
जीके दर्शन करिकें साष्टांग दंडवत्कीनी और गर
मीमें राजा व्याकुलभयो हुतो सो सीतलताई भई ब
डो चैंन भयो और श्रीगोवर्द्धननाथजीको श्रीमुख
देषिकें राजा बहुत प्रसन्नभयो और कह्यो जो साक्षा
त् श्रीकृष्ण श्रीवृंदावनचंद्र श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं
आगें श्रीभागवतमें सुन्यों हुतो सो आज देषे आ
जदिन है सो धन्य है और आज मेरो बडो भाग्य है
और मनमें कह्यो जो यह भोगको समय है सो तो-
प्रभूनकी राजधानीको समय है सो वे प्रभू विराजे
हैं आगें ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत हैं सो कु
भनदासजी ठाडे ठाडे मणिकोठामें दर्शन करत हैं

और कीर्तन गावतहैं सो राजा मांनसिंघकोमनवा पदमेंगढि गयोहुतो तैसोई को ढिकदर्पणावणयस्व रूप और तैसोई कीर्तन कुंभनदासजी करतहुते सो· पद॥ रागनट॥ रूप देषि नैंना पललागे नहीं॥ गोवर्द्ध न के अंग अंग प्रति निरखि नैंन मन रहत तहीं॥१॥ कहा कहौं कछु कहत न आवै चित चोर्यो मांग बेद हीं॥ कुंभनदास प्रभू के मिलन की सुंदर बात सखीय न सों कही॥२॥ राग धनाश्री॥ आवत मोहन मन जु हर्योहो॥ हों ग्रह अपने मन सचु सों बैठी निरषि ब दन अचरा विसर्योहो॥१॥ रूपनिधान रसिक नंदनं दन निरषि वदन धीरज न धर्योहो॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधर अंग अंग प्रेम पियूष भर्योहो॥२॥ ऐसे पद कुंभनदासजी गावत है इतने में राजभोग के· दर्शन होय चुके तब राजा मानसिंघ दंडोत करि कें· अपने डेरा में गयो तब कुंभनदासजी संध्या आरती के दर्शन करिकें अपनी सेवा सोंपहुंचि कें अपने घरकों गए तब राजा मांनसिंघ अपने डेरा में जाय कें अपने पास के· मनुष्य हुते तिनमें श्री गोवर्द्धननाथ जी के सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यो जो यह श्री गोवर्द्धनना

थजी के आगें कौंन गावत हुतो इननें ऐसे विसन
पद गाए हे जो कछू कहिवेमें नाहीं आवत तबका
हूनें कही जो महाराज एक ब्रज वासी हे कुंभनदास
नाम हे सो आय सुने ही हें पगे देसाधिपतिसों मिले
हुते सो हें तब राजा मांन सिंघनें कही जो हम हूं इन
सों मिलें तो आछो तब राजा मांनसिंघ सवारें उठके
श्री गिरराज की परिक्रमा कों निकसे सो परासोली
आए सो परासोली में कुंभनदासजी न्हाय के बैठे
इतने में श्री गोबर्द्धन नाथजी पधारे सो श्री मुख-
सों कहे जो कुंभनदासजी हों तो गि एक बात कहूंगो
तब इतने में राजा मानसिंघ आयो सो कुंभनदासजी
कौं नमस्कार करिकें बेठो और श्रीनाथजी तो वहांतें
दूरि जाय ठाढे भए सो श्रीनाथजी तो एक कुंभन दा
सजी कों देखे हें और इनकी भतीजी कों देखे हें त
ब कुंभनदासजी की दृष्टि तो श्री नाथजी के संग ही
गई सो श्रीनाथजी बैठे हें तहां कुंभनदासजी देखि
वो करे तब भतीजी बोली जो बाबा राजा बैठे हें त
ब कुंभनदासजीनें कही जो मैं कहा करूं जो बैठे हैं तो
जो बात कहत हुते सो तो भाजि गए सो अब कहेंगे

तबदूरितें श्रीनाथजीकहें जोकुंभनदासमेंबात क
रूंगो तब कुंभनदासजी प्रसन्नभए औरभतीजी
सों कह्यो जो अमुकी आरसीलाउ तिलककरों तब
भतीजीनें कही जो बाबा आरसीतो पडियापीगई
तब राजानें कुंभनदासजीकीभतीजी सों कह्यो
जो अरी छोरी पडियाकहापीगई तब व्रह कठोठी
में पानीलायकें कुंभनदासजीके आगेंधस्यों तब
कुंभनदासजी वामें देषिकें तिलककरन लागे इ
तनेमें राजा मानसिंघनें अपनी सोनेकी आरसी
कुंभनदासजीके आगेंधरी औरकह्योजो बाबा
यामें देषिकें तिलककरिये तब कुंभनदासजी बो
लेजो अरेभैया याकोंहों कहाकरूंगो हमारेंतोइहां
छानिकेघरहें तातेंकोऊ याकेपीछें हमारोजीवले
इगो तातें हमें तोयह नाहींचहियतहे तबराजामा
नसिंघनें इनके आगेंसोनेकी थेलीधरी तबकुंभन
दासनें कह्यो जोभैयाहमकोंतोयह नाहींचहियत
हमारे तो यह षेतीहे ताको धन आवतहे सोषात
हें तब राजा मानसिंघनें कह्यो जोभलो आपको
गामहे ताकोंलिष्योहोंकरिदेउ तबकुंभनदासनें

कह्यो जो भैया हौंतो ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लें उ तब फेरि राजा मानसिंघनें कह्यो जो बाबा साहिब कछू तो आग्या करो तब कुंभनदासनें कह्यो जो ह मारो कह्यो करैगो तब राजा मानसिंह नें हाथि जोरि कह्यो जो आप कहोगे सो करूंगो तब कुंभनदास नें कह्यो जो फेरि मेरे पास तुम मति आईयो तब राजा मानसिंघनें कह्यो जो ए धन्य हैं माया के भक्त तो सगरी पृथ्वी में फिर्यो सो बहुत देषे परि भगवद्भक्त तो ए कएही देषे यह कहिकें राजा मानसिंघ कुंभनदास कों दंडोत करिकें उठि चल्यो तब फेरि आयकें कुंभनदास सों श्रीनाथजीनें वह वात कही और बहुत प्रसन्न भए तब फेरि कुंभनदासजी श्रीगिरराज ऊपर आय कें श्रीनाथजी की सेवा में तत्पर भए ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ और एक समें कुंभनदासजी कों मिलिवेकों वृंदावन के महंत हरिवंस भृत आए सो यह जानिकें आए जो म हापुरुष हैं इनसों श्रीठाकुरजी वोलत हैं बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्त्तन बहुत सुंदर कीए तातें ऐसे पद श्रीठाकुरजीके साक्षात्कार बि ना न होंय यह जानिकें कुंभनदासजी सों मिलिवे

आए सोकुंभनदासजीसोंमिलिकेंबह्रुतप्रसन्नभए
औरकह्योजोकुंभनदासजीतुमनेंविसनपदबह्रुत
कीएहैं सो हमनें आयकेंसुनेहैं औरआपकोपदश्री
स्वामिनीजीकोनाहीसुन्यों तातें आपकोईश्रीस्वा
मिनीजीकोपदसुनावौ तबकुंभनदासजी नें श्रीस्वा
मिनीकोपदकरिकें गायो॥सोपद॥रागरामकली॥ता
लचर्चरी॥कुंवर राधिकेतुवसकलसौभाग्यकीञाव
दनपरकोटिसनचंद वारो॥खंजनकुरंगसतकोटिजं
घनऊपरसिंहसतकोटिउपन्योंछावरिउतारोंमतस
तकोटिचालिपरकुंभसतकोटिइनकुचनपरवारिडा
रों॥१॥कीरदसकोटिदसननपरकहिनवारोंपंक
कंदूरवंद्रुकसतकोटिअधरनऊपरवारिरुचिरगर्भ
टारों॥नागसतकोटिवेनीऊपरकपोलसतकोटिस्कर
जुगलपरिवारनेंनाहिनकोऊलोकउपमाजुधा
रों॥२॥दासकुंभनस्वामिनीसुनखसिखअति
अद्भुतसुठांनकहांलगिसमारों॥लालगिरधर
कहतमोहितोहितोजीवहरूपछिनछिननिहारों॥३॥
यहपदकुंभनदासनें गायो सो सुनिकेंमहंत ब
ह्रुतहीरीके औरकहेंजोहमनें श्रीस्वामिनीजी

केपद बहुत कीएहैं परि उहांउपमा दीनीहै और
ज़ारि फेरि डारी तातेंकुंभनदासजी आपबडेमहा
पुरुषहो आपकी सराहना कहांलांई करियेबाम
हं तानें कुंभनदासजी की बहुत बडाई करी बहुतरीझे
तापाछे वे महंत आदिसब कुंभनदासजीसों बिदा
होयकें अपनेंघर कोंगए॥ वार्ताप्रसंग॥४॥ औ
र एकसमें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलमें अपनेंघरतें
श्रीनवनीतप्रियाजीसों आज्ञा मांगिकेंबिदेसा
पेंद्वारिकाकोंपधारे सोश्रीगुसांईजीश्रीनाथजीद्वा
रपधारे सोश्रीनाथजीकोसेवा सिंगारकीए तापा
छें आपभोजनकरिकें गादीऊपर बिराजे तबसब
सेवकदर्शनकों आए तब बातचलतमें कुंभनदा
सजीकीबात चली तब काहू बैष्नवनेंकह्योजोम
हाराजकुंभनदासजीकोंद्रव्यकों बहुत संकोचहै
सातबेटाहूहैं और उपजत तोएक षेतीकीहै ता
कोधन आवतहै तासोंनिर्बाहकरतहैं सोयहबा
त श्रीगुसांईजीनें अपने मनमें रषी तापाछें उ
त्थापन केसमें कुंभनदासजीदर्शनको आए त
ब श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कहे जोकुंभन

दास हम श्रीद्वारिकारणछोडजी के दर्शन कों पधा
रेंगे और विदेस हू होयगो वैष्णवनने बहुत करकें
लिख्यो है तातें जो तुम संग चलो तो विदेस में भगव
दीय को ग्रह काल बाधा न होय तब भगदीय को का
ल चितीत होजाय कछू जान्यों न परे और में सुन्यो है
जो कछू तुम्हारें द्रव्य को संकोच है सो ऊहां सिद्धि
होयगो तातें सर्वथा तुम कों चल्यो चहिये तब कुंभ
नदासनें कह्यो जो आज्ञा इतनने में दर्शन को सम
यभयो सो श्रीगुसांईजी आप स्नान करिकें श्रीनाथजी
के मंदिर में पधारे श्रीनाथजी की सेवा सों पहुंच के
श्रीनाथजी कों पोढाय कें बैठक में पधारे और कुंभ
नदासजी को सीख दीनी जो कुंभनदासजी जो तुम
सेवातें पहुंचिकें बेगे आइयो हम कालि आरती क
रिकें आप छराकुंड ऊपर जाय रहेंगे तब कुंभनदा
सजी श्रीगुसांईजी कों दंडोत करिकें अपने घर कों
आए सवारें सेवासों पहुंचिकें श्रीनाथजी के दर्शन क
रिकें अप छराकुंड ऊपर आए और श्रीगुसांईजी श्री
नाथजी सों सीख मांगि कें आप नीचें आए पाछें आ
प भोजन कीए और सब सेवकन कों महाप्रसाद लि

वायो तापाछें ताहीसमय कोमुईतें हुतो सोश्रीगुसां ईंजी आप पर्वतनीचें आए सो अपछरा कुंड ऊपर आए सोतहां अपछरा कुंड ऊपर डेरा करे हुते सबसे वक आगाऊ सों ठाढे हुते सो श्री गुसांईंजी डेरा पधारि कें पोढे इतने में सब सेवक सामांन लेकें वेऊ आएसो कुंभनदासजी उहां वैठिकें विचार तहुते कहियेजोक हिवे कीहोय आन नाथ विछुरन कीविरियाजानति नाहिनकोई यहविचार करतकरत उत्थापनकोस मयभयो तब श्रीगुसांईंजी आपभीतर डेरामें जागे और कुंभनदासजीकुं दर्शनकीसुधि आई सोउहांपुं छरीकी ओर कोनेमें जायकें वैठिकीर्तन गावतेहे और आंखिनमें तेजल कोप्रवाह वहतहो सो कुंभनदास नेंएकपद गायो सोपद ॥ रागसारंग ॥ केतेदिनजु गये विनदेषें ॥ तरुण किशोर रसिक नंद नंदन कछुक उ ठतमुखरेषें ॥ १ ॥ वह सोभा वह कांति वदनकी कों टिकचंद विसेषें ॥ वह चितवन वह हास्य मनोहर व हनटवर वपु भेषें ॥ २ ॥ स्याम सुंदर संग मिलिखेल नकी आवतजीय अपेषें ॥ कुंभनदास लालगिर धरविनजीवनजन्म अलेषे ॥ ३ ॥ यह पद कुंभन-

दासनें गायो सो श्रीगुसांईंजी आप डेरा के भीतर सुनें सो कुंभनदासजी को कलेस श्रीगुसांईंजी सों सह्यो न गयो सो श्रीगुसांईंजी आप डेरा के वाहिर पधारे और श्रीमुखतें कह्यो जो कुंभनदास अब तुम वेगि जाउ तुम्हारो बिदेस होय चुक्यो और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है सो कैसें जानिये। जो श्रीअक्काजीनें गज्जन धावन कों पान लेवे कों पठायो सो गज्जन धावन कों तो भगवद आसक्ति देखे विना एक क्षणहूं न रह्यो जाय सो गज्जन धावन पान लेवे को वाहिर गए सो थोरी सो दूरि गए और ज्वर चढि आयो सो मूर्छा षाय कें गिरे और श्रीअक्काजीनें श्रीनवनीतप्रियाजी को भोग समर्प्यो तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें गज्जन धावन को वोल न सुन्यों तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें आपनें श्रीमुषसों कह्यो जो मेरो गज्जन कहां है तब श्रीअक्काजीनें कह्यो जो वह तो पान लेवे कों गयो है तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें कह्यो जो मेरो गज्जन आवेगो तब आरोगूंगो सो श्रीहस्त षेचि कें बैठि रहे तब वेगि गज्जन धावन कों बुलायो तब गज्जननें

कही जो बाबा आरोगो तब श्री नवनीतप्रियाजी आरोगे हैं यह श्री आचार्यजी महाप्रभून की मर्यादा है जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय और भगवद्गीता में भगवान कहे हैं ॥ श्लोक ॥ ये यथा मां प्रपद्यंते तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ यह आधो श्लोक कह्यो तातें श्रीगुसांईजी कहे हैं जो इहां तुम्हारी विवस्था है और उहां उनकी विवस्था है सो ऐसो कुंभनदासकों और श्रीनाथजी कों विरह हुतो तातें श्री गुसांईजीनें कुंभनदास कूं सीख दीनी तब कुंभनदासनें श्रीनाथजी के दर्शन कीए तब कुंभनदासनें एक पद गायो सो पद ॥ रागसारंग ॥ जो पै चोप मिलनकी होय ॥ तो क्यों रहे ताहि विन देषें लाष करो जिन कोइ ॥ १ ॥ जो पै विरह परस्पर व्यापै जो कछू जीवन वनें ॥ लोक लाज कुलकी मर्यादा एकों चित न गनें ॥ २ ॥ कुंभनदास प्रभू जा हित तन लागी और कछू न सुहाय ॥ गिरधरलाल तोहि विन देषें छिन छिन कल्प विहाय ॥ ३ ॥ सो यह पद कुंभनदासनें श्रीनाथजी के संनिधान गायो सो सुनि कें श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भए सो कुंभनदास श्रीनाथजी कों प्रसन्न देषि कें प्रसन्न भए ॥ वार्ता-

प्रसंग॥२॥ और एकसमें कुंभन दासजी श्री गुसांई जी के पास बैठे हुते तब कुंभन दासनें श्री गुसांईजी सों कह्यो जो महाराज बेटा डेढ है और हैं तो सात तब श्री गुसांईजीनें कह्यो जो कुंभनदास जी डेढको कारन कहा तब फेरि कुंभन दासजी कहे जो महाराज आषो बेटा तो चत्रभुजदास है और आधो बेटा कृष्ण दास है सो श्री नाथजीकी गायनकी सेवा करत है ता सो आधो है कुंभन दासजी कृष्ण दासकों आधो क्यों कह्यो ताको हेत यह जो श्री आचार्यजी महाप्रभू पुष्टि मार्ग प्रगट कीयो है सो पुष्टि मार्ग कहा है जो ब्रजभक्तनके हेत यह मार्ग प्रगट कीयो है सो भगवदीय गाए हैं जो सेवा रीति प्रीति ब्रज जनकी जनहित जग प्रगटाई सो ब्रजभक्तनकी कहा रीति है जो श्री ठाकुरजी के सन्निधान तो सेवा करे और श्री ठाकुरजी वन में पधारें तब गुण गाण करे जो एव स्तु होंयतो आषो और इनमें तें एक होय तो आधो तातें चत्रभुज दास सेवा और गुण गाण है तातें आषो और कृष्ण दासमें एक सेवा है सो आधो तब श्री गुसांईजी श्री मुखतें कहें जो भगवदीय

कही जो वावा आरोगो तवश्री नवनीतप्रियाजी-
आरोगे हैं यह श्री आचार्यजीमहाप्रभूनकी मर्यादा
है जो जितनों सेवक कोस्वामी ऊपर स्नेह होय और
भगवद्गीतामें भगवांनकहे हैं ॥ श्लोक ॥ येयथामां
प्रपद्यंते स्तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ यह आधो श्लोकक
ह्यो तातें श्रीमुखसोंकहैं जोइहां तुम्हारी विवस्था-
है और उहां उनकी विवस्था है सोऐसो कुंभनदासकों
और श्रीनाथजीकों बिरह हुतो तातें श्री गुसांईजीनें
कुंभन दासकूं सीखदीनी तब कुंभन दासनें श्री ना
थजीके दर्शनकीए तबकुंभन दासनें एक पद गायो
सो पद ॥ रागसारंग ॥ जो ये चोप मिलनकी होय ॥ तो
क्योंरहे ताहिविन देषें लाष करोजिन कोइ ॥ १ ॥ जो
पे विरह परस्पर व्यापे जो कछू जीवन वनें ॥ लोकला
ज कुलकी मर्यादाएकौ चितन गनें ॥ २ ॥ कुंभनदास प्र
भू जाहितन लागी और कछू न सुहाय ॥ गिरधरला
ल तोहि विन देषें छिन छिन कलप विहाय ॥ ३ ॥ सो
यह पद कुंभनदासनें श्रीनाथजीके संनिधान गायो
सोसुनिकें श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भए सो कुंभनदा
स श्रीनाथजीकों प्रसन्न देषिकें प्रसन्न भए ॥ वार्ता-

प्रसंग ॥ २ ॥ और एक समें कुंभन दासजी श्री गुसांई
जी के पास बैठे हुते तब कुंभन दासनें श्री गुसांईजी
सों कह्यो जो महाराज वेटा ढेढ हैं और हैं तो सात तब
श्री गुसांईजी नें कह्यो जो कुंभनदासजी डेढ़ को
कारन कहा तब फेरि कुंभन दासजी कहे जो महारा
ज आधो बेटा तो चत्रभुजदास हैं और आधो बेटा
कृष्ण दास हैं सो श्रीनाथजी की गायन की सेवा क-
रत हैं ता सो आधो है कुंभन दासजी कृष्ण दासकों आ
धो क्यों कह्यो ताको हेत यह जो श्री आचार्यजी म-
हाप्रभू पुष्टि मार्ग प्रगट कीयो है सो पुष्टि मार्ग क
हा हैं जो व्रजभक्तनके हेत यह मार्ग प्रगट कीयो है सो भ
गवदीय गाए हैं जो सेवा रीति प्रीति व्रज जनकी ज-
न हित जग प्रगटाई सो व्रज भक्तनकी कहा रीति है-
जो श्री ठाकुरजी के सन्निधान तो सेवा करें और श्री ठा
कुरजी वन में पधारें तब गुण गाण करें जो एवस्तु
होंय तो आखो और इनमें तें एक होय तो आधो-
तातें चत्रभुज दास सेवा और गुण गाण हैं तातें
आखो और कृष्ण दासमें एक सेवा है सो आधो
तब श्री गुसांईजी श्री मुख तें कहे जो भगवदीय

हैं तेई वेदा हैं और बहुत भए तो कोंन काम के-
यह चत्रभुज दास की वार्ता में लिषे हैं- ॥

अब कृष्न दास की वार्ता

सो वे कृष्न दास श्री नाथ जी की गायन के ग्वाल
हुते श्री गुसांईं जी नें इन कों गायन की सेवा दी
नी हुती सो कृष्न दास श्री नाथ जी की गायन की
सेवा करते सवारें षिरक सेवा सों पहुचि कें फेरि
गाय चरायवे कों जाते सो सगरे दिन कृष्न दास-
सेवा गायन की करते सो एक दिन गाय चराय कें
पूंछरी की ओर कृष्न दास गायन के संग आवत
हुते सो सगरी गाय तो षिरक में आई और एक
गाय बडी हुती ताको ऐंन बहुत भारी हुतो सोव
ह गाय बहुत हरुवें हरुवें चलती सो वा गाय कों
आवत अधियारो परि गयो सो तहां पर्वत के नीचें
अधियारे में एक नाहर निकस्यो सो गाय पै दोर्यो
तब कृष्न दास कहे जो अरे अधर्मी यह श्री नाथ जी
की गाय है तू भूषो है यतो मेरे ऊपर आउ तब इत
नमें गाय तो भाजि षिरक में गई और नाहर नें कृष्न
दास को अपराध की यो और ऊपर कहि आए हैं

जोगाय सवषिरकमें आई तब श्री नाथजी आयगा
यदुहिबेकों आए सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं और व
हवडी गाय षिरकमें आई सोवा गाय कों श्री दुहिवे
कों बैठे और कृष्नदास बछरा थांभें हैं और वह गा
य बछराकों चाटत हैं सो ऐसें दर्शन कुंभनदासजी
कों भए तापाछें गो दोहन करिकें श्री नाथजी गिर
राज ऊपर मंदिरमें पधारे तब श्री गुसांईजी भोग स
मर्प्यो और कुंभनदासजी षिरकमेंसों आए सो
दंडोतीसिला पास ठाडे भए इतनें में समाचार आ
ए जो कृष्नदासकों नाहरनें मार्यो सो सुनिकें कुं
भनदासजी मूर्छा षायकें गिरे सो ऐसे गिरे जो देहा
नुसंधान भूलि गये तब कुंभनदासजी कों सब को-
ऊ बुलावें परि बोलें नाही तब ए समाचार काहूनें
श्री गुसांईजी सों कहे जो महाराज कृष्नदास कों ना
हरनें मार्यो और गायकों कृष्नदासनें वचाई सो
कृष्नदास वहांई परे हैं तब श्री गुसांईजी कहे जो-
गाय कबहू न छोडि आवें अंत समें गाय संकल्प क
रत हैं ताकों गाय उतिमलोकमें ले जात हैं और कृ
ष्नदासनें तो श्री नाथजी की गाय वचाई है तातें इ

ष्ण दासकों गायकेसें छोडि आवेगी और श्रीगुसांई
नें कह्यो जोकुंभनदासजीकहांहैं तबकाहू वैस्नवनेंक
हीजोमहाराज कुंभनदासजीकों कलेस बहुत बाधा
कीयोहे जोकुंभन दासजी ऊपर आवत हुते सोकुंभन
दासजीके आगेंकाहूनें कृष्ण दासके समाचार कहेसो
सुनत ही कुंभन दासजी मूर्छा षायकें गिरे सो लोग ब
हुतही बुलावतहें परि आवत नाही तबश्रीगुसांई
जीनें अपने श्रीमुखसों कह्यो जोफेरि कुंभन दासजीकी
षवरिल्यावो जोकुंभनदासजी की देह जोकेसें हे सो वे
आयकें कुंभनदासजी को पुकारे तब ए समाचार श्री
गुसांईजी सों कहे जोमहाराज कुंभन दासजी तोकछू
समझत नाही तबश्री गुसांईजी आप सेंन भोग के
दर्शन करिकें श्रीनाथजीकों पोढायकें आप नीचें-
पधारे सोदेषे तो मार्गके सांम्हें कुंभनदासजी परे हें
और लोग चारयो ओर ठाढेहें सो कहत हें जो कुंभन
दासजीकेसे भगवदीयहें परि पुत्रको सोक बहुत बुरो
होतहे या पीरसों कोई वच्योंनाही काहेतें जो अप-
नी आत्माहें तब यह वात लोगनकी सुनिकें श्रीगुसां
ईजी मनमें विचारें जो इहांतो कारण कछू औरहे

और लोगनकों तोकछू और भाषतहै तातें भग
वदीयको स्वरूप करिवे केलिये श्रीगुसांईजी अ
पने श्रीमुषसों कहें जो कुंभनदासजी सवारें तुम वे
गे आईयो तुमकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन क
रावेंगे तुम मनमें षेद मतिकरो इतनों श्रीगुसांईजी
श्रीमुषसों कहें तब कुंभनदासजी उठ ठाढे भए औ
र प्रसन्न भए तब श्रीगुसांईजीकों दंडोतकरिकें कुं
भनदासकों जोकार्य करनोंहो सो सब कीयो पाछें स
वारें कुंभनदासजी दर्शनकों आए श्रीनाथजीकों
सिंगार करिकें श्रीगुसांईजीनें कह्यो जो प्रथम कुंभ
नदासजीकों दर्शन करायदेउ सो कुंभनदासजी वे
छ्नवनके ऊपर यह कार कीयो जो काहेतें सूत की
कों कोन भगवत मंदिरमें जान देतो सो कुंभनदास-
जीके अनुग्रहतें सबको ऊ दर्शन करत हैं सो कुंभन
दासजी नित्य एकवेर दर्शनकरिकें परासोली में जा-
यबैठते सो उहां बैठे बैठे बिरहके पद गावते ॥ सोपद ॥
रागधनाश्री ॥ तुम्हारे मिलन बिन दुषित गुपाल ॥ अ
ति आतुर ब्रजसुंदर प्यारे बिरही बेहाल ॥ १ ॥ सीतल
चंद तपन भयो दाहत किरणा कमलज नु जाल ॥ चं

दनकुसमसुहायघनसार लगत बढीज्वाल ॥ २॥ कुं
भनदास प्रभूनवधन तुम बिनकनक कलतामानों
सूखी जीवमाकाल ॥ अधरामृतवं सीचिलेउतुम
गिरि गोबर्द्धनलाल ॥ ३॥ रागधनाश्री॥ अबदिन रा-
त्रिपहरिसेभए ॥ तबतेंनिघटतनाहिनजबतेंहरिम
धुपुरीगए ॥ १॥ यहजानियतविधानाजुगसमकीने
जामनए॥ जागतजागविहातनकेंऐसे शीतिठए॥
२॥ ब्रजवासी अतिपरमदीनभएब्याकुलसोचल
ए ॥ वन सांगणदुषित जलरुहगन दारुणहेमपए॥
कुंभनदासविछुरतनंदनंदनबहुत संतापकरे॥ अ
बगिरधरबिनरहत निरंतर नैतननीरछए ॥४॥रा
ग केदारो॥ औरनकोंसमीप विछुरनों आयोमेरीहि
सा॥सबकोऊसोवें सुखअपने आली मोकूंचाहत
रिसा॥१॥नाजानोंयहविधाताकी गतिमेर ॥ आकलि
षेऐसोकोनरिसा॥ कुंभनदासप्रभूगिरधरकहत-
निसदिन रहिज्योंचात्रकघनत्रसा॥ २॥ ऐसेपदकुंभ
नदासजीनेंगायगाय सूततें पदकीए पाछेंसुद्दहो
यकेंकुंभनदासजीभगवदसेवामें आए ऐसीजि
नकोंदर्शनकी आरतिसोव्हेकुंभनदासजी श्रीअ

चार्यजी महाप्रभून के ऐसे परमकृपा पात्र भगवदी यहैं तातें इन की वार्ता को पार नाही तातें इन की वार्ता कहां ताई लिषिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ६ ॥ संबंध ॥ २७५ ॥ वैष्नव ॥ ८३ ॥

अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक कृष्नदास अधिकारी तिन की वार्ता

सो वे कृष्नदास सूद्र एक वेर द्वारिका गए हुते सो श्रीरणछोडजी के दर्शन करिकें तहांतें चले सो आधन मीरांबाई को गांम आयो सो वे कृष्नदास मीरांबाई के घर गए तहां हरिवंसव्यास आदि दे विशेष सह वैष्नव हुते सो काहूकों आए आठ दिन काहूकों आए दस दिन काहूकों आए पंद्रह दिन भए हुते तिन की विदा न भई हुती और कृष्नदास नें तो आवत ही कह्यो जो हूं तो चलूंगो तब मीराबाई नें कह्यो जो बैठो तब कितनीक महोर श्रीनाथजी की देन लागी सो कृष्नदास नें न लीनी और कह्यो जो तू श्री आचार्य जी महाप्रभून की सेवक नाही होत तातें तेरी भेट हम हाथतें न छूवेंगे सो ऐसें कहि कें कृष्नदास उहांतें उठि चले सो जब आगे आए तब एक वैष्नव नें कह्यो जो

तुमनें श्री नाथजी की भेट नाहीं लीनी तब कृष्नदा
सनें कह्यो जो भेट की कहा है परि मीराबाई के इहां
जितने सेवक बैठे हुते तिन सवन की नाक नीची करि
कें भेट फेरी है इतने इक ठौर कहां मिलते ये हू जानेंगे
जो एकवेर सूद्र श्री आचार्यजी महाप्रभून को सेवक
आयो हुतो तानें भेट न लीनी तो तिन के गुरू की कहा
वात होयगी ॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ और प्रथम सेवा श्री-
नाथजी की बंगाली करते जो श्री आचार्यजी महा
प्रभूननें मुकट काछिनी और हीरा के आभरन भरा
य दीने हे सो नित्य धरते सो भेट आवती सो षरच
होती कछू संग्रह न राषते सब खरच होय जातो औ
र बंगाली सेवा करते पाछें श्री आचार्यजी महाप्रभू
ननें कृष्नदास कों आग्या दीनी जो तुम श्री गोवर्द्धन
रहो सेवा टहल करो तव कृष्नदास अधिकारी भए
अधिकार करन लागे पाछें एक दिन मथुरा कों च-
लन लागे सो अंडीगलों पहुंचे तब पेडे में अवधू
त दास मिले महापुरुष हुते ब्रज में फिस्यो करते सो
कृष्नदास कों मिले तब अवधूत दास नें कह्यो जो
कृष्नदास तुम कहां चले तब कृष्नदास नें कही जो

मथुरा जात हो कछू काम है तब अवधूत दासनें पूछी जो श्रीनाथजी सेवा कोन करत है तब कृष्न दास नें कही जो बंगाली करत हैं तब अवधूत दासनें कही जो श्रीनाथजी कों अपनों वैभव बढाव नों हैं तातें तुम बंगालीन कों दूरि क्यों नाहीं करत सो अवधूतदास सों श्रीनाथजी नें कह्यो जो मोकों बंगाली बहुत दुष देत हैं सो तब बंगाली श्रीनाथजी कों भोग धरते सो उन की चुटिया में छोटो सो स्वरूप हुतो देवी को सो साम्हें वे ठावते जब भोग सराव तें वा देवी कों अपनी चुटिया में धरलेते ऐसें सदां करते सो बात अवधूत दास कों श्रीनाथजी नें जताई तातें अवधूत दासनें कृष्न दास सों कह्यो जो तुम बंगालीन कों दूरि करो तब कृष्नदासनें कही जो श्री गुसांईं जी की आज्ञा विना कैसें काढें तब अवधूत दासनें कह्यो जो तुम अडेल में जाय कें श्रीगुसांईं जी की आज्ञा ले आवो जैसें बनें तैसें इन बंगालीन कूं काढो तब कृष्नदास अडींग सों फिरे सो श्री गोवर्द्धन आए तब बंगालीन सों कह्यो जो हूं तो श्री गुसांईं जी के पास अडेल जात हों तुम श्रीनाथ

जी की सेवा सावधानी सों करियो और सब सेवकनसूं
ते तिनसों कृष्णदासनें कह्यो जो हूं तो अडेल जात हूं
श्रीगुसांईजी के पास कछू काम है तुम सावधान रहि
यो तापाछें श्रीनाथजी सों विदा होयकें अडेलकों
चले सो दिन पंद्रह में श्रीगुसांईजी के पास आय
पहुंचे सो आयकें श्रीगुसांईजी कों दंडोत कीए त
ब श्रीगुसांईजीनें पूछो जो कृष्णदास तुम क्यों आ
ए तब कृष्णदासनें कह्यो जो श्रीनाथजी कों आपनों
वैभव बढावनों है और बंगालीननें बहुत माथों
उठायो है जो भेट आवत है सो लेजात हैं सो सब अ
पने गुरुनकों देत हैं तब श्रीगुसांईजी कहें जो श्री
आचार्यजी महाप्रभू असुर व्यामोह लीला दिखा
ई तापाछें श्रीगोपीनाथजी पूरबकों परदेस कीयो
सो एक लक्षकी भेट भई पाछें अडेल आए तब
श्रीगोपीनाथजीनें कही जो यह पहलो परदेस
है तातें या में आयो सो सब श्रीनाथजीकोहै श्रीना
थजीकों विनयोग कीयो चहियेतापाछें श्रीगोपीनाथजी दि
नबारह रहिकें पाछें श्रीनाथजीद्वार पधारे सो जाय
पहुचे तब श्रीगोपीनाथजीनें दर्शन कीयो पाछें

जो लाए हुते सो सब भेट कीनों आभूषन सब जड़ा
व के सम राग थार कटोरा डबरा चमचा तष्टी इत्यादिक
सब सोना रूपा के कीए सब करिकें श्रीनाथजी सों वि-
दा होय कें श्री गोपीनाथजी अडेल आए तापाछें बं
गाली बरस एक के भीतर सब लेगये अपने गुरु के
हां जायकें दीयो यह बात श्री गुसांईजी नें कृष्णदास
सों कही और कह्यो जो बंगालीननें माथो उठायो
है परि वे श्री आचार्यजी महाप्रभूननें के राखे हैं सो के
सें निकसेंगे तब कृष्णदासनें श्री गुसांईजी सों कह्यो-
जो महाराज श्रीनाथजी की इच्छा है जो बंगालीन
कों निकासो तातें आप या बात में कछू मति बोलो
मोकों आप आज्ञा करो तो अपनो आप करि लेउ
गो जैसें बंगाली निकसेंगे तैसें काढूंगो तब श्री
गुसांईजी नें कह्यो जो अवस्य तब कृष्णदासनें कह्यो
जो महाराज दोय पत्र लिषिये एक राजा टोडलमल्ल
के नाम को एक वीरवल के नाम को तब श्री गुसां
ईजी नें दोय पत्र लिषि दीने राजा टोडलमल्ल कों
और वीरवल के नाम को लिषे जो कृष्णदास कों श्री
नाथजी द्वार भेजे हैं जो तुमसों कृष्णदास कहे सो

करि देउ गे सो पत्र लेकें श्रीनाथजीद्वारकों चले सो आगरे आए तहां टोडलमल्ल राजा बीरबलसों मिले पत्र श्रीगुसांईजीके हुते सो दीए तब उन पत्रबांचिकें कृस्नदाससों कह्यो जो तुम कहो तैसें करें तब कृस्नदासनें कह्यो जो अब तो में मथुरा जात हों बंगालीनकों काढिवेकों ता पाछें कृस्नदास राजा टोडलमल्लसों बिदा होयकें श्रीनाथजीद्वारकों चले सो मथुरा आए तब मार्गमें अवधूतदास मिले तब कृस्नदाससों अवधूतदासनें कह्यो जो कृस्नदासजी ढील कहा करि राषी है बंगालीनकों काढो श्रीनाथजीकी रेसी इच्छा है श्रीनाथजीकों अपनों बैभव बढावनों है तब कृस्नदासनें कह्यो जो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेकें आयो हों अब जायकें बंगालीनकों काढत हों इतनों कहिकें कृस्नदास चले सो श्रीनाथजीद्वार आए सो वे बंगाली सब रुद्रकुंड उपर रहते सो उहां उनकी झोंपरी हुती सो कृस्नदासनें जराय दीनी तब सोर भयो तब बंगाली सेवा छोडिकें पर्वतके नीचें आए तब कृस्नदासनें पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दीए तब बंगाली देषें तो कृस्नदासनें झोंपरी

में आगिलगाय दीनीहै तव सब बंगाली कृष्ण दा
ससों लरन लागे तब कृष्णदासनें द्वै चारि लोडी सब
नमें दीनी तब वे बंगाली तहांते भाजे सो मथुरा आ
ए तब रूपसनातन के पास आयकें सब वात कहीत
ब इतने में कृष्णदासहू आय ठाढे भए तब रूप स
नातन नें कृष्णदास के ऊपर षीजिकें कह्यो जो क्यों रे
सूद्र तू कौन जो इन ब्राह्मणन कों मारे तब कृष्णदा
सनें कही जो हूं तो सूद्र हौं परि तुमहूं तो अग्नि होत्री
नाहीं तुमहू तो कायस्थ हो तब सनातन कह्यो जो य
ह वात पात्साह सुनेंगो तो तू कहा जुवाव देइगो तब कृष्ण
दासनें कह्यो जो हों तो नीकें जुवाब देउगो परि तुम
कों जुवाब देत में बहुत दुष होयगो और तुम कों
जुवाब न आवेगो जो तुम कायस्थ होयकें इन ब्रा
ह्मणोंसों दंडोत करावत हो तब रूपसनातन तो चु
प ह्वै रहे और बंगालीनसों कह्यो जो तुम जानो एज
नो तब वंगाली मथुरा के हाकिम पास गए तब
कृष्णदास जाय ठाढे भए तब हाकिम नें कह्यो जो
भयो सो तो भयो परि अब इनकों राषो तब कृष्ण
दासनें कह्यो जो अब तो इनकों न राषेंगे एतो

हमारे चाकर हुते सो हमनें इन कों सेवा सोपी हु
ती सो एसेवा छोडि कें क्यों आए जो इन कीझोंप
रीजरीजरि गई हुती तो हम नई छवाय देते तातें अ
वतो हम न राषेंगे ता ऊपर तुम कहत हो जो हम
श्री गुसांई जी कों लिषेंगे वे कहेंगे तेसें करेंगे तुम
श्री गुसांई जी कों लिषों पाछें कृष्नदास श्री नाथ जी
द्वार आए औेर बंगाली सब अपने श्री कुंड आए
तव कृष्नदास नें श्री गुसांई जी कों पत्र लिष्यो तामें
बंगाली का ढे सो सव समाचार विस्तार करिकें लि
षे औेर लिष्यो जो अव पधारिये तो भलो है सो प
त्र श्री गुसांई जी के पास अडेल आयो ता पाछे श्री
गुसांई जी अडेल तें चले सो श्री नाथ जीद्वार आये
तव वे बंगाली सव आए तव श्री गुसांई जी सों क-
ह्यो जो हम कों श्री आचार्य जी महाप्रभू ननें सेवामें
राषे हुते सो कृष्नदासनें हम कों काढे तब श्री गुसांई
जीनें कह्यो जो तुम सेवा छोडिकें क्यों गए दोष तुम्हा
रो है तातें अव तो सेवा में न राषेंगे तब वे बंगाली
वहुत बीनती करन लागे जो महाराज अव हम
षाय गे कहा तव श्री गुसांई जी नें इन कों श्रीना

यजी के बदलें श्री मदनमोहनजी की सेवा दीनी
और कह्यो जो इन की सेवा तुम करियो जो आ
वे सो षाइयो तब वे बंगाली श्री मदन मोहनजी
की सेवा करन लागे तातें उन बंगालीननें श्री गोवर्द्ध
न रहिवो छोडि दीयो तापाछें श्रीनाथजी की सेवा में
गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राषे श्रीनाथजी कों
अपनों वैभव बढ़ावनो हो सो सब भीतरियानकों
नेग और सब सेवकनकों नेग जो जा भांति श्रीनाथ
जीनें कह्यो ता भांति श्री गुसांईजीनें बांध्यो तब तें
श्रीनाथजी की सेवा अनालिकातें होन लागी और
कृस्नदास अधिकार करन लागे ॥ वार्ताप्रसंग ॥ २ ॥
बहुर श्रीनाथजीनें कृस्नदासकों आज्ञा दीनी जो स्यां
मकुमर कों लेकें ताल पषावज लेकें तु परासोली में
आईयो सो स्यामकुमर आछो मृदंग बजावते सो
श्रीनाथजी की सेन आरती उपरांत अनोसर भयो
तब कृस्नदास स्यामकुमर के घर गए तब कृस्नदा
सनें स्याम कुमर सों कही जो श्रीनाथजी नें आज्ञा
करी है सो मृदंग लेकें परासोली चलो तब स्या
मकुमर नें कह्यो जो मोकूं श्रीनाथजीनें आ

ज्ञा करी है तातें चलिये तब स्यांम कुमर मृदंग ले के आयो तब कृष्नदास और स्यांम कुमर ए दोऊ जने परासोली आए सो देषें तो श्री नाथजी स्वामिनीजी सहित बीराजे हैं तब श्री नाथजी नें स्यांम कुमर सों कह्यो जो तू तो मृदंग बजाय और कृष्नदास सों कह्यो तू कीर्तन करि और श्री नाथजी और श्री स्वामिनीजी नृत्य कीयो तहां कृष्नदासनें पद गायो सो पद ॥ राग केदारो ॥ श्री वृषभांन नंदनी नाचत गिरधर संग लाग डाट उरप तिरप रास रंग राष्यो ॥ रूप ताल मिल्यो राग केदारो सप्त सुर न अवघर तान रंग राष्यो ॥ १ ॥ पाई सुष सिद्धि भरत कांम विविधि रिद्धि अभिनव दल सत सुहाग हुलास रंग राष्यो वनिता सत जूथ संग त्रिगनिर षि षवें सघन चंद वलिहारी कृष्नदास सुघर रंग राष्यो ॥ २ ॥ यह पद कृष्नदासनें गायो स्यांम कुमरनें मृदंग बजाई श्री नाथजी और श्री स्वामिनीजी नृत्य कीये तातें श्री महाप्रभूजी की कानि तें श्री नाथजी कृष्नदास के ऊपर एसी कृपा करत हुते ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ और कृष्नदासनें बहुत पद कीए

तब एक समें सूरदासजी नें कृष्नदाससों पूछो जो
तुम पद करत हो तामें मेरी छाया है तब कृष्नदास
नें सूरदासजी सों कह्यो जो अबके ऐसो पद करूं जो
जामें तुम्हारी छाया न आवे तब कृष्नदास एकांत
में बैठिकें एकाग्रचित करिकें नयो पद करन लागे सो जा
में तीनि तुक तो कीये और चोथी तुक बने नाही तब घडी
दोइ लों विचारे जो आगें तुक चलत नाही तो भलो फेरि प्रसाद
लेकें विचारेंगे सो जा पत्रमें लिषत हुते सो पत्र तथा
द्वाति लेषनी उहां ई धरिकें प्रसाद लेवेकों उठे जब
कृष्नदास प्रसाद लेवेकों बैठे तब श्रीनाथजी नें आ
पतीन तुक वा पत्रमें अपने श्रीहस्तसों लिषदीये कृ
दासनें आधो पद कीयो हुतो ताको आप श्रीनाथजी
पूरो करिकें आप तो पधारे तापाछें कृष्नदास प्र-
साद लेकें आए तब देषें तो श्रीनाथजी पद पूरो क
रिकें श्रीहस्तसों लिगये हैं सो देषिकें कृष्नदास बहु
त प्रसन्न भए और कहें जो सूरदासजी आवें तो पद
सुनावें तब उत्थापनके समें सूरदासजी दर्शनकों आ
ए तब कृष्नदासनें कह्यो जो सूरदासजी नयो पद ए
क मेंनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाही धरी तब-

सूरदासजीनें कह्यो जोकहों सुनों तवजानों तबपदक ह्यो सोपद ॥ रागगोरी ॥ आवतवनें कान्ह गोपवाल कसगनें चुकीषुररेणुछुरित अलकावली ॥ भोंहेंम नमथचाप वक्रलोचनवानसीससोभितमत्तमयूर- चंद्रावली ॥ १ ॥ उदित उडुराजसुंदरसिरोमणिवदन निरषिफूलीनवलजुवतीकुमुदावली ॥ अफूणस कुच अधरविंवफलहसात कहत कछुक प्रकटित होतकुंददसनावली ॥ २ ॥ श्रवणकुंडलभालतिलक वेसरिनाक कंठकौस्तभमणिसुभगत्रिवलावली ॥ र त्नहाटकषचितउरसिपदिकनिपंगति वीचराजत सुभउलकमुक्तावली ॥ ३ ॥ अथश्रीनाथ जीके न ॥ वलय कंकणवाजूवंद आजानुभुजमुद्रिका करतलविराजतनषावली ॥ कणितरमुरलिका मोहित अषिलविश्वगोपिकाजनमसिग्र सथित प्रेमावली ॥ ४ ॥ कटिक्षुद्रघंटिकाजटितहीरामयी नाभि अंबुजवलितभृंगरोमावली ॥ धायकब हुकचलतभक्तहितजानिपियगंडमंडलरुचि रश्रमजलकणावली ॥ ५ ॥ पीतकौसयपरि धानेसुंदर अंगचरणनूपुरवाचगीतसवदाव

ली ॥ हृदयकृष्नदासगिरिवरधरणलालकीचरण
नषचंद्रिकाहरततिमिरावली ॥ ६ ॥ यह पदकृष्न
दासनें सूरदास जीके आगेंकह्यो सो सूरदासजीनें
नतुकतांई तो बोले नाहीं औरतीनतुकके आगेकहन
लागे तब सूरदास जीनेंकृष्नदाससोंकह्योजोकृष्नदा
समेरें तुमसोंवादहै औरप्रभूनसोंवाद नाहींमेंप्रभून
कीबानीपहचानतहों तबकृष्नदासचुपकरिरहे तातें
कृष्नदासऐसेभगवदीयहें ॥ वार्ताप्रसंग ॥ ४ ॥ औरएक
समें श्रीनाथजीकेभंडारमें कछू सामग्रीचहिये
हुती सोकृष्न दास गाडालेकें आगरे कोंआसे
आगरेके बजारमें एकवेस्यानृत्य करतहुती
ख्यालटयागावतहुती औरभीरहुती सबलोगत
मासोदेखतहुते सो कृष्न दासबजारमें तमासेमेंजा
यठाढेभए तबभीरसरकिगई तब वह वेस्याकृष्न
दासकें आगेंनृत्यकरनलागी सो वह वेस्याबहुत
सुंदर औरगावेबहुत आछोनृत्यहूतेसोई करे
सोकृष्नदास वा वेस्याके ऊपररीझे औरमनमेंक
हेंजो यहतो श्रीनाथजी केलायकहे तापाछेंवा
वेस्याकोंदसमुद्रातोउहांई दीए औरकहीजो

रात्रिकों समाज सहित आईयो तापाछें कृष्णदास उहां हवेलीमें उतरे सो सामग्री च हियत हुती सो सब लेकें गोडालदाय सिद्धि करवायो तापाछें रात्रि-पहरि गई तब बेस्या समाज सहित आई तापाछें नृत्य भयो गांन भयो वापे कृष्णदास बहुत रीझें सो रुपैया सत एक दीए तब वा बेस्यालें कह्यो जो तेरो गांनहू आछो और नृत्यहू आछोपरि हमारो सेठ है सोतेरे ख्याल टपा न ऊपर रीझेगो नाही तातें हों कहों सो गाइयो तापाछें कृष्णदासनें एक पूरवी रागमें पद करिकें सिषायो तापाछें दूसरे दिन वा बेस्याकों साथ लेकें चले सो आगरें आए पाछें तीसरे दिन श्रीनाथजीद्वार आए सामग्री सब भंडारमें धराई तापाछें जब उत्थापनको समय भयो तब कीर्तनिया काहूकों वागे लेजान न दीए तब वा बेस्याकों समाज सहित लेगए श्रीगुसांईजी मंदिरमें ठाढे श्रीनाथजीको मूटा करत हैं और मणिकोठामें वेस्या नृत्य करन लागी और यह पद गायो सो पद ॥ रागपूरवी ॥ मोमन-गिरधर छबि पर अटक्यो ॥ ललित त्रिभंगी अंगन पर चलि गयो तहांई ठटक्यो ॥ १ ॥ सजल स्याम घन

वरण नीलहैं फिरिचित अनतनभटक्यो॥ कृष्णदा
सकियो आंगण्न्यो छावरि यह तनजगसिर पटक्यो
॥४॥ यह पद वा बेस्या नेगायो सो जव गावत गावतपि
छिली तुक आई जो कृष्णदासकियो आंगण्न्यो छाव
रि यह तनजगसिरपटक्यो इतनों कहत मात्र वाबे
स्याके प्रांनतत्कालनिकसिगये और दिव्यस्वरू
पधरिकें श्रीनाथजीकी लीलामें प्राप्तभई और वा
बेस्याके समाजी हुते सोमरन लागे जो हमारी तो या
तें जीव का हुती अब हम कहां जांइ गे तब कृष्णदास
नें कह्यो जो तुम क्यों रोवत हो चलो नीचे षाईबेकों
देउ तब उनसमाजीनकों नीचें लाइकें कृष्णदास
नें सहस्त्र रुपेया दे विदा कीये कृष्णदासनें अपनें
मनतें समर्पी तातें श्रीनाथजीनें वा वेस्याकों अं
गीकार करी तातें श्री आचार्यजी महाप्रभूनकी
कानितें सेवक की समर्पी वस्तु याभांतिसों अंगी
कार करत हैं॥ वार्ताप्रसंग॥५॥ और कृष्णदास
कोगंगाबाई सों वहुत स्नेह हुतो सो श्री गुसांईंजी
कों न सुहावते सो एक दिन श्री गुसांईंजी श्रीनाथ
जी कोंभोग समर्पत हुते सो सामग्री ऊपर गंगाबा

ई की दृष्टि परी तातें श्री नाथजी आरोगे नाहीं परि
भोगतो समर्प्यो ता पाछें समय भयो तब भोग सरा
यो तब आरती करि अनोसर करि के श्री गुसांईजी
आप नीचे पधारे तब सेवक आदि भीतरिया सब
ननें महाप्रसाद लीयो तब श्री गुसांईजी आप तो
भोजन करिकें पोढे तब श्री नाथजी नें भीतरिया
कों सोवते में लात मारिकें जगायो और वासूं कही
जो हूं तो भूषो हों तब वा भीतरिया नें कह्यो जो मह्ा
राज श्री गुसांईजी नें भोग समर्प्यो हो और तुम भू
षे क्यो रहे तब श्री नाथजी नें कही जो राजभोग में
तो गंगा बाई की दृष्टि परी हुती तातें राजभोग आ
रोग्यो नाही तब वह भीतरिया उठि श्री गुसांईजी
के पास आयो सो श्री गुसांईजी भोजन करिकें
पोढे हुते तब भीतरिनें आयकें श्री गुसांईजी के
चरण दाबे तब श्री गुसांईजी चोंकि उठे तब देषे तो
श्री नाथजी को भीतरिया है तब वा भीतरिया सों
पूछी जो तू हां इतनी बेर कहा आयो है तब वा भी
तरिया नें कही जो महाराज आजु श्री नाथजी भू
षे हैं मो कों लात मारिकें जगायो और कह्यो जो-

आजु तोमें भूषोहों तब मेंनें श्री नाथजीसों कह्यो जो महाराज भोग तो श्री गुसांईजी नें समर्प्यो हो तुम भूषे क्यों रहे तब श्री नाथजीनें कही जो सामग्री पै तो गंगाबाई की दृष्टि परी तातें में नाहीं आरोग्यो तब श्री गुसांईजी यह सुनत ही तत्काल स्नान करि पर्वत ऊपर पधारे सो वह भीतरियाहू स्नान करिकें श्री गुसांईजी के साथ ही आयो तब श्री गुसांईजीनें वा भीतरिया सों कही जो भात और वड़ी करी जो तत्काल सिद्धि होय आवे तब भात और वड़ी करी सो तत्काल सिद्धि भयो तब श्री नाथजी कों भोग समर्प्यो पाछें भीतरिया रसोई करिकें स्नान करि पर्वत ऊपर आए तब श्री गुसांईजी की आज्ञा भई जो राजभोग की सामग्री तो भई सिद्धि ता पाछें राजभोग सेंन भोग इकठोरो समर्प्यो ता पाछें समय भयो तब भोग सराय सेंन आरती करी तब श्री नाथजीकों पोढाए भोग सरयो हो सो प्रसाद एक डवरा में उहांई रहि गयो तब रामदास भीतरियानें कह्यो जो पहलो भोग समर्प्यो हुतो सो उहांई रहि गयो है तब श्री गुसांईजी डबरा में तें ठलाय केंलेत उत्तरे

ई की दृष्टि परी तातें श्री नाथजी आरोगे नांहीं परि
भोगतो समर्प्यो ता पाछें समय भयो तब भोग सरा
यो तब आरती करि अनोसर करिकें श्री गुसांईजी
आप नीचें पधारे तब सेवक आदि भीतरिया सब
ननें महाप्रसाद लीयो तब श्री गुसांईजी आपतो
भोजन करिकें पोढे तब श्री नाथजी नें भीतरिया
कों सोवतें में लात मारिकें जगायो और वासूं कहे
जो हूं तो भूषो हों तब वा भीतरिया नें कह्यो जो महा
राज श्री गुसांईजी नें भोग समर्प्यो हो और तुम भू
षे क्यों रहे तब श्री नाथजी नें कही जो राज भोग में
तो गंगाबाई की दृष्टि परी हुती तातें राजभोग आ
रोग्यो नांही तब वह भीतरिया वरि श्री गुसांईजी
के पास आयो सो श्री गुसांईजी भोजन करिकें
पोढे हुते तब भीतरि नें आयकें श्री गुसांईजी के
चरण दाबे तब श्री गुसांईजी चोंकि उठे तब देषें तो
श्री नाथजी को भीतरिया है तब वा भीतरिया सों
पूछी जो तूं हां इतनी वेर कहां आयो है तब वा भी
तरिया नें कही जो महाराज आजु श्री नाथजी भू
षे हैं मो कों लात मारिकें जगायो और कह्यो जो-

आज तो में भूषो हों तब मेंनें श्री नाथजी सों कह्यो जो महाराज भोग तो श्री गुसांईजी नें समर्प्यो हो तुम भूषे क्यों रहे तब श्री नाथजीनें कही जो सामग्री पै तोगंगाबाई की दृष्टि परी तातें में नाहीं आरोग्यो तब श्री गुसांईजी यह सुनत ही तत्काल स्नान करि पर्वत ऊपर पधारे सो वह भीतरियाहू स्नान करिकें श्री गुसांईजी के साथही आयो तब श्री गुसांईजीनें वा भीतरिया सों कही जो भात औरबड़ी करी जो तत्कालसिद्धि होय आवे तब भात औरबड़ी करी सो तत्काल सिद्धि भयो तब श्री नाथजी कों भोग समर्प्यो पाछें भीतरिया रसोई करिकें स्नान करि पर्वत ऊपर आए तब श्री गुसांईजी की आज्ञा भई जो राजभोग की सामग्री तो भई सिद्धि ता पाछें राजभोग सेंन भोग इकठोरो समर्प्यो ता पाछें समय भयो तब भोग सराय सेंन आरती करी तब श्री नाथजी कों पेहलो भोग सर्यो हो सो प्रसाद एक डबरा में उहांई रहिगयो तब रामदास भीतरियानें कह्यो जो पहलो भोग समर्प्यो हुतो सो उहांई रहि गयो है तब श्री गुसांईजी डबरा में तें ठलाय केलेत उतरे

तापाछें सब सेवक न कों वह बडीभातकीमहाप्रसाद रंचक रंचकबांटिदीनो ता पाछें श्री गुसांई जी आप हू आरोगे सोवह बडीभात को प्रसाद अति अद्भुत भयो अति अलौकिकस्वाद भयो सो श्री गुसांई जी आप सरायो तबकृष्णदासठाढेहुते तबकृष्णदास नें कही जो महाराज आपहीकरनहारे आपही आरोगन हारे तो क्योंन उत्तिमहोय तब श्री गुसांईजीनें हंसिके कह्यो जोए तुम्हारेही कीए भोगत हैं ॥ प्र संग॥६॥ अबजो यह वात श्री गुसांईजीनें कही जो ये तुम्हारेही कीए फल भोगत हैं सो यह वात सुनिकें कृष्णदासनें श्री गुसांईजी सों बिगाडी तब श्री गुसांईजी सों कृष्णदासनें कह्यो जो तुम पर्वतऊ परमतिचढो तब श्री गुसांईजी आपतो तहांतेंफि रे सो परासोली में आय रहे तब मन में बिचारें जो कृ ष्णदास कहा मनें करेगो परि श्री नाथजी की इच्छा एसी है सो श्रीनाथजी की इच्छा जानिकें कछू बो लेनाहीं सो आप परासोली में रहे सो परासोलीमें ध्वजा के साम्हें बेठिके विप्रयोगकीए और श्री गुसां ईजी नीनिदिन तो श्री गोवर्द्धनरहते औरनीनि-

दिन श्री गोकुल रहते तबतें परासोली आय रहेत
व श्री गुसांईंजी श्री नाथजी के मंदिर की षिरकी प
रासोली की ओर पडुती ताके सांम्हें बैठते तब श्री
नाथजी आप षिरकी में आय दर्शन देते तब यह जा
निकें कृस्नदासनें परासोली की ओर की षिरकी बनवा
यदीनी तबतें श्री गुसांईंजी गोकुलते जब परासोली
आवते तब रामदासजी सब सेवक आददे श्री नाथ
जी की राजभोग आरती करकें अनोसर करि श्री गुसां
ईंजी के दर्शन कों परासोली आवते सो आयकें चर
णोदिक लेइ पाछें प्रसाद लेते सो कृस्नदास कों सुहा
वतो नांही और सब सेवक श्री गुसांईंजी के दर्शन
बिना महाप्रसाद कैसें लेइ परि सेवकन सों कृस्नदा
स की चलेनाही और श्री गुसांईंजी एक पत्र लि
षिकें रामदास भीतरिया कों देते और कहते जो
श्री नाथजी कों देदीजो सो पत्र श्री नाथजी कों दे
ते श्री नाथजी विग्य पत्र उत्तर लिषिकें रामदास
कों देते सो रामदास श्री गुसांईंजी कों देते तब
श्री गुसांईंजी वा पत्र कों वांचिकें पानी में पी जाते
या भांति सों छे महीना बीते परि श्री गुसांईंजी

नें श्रीनाथजी को अधिकारी वैष्णव जानि और श्री आचार्यजीमहाप्रभूकोसेवकजानिक छूनकयो परि श्रीनाथजीकेविरहकोस्नेहबहुत करते याभांति छै महीनाभए तवएकदिन राजा वीरवल आय निकसे तवतादिन तो श्रीगुसांईजी परासोलीहुते श्रीगिरधरजी घर हुते तव राजा वी रवलनें श्रीगुसांईजीकोषवरकराई तव पोरिया ननें कही जो श्रीगुसांईजी तो परासोलीहैं श्रीगिर धरजीघरहैं तवराजाश्रीगिरधरजीकेदर्शनकों आए तववीरवलसों श्रीगिरधरजीनें कही जो कृ स्नदास अधिकारी काकाजी कों श्रीनाथकेदर्शन नांही करन देत सो काकाजीकों षेद बहुत होतहै काकाजीपरासोलीमेंजायदर्शन करत हैं तव वी रवलनें श्रीगिरधरजीसोंकही जो अवहूंजाय कें कृस्नदासकोंकाढूंगो योकहिकें राजावीरवल श्री गिरधरजीसोंबिदाहोयकेंमथुरा आए औरश्री गुसांईजी परासोलीतें श्रीगोकुल आए औरवीर वलनें पांचसै मनुष्यभेजे और कह्योजोकृस्नदास कोंपकरिलावो सो वे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन आयकें

कृस्नदास कों पकरि लाए तब वीरवलनें कृस्नदास
कों बंदीषानेमें दीनों तब श्री गिरधरजीसों कहवा
य पठाई जो कृस्नदासकों बंदीषानेमें दीनो है
तब श्रीगिरधरजीनें श्रीगुसांईजीसों कह्यो जो
कृस्नदासकों बंदीषानेमें दीनोंहै तब श्रीगुसां-
ईजीनें कह्योजो हायहाय श्री आचार्यजीमहाप्र
भून के सेवकनकों ऐसो कष्ट तब श्रीगुसांईजीनें
श्री गिरधरजीसोंकह्यो जोतुमनें कह्यो होयगोत
व श्री गिरधरजीनेंकह्यो जोहमनेंतोवीरवलसों
सहज हीकह्यो हुतो जो काकाजी कोंदर्शन नाहीं-
करन देत सोकाकाजी कों बहुत षेद होत है तब
श्रीगुसांईजीनें कह्यो जो भोजन जब करूंगो त
ब कृस्नदास आवेगो तब श्री गिरधरजी तत्का
ल घोडा मगाय असवार होयकें मथुराकों आये
तब वीरवलसों कह्यो जो काकाजी भोजननाहीं
करत तातें कृस्नदासको छोडि देउ तबराजावी
रवलनें कृस्नदासकों श्रीगिरधरजीकेहवालेंक
रिदीयो तब श्रीगिरधरजीतत्काल संगलेश्रीगोकु
लआए तब श्रीगुसांईजीनें सुनीजोश्री गिरधर

जी कृष्नदासकों संग लेकें आवतहे सो श्री गुसांई जीठकुरानीघाट ऊपर पहुंचे और वा ओरतें कृष्न दास आए सो श्री गुसांई जी को दर्शनकीयो और दंडो तकरी और एक नयो पद करिकें गायो सोपद ॥ राग केदारो ॥ श्री विट्ठलजू के चरनन कीवलि ॥ हमसे पतित उधारनकारन परमकृपाल आये आपनच लि ॥ १ ॥ उज्जल अरुण दयारंगरंजितदसनषचं द्र विहरतमननिर्दल ॥ सुभगकरसुषकरसोभनपाव नभक्तमुदित ललित कर अंपजल ॥ २ ॥ अतिसेमर दुलसुगंधसुसीतल परतत्रिविधितापडारतमल ॥ भजिकृष्नदासवारएकसुधिकरितरोकहाकरेगो रिपुकल ॥ ३ ॥ यह पद श्री गुसांईजीके आगें गायोपा छें श्री गुसांई जीकृष्न दासकों अपने घरले आएपा छें कृष्नदास सों श्री गुसांईजीनें कह्योजो उठो भोज न करो तब कृष्नदासनें कह्यो महाराज आपभोज न करिये पाछें में झूठन लेउगो तब श्री गुसांईजीभो जनकों बैठे तबकृष्नदासनें एक पद और गायोसोप द ॥ रागकान्हरो ॥ ताही कों सिरनाइये जो श्री वल्ल भसुत पद रजरतिहोय ॥ कीजे कहा आन ऊंचे पदतिन

सों कहा सगाई मोय ॥ १ ॥ सारसार विचारि मतो करि श्रुति बच गोधन लियो निचोय ॥ तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहज ई गोरस लियो विलोय ॥ २ ॥ जाके मनमें उग्र भरम है श्री विट्ठल श्री गिरधर दोय ॥ ताको संग विषम विष हू तें भूलि हू चतुर करहे जिन कोय ॥ ३ ॥ तेज प्रताप देषि अपने चष असम सार जो भि देन नोहि ॥ कृष्णदास ते सुरते असर भये असुर ते सुर भये चरणनि छोहि ॥ ४ ॥ यह पद सुनिकें श्री गुसांई जी बहुत प्रसन्न भए पाछें श्री गुसांई जी भोजन करिके पधारे तब कृष्णदास सों कह्यो जो अब जाउ भोजन करो तब कृष्णदास भीतर गए तब श्री गिरधरजी नें श्री गुसांईजी की जूठन पातरि कृष्णदास के आगें धरी तब कृष्णदासनें महाप्रसाद लीनों पाछें बीडा दोय दीए रात्रि कों कृष्ण-दास वहां ई सोइ रहे ता पाछें पिछली रात्र घडी दोइ रही तब श्री गुसांई जी उठे देहकृत करिकें स्नान कीयो श्री नवनीतप्रियाजी के मंगला के दर्शन करिकें वाहिर पधारे तब श्री नाथजी द्वार पधारिवे-की तईयारी कीए तब घाडा दोइ मंगाये एक घो

डा ऊपर श्री गुसांईजी असवार भए एकघोडा ऊपर कृष्नदास असवार कीयो और श्री गोकुल ते चले सो श्रीनाथजी द्वार दिन पहर सवाएक च-ढें जाय पहुंचे सो यहां श्री नाथजी कों राजभोग-आयो हुतो सो श्री गुसांईजी तत्काल स्नानकरि कें ऊपर पधारे और श्री गुसांईजी विग्यप्ति पत्र परासोली तें लिषि ते सो रामदास भीतरियाके हाथ पठावते ताको प्रति उत्तर श्री नाथ जी पत्र में लिषि कें श्री गुसांईजी कों पठावते सो श्री गुसांईजी जलमें घोरि कें पी जाते सो छेले दिन को पत्र श्रीनाथजीके हस्ताक्षर को सो श्री गुसांईजी राषे हुते सो पत्र साथहीले आए हुते पाछें श्री नाथजी को राजभोग आयो हुतो सो समय भयो तब श्री गुसांईजी भोगसरायवे कों पधारे तब श्री गुसांईजी कों देषि कें श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भए और पूछे जो नीके हो तब श्री गुसांईजी कहे जो तुम कों देषें सो ई दिन नीके हैं पाछें परस्पर दोऊ जनने मसिक्याए पाछें श्री गुसांईजी राजभोग सरायो पाछें वह पत्र हुतो सो झांपी में धर्यो पाछें राज भोग के दर्शन-

खुले तब कृष्णदासनें दर्शन कीए पाछें श्री गुसां
ईंजी राजभोग आरती करि अनोंसरि करिनीचें प
धारे पाछें रसोंई करिभोग समर्पितभोजनकरिश्री
गुसांईंजी पोढेसो उत्थापन तें घडीदोय पहलें उठे
पाछें उत्थापनको समयभयो तवस्नान करिऊप
र पधारे सो संषनाद करवायो श्रीनाथजीकें उ
त्थापन भए पाछें सेंन आरती उपरांत दर्शन
करिके कृष्णदासकों श्री नाथजी के सन्निधा
न बुलायो और कह्यो जो कृष्णदास तुम अधि-
कार करो और श्रीनाथजीकी सेवा नीकीभांति
सों करियो तव कृष्णदासनें श्री नाथजी केसन्नि
धान एक पद गायो सोपद ॥ राग कान्हरो ॥ परम
कृपाल श्रीवल्लभनंदन करत कृपा निज हाथ
दे माथें ॥ जेजन सरण आए अनुसरही गहि सों
पति श्री गोवर्द्धननाथें ॥ १ ॥ परम उदार चतुरचिं
तामणि राषतभव धारातें साथें ॥ भजि कृष्णदा-
सकाज सब सरही जो जानें श्री विठ्ठलनाथें ॥ २ ॥ य
हपद गायो औरवीनती कीनी जो महाराजमेरो अ
पराध क्षमाकरो तव श्री गुसांईंजीनें कह्योतुम

रो अपराध श्री नाथजी क्षमा करेंगे पाछें कृष्न
दास को विदा कीयो पाछें श्री नाथजी कों पोढा
यकें श्री गुसांईजी नीचें उतरे श्री गुसांईजीपर
म दयाल कृष्न दास कों कृत कछु मन में न आनों श्री
आचार्यजी के सेवक जानि अनुग्रह कीयो पाछें
श्री गुसांईजी दिन दोइ रहे पाछें श्री गोकुल पधारे
फिरि कृष्नदास श्री गुसांईजी की आज्ञा तें अधि
कार करन लागे ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ७ ॥ सो वहुत व
रस लों भली भांति सों अधिकार कीयो पाछें ए
क वैष्नव नें कृष्नदास सों कही जो मोकों एक कू
वा वनवावनो है और मोकों अपने देश कों जा
नों है तातें द्रव्य तुमकों देजात हों सो तुम वनवा
यदीजो तव कृष्नदास नें कही जो आछो तव वह
वैष्नव तीन से रुपया देकें अपने देश कों गयो त
व कृष्नदास नें उन रुपैयान में ते एक से रुपैया
एक कूल्हरा में धरिकें आंमके वृक्षके नीचें गादि
दीए कह्यो जो दोइ से रुपया लगि चुकेंगे तव इन
कों काढेंगे सो आछो महूर्त देषिकें रुद्रकुंड ऊप
र कूवा षुदायो तव केतेक दिन में वह कूवा मों सें

लाई बनि कें तैयार भयो और दोइ सैं रुपया ल
गे मठोठा वाकी रह्यो तब उस्थापन के दर्शन करि
कें कृष्नदास कूवा देषन कों गए सो हाथ में आ
सा हुते सो आसा टेकिकें कूवा के ऊपर ठाढे भए
सो वह आसा सरक्यो तव कृष्नदास कूवा में जा
इ पडे तब वो मनुष्य दोइ कूवा में उतरे सो बहु
तेरो ढूंढे परि कृष्नदास को सरीर हू न पायो तब स
ब मनुष्य उहांतें फिरि आए सो तासमें श्री गुसांई
जी श्रीनाथजी कों सेंनभोग धरिकें मंजूष में बिरा
जे हुते और रामदास श्री गुसांई जी के पास वैठे
हे ता समें काहूनें आयकें कह्यो जो महाराज
कृष्नदासनें कूवा वनवायो हो सो कृष्नदास देष
न गए हुते सो आसा टेकिकें कूवा के मोहंडे ऊपर ठा
डे हुते सो आसा सरक्यो सो कूवा में गिरि परे और
मनुष्य दोइ कृष्नदास कों ढूंढिवे कों उतरे सो व
हु तेरो ढूंढे परि सरीर हू न पायो कहा जानियें क
हा भयो तब रामदास जी कहें जो अधोगति
ति तामसा तव श्री गुसांईजी कहें जो राम दास
ऐसें न कहि अब जो कृष्नदास कूवा में गिरे सो स

सरीर नमिल्यो ताको कारन कहा सो ताकोका
रन यह जो कृस्नदास में कोई अलौकिक जीव
हुते सो तो श्रीनाथजीकी लीलामें प्राप्तिभयो
और कृस्न दासनें यासरीर सों श्री गुसांईं जी की
अवज्ञाक रीहै जो यहसरीर अलौकिक जीवभु
गतनोंहै सो कुवामें गिरत मात्र कृस्न दासकोस
रीर लौकिक सद्य होय कें पूंछरीकी ओर एक
वृक्ष है पीपर कोतहांप्रेत होयकें रह्योभोगभुग
तनकों तातें कृस्नदासको सरीर कूवामें नमि
ल्यो श्री गुसांईंजीकी अवज्ञा तें कृस्नदास की
यह गति भई जो प्रेतहोयकें पूंछरी की ओर पी
परके वृक्ष ऊपर बैठेरहत हैं ॥ वार्ताप्रसंग ॥८॥
और एक समें श्रीनाथजी कीभेंसिषोय गई
हुती सो गोपीनाथग्वाल और चारि पांच ग्वाल
पूंछरीकी ओर ढूंढवेकों गएहुते सो गोपीनाथ
देखें तो पूंछरीकी ओर श्री नाथजी षेलतहैंऔ
र एकपीपर ऊपर कृस्नदासप्रेतह्वे कें वैठेहैं तब
कृस्नदासनें गोपीनाथग्वालसों कही जो अ
रे भई यामेरी वीनती श्री गुसांईंजीसों करि

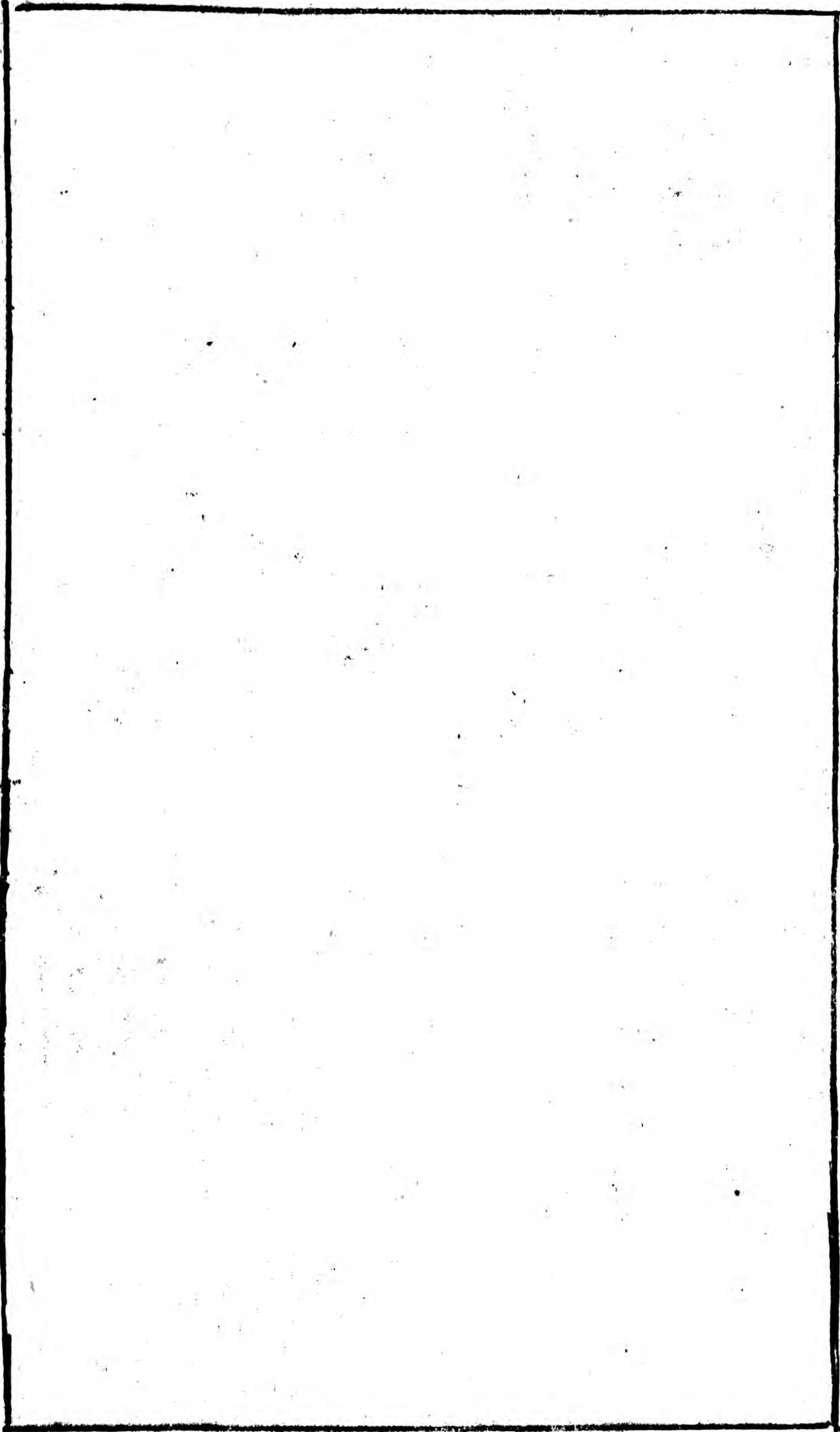
यो और कहियोजो कृष्नदासनें कह्योहै जो हौंतुम्हा
रो अपराधीहों तातें मेरीयह विवस्था है हूं श्रीनाथजी
केपास होतो हू मेरीगति होत नांही तातें मेरो अ
पराधक्षमाकरो तो मेरी गति होय और बागमें एक
आम केवृक्षके नीचें कुल्हरामें एक सो रुपयागडे
हैं सो काढिकें वा कूवाको मठोठा वाकीरह्योहै सो
बनवावो तो मेरी गतिहोय तब गोपीनाथग्वालनें
यह वात श्री गुसांईजी के आगेंकही जोमहारा
ज कृष्न दास अधिकारीनें यहवीनतीकरीहै तव
श्री गुसांईजी आम के नीचे तें रुपया लायकेम
ठोठा कूवाको बनवायो तब कृष्न दास की गतिभ
ई कृष्नदास कों सेत जोनमें श्री नाथजी दर्शन दे
ते ताको कारनयह जो श्री नाथजीके सन्निधान
श्रीगुसांईजीनेकृष्न दास सों कह्यो जोकृष्नदास
तुम अधिकार करो और श्रीनाथजीकी सेवानी
कीभांति करियो तब कृष्नदासनें कह्यो जोमहा
राज मेरो अपराधक्षमा करो तब श्री गुसांईजी
नें कही जो तुम्हारो अपराध श्री नाथजीक्षमा
करेंगे सो श्रीगुसांईजी कृपातें श्री नाथजी में

अपराध क्षमा करो सो प्रेत जोंनमें दर्शन देते परि
स्पर्स न कीयो जो स्पर्स होय तो उद्धार होय सो उद्धा
र तो श्री गुसांईजी के हाथ है कृष्णदास श्रीनाथ
जी सों कहते जो महाराज तुम मो कों दर्शन देत
हो मो सों बोलत हो और में प्रेत हूं तातें मेरो उद्धार
क्यों नाहीं करत तब श्री नाथजी नें कही जो हूं तो कों
दर्शन देत हों बोलत हों सो तो श्री गुसांईजी के वच
न के लियें नाहीं तो प्रेत जोंनमें दर्शन नाहीं देतो
और बोलतो हू नाहीं और उद्धार तो श्री गुसांईजी
के हाथ है तें श्री गुसांईजी को अपराध कियो है ता
तें श्री गुसांईजी उद्धार करेंगे तब होयगो ता पा
छें श्री गुसांईजी आप परम कृपाल कृष्णदास
के ऊपर दया आई जो अब तो बहुत दिन भए
हैं तातें अब उद्धार होय तो भलो तब श्री गुसां
ईजी कूवा ऊपर आयकें कृष्णदास कों कर्म
करवाय उद्धार कीयो तब कृष्णदास को उद्धार भ
यो और लीला में प्राप्त भयो और श्री गुसांईजी
कहें जो कृष्णदास नें तीन बात आछी करी एक
तो अधिकार कीयो सो ऐसो कीयो जो फेरि ऐसो

नकरे दूसरें किर्तन कीये सो अद्भुत कीये औरतीस
रें श्री आचार्यजी महाप्रभून को सेवक होयकें
सेवाहू ऐसी करी जो कोऊ नकरेंगे तातें वे कृष्णदा
स श्री आचार्यजी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापा
त्र भगवदीय हैं तातें इनकी वार्ता कोपारनहीं
तातें इन की वार्ता कहां तांई लिषिये ॥ वार्ताप्रसंग
॥ ९ ॥ संबंध ॥ १८४ ॥ वैष्नव ८४ भए ॥ अब-

श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक
परम कृपापात्र चौरासी मुख्य
वैष्नवन की लिषी सो
संपूर्णम्

श्रीयुक्त ठाकुर गिरिप्रसाद वर्म्मा के व्याघ्रपाद प्र
काशक यन्त्रालय किले बेशवां में पण्डित अङ्ग
द शास्त्री के प्रबन्ध से छापा हुआ मिती मार्गशिर
बदी ५ संवत् १९२५ का लिपीकृतं ब्रासी राम सारस्व
त तिवाडी वासी कोट पूतली का



श्री नाथजी

प्रसिद्धपत्र १॥

समस्त विद्वानोंपर प्रकट हो कि इस यन्त्रालयमें श्रीमद्भागवत दशम स्कन्धका अभिनव बहुत सरल सर्वोपकारक भाषाटीका सहित आरम्भ हुआ और सम्वत १९२६ के कार्तिक शुक्ला १५ पर्यंत पूर्ण होगा उक्त पुस्तकका मूल संस्कृत पुष्ट अक्षरोंमें और भाषाटीका छोटे अक्षरोंमें सुंदर पुष्ट कागज पर छपता है और ५) न्योंछावरि पेशगी करार पाई है सिवाय डाक महसूलके जिन सज्जनों को इस अमृत पात्र को ग्रहण करना स्वीकार हो वे अपना पत्र जिला अलीगढ किला वेषामा-व्याघ्रपाद प्रकाशक यन्त्रालयके सुहृतमिम-पण्डित अङ्गद शास्त्रीके पास भेजदेवें श्री

१॥ ब्रह्माविष्णुरुद्रादिनवग्रहाणांवेदमंत्राः

२॥ स्मार्त्ताग्निहोत्रविधिः

३॥ बलिवैश्वदेवविधितथानित्यश्राद्धविधिः

४॥ ब्रह्मादिदेवऋषिणांतर्प्पणम्



